Rooh e Mehfooz

عشق

Ishq Tera hi Hai
Pyaar Tera hi Hai
Saath Tera hi Hai
Gyan Tera hi Hai
Dhyan Tera hi Hai
Aapkey Pyaar mein Aapney
Khuda dekhaaya Hai ...

पत्र ग्रंथावली

पूज्य गुरुवर की कलम से
अनमोल पत्रों का दिव्य संकलन!

गुरु के उपकारों की कलियां, चुन-चुन सुंदर द्वार बनाएं।
निज की सारी भक्ति संजोकर, गुरु के चरणों में पहनाएं।।

दो शब्द

सरस्वती की वीणा सा गुरु लेखनी का नाद।
जिसने पाया मिल गया उसको परम अहलाद।।

निष्काम युग है, उन्होंने न केवल मन वचन एवं कर्म से अपनी श्वासों का सदुपयोग निष्काम यज्ञ में किया बल्कि अपने एक-एक क्षण को हम सबके लिए कुर्बान कर दिया, दादा भगवान के ज्ञान एवं अपने अनुभव को अपनी लेखनी के द्वारा जन-जन तक पहुंचाया, जिनसे करोड़ों लोग प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से अपनी शक्ति एवं स्वरूप को पहचान सकें। गुरुवर की दिव्य कलम से लिखा एक-एक शब्द स्वयं में गीता का सार है। कहते हैं ब्रह्मज्ञ. ानी अपने प्यारों को चार प्रकार से तारता है—**संकल्प, स्पर्श, दृष्टि** एवं **वाणी** परंतु गुरु ने अपनी करुणा बरसाने एवं भक्तों का उद्धार करने के लिए अपनी लेखनी को ऐसा अनुदान माध्यम बनाया, जिसकी कृपा एवं प्रसाद से आज भी लाखों करोड़ों हृदय ज्ञान वर्षा से हरे भरे हो रहे हैं।

जहां-जहां भी गुरुदेव की दिव्य कलम से निकले शब्द पहुंच जाते हैं वहां-वहां शांति एवं आनंद की गंगा बहने लगती है और यह अमृत गंगा केवल इस युग में ही नहीं अपितु युगों-युगों तक जन मानस की तप्त भूमि को अहर्निश शीतलता एवं शांति प्रदान करती रहेगी...।

गुरु वचनों को रखना सम्भाल के,
एक-एक वचन में गहरा राज है।
जिसने जानी है महिमा गुरु की,
उसका डूबा कभी न जहाज है।

विषय सूची

1	ऐसी प्रीति तो	7
2	तुम इस राह पर	8
3	सचमुच गुरु के प्रेम	9
4	सदैव अपने सच्चे	10
5	प्रिय गुरु को पत्र	11
6	पत्र आप सभी के	12
7	सत्संग आप लोग	13
8	सदैव अपने आत्मिक	14
9	प्रिय तुम अपने आपको	15
10	सदैव सच्चे आनंद में	16
11	सदैव आत्म आनंद में	17
12	जब से हम लोग	18
13	सचमुच हर पल	20
14	प्रिय तुमने इतना	22
15	तुम सब की	24
16	जो अपने ऊपर	26
17	किताबें कितनी	27
18	अपने तन का मन	29
19	सत्संग से ही सारे	30
20	जब तुमने एक बार	31
21	तुम सब हमारे प्यारे	34
22	लगन में अगन रहेगी	36
23	अपनी अपनी श्रद्धा	37
24	सदैव अपने सच्चे	38
25	तुम सबकी मेहनत	40
26	आज स्वयं में बात	42
27	प्रेम में ही सब विकार	43
28	पहले तो रहणी	45
29	हमेशा मन को पता	46
30	तुम सब इतने तो	47
31	पुरुषार्थी कहता है	48
32	जब विवेक की आंख	49
33	सच्ची दीवाली तो तब	50
34	प्रेम एक तरफ होते	51
35	साहसी आदमी के लिए	53
36	प्रभु की असीम शक्ति	54
37	चतुर व्यक्ति वो है	55
38	हृदय का तार सदैव	56
39	सत्य की राह पर लगन	58
40	यहां पर आप सभी	59
41	बस ऐसा ही सर्व से	60
42	अलग-अलग सभी को	61
43	ज्ञान का मनन निध्यासन	62
44	हकीकत में गुरु की गुलामी	63
45	इसी ज्ञान यज्ञ में	64
46	सचमुच आप सभी का	65
47	पत्र आज भी तुम्हारा	66
48	है धन्य जगत में	67
49	आपने पूरी तरह से	68
50	आपके लगन व उत्साह	69
51	आप सभी की मीठी	70
52	सभी इसी आत्म आनंद	71
53	शल यह नाम खुमारी	72
54	इस प्रसाद का तो	73
55	यह जीवन मिला ही	74
56	तुम्हारे द्वारा भेजी हुई	75

57 दो अक्षर देखकर आप 77
58 अब ना तो कोई 79
59 सभी प्रेमी जो नहीं 81
60 सदैव अपने सच्चे स्वरूप 82
61 सदैव अपने सत स्वरूप 83
62 जिसने अपनी हस्ती गुरु 84
63 सारी दुनिया नींद में 85
64 हरेक अपनी अमानत अपना 86
65 शांत स्वरूप में हर 87
66 तुम्हारे हृदय का प्रेम 88
67 यह सच का संदेश 90
68 जीवन का ताजा फूल 91
69 You Lough and the 92
70 पत्र तुम्हारा कई दिनों 93
71 तुम सभी ने प्रयास 94
72 यह जीवन प्रभु के 95
73 खुशी होती है कि 96
74 आप सभी का प्रेम 97
75 बस गुरु ने ऐसा 98
76 इतनी छोटी Age में 99
77 हरेक अपने को लायक 100
78 Christ ने कहा Forgive 104
79 Love is not an action 109
80 जो बाहर से सुख 112
81 तुम अपना शरीर भुलाओ 114
82 सत का कभी अभाव 121
83 मैं हूं यह बड़े 127
84 जिस सुख के साथ 135
85 कमजोरी मौत है 137
86 दुनिया का आदमी अज्ञान 147
87 हर समय मुस्कुराते रहना 153
88 मेरे संकल्प से ही 155
89 पत्रों द्वारा भी अच्छी 161
90 आज सत्संग में बात 162
91 अपने ऊपर कृपा करके 163
92 तुम हमें चाहो हम 165
93 निष्काम जीवन के सिवाय 166
94 हम सभी सुखपूर्वक यहां 167
95 तुम लोगों की श्रद्धा 168
96 कितने प्रेम से तुम 169
97 तुम्हारी मेहनत सफल हुई 171
98 बस यहीं संतों के 172
99 तुम लोगों के जीवन 173
100 आप जैसे प्रेमियों का 174
101 सत्संग तो आप सभी 175
102 आप सभी तो प्रेम 176
103 जिस जिस की अमानत 177
104 वैसे तो जो कुछ 178
105 ऐसा लगता ही नहीं 179
106 हरेक के अंदर सच 180
107 समय की पाबंदी तो 181
108 यह जीवन जिस कार्य 182
109 आप में कुछ भी 183
110 ऐसी प्रीति तो किसी 184
111 सच पूछो तो 185
112 बिना देखे भी आपने 186
113 गुरु सदैव हरेक को 187
114 सत्य के लिए लगन 188
115 सभी को जगाते आओ 189
116 आपकी जीवन प्रभु को 190
117 भगवान भी खुश होते 191
118 दृढ़ इरादे वाले की 192
119 सभी पत्र आप सभी 193
120 सचमुच जो भी इस 194
121 पत्र तुम लोगों का 195
122 कितनी भी मुश्किलातें हों 196

123 खूब प्रेम की मस्ती	197
124 प्रभु की कृपा से	198
125 अपनी कृपा अपने ऊपर	199
126 तुम सबसे प्यार करना	200
127 जो अपने को आत्मा	209
128 कर्ण सूरज का पुत्र	211
129 God made man into	213
130 शुभ-अशुभ, मित्र, मान	215
131 अपना नाम बदल दो	218
132 आत्मा में कुछ ग्रहण	221
133 ईश्वर सबको कर्मानुसार चला	226
134 Abide in me	236
135 जो मेरे मत पर	242
136 राजा जनक से किसी	245
137 तुम माया में जाएंगे	247
138 सब दुखों का कारण	249
139 जिसका साथी हो भगवान	262
140 सदा हंसते मुस्कुराते रहो	263
141 इश्क बिना कोई	264
142 गुरु सदैव हरेक को	266
143 सत्संग से ही पूरी-पूरी	267
144 परमात्मा के प्रेम में	268
145 जहां जहां निराकार	269
146 आप सभी का प्यार	270
147 यहां गुरु की इतनी	271
148 आपका पुरुषार्थ है	273
149 सभी ने अपना	274
150 यह जीवन है ही	275
151 आप इसी प्रयास में	276
152 परीक्षाएं तो हमें ऊंचा	277
153 ये उमंग व उत्साह के	278
154 सत्संग के सिवाय तो	279
155 जो पहले से ही अपने	280
156 आपके पत्रों से ही आपके	281
157 आप सभी के संग कैसे	283
158 यही सत्संग का दायरा	284
159 बस जिसने भी श्रद्धा	285
160 कोई विरला ही होता	286
161 आप सबका अनन्य	287
162 शल यही लगन हमेशा	288
163 तुम सभी का प्यार	289
164 आप सभी की प्यारी	290
165 एक घड़ी आधी घड़ी	291
166 तू जी ए दिल जमाने	292
167 अति श्रद्धा से भरा	294
168 सत्संग ही साधन है	296
169 एक दूसरे के लिए	297
170 सत्संग की बहारों	298
171 भाग्यशाली हैं हम सब	299
172 तुम्हारी श्रद्धा व प्रेम	300
173 तुम सब ज्ञान की	301
174 गुरु के पास से ही	302
175 दर्शन साधु का तो	303
176 सदैव अपने सच्चे आत्मिक	304
177 जो परमात्मा के ही	306
178 बिना प्रेम के ज्ञान	307
179 विरले ही हैं जो अपना	308
180 इस राह पर आलस्य	309
181 सदैव अपने प्रिय आनंद	311
182 तुम्हारी सच्चाई व श्रद्धा	312
183 फिर फिर यह कौन सी	313
184 पूरा पूरा कनेक्शन जोड़ने	314
185 हर दिन आगे	315
186 तुम्हारा अटूट विश्वास	316
187 अंदर की तार पूरी	317
188 कितने भी माया में	318

पत्र नम्बर 1

ऐसी प्रीति तो किसी भाग्यशाली को ही लगती है और यह प्रीत ही परमात्मा से मिला देती है संसार के लिये तो हरेक बहुत रोया परन्तु भगवान के लिये तो कोई विरला ही आंसू बहाता है। अंसुअन जल सींच-2 प्रेम बेल बोई, मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई। मीरा ने तो यही सुनाया सभी को और उसी में ही उसको अनमोल रत्न धन भी मिल गया। ऐसा निश्छल प्रेम ही अन्तःकरण की शुद्धि करता है फिर जहां चाह है वहां राह भी अवश्य मिल जायेगी। मन मंदिर में बसे भगवान को तो कोई निकाल नहीं सकता। शरीर कार्य में है तो भी मन मधुसूदन में है फिर तो कोई दुख असर नहीं करते। दुखों की बारिश तो बरसती है परमात्मा का छाता तुम्हारे पास है तो कोई भी हालत असर नहीं करेगी। सबकुछ तो गुजर ही जाता है सब है- दृष्टा बनो जगत के पर मुंह से कुछ न कहना। साक्षी भाव में ही आनन्द है। कुछ प्रेम में अखियां भर आये कुछ प्रेम में ऐसा दिल डूबा अपनी हालत खुद समझूं लेकिन तुमको समझा न सकूं। तुम पास रहो इतने हरदम लेकिन तुमको पा न सकूं यह प्रेमी पागल की अवस्था होती है वह एक मिनट को भी अपने प्रभु को नहीं भूल पाता है फिर मीरा को तो सभी बांवरी कहते थे।

पत्र नम्बर 2

तुम इस राह पर आगे ही बढ़ रही हो। श्रद्धा विश्वास ही इस राह की कुंजी है। बस यही अंत तक बना रहे। उनके बेटे के बारे में आपने लिखा सोई कल यहां भी समाचार मालूम पड़ा था उन्हें पत्र लिख दिया है। शरीर तो सभी बेबका व बेवफा है जब भी दूसरों की कोई बात ऐसी सुनते हैं तो अपने लिए भी पक्का करना है कि सब जग चलन हार। गुरू पहले पढ़ाई करवा देता है और पीछे परीक्षा भेजता है तभी तो ऐसा समय में अडोल स्थिति में रह सकते हैं जिसने पहले ही पढ़ाई की है उसे परीक्षा में डर नहीं लगता और वह अवश्य ही पास होता है हमारे प्यारे दादा भगवान ने ऐसी स्त्रियों को हिम्मत देने के लिये ही अवतार लिया। पुरूष होकर पुरुषों द्वारा होने वाले अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाई दुखी व पीड़ित स्त्रियों को ज्ञान की नयी रौशनी देकर सच्चे निष्काम प्रेम का आनन्द दिया कि कैसे सर्व के हित के लिए अपना जीवन कुर्बान करके अपनी जीवन सफल बना सकते हैं। उतार-चढ़ाव, सुख-दुख तो जीवन में आते ही हैं पर उनमें सम रहना ही ज्ञान है फिर परमात्मा के साथ किसका जोर चला है जिस प्रभू से नाही चारा ताको कीजै सद नमस्कारा। फिर हैं तो सब वस्तुएं प्रभु की अमानत और जब भगवान उन्हें वापिस लेता है तो नाराजगी कैसी। शरीर तो वस्त्र है जो हरेक को बदलने हैं। यह जीवात्मा पुराने वस्त्र छोड़ नये पहनता है तो उसमें तू शोक क्यों करता है? आत्मा तो अजर अमर है सच पर नजर रखो तो झूठ से नजर उठ जायेगी। पहले भगवान शक्ति देता है।

पत्र नम्बर 3

सचमुच गुरु के प्रेम व शुक्रानो में ही यह जीवन बीत जायें सो क्यों बिसरे जो विख ते काढ़े, जन्म-2 का टूटा गांठे, टूटी गाठन हार गोपाल।

गुरु ही हमारा निराकार से टूटा रिश्ता जोड़ता है। इसलिए गुरु की महिमा तो जितनी भी गायी जाये उतनी कम है- बिन गुरु ज्ञान कहां से पाऊं - फिर कांचे गुरु से मुक्त न होय - पूरे गुरु का सुन उपदेश तो पार ब्रह्म निकट कर देख। गुरु अपने आप में ही दीदार करवा देता है- सत्संग करते चलो संसार वाले कुछ तो कहेंगे ही, उनसे घबराने की कोई जरूरत नहीं, समय पर ही सब पहचान जायेंगे। लहरे तो आती है सागर में ही, वही असंग होकर रहना है। प्यार बांटने से बढ़ता है पैसा भी बांटने से सुख मिलता है। संग्रह करो तो कूड़े का ढेर - जैसे खाद बिखेर दो तो फूल ही फूल खिल जाते हैं बाकी तो कष्टों से ही यह माया इकट्ठी होती है और सारा जीवन कष्ट ही पहुंचाती है। खोया हुआ पैसा वापिस मिल सकता है परन्तु खोया हुआ समय फिर नहीं मिलता मनुष्य स्वयं ही अपना समय गंवाता रहता है। करता है। क्लब, पार्टी, शराब, कबाब - पैसा कमाना - माया में जाना। फिर कहेंगे सत्संग के लिए नहीं। उसकी जरूरत कैसे होगी। सारी माया देकर भी दो घड़ी का जीवन नहीं मिलेगा जो सारा जीवन देकर कमायी है। फिर दुख भेजता है और दुख दारू सुख रोग भया। दुखों में ही ईश्वर की याद हरेक को आती है। सुखों में तो सभी हरि को विसार के बैठे हैं। गुरू सच की पहचान देकर हमें सारी माया से उपराम करता है ग्रहस्थ में रहके हमें उसमें न्यारा रहना सिखाता है। वो दोनों ही ज्ञान में पक्की है यह तो हम यहां से ही देख रहे हैं। गुरू की शक्ति को जिसने अंग संग जाना वो कभी अकेला न होगा दुखी न होगा।

पत्र नम्बर 4

सदैव अपने सच्चे आनन्द में मस्त रहो। तुम लोगों का प्रेम पूर्वक यहां आना और श्रद्धा भाव से श्रवण करना अच्छा लगा बस यही प्रेमा भक्ति, श्रद्धा सदैव जाग्रत रखो। गुरू हमें जगाने आया है न कि भगाने। अब सभी को जगाते चलो। गुरु का एक-एक वचन सीप की तरह करो तो मोती बनेगा। अहंकार वश कहते हो गुरू हमें नहीं समझता पर गुरू तुम्हें भगवान देखता है तुम भी भगवान करके देखो, बीच की बातों को गुम कर दो। जितनी पढ़ाई करेंगे उतना ही धीरे-2 अमुल हो जायेंग। सब कामना चली जायेगी, सब विकार नष्ट हो जायेंगे। हरेक हमें सावधान करने के लिए बोलता है। दुख हमें गुरू के नजदीक करते हैं, दुख सुख हमें बैलेंस में रखते हैं। द्वन्दी जोड़ों में ऊंचे उठो। न मान न अपमान दोनों में समान भाव रहे। दुख में धीरज सबसे अच्छा है। तूफान के बाद गहरी शान्ति आती है। राम राज्य में पूरा इंसाफ है विश्वास करामतों की करामत है। भगवान के राज्य में है ही इन्साफ। श्रद्धा की रूठी हुई देवी मना के देख। सच्चाई में रहो। भगवान हमेशा हमारी भलाई में है। जहां रखता है अच्छा ही है। ईश्वर इच्छा पर चलो। अपना स्वार्थ और ईच्छा कभी तृप्त नहीं करेगा। केवल देना सीखो तो सबकुछ अन्दर ही मिल जाता है शान्ति आनन्द सुख सब मिलेगा। ज्ञान प्रेम सब हो तो अन्दर तृप्ति आ जायेगी। तभी तुम सबके प्यार के योग्य हो जाते हो। वृक्ष केवल देता है अपने को धूप में रखकर तुम्हें छाया फल देते हैं। तुम्हें प्रकृति सुख देती है। तुम भी सबकुछ बांटो।

पत्र नम्बर 5

प्रिय गुरु को पत्र लिखती रहा करो भले ही उत्तर न भी आये तो क्या हुआ। गुरु में जरूरी है तुम्हारी सच्चाई व प्रेम एक दिन विश्व में जाग्रति ला देगा। निष्काम का थोड़ा सा भी बीज व्यर्थ नहीं जाता बस यह तड़फ यह प्रेम बढ़ता ही रहे। तेरे नाम की लौ कुछ ऐसी लगे पल भर भी तुझे बिसरा न सकूं। सूफी फकीर कहतें हैं सिका सिका शाल न मिला मता मिलंदे माठ अची वजे। शल न देई को दवा हीअ दर्द खसे वठे। यह दर्द प्रभू प्रेम का लगा ही रहे कभी कम न हो। साहु वजी सुहिणल में पियड़ो। बस तन मन प्राण प्रभू सिमरन में लग जायें। सच्ची जिज्ञासा भी यही है कि प्रभु के अलावा कुछ भी नहीं चाहिये। सच्चा भक्त तो किसी भी वस्तु की तरफ देखता भी नहीं है। बीच में किसी का ख्याल तक नहीं करता बस मैं और महबूब। हम दोनों के बीच में अब तो और न कोई आये। दर्शन कीजे साधू का तो साहिब आवे याद हरेक की अमानत उसको प्यार से पहुंचानी है हरेक को इस सच की आवश्यकता है बस देने वाला सच्चा चाहिये। जो अपने को मिटाता है वही सभी के हृदय में अपना स्थान बना लेता है नीचा सिर जो काम निकाले वो न निकले मान से। बस प्यार और नम्रता वाले की ही जीत है। प्रभू के सिमरन दुख न संतापे। आप सभी तो योगी ऋषि मुनि है तो भला आपको हम कैसे भूल सकते हैं। हर समय आपके प्रेम व याद में ही हम भी रहते हैं यह प्रेम का नाता ही सच्चा नाता है बस यह प्रेम अंत तक बना रहे। जो मजा प्यार व एकता में है वो किसी और बात में नहीं है।

पत्र नम्बर 6

पत्र आप सभी के मिलते हैं पढ़कर खुशी होती है दुख सुख दोनों ही परीक्षा के लिए है ज्ञानी किसी में भी फंसता नहीं। ये भी गुजर जायेगा तो वो भी गुजर जायेगा। भगवान दुख देकर अपने करीब बुलाता है इसलिये मायूस न हो हार के तकदीर की बाजी, प्यारा है वो गम जिसमें हो भगवान भी राजी। दुख-दर्द मिले जिसमें वही प्यार अमर है। हर हालत में परमात्मा की मेहरबानी को मानते चलो कि चमाट लगाकर भी भगवान ने अपनी तरफ बुलाया तो है। वरना ये जीवन भोगों में ऐसे ही व्यर्थ चला जाता। यह तो प्रभू ने योगी का जन्म बनाया है तो उसके मानने की जगह शिकवे शिकायतें क्यों करे हरकत में बरकत है हर बात में ईश्वर का राज छिपा हुआ है तुम हर बात में बवाह - वाह करते चलो। लगन व प्रेम दिनों दिन बढ़ाते आओ। गुरू के प्रेम के बंधन में ही माया के सारे बंधन छूटेंगे। हल्के-हल्के होकर रहो कोई भी ख्याल करना तुम्हारा धर्म नहींहै। होशियारी व पैसा परमात्मा को पाने में रूकावट है। इसलिए ुरू से गरीबी खरीद करो। और गु से मौत खरीद करो कि मैं ना। मं मुआ तो खुद खुद हुआ। लगन में अगन तो दिनों दिन बढ़ती जानी चाहिए यह जीवन तो मिला ही है सच को जानने के लिये। माया तो जितनी प्रारब्ध ा में होगी अवश्य मिलेगी। बाकी पुरुषार्थ करना है सच को जानने के लिये। यह कार्य जितनी जल्दी हो सके कर ले। निर्मोही होकर संसार में रहे।

पत्र नम्बर 7

सत्संग आप लोगों का जोर शोर से चल रहा होगा सत्संग के नियम से ही सारे विकार नष्ट होते हैं अपने को व सर्व को ब्रह्म जानो तो फिर कोई भी दुख नहीं। जगत सुपना है घटना है नहीं अपना है उसमें अटकना भवी नहीं उससे अटकना भी नहीं केवल प्रेम ही प्रेम बांटते चलो। यह प्रभू प्रेम का दर्द लगा रहे। कोई ऐसी आग लगाये ये तन मन जीवन सुलग उठे। माया रहित वासना रहित जीवन ही सच्चा जीवन है। आज सत्संग में चली कि जो कर्म छोड़ता है वो गिरता है और जो कर्म करता है वो चढ़ता है कर्म करत निहंकर्मी हो जाये। यही है कर्म योग। ज्ञानी कोई भी कर्म अपने में नहीं मानता है तो सब कर्म बंधन से छूट जाता है अंदर में इच्छा व अहंकार भी नहीं है। सन्यासी कर्म छोड़कर भागते हैं तो वहां वासना से बंध जाते हैं यहां गुरु हमें निष्काम सेवा सिखाता है बस अब अपनी कृपा यही है कि गुरू के वचन उठाते चलें। तो गुरू कृपा व ईश्वर कृपा हो ही जायेगी।

पत्र नम्बर 8

सदैव अपने आत्मिक आनन्द का रस पीते रहो यह प्रसाद सभी में बांटते चलो। मनुष्य जन्म का लक्ष्य हमेशा ध्यान में रखकर द्वैत के पर्दे को हटाकर अपने दिव्य स्वरूप का आनन्द लेती रहो। मंजिल तुम्हारे ही सामने है ही भगवान अपना गवां दो। आत्मा को अनुभव करने में ही खुशी है स्वार्थ वाला घर-घर में रोता है अपनी इच्छा से जो सुख भोगा वो दुख है सब कुछ देने वाले बनो खर्चा भी दूसरे को दियो। तुम र्निइच्छा है तो भगवान तुम्हारा ख्याल रखेगा। सब मुख भगवान के हैं दूसरों के कड़वे वचन भी जब धीरज से सुने तो शिक्षा का शस्त्र बन जाते है। गुरु के वचन भी उसी समय अच्छे नहीं लगते फिर जब समझते हैं तो अच्छा लगता है। सुख आते हैं दुख आते हैं, इन आते जाते सुख दुख में हम मस्त कहते हैं ...। सुख में खो गये तो अभिमान दुख में निराश होते हैं जहां सुख दुख का अभाव है वही आनन्द है। कार्य के लिए कारण आवश्यक है। मिट्टी के होने के लिये घड़े की जरूरत नहीं पर घड़े के होने के लिए मिट्टी का होना आवश्यक है बिना जगत के जगदीश का होना जरूरी है जगदीश के लिये जगत का होना जरूरी नहीं है। घड़े में अन्दर बाहर आकाश है। घटाकाश मठाकाश महाकाश आकाश तो है ही घट के फूटने से कार्य का लय हुआ कारण के लिये घटाकाश मठाकाश एक हो गये। पांच तत्व तत्वों में मिल गये।

पत्र नम्बर 9

प्रिय तुम अपने आपको प्रेम में गुम करती जा रही हो यही अच्छी बात है जिन प्रेम कियो तिन ही प्रभु पायो। ना मैं तन ही रहा न मैं मन ही रहा सतुरु मिलने से झगड़ा खत्म हो गया। कुटुम्ब वाले क्यों झगड़ा फैलाते हो जाल इंद्र का अब तो खत्म हो गया। गुरु ने समझाया जगत ही सुपना नाटक है ना टिकने वाला इसलिये इसके सुख-दुख भी मिथ्या है हर हालत सबक सिखाती है सीखने की खिड़की हमेशा खुली रखे। ज्ञान अजन गुरु दिया अज्ञान अंधेर विनाश। अब हर समय आत्म जाग्रति में रहे आत्माकार का एक भी कर्म दिन भर में नहीं बनता। उसमें विधि निषेध भी नहीं है क्या करे क्या न करें यह ज्ञानी पर कोई बंधन नहीं है वो तत्व के निश्चय से ही मुक्त है। इच्छा रूपी सांप मर गया अब भले ही बिल खुले रहे तो कोई नुकसान नहीं है। सन्यासी ग्रहस्थ छोड़ते हैं परन्तु वासना भीतर रह जाती है यहां इच्छा का बीज ही जल जाता है निष्कामी है समदर्शी इसलिये हर हाल में खुश है। सभी पर गुरु की मेहर बरस रही है बरसात तेरे मेहर की जीवन में बारहो मास हो। बस यही शुद्ध संकल्प आगे ही बढ़ता है कितनी दीवारें आगे आती हैं जो कोई सच की राह पे चलता है। बस प्रेमी और आशिक तो इतना प्रेम से आगे ही बढ़ता रहता है। आगे बढ़ा कदम रुकना तेरा काम नहीं चलना तेरी शान। प्यास अपनी आत्मिक उन्नति करते चलो सारा संसार अपने ख्यालों में ही है ख्याल को लय करो तो जगत गायब हो जाता है। बस अन्दर की आसक्तियां ही हमें बंधन में बांधती है। गुरू का प्यार निराधार व निरासक्त बनाता है।

पत्र नम्बर 10

सदैव सच्चे आनन्द में रहना तुम्हारी सरलता व सच्चाई ही तुम्हें आगे बढ़ा रही है हर तरफ से प्रकृति तुम्हें मदद कर रही है आप जपै औरा नाम जपावे सुनत कहत रहत गत पावे। सुनो फिर कहो तभी रहनी बनती है। सब तक प्यार का संदेश पहुंचाने वाला भक्त ही मुझको प्यारा है। अपने आप को देने से ही सच्चा आनन्द मिलता है यह शौक खाली किसी के अन्दर पैदा हो जाये तो फिर तो सारी प्रकृति मददगार हो जाती है। राम जब रावण को मारने चले तो रास्ते के पत्थर भी पानी पर तैरने लगे और वानरों ने सेना का काम किया। हनुमान जैसा वीर भक्त मिला। ऐसे ही हिम्मते मर्दा मददे खुदा। बादल सागर के खारे पानी को मीठे में बदल कर गांव-गांव, शहर-शहर पहुंचाते हैं और बदले में उसे सभी का प्यार मिलता है ऐसे ही गुरू भी हमें शास्त्रों के खारे पानी को बदल कर मीठा करके हमें देता है और तभी हम सबका प्यारा बन जाात है निराकार तक पहुंचना वैसे तो बहुत कठिन था परन्तु गुरू कृपा से सरल हो जाता है। चलती है लहरा के पवन कि श्वांस सभी की चलती रहे। जीवन देने का ही नाम है अपने सुख स्वार्थ की गठरी उठा के सागर में फेंक दो। गुरू में श्रद्धा विश्वास बढ़ाओ तभी ज्ञान ले सकते हैं। ज्ञान लेने की बात नहीं पर जब तुम प्रेम से सुनते हो तो जहां से भी वाणी निकलती है वह गुरु की ही है। प्रेम ही है परमात्मा हरेक दिन प्रेम बढ़ाते चलो। सबके हित के लिए अपना तन मन धन कुर्बान कर दो। यह जीवन मिला ही है इसके लिए इसे व्यर्थ नहीं गंवाना है। डोरी सांप के देख एक बार उदासी मन काहे को करे तेरा राम जी करेंगे बेड़ा पार..। बस सावधानी अंत तक चाहिये। कहीं भी कुछ भी बन के न बैठे। हर समय हर वक्त ध्यान रहे यह प्यार यह ज्ञान किसका दिया हुआ है। पहले हम क्या थे आज क्या हैं? गुरु ने कितना ऊंचा उठाया है। मछानी वाली ड्रेस याद रहे हर समय। निराकार व साकार के मानते चले। और जो स्वर है वो गुरु के दिये हुए हैं मैं कौन हूं जो यह कार्य भी कर सकता हूं। मैना का पाठ सदैव पक्का रखो।

पत्र नम्बर 11

सदैव आत्म आनंद में तृप्त रहो। तुम श्रद्धा विश्वास रखकर इसी कार्य में लगी हो तो परमात्मा भी तुम्हारी पूरी सहायता कर रहा है। एक विश्वासी से लाखों विश्वासी बनते हैं। एक प्रेम करता है तो दस गुना प्रेम उसको सभी से मिलता है। तुम्हारी सच्ची लगन व प्रेम ने ही तुम्हारे सत्संग को बढ़ाया है बस सदैव अपने आपको अकर्ता भाव में ही पक्का रखना। और यह शरीर एक हैण्डिल है परमात्मा ही इस पर बैठकर अपना कार्य कर रहा है। दादा भगवान ने कहा कि न बनो न कुछ करो। यह निष्काम भी अपने लिए ही साधन है। सुमिरन कराने वाले आ जाते हैं उन्हीं के हैं। जो हर समय इसी कार्य में लगाकर रखते हैं। हम कौन हैं करने वाले परमात्मा की ही शक्ति कार्य कर रही है। करन करावन आपे आप मानुष के कुछ नाही हाथ। हुकमे अंदर हरको बाहर हुकम न कोय नानक हुकमे जे बुझे तो हो मैं कहे ना कोय। अहंकार न आ जाये यही सावधानी रहे, पुरुषार्थी के लिये कोई भी काम कठिन नहीं है हिमते मर्दा तो मददे खुदा बदा बेहिम्मत तो बेजार खुदा। सचमुच हर समय अपने उद्धार की ही चिंता रहे। दूसरों के उद्धार में भी अपना उद्धार समाया पड़ा है केवल आलसी न बने आज का काम कल पर न टाले पल में प्रलय होयेगी फेर करेगा कब। एक बार सृष्टिकर्ता ने कहा मुझे महा प्रलय करनी है एक बढ़ाई को बुलाकर कहा एक बड़ी नांव तैयार कर लो और उसमें हर पशु को मनुष्य के जोड़ों को सवार कर देना उन्हीं को बचाके बाकी सबकी प्रलय कर दूंगा। तेज वर्षा करके। बढ़ई ने साल भर तक नांव न बनायी और कई बहाने बना दिये भगवान ने एक महीने की और मोहलत दी तब भी न बनायी। भगवान ने फिर एक हफ्ते का समय दिया तब भी टाल गया और आखिर महाप्रलय में सब समाप्त हो गया। ऐसे ही हाल होता हैं आलसीयों का। गुरू भी कहता है जल्द निश्चय करो नहीं तो समय नहीं बचेगा तो फिर कब करोगे।

पत्र नम्बर 12

जब से हम लोग यहां आये हैं आपका एक भी पत्र नहीं आया क्या इतनी जल्दी भुला दिया आपने। हम तो आज तक आपकी ही बातें करते रहते हैं। जो श्रद्धा व प्रेम आपने रखा वो सराहनी है एक-एक बात को खोल के पूछना व समझना। सचमुच ऐसी श्रद्धा वाली बुद्धि भी किसी-किसी की होती है। आपने जो मनमनाभव होकर ये वचन सुने हैं ये व्यर्थ नहीं जायेंगे। अवश्य इन वचनों का लाभ आपको हुआ होगा। हकीकत में भी देखें मेरा है क्या? लाये क्या थे जो लेके जाना है। सबकुछ प्रभु का ही समझो। आप भी प्रभु के केवल हैण्डल मात्र हैं नफा सब प्रभु का ही तो है। डोरी सांप के तो दे इक बार उदासी मन काहे तो करे तेरा राम जी करेंगे बेड़ा पार। फिर चिंता से चेहरा घटे घटे बुद्धि और ज्ञान नानक चिंता मत करो चिंता चिख्या समान। चिख्या तो मुर्दे को जलाती है परन्तु चिंता तो जीते जागतें मनुष्य को मुर्दा दिल बना देती है। जिससे पूरे शरीर की शक्ति क्षीण होती है। हासिल भी कुछ नहीं होता अभी भी बहुत कुछ फायदे में है यह तन जो प्रभू का है दिया इसी की ही केवल कीमत करे- तो लाखों करोड़ों से बढ़कर है उसे बर्बाद कर देंगे तो क्या होगा फिर तो इतना कार्य भी नहीं कर पायेंगे। बुरी-2 आदतों में रही सही पूंजी भी जाती रहेगी। अपना मित्र व अपना दुश्मन मनुष्य आप है। अपने शरीर को कभी भी खराब न होने दे। सच को जानने से चिंताए व गम दूर होते हैं बाकी किसी तरीके से तो शरीर ही बिगड़ता है। आप भी हमारे आपका तन मन धन हमारा है आप तो केवल मैनेजर ही है तो फिर फिक्र काहे की है। भगवान की शक्ति क्या नहीं कर सकती विश्वास रखे परमात्मा में जिसने श्वांस

दिया है वो ग्रास भी अवश्य देगा। मेरा क्या है - जो मृत्यु भी मुझसे छीन नहीं सकती वो है मेरी अपनी आत्मा। माया वालों को देखें क्या वे सुखी है जो हम इस जड़ माया के लिये इतने चिंतत हो जाये। फिर माया का अर्थ भी तो यही है कि जो दिखने में आती है पर है नहीं। वैसे भी मनुष्य खर्चता कितना है? केवल माया देख? कर ही तो खुश होता है आज गुरू ही हमें निरासक्ति सिखाता है। कि **Live in the world but not of the world** नाव पानी में रहे पर पानी नाव में नही आना चाहिए। हमेशा गुरू का वचन मानकर चलेगें तो सुखी रहेगें। अपनी ख्याल हमे दे दीजिए।

पत्र नम्बर 13

सचमुच ही पल इस माया के अनुभव मिलते रहते है कि कैसे ये आने जाने वाली है और इसका आधार लेना ही दुख का कारण बन जाता है। दादा भगवान ने कहा ये दौलत है दो लात आती है तो अंधा करती है जाती है तो कमर टेढ़ी कर के जाती है कभी भी किसी एक की होकर नही रहती। अपने मालिक को खुश नहीं कर सकती। खर्चने का अधिकार छीनकर चैन आनन्द लूट जाती है यह **good servent but dangerous master** है इसको दिल में स्थान दिया तो दिल को धक्का लगाती है। लक्ष्मी का स्थान विष्णु के चरणो में रखा है। उसे अपने ऊपर हावी नही होने दें। राजा जनक राजाई में रहता था परन्तु निरासक्त भाव से। सभी कुछ गुरू कर समझता था तो नफा घाटा सेठ का। दुनिया में तो सभी पेट पर नौकर हैं साथ तो ले नही जातें है 2 गज कफन का टुकड़ा तेरा लिबास होगा। ज्ञानी तो हर चीज प्रभु की समझता है मेरा सो तेरा और तेरा सो मेरा। गुरू हमारे मालिकी की ही तो चोरी करता है – ये तो जीवन में उतार चढ़ाव आते ही रहते है। उसमे उदास मायूस कभी न हो। मायूस न हो हार के तकदीर की बाजी। प्यारा है वो गम जिसमे हो भगवान भी राजी। भगवान हमे हर तरफ से अपनी तरफ खींचने की कोशिश करता है। कि झूठे धन से नहीं पर सच्चे धन से प्रीती करो। जिसे चोर न लूटे कबहु न खूटे दिन-दिन बढ़त सवायो पायो जी मैने राम रत्न धन पायो। इस धन ते औरो को बरसावें सच को छोड़कर झूठ से प्रीत क्यों करें? फिर भला जो बात हो जाती है उसपर सोचने से भी क्या किया जा सकता है। सोचया सोच न होवई जे सोंची लखवार। बस से

जानो कि अभी तो फायदे में है पैदा हुए थे तो इतना भी नहीं था। अभी तो बहुत कुछ है। मैं नही मेरा नही ये सबकुछ प्रभू का है दिया। आया अकेला जायेगा अकेला माना कि जब तक आसक्ति है ऐसा बोलना मुश्किल है परन्तु इसके सिवाय चारा भी कुछ नही है तेरा भाणा मीठा लागे जो तुध भांवे सांई भली कार। ईश्वर की रजा में राजी रहना ही उत्तम भक्ति है। मुंह से तो कहते है तेरा तुझको अर्प दिया क्या लागे मेरा तो मेरा फिर कैसे समझते है? जेकी साई था करे सभु सुठो आहे भाणो मिठो आहे। सच्चाई से इस राह पर आगे बढ़ते चले परमात्मा के शुक्राने गाते चले। **Pray not but praise God.** हर हालत में मुस्कुराते रहे। माया आज नही तो कल फिर हो जायेगी पर हमारा ईमान प्रभू से नही जाना चाहिये। आज का दिन खाया है तो कल परमात्मा खिलायेगा।

पत्र नम्बर 14

प्रिय तुमने इतना विश्वास रखा है तो तेरा बेड़ा भी अवश्य पारा होगा। लहणा जी करके देणा, तुम श्रद्धा विश्वास रखते हैं तो भगवान से भी इंकार नहीं होता है। जहां विश्वास है वहीं भगवान भी है। एक बार चैतन्य महाप्रभु से किसी ने प्रश्न किया कि संत किसे कहते हैं उसे देखकर उन्होनें कहा-जिसके मुख से एकबार भी प्रभु के नाम का उच्चारण निकल जाय - वह व्यक्ति प्रभू का नाम उच्चारण करता रहा, परन्तु उसे संन्तुष्टी न हुई सो साल भर बाद फिर पूछा - तब महाप्रभु ने कहा-जिससे निरंतर प्रभु नाम ही मुख से निकलें, वही भी निरंतर जपने लगा, फिर साल भर बाद आया, फिर पूछा - संत किसे कहते हैं तब महाप्रभु बोले कि जिसके समीप बैठते ही दूसरा व्यक्ति भी प्रभु नाम उच्चारण करने लगे क्योंकि ये भी अन्दर के **vibration** असर करते हैं दूसरों पर जैसा-2 संत का व्यक्तित्व होता है उससे वैसे ही आगे बनते जाते हैं। संत बड़े परमार्थी, शीतल जसके अंग तपत बुझाये और की दे दे अपना रंग। संत और पारस में बड़ो अंतरो जान, पारस तो लोहा कंचन करे, पर संत करे आप समान। यह जीवन ऐसे संत को अर्पित हो गया, अब और क्या चाहिए?

प्यारे प्रभु का बगीचा दिनों दिन फलता फूलता रहता है। ययही देखकर खुशी होती है निष्काम का बीज कभी भी नष्ट नहीं होता, सब तरफ फलीभूत होता है। प्रिय तुम्हारा ऐसा निश्छल प्रेम देखकर श्रद्धा विश्वास देखकर दिल खुश हो जाता है और भगवान तो भाव का ही भूखा है, भीलनी के पास क्या साधन थे कौन सी मोटरें कारें थी जो राम उनके पास गए थे।

अहिल्या, मीरा, सधन कसाई, रविदास चमार, कबीर ये सब भक्त कोई भी पैसे वाले नहीं थे, परंतु भाव वाले भक्त का ही बेड़ा पार है, भाव का भूखा था, करमा की खिचड़ी विदुर पत्नी के केले के छिलके दुर्योधन के मेवे त्याग कर ही खाये थे। सच ही है लगन बढ़ा ले और श्याम तेरे दौड़े आयेंगे, राधे तेरे आंसू पी को रोक न पाएंगे। हंस हंस कंत न पाइया जिन पाया तिन रोए। असुअन जल सींच सींच प्रेम बेल बोई, अब तो बेल फैल गई आए फल होई। हरेक थोड़ा सा ही प्रेम में आगे बढ़कर तुरंत फल चाहता है, बीज जमीन में डालकर कुरेद कर देखता है कि फला या नहीं। इस ज्ञान में भी धीरज चाहिए। इंतजार में कभी थकान न आए। प्रेम की पीड़ा से घबराए नहीं। एक जन्म में हार न भाई, ज़न्म जन्म का दांव रे। नेठ त ईदो, तपस्या करते चलो आपे ही श्याम मिलेंगे।

पत्र नम्बर 15

तुम सब की महानता है जो ऐसा अटूट विश्वास व प्रेम रखा है अपनी कृपा करके गुरू की मत हासिल की है यदि तुम ना अपनाते तो हम भी किसको यह ज्ञान सुनाते। अथक होकर इस राह पर बढ़ते चलें। ये प्यार जो किया है वो अंत तक निभाना। इसी दायरे में रहने पर ही यह ज्ञान पक्का होता है, बुद्ध भगवान ने भी संग की बहुत महानता की है। संघम् शरणम् गच्छामि, यानि इस संग से ही तुम्हारा कल्याण होगा। प्रभू का सुमिरन साध के संग, उपजे चाह भी साघ के संग। इस देह को चलाने के लिये दिन भर कमातें है फिर पकाते हैं पर यह देह किस लिये मिलि है, यह भूल जाते है। गुरू आकर यही याद दिलाता है कि जीवन किसलिये है इस जीवन की सीढ़ी पर खड़े तुम ऊपर आत्मा को भी प्राप्त कर सकते हो और चाहे नीचे विषयों की ओर नर्क में भी ले जा सकते हो। सोने की मूर्ति बनाने के लिये पहले मिट्टी की मूर्ति का ढ़ाचा तैयार करके उस पर सोना पिघलाकर डालते है तो सोने की मूर्ति तैयार हो जाती है फिर चाहे वो ढ़ाचा रहे या टूट जाये ऐसे ही यह मिट्टी भी उस तत्व को जानने के लिए ही मिली है फिर चाहे रहे या न रहे। संसार में असंग निर्लेप न्यारे होकर रहो सर्व का प्यारा व सर्व से न्यारा। देह तो फानी है उससे कैसा मोह करना है बस साफ पवित्र हो जाएं तो पूतना याने जो पवित्र नहीं है उसका विनाश कृष्ण ने किया था, तुम भी अपनी बुराईयों का नाश करके अपने स्वरूप में आ जाओ।

गुरु से श्रद्धा विश्वास द्वारा ही ज्ञान ले सकते हैं, ज्ञान देने की वस्तु नहीं पर जब तुम प्रेम से सुनते हो तो अंदर से वाणी निकलती है। प्रेम ही है परमात्मा, प्रतिदिन प्रेम बढ़ाते यह

जीवन मिला ही है इसके लिए, इसे व्यर्थ नहीं गंवाना है। डोरी सौंप के तो देख एक बार, उदासी मन काहे को करे तेरा राम जी करेंगे बेड़ा पार।

बस सावधानी अंत तक चाहिए। कहीं भी कुछ भी बन के न बैठें। हर समय याद रहें, यह प्यार यह ज्ञान किसका दिया हुआ है, क्या हम पहले थे और आज कैसे गुरु ने ऊंचा उठाया है। मछाणी वाली ड्रेस याद रहे, हर समय निराकर व साकर के मानते चलें कि प्रभू ने कैसा हमें बनाया है और जो भी स्वर है तवो गुरु के ही दिये हुएं हैं। मैं कौन हूं जो यह कार्य भी कर सकता हूं। सारी शक्ति प्रभु की ही तो दी हुई है, मैं ना का पाठ सदैव पक्का रहें। **Be Nothing & Do Nothing.**

पत्र नम्बर 16

जो अपने ऊपर कृपा करता है वही गुरु कृपा और ईश्वर कृपा का पात्र स्वतः ही बन जाता है। गुरु वाक्य सत्यम् करने पर सचमुच ही जीवन में करामाते दिखती है। विश्वासी पल-पल में करामते देखता है। पर अविश्वासी संशय व भ्रम रखकर दूर होता जाता है और एक दिन नाश हो जाता है। यह जीवन गुरु ने देने के लिए ही बनाया है और देने से ही दिन पर दिन बढ़ता जाता है। जीवन सफल उसी का है जिसने उसे सर्व के हित में दान दे दिया यह जीवन तो वैसे भी तिल-तिल करके समाप्त हो ही रहा है। क्राइस्ट ने कहा- जो अपना जीवन बचाना चाहेगा वह उसे खो देगा और जो उसे खोएगा वह उसे पालेगा। खोना ही हकीकत में पाना है। काल को बेशर्म होकर हरेक सिर देगा। क्यों नहीं गुरु को सिर देकर अजर अमर हो जाए। हकीकत में तो अहंकार विकार भरे जीवन को गुरु ही प्रेममय बनाके ऐसी सुगन्ध भर देता है जो उसकी ओर स्वतः ही दुनिया की आंखें चली जाती है जैसे सूर्य उदय होता है, फूल खिलता है चन्द्रमा निकलता है तो दुनिया की नजरें स्वतः ही उसकी ओर अपने आप उठ जाती हैं। इसी प्रकार जब तुम्हारा जीवन भी प्रकाशमय तेजोमय शीतलता एवं सुगन्ध से भरपूर हो जाएगा तो सभी को उससे आनन्द की प्राप्ति होगी सबकी स्वतः नजरें तुम्हारी ओर आकर्षित हो जाएगी, यह आकर्षण केवल सच का ही है, यह मनुष्य देही महान समुद्र की तरह है जिसमें अनन्त जलराशि हीरे, मोती लहरें सब भरा हुआ है इसे जो खोजे सो पाये पर यह सब काम करना ही अवतार रहते रहते ही। अवसर जहां चूक गया वहां सिर धुन-धुन कर पछताना पड़ता है।

एक क्षण का भी ठिकाना नहीं है। मनुष्य कितना आगे का सोचता है पर होता वही है जो परमात्मा का हुकम है, इसीलिये ही कहा है जो तुझको करना है वो आज और अभी ही तू कर ले क्यों कल पे रखता है कल किसने देखा है। आज का दिन ही आनन्द से बिताओ और जीवन मुक्ति का आनन्द लटो तथा लूटाने चलो उसी में जीवन की सार्थकता है।

पत्र नम्बर 17

किताबें कितनी भी हों पर मास्टर अच्छा न मिले, अच्छा स्कूल न हो तो सब बेकार है और हास्पिटल भी कितना सुन्दर क्यों न बना हो पर अच्छा डाक्टर न हो तो वहां की दवाइयां भी बेकार हैं। इसी प्रकार कापियां पुस्तकें टेपस आदि भी कुछ फायदा न करतीं यदि सामने समझाने वाला न होता तो सारी मेहनत यहां पर गुरु की है वो तो हमारी जमीन भी तैयार करता है फिर प्रेम से मधुर मुरली बजाकर बीज डालता है और फिर रोज उसकी देखभाल करता है। बीज फल आने तक इन्तजार करता है। सचमुच हम तो कहते हैं गुरु ना मिलता तो आज सब कहां पहुंचे होते।

जो निष्काम में हो गया वो कभी अकेलेपन का अनुभव नहीं करेगा। आज सुबह अष्टावक्र गीता यहां पर शुरू की गयी। अष्टावक्र में भी जनक की नम्रता पहले दिखायी है कि कैसे दंडवत प्रणाम अष्टावक्र को करता है। गुरुको अपना तन-मन-धन सौंप देने से ही फायदा होता है। मन में एक भी बात छिपी है। माना हमने अभी उसे गुरु नहीं समझा। केवल कोई सत्संग में आ गया इसका मतलब ये नहीं कि वो शरणागत हो गया या सत्संगी हुआ पर पूरी तरह से गुरु की आज्ञा पर चले। तन-मन-धन वाणी गुरु को देकर ही सारे बन्धनों से मुक्त हो सकते हैं।

'पानी भरे पनिहारिया रंग बिरंगे घड़े।
भइया उसका जाणिये जाका तोड़ चढ़े।।'

तोड़ तक जो निभा सके, मन में गुरु के अलावा किसी को भी स्थान न दे तब तेलधारा वत कनैक्शन गुरु से जुड़ता

है और हमारी उन्नति होती है। माया छूटती है एक बाजू हो जा बीच सड़क पर न चलो नहीं तो धूल आकर मुंह में पड़ेगी। मन में एक निर्णय लेना पड़ता है कि मुझे क्या चाहिए। माया या भगवान् और यदि भगवान ही प्रिय है तो सोने के हिरन रूपी माया की ओर न देखो। जब तक राम तेरे मन में बसता है तब तक रावण नहीं आ सकता पर जब राम को हृदय से निकालते हो तो भी यदि लक्ष्मण यानि संयम सत्संग का पहरा है तो भी रावण कुछ न करेगा पर यदि उसे भी हटा देती तो सीता हरण हो जाएगा और रामचन्द्र को नये सिरे से मेहनत करनी पड़ेगी।

'जांके प्रिय ना राम विदेही तीजए ताहि।
कोटि वैरी सम यद्यपि परम सनेही।।"

पत्र नम्बर 18

अपने तन का मन का धन का दूजो को दे जो दान वो सच्चा इन्सान अरे इस धरती का भगवान। आज भी निष्काम जीवन पर ही सत्संग चला। एक-एक श्वास हमारा इसी कार्य मे खत्म हो जाए। गुरु ने इसीलिए ही फ्री किया है। एक शेर जंगल का राजा है एक शेर पिंजरे में कैद है तो दोनों में फर्क है- एक तो गुलाम व दूसरा राजा है। **Free** हैं ऐसे ही पहले ही ब्रह्म हरेक था पर था देह के पिंजरे में, गुरु ने एक-एक को देह के पिंजरे से आजाद किया तो बाहर के सकामी बन्धन भी स्वतः ही टूट गए और आजाद पक्षी हो गए। भीतर बाहर की मुक्ति व सच्चा आनन्द मिला। अब तो इस जीवन पर पूरा-पूरा हक उसी का है जिसने इस जीवन को बचाया है। बनाया है। संवारा है। बाकी तो दुनिया में सभी ने खराब कर दिया था विकारों में फंसा कर। सच्चे प्रेम का भी किसी को पता नहीं था। सभी केवल अपने सुख के लिए ही जीते थे आज गुरु ने नम्रता प्यार सिखाके जीवन मुक्त बना दिया। एक गुरु के आगे झुकना सरल था पर गुरु के भक्तों के चरणों की धूल हो जाए। चरण धूल तेरे जन की होना। नम्रता में अमरता है। ज्ञानी तो रहदा ज्ञान में।

"इन्दो न देह अभिमान में"। फिर निष्कामी होकर सबको आनन्द देकर भी कहा नहीं कि मैंने दिया गुरु के आदर्श से ही अपना जीवन बनता है।

पत्र नम्बर 19

सत्संग से ही सारे सकामी बन्धन टूटते हैं। माया में दुख सुख उतार चढ़ाव आते हैं। परन्तु ज्ञानी तो दुख सुख दोनों सम कर जाने वाली स्थिति में रहता है। सत्संग में अपनी जड़ मजबूत होती है फिर पेड़ अपनी छाया सभी को दे सकता है। विक्षेप रहित हो जाओ। दूसरा नहीं वरन अपना आप करके देखो। मैं ही तो हूं। अब तो कहणी से अधिक रहणी पर जोर देना है। ज्ञान मेरे **Practical** जीवन में लग जाए। तन मन स्थिर हो जाए। निराधार निरबंधन निर्वासनिक होकर रहे। बंधन सब कल्पित है। तुम आत्मा एक रस है।

पत्र नम्बर 20

जब तुमने एक बार कह दिया भले बुरे हम तोरे तो बस इसके आगे फिर मन की क्या मजाल है जो तुम्हें तंग कर सके। सब अवगुण समेत ही तुम हमारे हो तो उन्हें दूर करना, मैले कपड़े को उज्जल करना तो हमारा ही काम है, उसे चाहे जैसे भी करे। धोबी चाहे कपड़े को पीटे या भट्टी में चढ़ाए यह तो उसके हित में ही होता है ना। दवा चाहे कड़वी हो पर पीनी तो जरूर ही है क्योंकि पुराना रोग ही तो ऐसे तो जायेगा नहीं पर सहना भी तो आपको नहीं है क्योंकि यदि आप ध्यान से देखेंगे तो वहां अपनी जगह मुझे ही पायेंगे। आपकी मैं तो कब की गल गई। गुरु के डारे तेरा आना ही बहुत ही बोल कि ना बोल पछताना ही बहुत है। बस जब एक बार पश्चाताप के आंसू निकले। तो सारी कालिमा धुल गई। अन्दर ही सफाई हो गई। गिन्नी मटर में गिरी हो तो भी उसका मूल्य तो कम होता। हीरा कभी मैला नहीं होता तू भी शुद्ध ब्रह्म स्वरूप है। जिसमें मैल तीनों कालो में नहीं है। सूर्य में अन्धेरा नहीं है। थोड़ी देर के लिए भले ही बादल सूर्य को ढक ले परन्तु उसे कभी निगल तो नहीं सकते। बादल आए और चले गए। परीक्षा आई और एक क्लास ऊंचा देकर गई। इसमें इतना परेशान होने की क्या जरूरत है? **Failures are the Pillers of Success**

गिरना ही तो चढ़ने की निशानी है।
'गिरते है शाहे सवार मैदाने जंग में,
वो क्या गिरेंगे जो चलते ही घुटने के बल हैं।

चीटी हजार बार गिरती है फिर चढ़ती है परन्तु कभी

हिम्मत नहीं हारती है। हिम्मते मरदा ते मददे खुदा। हम आप सभी मिलकर इस मन अहंकार को भगायेंगे तो भला कहाँ रह पायेगा? तुम अकेली तो शायद न कर पाओ पर जब ऐसा परम सहारा मिला है तो उसे क्यों छोड़ती हो? सत्सगं ही तो साधन है। हमारा विश्वास तुम्हें गिरने नहीं देगा। माया से खींच निकलेगा। यह सच है कि कभी-कभी मन अपने आप झुकनें में अनाकानी करता है तो भी यही पुकारता है कि हाथ पकड़ कोई मुझ अंधे को प्रभु की ओर झुकाये रे, कोई ऐसी आग लगाये। ये तन मन जीवन सुलग उठे। हरि का हो सो रह जाए और मेरा सब जल जाये रे ना मैं हूँ ना मेरा ही रह जाये। शुद्वता भी गुरू के पास होगी अपने आप से मन को यदि बनना होता तो गुरु की आवश्यकता ही क्या रह जाती। हम मैले तू उज्जवल करता। पानी के बहाव में ही मैली टोकरी भी साफ होती है। सोना आग में पड़कर और भी अधिक चमकता हैं। अपनी चमक का अपने मूल्य का सोने को या हीरे को पता नहीं होता उसे तो सुनार या परख वाला ही परख सकता है। गुरु ही हमारी परख करके सारे विश्व से चुनकर निकलता है। गुरु की कैद से तो जमानत देने पर भी नहीं छूट सकते। माया के बंधन तो गुरु छुड़ा देता है पर गुरु के बंधन से कोई भी छुड़ा नहीं पायेगा।

'बड़े बढ़ाई ना करे, बड़े ना बोले बोल।
रहिमन हीरा कब कहे, लाख टका मेरा मोल।।''

आप सोचते हैं केवल आपको ही हमारी जरूरत है पर आप नहीं जानते कि ऐसे प्रेमी की आशिक की तलाश तो स्वयं प्रभु को भी है। वाहे लागा हरि फिरे कहत कबीर, मन शुद्ध

भी गुरू के प्रेम में ही होता है। गसत गसत गस जाये। अहंकार की तरफ ध्यान ही न दो। इसको जितनी महमानी खिलायेंगे उतना ही यह हावी होता जाएगा, पर इसकी **Value** नहीं करेंगे तो अपने आप ही चला जायेगा। मन की तरंगों को केवल देखना है उनमें डूबना नहीं है। द्रष्टा साक्षी होकर रहो। सागर में डूबना नहीं है। केवल किनारे से उसकी शान देखो, मन नट भी राजा की प्रसन्नता के लिए दरबार में आकर नाचता है पर क्या मन राजा के लिए ये उचित है कि वोइस नट के साथ नाचना शुरू कर दे। मन के साथ नाचना कहां तक शोभनीय है। मन की तरंगे मोड़ लो बस हो भजन, तू शक्तिशाली है मन तेरी ही उधारी शक्ति लेकर तुम्हें तंग कर रहा है पर बहादुरी इसी में है कि उसकी एक भी चलने ना दो। इसकी हरकतों को पहचान जाओ और उसको अपने ऊपर हावी मत होने दो। यह बीच वाला सदैव गुरू से दूर करने के उपाय सोचता रहता है **Pretendar** है। इसके आधीन नहीं होना है। 'मन जीते जग जीत'

'मन के हारे हार है मन के जीते जीत
परमात्मा को पाइये को पाइये मन ही की परतीत।

मन को हराना है आत्म विश्वास पैदा करना है। विवेकानन्द ने कहा है - यदि मुझसे पूछते हो कि पाप क्या है? तो मैं कहूंगा कमजोरी। बहादुर होकर जिओ कमजोरी तो मौत है और फिर तेरा गुरू शेर है तो शेर का बच्चा गीदड़ या कायर तो नहीं हो सकता। बस अपने को शुद्ध रूप जानो और इस झूठे मन की किसी बात का ध्यान ना देकर इसे सत्संग के किले में बन्द कर दो।

पत्र नम्बर 21

तुम सब हमारे प्यारे दादा के महकते फूल हो गुरू ने अपने प्यार से सबको सींचा है। जिन प्रेम कियो तिन ही प्रभु पायो। प्रेम बिना थोथे सभी ज्ञान ध्यान जाप ताप व्रत नेम। सारी दुनिया कर्म कांड भक्ति पूजा पाठ में लगी है। द्वेत की भक्ति सब कर रहे है भगवान को अपने से भिन्न जानते है पर यहाँ गुरू अद्वेत मत सिखाता है कि ये सब कर्म द्वेत में होते है जब हैं ही एक ब्रह्म तो फिर कौन ध्यान करें और किसका करे। पूजा पाठ भी भगवान को अपने से अलग जानकर होते है। पर मूर्त में भी फूलों भी वही एक ही शक्ति है तो क्या चढ़ाए किस प्रकार चढ़ायें? तुझ बिन कोई दूजा नाहीं तू ही हर जगह। नाम रूप नाश है ब्रह्म का प्रकाश है। जो दीसे सो चलणहार। कोई बोलता है मैंने रोशनी देखी तो फिर कहां गई? सिमरन किया थोड़ी देर मन एकाग्र हुआ और फिर वैसे ही सारे विकार आ जाते हैं। यहां पर गुरु हमें विचार देता है जिससे हम अपने एक-एक ख्याल को काट सकते हैं।

ज्ञान अंजन गुरु दिया, अज्ञान, अंधेरा विनाश। गुरु से हमें शक्ति मिलती है तो हम सारी माया को काट सकते हैं। हरेक कर्म से पहले ज्ञान ज्योति की आवश्यकता है और फिर ज्ञान भक्ति एवं सच्चा निष्काम कर्म ये अलग भी नहीं है। ज्ञान में भी आपा मिटाना है भक्ति में भी भक्त कहता है तू ही तू है मैं नहीं हूं। उसमें भी अहम घुलता है पर यह भक्ति भी सगुण हो याने सामने भगवान हो, साकार सत्गुरु की भक्ति में ही यह अहंकार जाता है या किसी का बनजा या किसी को अपना बना ले। किसी एक को तो प्रेम में ये सिर देना ही पड़ेगा। जिन इश्क में सिर ना दिया जुग-जुग जीया तो क्या

किया? निष्काम प्रेम में भी मेरे मैं मेरे के सिवाय इच्छा अहंकार से रहित कर्म ही सही कर्म है पर यह सब तो यहां गुरु के पास ही सीखते हैं। पहले गुरु के प्रेम में आगे बढ़ते हैं और फिर गुरु से ज्ञान मिलता है उंसके अनुसार फिर निष्काम कर्म भी गुरु ही कराता है कि आप झपै और नाम झपावे, सुनत कहत रहत गत पावें।

गुरू ही हमारा अहंकार पकड़ भी सकता है। ज्ञान के सिवाय तो हर कर्म इच्छा व अहंकार से भरा हुआ है क्योंकि करने वाला ही अहंकारी है। तीर्थ तप और दान करे मन में ध ारे गुमान नानक निष्फल जात है ज्यों कुंचर स्नान। कोई फल नहीं मिलता फिर सत्कर्म सोने की बदकर्म लोहे की जंजीर है। आपस को जो भला कहावे तिसहि भलाई निकट न आवे पर आपस को कुछ न जनावे सो पंडित फिर जून न पावे। जो जाने में कुछ करता तब लग गर्भ जून न में फिरता। जब ये जाने मुझते कुछ होय तब इस कहुं सुख नाहीं कोय। पहले गुरू **Right Man** यानि निर अहंकारी बनाता है फिर हर कर्म अपने आप अच्छे होतें है। **Don't do good but see hered** हर बात में अच्छाई देखो।

पत्र नम्बर 22

लगन में अगन रहेगी तो हमारी सच्चाई हमें जरूर एक दिन बढ़ायेगी। जब अन्तकरण पूरी तरह खाली हो जाती है तो ही सत्य का दीदार होता है। बांसुरी खाली हुई तभी कृष्ण के होंठों तक पहुंची, मन को सही राह मिल गयी अब और क्या चाहिए। गुरु कृपा, ईश्वर कृपा अपनी कृपा तीनों ही तेरी हो गई हैं। गुरु के प्रेम में बाहरी बंधन भी टूट जायेंगे। प्रेम और एकता से ही यह सुन्दर बगीचा खिलता है। कांटों के बीच ही गुलाब खिलता है। तेरा मेरा प्यार तो सदियों का है कोई आज का नहीं है सूर्य केवल बादलों से ढक गया था। बादल हट गए तो ज्यों का त्यों भरपूर। बस अब ये बात सदैव याद रखो कि बीच वालों की बात पर कभी विश्वास न करना और अपनी प्रीत कम न करना, लाख कोस साजन बसे तो भी हृदय में हुजूर, डारे पे दुर्जन बसे तो भी लाख कोस ही दूर।

तुम कहीं भी हो हमारे पास हो हम तुम्हारे पास ही केवल मन के कहने में मत आना। मन का एक-एक ख्याल गुरु को बताना तेरा मालिक जब तेरी फ्रिक कर रहा है तो तुम्हें कुछ भी सोचने की क्या जरूरत है। सच्चाई की सदा ही जीत होती है। अन्दर की तार और मजबूत करो।

आप झपे औरा नाम झपावे सुनत कहत रहत मन पावें।

गुरु सबको एक सूत्र में बांध देता है। सूई जोड़ने का काम करती है तो हमेशा दर्जी की टोपी में लगी रहती है। कैंची काटने का काम करती है तो जमीन में रुलती रहती है। तुम भी सभी टूटे हुए दिलों को मरहम लगाओ।

पत्र नम्बर 23

अपनी अपनी श्रद्धा विश्वास से हरेक इस राह पर आगे बढ़ता है। निष्काम कर्म का फल ही है निष्काम जीवन। निष्कामी के सामने निष्काम कर्म आपे ही आता है। उसी से ही सकामी बंधन टूटते हैं यह जीवन मिला ही है प्रभु पाने के लिए और यही संदेश सबको देने के लिए।

और काज तेरे किते न काम।
मिल साध संगत भज केवल नाम।।

इसी कार्य में रहने से मन के छोटे मोटे विकार अपने आप नष्ट हो जाते हैं। तुम रोशनी करो तो अन्धेरा आये ही चला जाएगा। अन□ीरे को निकालने का यत्न नहीं करना है। गुरु के मिलने से जीवन ही सबकी बदल गई है। गुरु के स्पर्श मात्र से तुम आप समान हो गए हो। अब सारी शक्ति तुम्हारे अन्दर आ गई है क्योंकि तुम गुरु से मिलके एक हो गए हो। हर वक्त मौज में जीवन बिताओ। गुरु की मेहनत को सफल करो। देह में सब विकार ही पर तू देह नहीं है। कर्मों से छूट जाओ। अहंकार व इच्छा से रहित हो जाओ। सारा पिछला जीवन भूलाके आज से नया जीवन शुरू करो। हर दिन समझो केवल आज का दिन ही है। रोज व रोज लगन बढ़ाते चलो, लगन में अगन बढ़ जाए जो सारे विकारों को भस्म कर देती है।

हरि का हो सो रह जाए, मेरा सब जल जाए रे। तन रूपी यन्त्र को गुरु के मैं ना के मन्त्र से वश करो। मन की गति पानी की तरह नीचे की ओर है पर उसे ऊपर चढ़ाना होता है तो पाप से ऊपर चढ़ाते हैं। ऐसे ही मन को ऊपर चढ़ाने के लिए गुरु की महर चाहिये।

पत्र नम्बर 24

सदैव अपने सच्चे स्वरूप में स्थित रहो। क्योंकि उसके सिवाय कहीं भी आनन्द नहीं है। कितने भी साधन यत्न करो परन्तु जब तक प्रकाश न हो अंधेरा नहीं भाग सकता। 'ज्ञान अंजन गुरु दिया अज्ञान अंधेर विनाश।' सच को जानो सच ही तुम्हारा मुक्ति दाता है। ज्ञान केवल बोलने का नहीं है पर समझने का व उस पर चलने का है। **Knowledge without character is for evil only**

और उपदेशे आप न करे तो आवत जावत जन्मे मरे। सबसे आसान ही सलाह देना व कठिन ही उसपर चलना। पेड़ को जितना ऊंचा उठना होता है उतना ही उसको अपनी जड़ें गहराई तक पहुंचानी पड़ती है। वरना थोड़े ही आंधी व तूफान में विचलित हो जायेगा गिर जायेगा। अपने आप को मिटाते जाओ।

मिटा दे अपनी हस्ती को अगर तू मर्तबा चाहें। दासों के दास बन जाओ। सिर को तू पांव बता ले। अपने सुख व स्वार्थों की गठरी को समुद्र में फेंक दो निस्वार्थ जीवन जीना सीखो मैं मेरे से जो जुदा है वही सर्व की सेवा कर सकता है। सारी माया का बहाव हरेक को बहाता जा रहा है। संत लोग पुकार-पुकार के वापिस बुलाना चाहते हैं पर वे तो सभी मेंढक की तरह माया से **Adjust** करने में लगे हैं।

आखिर पानी गरम हो जायेगा और उसी में सिमट जायेंगे। परन्तु निकलेंगे नहीं। सभी कहते हैं अभी-अभी तो नयी रोशनी देखी है। जैसे एक पागलखाने में आग लग जाने पर वे पागल छत पर चढ़ गए वहां के इन्चार्ज ने जब उन्हें

उतरने को कहा तो बोले अभी जल्दी क्या है अभी-अभी तो हमने नयी रोशनी देखी है। अभी हम नहीं उतरेंगे। इसी प्रकार सभी सोचते हैं अभी-अभी तो हमने नयी शादी की है अभी तो बच्चे छोटे-छोटे हैं। अभी-अभी तो नया बंगला बनाया है फिर कोई कहेगा। अभी तो हम छोटे हैं परन्तु काल मनुष्य के सिर पर खड़ा हुआ उसे पुकार रहा है। विकारों की आग चारों ओर लगी हुई है। हर वक्त ईर्ष्या हसद साड़ की आग से परेशान हो रहे हैं परन्तु तो भी नहीं सोचते हैं कि हम इस आग से कैसे बचे। कभी खुश हैं कभी सुखी हैं कभी दुखी हैं परन्तु तो भी सच की राह पर चलते नहीं जिससे सदैव सुखी हो जायें। बस यह ज्ञान ही हर मुश्किल को आसान करने वाला है। हर समय प्रफुल्लित रहना यह ज्ञान ही सिखाता है।

पत्र नम्बर 25

तुम सबकी मेहनत से ही यह ज्ञान का उपवन लहलहा रहा है। सूरज रे जलते रहना करोड़ों की जिन्दगी के लिए और फिर यदि सूरज न बन पाये तो भी दीपक बनकर जलता चल। प्यार दिलों को देता चल अश्कों को सावन भी तुम्हीं से मिलेगा सभी को अपने प्रेम से आगे बढ़ाते चलो इसी में सच्ची ख़ुशी है। प्यार व नम्रता ही जीवन के सच्चे गहने हैं। जो नम्र है वही इस राह पर आगे बढ़ सकता है। भले ही तुम्हारी गलती न हो तो भी झुक जाओ। तुम कहोगे मेरी तो किसी से दुश्मनी नहीं है परन्तु वो करता ही तो क्या करें? चाहे कोई भी करे पर तुम्हे मर मिट के भी उसके अन्दर अपने प्यार को पैदा करना ही है। और जितना समय उसके अन्दर प्यार न पैदा हो तब तक भी समझो तुम्हारे कर्म कट रहे है। यहाँ पर हर पल गुरू हमें अन्दर से बदलता रहता है। गुरू का आदर्श ही हमारे लिये ऊँचा आदर्श है तो हमे **charge** करता है। **'Guru attracts, inspire then transforms** हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा देकर पूरी तरह बदल देता है। आज यदि पुराने संस्कार व आदतों को न बदला तो जीवन में फिर कभी भी बदल नहीं पायेंगे। 84 लाख योनियों के संस्कार मनुष्य के अन्दर है। कभी वो शेर की तरह दहाड़ता है तो कभी भौं-भैं करता है कभी बिल्ली की तरह सूंध-2 के प्यार करता है कभी सांप की तरह फुंफकार मारता है पर जब गुरू के पास आता है तो गुरू उसे पहले मनुष्य फिर भगवान बना देता है। सारी माया से आराम कर देता है। सन्त करें आप समान पारस तो लोहे को केवल कंचन ही करता है। तुम गुरू की शरण पकड़ते हो तो **one way trafic** की तरह प्यार करते चलो, मांग

नही रखो **Love wins the love**। प्रेम दातार ही वह मांगता फकीर नहीं है। अपने ऊपर आशिक हो जाओ। जब तुम अपने अन्दर वाले भगवान को न पहचानकर बाहर सारी दुनिया पर आशिक होते हो तभी तेरे अंदर की बत्ती बुझ जाती है। मन की मशीन जरा सी बिगड़ती है तो सारे विश्व में अन्धकार दिखाई पड़ता है। यहां गुरू हमारे अन्दर की बीमारी पकड़ के उसका सही इलाज सही समय पर कर देता है। एक कारखाने की मशीन चलते-2 रूक गयी एक बाहर का इंजीनियर आया उसने एक पेंच टाईट किया तो चल पड़ी बोला इसका 1000 रू, 15 पेंच टाईट करने का और 999 यह जानने के कि कौन सा पेंच खराब है। गुरू हमारे **effeciency expert** है। इसलिये उसके ऊपर तन मन धन भी वारे तो भी कम है। कल जीवन का अर्थ चला जीव + न जहाँ जीवभाव न रहे तो सच्चा जीवन शुरू होता ही और मदन मोहन याने मद न हो और मोहन हो तो तू स्वंय मदन मोहन है। हरेक पल खुद को सावधान रहना है। मोह तो जन्म मरण के चक्कर में रूलाने वाला है। गुरू राग द्वेष से आजाद करके जीवन मुक्ति का आनन्द दिलाता है।

पत्र नम्बर 26

आज स्वंय में बात चली निंदा के ऊपर कि एक निंदा हुयी मीरा की जो सत्य की राह पर बढ़ी उसे दुनिया वालों ने कहा - संतान संग बैठे-बैठे लोक लाज खोयी - बोली मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरों न कोई। फिर सास ने कुल नासी भी कहा - लोगो ने बांवरी भी कहा परन्तु फिर भी आज हम उसकी ये निन्दा आदर सहित भजनों के रूप गाते हैं। परन्तु एक निन्दा गलत राह पर जाने से भी होती है तो उस निन्दा से मौत भली है। ज्ञानी वैसी निन्दा नहीं करवाता परन्तु यदि सत्य की राह पर कोई उसे कुछ कहता है तो उसे उसकी परवाह नहीं रहती क्योंकि **Claverst Man** वही है जो वो करता है जिसे वो सही समझता है। तर्क वितर्क में अपनी शक्ति नहीं गंवाता। सभी के आगे अपने को सही सिद्ध करने में शक्ति जाती है। क्योंकि अगले भी अपने को उतने ही **Force** से अपने को सही साबित करना चाहतें है। इसलिये ज्ञानी अपने निश्चय में अडोल होकर चलता है फिर न मन की न बुद्धि की सुनता है और करके पश्चाताप भी नहीं है कि ऐसा क्यों वैसा क्यों जो गुरू के प्रेम में उसकी आज्ञा से हो गया सो सही है। एक बार पश्चाताप करता ही कि माया में इतना समय क्यों गंवाया। अब लौ नसानी अब न नसैही। राम कृपा से ही यह कार्य होता है बस अब जाग गये हो तो अब न सोना। हर समय अपने स्वरूप की स्मृति में रहो। अभी भी अपने से पछो माया के कामो को अधिक **value** देते हो या भगवान को। यदि भगवान को तो तुम्हारी सच्ची प्रीति है।

पत्र नम्बर 27

प्रेम में ही सब विकार खत्म होते है। प्रेम में ही निर्भयता है। जो मैं हूं सो तू है, जो तू है सो मैं हूँ। बस निराकार से साकार भगवान होता है हमारे अंधकार को दूर करने के लिये। जब-जब मैं कुछ भूल गयी थी तुमने आके संभाला - गुरु ही हमें सर्व से एक सा प्यार करना सिखाता है। गुणों को ठुकराया करते अवगुणों से प्यार है, ये ही तो आद्य भली ही मेरे कृष्ण मुरार में। बीमार को ही तो डाक्टर ठीक करता है। वैश्या ने जब अपने आंसूओं से क्राइस्ट के पांव धोये तो लोगों ने ऐतराज किया लेकिन क्राइस्ट ने कहा यदि तेरे किसी के पास 500 रू. उधार हैं और किसी के पास 5 रू. और दोनों डूबे हुये थे पर अब उसे वापिस मिलते हैं तो उसे किसकी खुशी होगी। 500 वाले की ही तो होगी इसी प्रकार जिसने अपनी सभी भूले आकर गुरु को बता दी और अपने सब कर्म धो लिये तो वो ही महान है। बस आगे से फिर कभी भूल नहीं होवे। कभी भी गुरु को मनुष्य करके न देखे। 'गुरु को मानुष जानते जन्म-जन्म होवे स्वान'।

गुरु ब्रह्म, गुरु विष्णु ...? नारद को भगवान ने कहा - गुरु मानने के बाद संशय न रखना।

जिसे केवल भगवान चाहिए उसे मिल जाता है। तड़फ हो और भगवान न मिले ऐसा नहीं हो सकता है। किनका एक जिस जीव बसावे ताकी महिमा गनी न जावे। भगवान भी भक्तों की माला फेरता है। भगवान तुम सबका गुण देखता है। तुम यहां भी अवगुण देखता है पर हम तो देखते हैं कि कैसे ये सारी माया छोड़ के इधर आए हैं। कितना प्रेम है। तुम

अपनी नजरें नहीं बदलेगा तो सुखी न होगा। तुम हरेक में एक ही आत्मा देखो। सब रूप भगवान के ही हैं निराकार रूप तेरा साकार सृष्टि सारी सुदामा को पत्नि ने कहा कृष्ण के पास जाओ, कृष्ण ने ऐसे गरीब को भी प्यार किया। अपने आसूंओं से उसका चरण धोया। और उसकी बहुत इज्जत की। उसकी पोटली को प्यार से खींच के खा लिया तीनों लोकों का राज्य ही उसे दे दिया। गुरु भी हरेक को भरपूर करके भेजता है।

माया अपने मालिक को खुश नहीं कर सकती है। उसके बंगले का सुख दूसरे लोग लेते हैं। तुम्हारी जड़ माया तुझ चेतना आत्मा को खुश नहीं कर सकती है। दुख को भुलाने का तरीका केवल गुरु के पास है। आनन्छ व शक्ति का कैप्सूल गुरु के पास ही है।

पत्र नम्बर 28

पहले तो रहणी होनी चाहिए तभी हमारी वाणी का किसी के ऊपर भी असर होगा। हमारे दादा ने जो कहा वैसा होकर भी दिखया। कथनी करनी में यदि फर्क होता तो आज हम सबका जीवन भी अनुभवी न बन सकता पर आज एक-एक को दादा भगवान ने हर दुख में ऊंचा उठा दिया है। भले ही यहां की भाषा साधारण बोलचाल की भाषा है तो भी अनुभवी है इसलिए अच्छी लगती है। ब्रह्मश्रोती व ब्रह्मनेष्ठी गुरु से ही हरेक का उद्धार होगा। गुरु के पास ही हमारा अहंभाव जीवभाव मिटता है। गुरु भिड़के तो मीठा लागे, गुरु बख्शे तो गुरु बडियाई। दुनिया के लोग कहते हैं प्रभु तेरे अवगुण स्थित न धरो पर सच्चा भक्त कहता है।

पत्र नम्बर 29

हमेशा मन को पता रहे कि मेरा धणी साई कोई तो है। मन तो सदैव सुस्ती दिखाता है। ज्ञान की जरूरत भी हरेक को है पर साथ में सुस्ती भी है, इसलिए ही कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि आलस्य को जीतने वाला बनो। सत्संग का नियम शुरू हो जाना चाहिए। सभी अन्दर के संकल्प काम करते हैं। गुरु करें आप समान। दादा भगवान ने एक-एक को जीवन मुक्त बनाया है। हरेक में उन्हीं की आवाज गूंज रही है। इसलिए वो आज भी है। संत अपनी खुशबू सब तरफ फैला के जाते हैं। आज याद तो राम को भी किया जाता है तो रावण को भी दोनों के भावों में कितना अंतर है। रावण की फोटो कोई भी अपने पूजा ग्रह में नहीं लगाना चाहता। तो हमारे जीवन की सुगंध भी चारों ओर फैले। गुरु के पद चिन्हों पर चलकर ही जीवन सफल हो सकता है। कल सत्संग में एक बात चली कि खुश रहने का नुस्खा क्या है? उसमें बताया पहले जरूरी ये जरूत बात है 2 कप लबालब भरे हुए धीरज। हर बात के लिए धीरज बहुत जरूरी है।

काली सींचे सो घड़ा ऋतु आए फल होय' बीज को बोकर भी धीरज से छोड़ देना पड़ता है। समय से ही तो अंकुर निकलेगा। हरेक के बंधन भी धीरज से ही करे हैं। दूसरी बात थी कि प्रेम से परिपूर्ण हृदय, प्रेम से ही परमात्मा का दीदार होता है। तीसरी बात - थोड़ी सी कुर्बानी। सभी के लिए पहले गुरु ने कुर्बनी की है तभी ही आज उसको सच्ची खुशी है। चौथी बात समझदारी भरा मस्तिष्क यानें जहां से और जैसे गुरु बात करता है उसको कैच करने की कोशिश करें। पांचवी - दोनों हाथ उदारता से भरे हुए व करुणा। इन सबको नम्रता के चम्मच से घुमाना है! याने सभी को प्यार व एकता में हम नम्रता के द्वारा ही बांध सकते हैं। इन सब को करने के लिए आत्म विश्वास चाहिए। और फिर पूरा जीवन पर्यन्त ये गुण अपने में अपना ले तो कभी दुखी हो नहीं सकते। फिर जब ये खुशी के नुस्खे से डिश तैयार हो जाये तो उसको सेवा करो मिल बांट के खाओ तो और भी ज्यादा मजा है।

पत्र नम्बर 30

तुम सब इतने तो हरदम याद हो कि कभी भूलते नहीं। भला अपने अंग भी कभी भुलाये जा सकते हैं। तुम सब भी सभी के अंदर प्रेम विश्वास व उमंगों को जगाओ तो यह रास्ता किसी को कठिन नहीं लगेगा ये सिद्धक वाला भजन है ही ज्ञान के बाद। जब कोई यहां आता है तभी तो सुनता ही है और फिर समझ तावे यह सभी को ही है कि सत्य की राह पर ध्रुव प्रहलाद सीता सभी के ऊपर कष्ट आए प्रभु का अगाध प्रेम था तो विचलित नहीं हुए और यदि कोई डरे तो वो प्रेमी कहां हुआ वो आज नहीं तो कल भागने वाला ही होगा। प्रेमी को तो जब तक कसौटी पर कसा जाता है तो वो और ज्यादा चमकता है। प्रभु अपने प्यारों को दुख, गरीबी, निंदा तीन मिठाइयां देता है अपने करीब करने के लिये। मतलब भक्त दुखों व तकलीफों से घबरा कर यह रास्ता छोड़ नहीं देता है। एक सोल्जर जो सेना में भर्ती होने जा रहा है क्या उसे यह भी ख्याल नहीं रहता कि कभी न कभी तो उसे लड़ाई में जान देनी ही है। शहीदी हासिल करनी ही है और फिर इस जीवन को रखने से मिलना भी क्या है? एक फूल आखिर डाल पर भी तो मुरझा ही जायेगा तो क्यों न प्रभु के चरणों पर चढ़ जायें तब तो इसकी कुछ सार्थकता है वरना दुनिया में भी सभी को कम परीक्षाएं तो नहीं हैं कहीं भी फूलों की सेज तो बिछी नहीं है प्रभु के प्रेम से तो बड़े दुख भी सताते नहीं है। क्राइस्ट ने बोला जो अपना जीवन सर्व के हित में खो देगा वा पा लेगा और जो बचाना चाहेगा वो खो देगा।

पत्र नम्बर 31

पुरूषार्थी कहता है मैं समुद्र पी सकता हूँ, पर्वत से नहरे निकाल सकता हूँ पर असत्य के आगे झुक नहीं सकता। स्वामी रामतीर्थ ने कहा है कि नसीब उसका गहरा दोस्त है जो उससे मूँह मोड़ता है अर्थात् प्रारब्ध पर न रखकर पुरूषार्थ करता है। हे राम जी पुरूषार्थ तेरा देव है। पुरूषार्थ माना ही पुरूष अर्थ। वशिष्ठ मुनि बार-बार रामचन्द्र से कहते है कि देव-देव आलसी पुकारे। पिछले जन्म का किया हुआ पुरूषार्थ ही आज की प्रारब्ध बनती है पर जैसे बूढ़ा व जवान कुश्ती लड़े तो जवान ही जीतेगा तो प्रारब्ध बनती ही पर जैसे बूढ़ा व जवान कुश्ती लड़े तो जवान ही जीतेगा तो प्रारब्ध तो हुई बूढ़ी और पुरूषार्थ है जवान जो आज का तीव्र पुरूषार्थ कल की प्रारब्ध ा के असर को भी मिटा सकता है। वशिष्ठ मुनि कहते है कि दांत से दांत भींच कर और दसो नाखून का जोर लगाकर भी हे राम जी इच्छा को वश नहीं तो ये इच्छा ही ऐसी बली जो घुमाती है गली-गली, इससे तो ही मौत भली, ये मन में मचाती है खलबली इसलिये गुरू ने भी कहा है कि इच्छा मात्रम् अविद्या। इच्छा ही सब्र अनर्थों की पापो की जड़ ही इच्छा त्याग तो मिले भगवान। एक **Paint** है कि प्यारे-कप में गिरकर तो कदाचित् गिरना संभव नहीं भी हो परन्तु किसी भी प्यारे में अटकने पर या इच्छा रखने पर दुःख न मिले यह असंभव है। तुम सुख स्वरूप होकर दूसरों से सुख की आशा रखते हो पर दुख ही दुख ही सुख लेने में और सच्चा सुख ही सुख देने में पर मनुष्य इच्छा वाला सदैव सबसे चाहता है पर देता नही। है। आज भी सत्संग में सात किस्म के कंजूसों की बात चली, धन के, प्रेम के, सेवा के, मुस्कराने के, शुकराना मानने के, आनन्द अनुभव करने के स्वंय भगवान होते हुए भी भगवान मानने के ऐसे ये सभी कंजूस है जो केवल लेना जानते है पर देना नहीं। दातार का हाथ सदैव ऊपर और लेने वाले का हाथ सदा ही नीचे रहता है। दातार सदा खुश रहता है और लेने वाला सदैव दुखी।

पत्र नम्बर 32

जब विवेक की आंख खुल जाती है तो फिर सारी प्रकृति ही हमारे लिये शास्त्र बन जाती है। हरेक से शिक्षा लेना हमारा काम है। जब सीखने का भाव है तो हम हर चीज से सीखते हैं वरना तो गुरू से भी दोष दृष्टि हो जाती है। गुरू हमारे मन को मारता है तो हमारा मन गुरू के ही विरूद्ध हो जाता है। सत्य सरलता वाला ही आगे बढ़ता है। गुरू के प्रेम बंधे रहे यही हमारी ममता रहे। हर व्यक्ति ज्ञान तो लेना चाहता है परन्तु किसी के बन्धन में बंधना नही चाहता, बिना गुरू के भय के मन को किसी का डर नहीं होगा तो विकारों से नहीं छूटेगा। बच्चे को स्कूल में मास्टर का डर ही तो सुधारता है। होम वर्क करता है। वरना तो यह मन अपनी उदंडता से बाज नहीं आता। घोड़े की लगाम सदैव माकि के हाथ में होनी चाहिए। अर्जुन ने भी कम्पलीट किया तभी ज्ञान हुआ। मन मुझको दो। मन बेचे सत्गुरु के पास। जिना मन भय तिना मन भाव। बिना भय के हम आगे नहीं बढ़ सकते। गुरु के बताये हुए मार्ग पर चलने से ही हम सरलता से पार हो सकते हैं।

पत्र नम्बर 33

सच्ची दीवाली तो तब ही जब परमात्मा से दिल मिले नहीं तो दुनिया वालों का तो दिवाला ही निकला पड़ा है। हरेक दुखी लगा पड़ा है। मन किसी से नहीं मिलता पर यहां गुरु हरेक के अन्दर यह ज्ञान ज्योति ऐसी जलाता है तो वो बुझ भी नहीं सकती। गुरु पहले दिन तुम्हें कहता ही तुम अमर हो, अजर हो। करोड़ दिये हैं पर ज्योति एक है। कोई प्रव्रति मार्ग में है। जैसे राजा जनक ये कर्म करत निःकर्मों थे। दूसरे निवृत्ति मार्ग में जैसे शुकदेव आदि जिनके अंदर का अज्ञान पूरी तरह नष्ट हो गया है। जैसे बर्फ मे जल व्याप्त है ऐसे ही सर्व में पेखे भगवान हर चीज परमात्मा से पैदा हुआ है। पहले है जल-ऐसे ही पहले परमात्मा ही है। वेद शास्त्र भी यही बोलते हैं। सब धर्म में दोष है जैसे अग्नि में धुआं। क्षत्रीय का धर्म है लड़ाई करना। कोई भी मरता नहीं है ये ज्ञान अर्जुन को सुनाया। कसाई का धर्म है बकरा काटना। हरेक अपने धर्म में वर्तता हुआ भी परमात्मा को पा सकता है। सर्व कर्मान परितज्य सर्व धर्मान सन्यस्य, माम एकम् शखम् व्रज। तुम अगर मेरे को देह समझेगा तो अपने को भी देह समझेगा। तुम मेरे को क्या समझता है।

पत्र नम्बर 34

प्रेम एक तरफा होते हुए भी दो तरफा है। तुम्हारी अंदर की चाह व प्रेम गुरु से भी प्रेम खींच लेता है। कोई भी ना देने वाला है ना लेने वाला। आज सत्संग में किसी ने प्रश्न पूछा कि यह करने का अभिमान मन में उठे ही ना यह कैसे हो सकता है। इसका उत्तर था कि हर बात में बीच में भगवान को डालो उसकी सत्ता को पहचानो तो कभी भी हो मैं नहीं करोगे। तुमने क्या किया शरीर तो जड़ ही अंदर कार्य करने वाली है सत्ता ब्रह्म की, उसी को पहचानो और हठ छोड़ दो। मानुष यत्न करत बहु भान तिसके करतब व्रथा जान। अपनी कभी भी चलती नहीं पर फिर भी हठ व अहंकार से मनुष्य अपनी चलाता है। अपनी चलाना छोड़कर प्रभु के हवाले अपनी बागडोर कर दे तो बस उसके लि न अहंकार करने के लिए कुछ बचा न चिंता करने के लिए।

चिंता ताकी कीजिये जो अनहोनी होय। फिर दूसरी बात यह है कि भगवान को कभी भी तुम सलाह न दो कि यूं कर और यूं ना कर। पहले जब तक हम साकार से फिट नहीं होंगे तो निराकार से भी फिट नहीं हो सकेंगे। एक बार एक भक्त ने भगवान से कहा - मैं तुमसे विवाह करना चाहता हूं। भगवान ने कहा- अच्छी तरह सोच लो क्योंकि मेरे दो रूप हैं। सगुण व निर्गुण रूप, जब मैं सगुण रूप में रहूंगा तब मेरे कई भक्त होंगे कई प्यार करेंगे और शायद मुझे तुमसे बात करने का भी वक्त न मिले पर तो भी क्या तुम शिकायत नहीं करोगे? और फिर निराकार में तो केवल मैं ही रहंगा तेरा अस्तित्व ही न होगा क्या यह कबूल है तुम्हें। अगर तुम दुख

सुख में समान रह सको तो भले ही मुझसे विवाह कर लो। और दूसरी बात विवाह के बाद भले ही दोनों का अहंकार साथ नहीं चल सकता। एक को दूसरे की आज्ञा के आगे अपना अहंकार गवाना पड़ेगा, उसमें भी देखना पड़ेगा कौन गवां सकता है तो यह तो अक्सर स्त्री को ही पुरुष में अपनी इच्छा लीन करनी पड़ती है। सागर को लहर ने उत्पन्न नहीं किया है। प्रभु के कारण मेरा अस्तित्व है। मेरे कारण प्रभु का नहीं।

पत्र नम्बर 35

साहसी आदमी के लिए संसार का कोई भी काम मुश्किल नहीं है। आगे बढ़ा कदम, रूकना तेरा काम नहीं चलना तेरी शान। चल-2 रे नौजवान। छोटी-छोटी बातों को कभी महत्व न दो। सब ख्याल संकल्प कल तक के आज उड़ा दो। फिर देखो कितना मजा आता है। कोई भी राह में बाधा आये, उसका मुकाबला करो डरो नहीं। हालते सब धुएं का पहाड़ है। सभी उड़ जाने वाली है पर तू साक्षी चेतन ब्रह्म अजर अमर अविनाशी है। सदा एक रस गुरु हमें सच्चा मल्लाह मिला है जो सही तरह से हमें पार लगाता है। बिना मल्लाह के नाव भला किस काम की और अगर मल्लाह भी अधूरा नशई हुआ तो नाव को खूंटे से ही नहीं खोलेगा और नाव ही आगे नहीं बढ़ेगी तो पार क्या लगेंगे पर सच्चा नाविक हमारी जीवन रक्षा का पूरा भार संभालता है। और निर्विघ्न पार लगाता है। जो दिया देखता है वो जोत नहीं देखता पर जो जोत देखेगा वो कभी दिया नहीं देखेगा। एक दिये से हजारों दिये जल सकते हैं। गुरु ने तुम्हारी ज्योति जगाई है अब तुम सबकी जोत जगाती चलो। आप जपै औरा नाम जपावै, सुनत कहत रहत गत पावें। मन का धर्म है ख्याल करना पर तुम्हारा धर्म है मन से सदैव असंग रहना। ये ख्याल तुम्हें नहीं बांध सकते। अपने को ख्यालों की कैद से आजाद रखो और हर समय खुश रहो। आज ही का दिन जिन्दगी का है और वो मुझे बहुत खुशी से बिताना है। सोचना नहीं है। विचार नहीं करना है। पर हर हाल में राजी रहना है। हर वक्त परमात्मा तुम्हारे साथ है। कभी भी दूरी नहीं है।

पत्र नम्बर 36

प्रभु की असीम शक्ति तुम्हारे साथ है। अपने को कभी हद में न समझो बेहद के साथ जोड़ दो। सींग का सागर से कनेक्शन है तो सदैव पानी मिलता ही रहता है। अन्दर में परमात्मा के लिए प्यार दूज के चन्द्रमा जैसा बढ़ता ही रहे। अर्जुन को भगवान कहते हैं मन वश करना वास्तव में मुश्किल है तो भी अभ्यास और वैराग्य से यह मन शीघ्र ही वश हो जाता है। ये दोनों ही पंख हैं पक्षी के जो विराट की सैर कराते हैं। अभ्यास है कि मैं आत्मा हूं और वैराग्य है कि मैं यह देह नहीं हूं देह के साथ ही पूरी दुनिया भर के मोह व कनेक्शनस हैं। मैं नहीं तो मेरा भी कुछ नहीं फिर तो जगत के सब पदार्थ मिथ्या व नाशवान भासते है तो अंदर ही इच्छा का बीज भुन जाता है वैराग्य की भट्टी में फिर तो उसमें से अंकुर भी नहीं। निकल सकता। और फिर जैसे तवा गर्म हो तो चाहे कितनी भी रोटियां कोई सेंकता जाये तो सिक जायेगी पर अगर नीचे भट्टी से उतार दिया तो एक रोटी भी नहीं पक पायेगी, ऐसे ही मन को सदैव वैराग्य की भट्टी पर चढ़ा रहने दे तो भी आनन्द रूपी रोटी खा सकते हैं। भूल के भी माया को सत न समझें। आज छठे अध्याय का 10-11-12 श्लोक पढ़ा कि हरेक अपना मित्र अथवा शत्रु आप ही हैं। मनुष्य स्वयं को कभी भी अधोगति में न डाले इन्द्रियों के अधीन होकर। जीते हुए अन्तःकरण वाला ही हर हाल में समता योग में रह सकता है।

पत्र नम्बर 37

चतुर व्यक्ति वो है जो अपना काम उतार के बैठा है फिर गुरु ने कहा कि सियाणा वो ही है जो वो सही समझता है उसे करता है। मूर्ख है वो जो करके पछताता है। ज्ञानी को कभी किसी बात का पश्चाताप नहीं होता क्योंकि वो कर्ता होके कोई कर्म नहीं करता जो भी हुआ भगवान के हुक्म से हुआ। और भगवान सदैव हमारी भलाई में है इसलिये कभी भी कुछ बुरा नहीं हुआ है। तुम अभी तक द्वेत में हो एक करके नहीं देखते हो जब आत्म दृष्टि हो जाये और दूजा खत्म हो जाये तो सब संकल्प विकल्प ही शान्त हो जाते हैं। अपने मन वचन कर्म से तुमने किसी को दुख नहीं दिया है तो पश्चाताप कैसा।

मन के खेल देखो और पहचानो। अपने स्वरूप में स्थित होने के बजाय बाहर सुख की तलाश करता रहता है। अपने स्वरूप को पहचानो कि क्या नहीं है अपने अंदर की बत्ती जलाओ। गुरु ने हमें निराधार निर्विकार बनाता है। हर हालत में प्रसन्न रहना ही तुम्हारा हो जाये अपने को प्रसन्न कर लो तो सारा जग तुमसे प्रसन्न है। अपने को बिन्दी लगाने पर आईने में स्वतः ही परछाई को लग गयी अपनी तृप्ति अपने में ढूंढों। बाहर के सुख तो टैम्परेरी हैं। तुम मन इन्द्रियों के भी साक्षी बनो। सभी के लिये समभावना रखो में रहो तो कोई भी बात दुखी नहीं करेगी। अपना ख्याल यदि दुखी न करे तो भगवान को भी ताकत नहीं है तुम्हें दुखी करने की। सारा जगत ही तेरे ख्याल से बना है। तुम सुख स्वरूप होके सुख को ढूंढ़ते हो यही तुम्हारी भूल है। अपने में तृप्त होना नहीं चाहते। एकीभाव से हे अर्जुन मुझ को भज। अन्यभिचारी अनन्य भक्ति से मैं मिलता हूं।

पत्र नम्बर 38

हृदय का तार सदैव सच्चा गुरु से जुड़ा रहगा तो हृदय की वीणा सदैव मधुर स्वर में बजती रहेगी और जहां ही हृदय के तार टूटे वही जीवन एक टूटे हुए सितार की तरह व्यर्थ पत्र रहेगा। हमारी जीवन की वीणा भी सच्चा सत्गुरु कुशल कारीगर ही बजा सकता है। किसी अनाड़ी के हाथों में यदि दिल दिया तो वो तो बेसुरा आवाज निकाल कर जीवन जीना ही दूभर कर देगा। शुक्र है हम सबको ऐसा प्यारा सत्गुरु मिला है जिसने इतने मधुर स्वर निकाले हैं जो आज एक-एक इस जीवन पर मोहित होता है और चाहता है कि हमारा भी ऐस्म ही जीवन बने। आजकल गीता के ऊपर सत्संग चलता है। 13वां अध्याय चल रहा है। रोज ही बड़ी सुन्दर व्याख्या उसमें निकलती है। क्षेत्र क्षेत्रज्ञ को जो तत्व से जानता है वही केवल जानता है क्षेत्र विकारों क्षण भांगुर व नाशवान है और तू क्षेत्रज भले बुरे सारे कर्मों को जानने वाला है तेरे हाथ में जो बीज है उन्हें समझ सोच के बोना है फिर ज्ञान व अज्ञान भी सुनाया कि श्रेष्ठता के अभिमान का सर्वथा अभाव, दंभाचरण का अभाव, भीतर बाहर की शुद्धि, वगैरह-2 ये तो ज्ञान है, इसके विपरीत अज्ञान फिर बनाया कि ब्रह्म को न सत कह सकते हैं न असत क्योंकि प्रमाणों द्वारा इसे सिद्ध नहीं कर सकते और असत इसलिये नहीं कह सकते क्योंकि इसकी सत्ता के बगैर कुछ है ही नहीं फिर इसको जानने के भी कई साध ान बताये हैं कि कोई तो ध्यान योग द्वारा कोई कर्म योग द्वारा तो कोई फिर तत्वदर्शी गुरु के बताये हुये मार्ग अनुसार बर्तता है। इसका मिसाल भी चला कि जैसे किसी को नदी पार करनी है तो एक तरीका तो है तैरकर नदी पार करना पर उसके

परिश्रम हैं। दूसरा है जिसे मल्लाह व नाव मजबूत मिल जाये उसे क्या दिक्कत है। ऐसे ही गुरु की नाव में बैठ जाओ तुम्हें तो कुछ करना ही नहीं है। फिर आज चला कि गुण गुणों में बर्तते हैं। अजय उसकी साक्षी है। और फिर जो नाशरहित आत्मा को इस नाशवान क्षेत्र से अलग जानता है वही सच जानता है बाकी तो सब जो अपने को देह जानते हैं वो जन्म मरण के चक्कर में आते जाते रहेंगे।

पत्र नम्बर 39

सत्य की राह पर लगन से बढ़ते चलो **continuous** । कभी भी रूकें नहीं परीक्षायें तो आयेंगी ही परन्तु हमें उनका सामना करना है। हमारा जीवन तो है ही सच के लिए। एक पल भी माया में ना जाये। हद से निकल कर बेहद में आ जायें। कोल्हू का बैल एक ही घेरे में घूमता रहता है परन्तु आँखों पर पट्टी बंधी हुई होने के कारण वह समझता है मैं कई मील चला हूँ। ऐसे ही हरेक की आँख पर मोह की पट्टी बंधी हुई है और सोचता है मैनें कितनी **Progress** की है जबकि वहीं पर खड़ा है। गुरू ने कहा बोलने का अधिकार केवल मनुष्य को ही है परन्तु फिर भी सोचना है किससे व क्यों बोलते हैं। 32 दांत के अन्दर प्रभु ने ज़बान दी है कि 32 बार सोचकर ही बोलो। मन्दिर की मूर्तियाँ मौन में हैं उन्हें सब प्राप्त होता है। तुम भी ऐसे ही निरिच्छा हो जायेंगे तो सब कुछ आपे ही मिलेगा।

पत्र नम्बर 40

यहाँ पर आप सभी अपने प्रेम की अमिट छाप छोड़कर गए हैं। यह प्रेम ही अनोखा है जो सागर में कोई भी दूसरा नहीं लगता। जित वल देखां उत वल प्यारो। आज सत्संग में **Point** चला कि हर रूप में भगवान सामने आता है। क्या तुम उसमें भगवान देखते हो या जीव और जगत करके देखते हो। गुरू तो हरेक में यही ब्रह्म दिखाने का प्रयत्न करता है। कोई बुरा नहीं है भले मन के वास्ते। हर समय देखो कि ये जगत कैसे मिथ्या है। इसको कभी भी सत करके नहीं देखो। नहीं तो एक-एक चीज में फंसोगे। गुरू हर वक्त यही **Practice** कराता है कि मैं मेरा से अलग हो जाओ। अपने से पूछो कि क्या कभी कोई ऐसी **News** सुनकर तुम्हारा दिल तो नहीं धड़कता है चाहे किसी की मृत्यु या बीमारी या अन्य किसी दुख की बात सुनकर अन्दर तुम्हारे खलबली तो नहीं होती है या हर बात के लिए तुम पहले से ही तैयार हो। ऐसा भी होता है। **Nothing new under the sun.** प्रेम लूटने व लुटाने में ही मजा है। हरेक व्यक्ति केवल अपने लिए ही जीता है परन्तु जब सर्व के लिए जीना सीखता है तो उसके अपने दुख दर्द सभी भूल जाते हैं।

पत्र नम्बर 41

बस ऐसा ही सर्व से प्यार व एकत्व भाव रहेगा तो जीवन में कभी भी अकेलापन खालीपन नहीं लगेगा। इस ज्ञान में अथक होकर बढ़ना है। दुख आयेंगे लाखों पर तू न घबराना। परीक्षायें भी आयेंगी पर पास होकर दिखाना है। कहीं भी रास्ते में थककर बैठ न जायें। गुरू को सदैव तेरी जीत पसन्द है। नैपोलियन के दरवाजे के बाहर बड़े अक्षरों में **V** लिखा था जिसका अर्थ है **Victory.** वह जीत को पसन्द करता था और जीतने का राज था कि उसकी सेना जिस मार्ग से आगे बढ़ती थी वो पीछे के पुल काट देता था। हवाई जहाज में चढ़ने के पश्चात भी सीढ़ी हटा दी जाती है इसी तरह गुरू के प्रेम में जिसका जगत जल गया उसे कभी भी फिर लौटकर माया में जाने की इच्छा न होगी वरना तो कई इस राह पर थक कर लौटने लगते हैं। गुरू कहता है आगे बढ़ा कदम, रूकना तेरा काम नहीं चलना तेरी शान, चल चल रे नौजवान। तुम भी उन्नति करो दूसरों को भी इस राह में आगे बढ़ाओ। मैत्री, करूणा, मुदिता का भाव बन जाये। सभी की उन्नति देखकर भी खुशी हो। सभी को गुरू तक पहुँचाना ही हमारा काम है। सत्संग के किले में ही बंधे रहें। गुरू के प्रेम का बन्धन ही ममता रहे।

पत्र नम्बर 42

अलग अलग सभी को पत्र लिखना सम्भव नहीं हो पाता है इसलिए एक-एक **area** में पत्र लिख देते हैं जो पूरा ही सभी के लिए होता है। आज भी सत्संग में पांच वचन माला दृष्टान्त चला कि गुरू के वचन कितने ना कीमती हैं। यदि हम उन्हें अपने जीवन में लगाएं तो लाखों करोड़ों से बढ़कर उनकी कीमत है। एक ही वचन ने उसे मौत के मुंह में जाने से बचा लिया। ऐसे ही गुरू भी हमें हर मुश्किल से बचा कर अपनी शरण में ही रखता है। कील संग जो लगाया गया उसे काल भी न खाएगा। काल भी उसके नज़दीक नहीं आ सकता तो फिर बाकी वह दुनिया से क्यों भयभीत हो। **What the people say let them say.** ज्ञानी **Spiritiual man** है। वह कोई **Normal man** नहीं कि दुनिया को खुश करने में अपना लक्ष्य ही भूल जाए। **Morality is hipocracy** ज्ञानी दिखावा नहीं करता इसलिए दुनिया के लोग उन्हें नास्तिक भी समझते हैं। सच्चा गुरू तो तत्व ज्ञानी है। और तत्व के निश्चय से ही मुक्त भी है। बाकी शरीर का तो प्रारब्ध पर ही निर्भर है और प्रारब्ध जो भी कर्म कराये। नौकरी तो सारी दुनिया ही कर रही है परन्तु यह परमात्मा का कार्य तो किसी विरले के ही हिस्से आता है। कोई एक विवेकानन्द निकलता है जिसे ऐसी लगन है कि सारी दुनिया को ही यह सुनाकर मुक्ति की राह दिखा दे। बाकी तो संत साधु भी सभी को गुमराह करने वाले हैं।

पत्र नम्बर 43

ज्ञान का मनन निध्यासन जिसका चलता है उसी के अन्दर से प्रश्न भी उत्पन्न होता है। फिर दिनोंदिन उन्नति भी होती है। मर्यादा का सही अर्थ है मर के चलना सोई ज्ञानी जीते जी मर के रहता है ना मैं किसी का ना कोई मेरा। इसलिए सांसारिक मर्यादायें उससे हो नहीं पाती। बाकी ज्ञान की मर्यादा से भी वह बाहर नहीं है। भय विच अग्नि भय विच पवन। सारी प्रकृति ही उस निराकार के भय में है। स्वयं सागर भी मर्यादा के अंदर है। अगर वो मर्यादा छोड़े तो सारे शहर को डुबो दे। ऐसे ही ज्ञानी भी भीतर बाहर आत्मा जान कर कभी उश्रृंखल नहीं है। कोई चंचलता नहीं हंसी मजाक नहीं अपने आत्मबल में ही रहता है। बाकी सांसारिक बंधनों से वह आजाद है। सब हालातों में सम रहता है।

पत्र नम्बर 44

हकीकत में गुरू की गुलामी में कौन रह सकता है। सेवक का धर्म बहुत कठिन है। पूरा पूरा अपने मन को मोड़ना पड़ता है। गुरू के घर में जो सेवक रहे, गुरू की आज्ञा में मन सहे, उसते चौगुन करे निहाल नानक साहब सदा दयाल। गुरू नानक की वाणी में है कि पखा फेरां पाणी ढोवां जो देवे सो खाई हीं तिसपे आप बेचाई। कोई आण मिलावे मेरा प्रीतम प्यारा। सचमुच कितनी कुर्बानी शिष्य पहले करते थे गुरू के पास रहकर। तभी **ego** समाप्त होता है। जब पहले गुरू माया से छुड़ाने के लिए खींचता है, प्यार करता है तब तक तो बहुत मन को अच्छा लगता है परन्तु फिर मन को बनाने के लिए थोड़ी बहुत ठोकाई करता है तो मन सहन नहीं कर पाता है। जबकि उसकी भलाई उसी में है। तीन मूर्तियों की बात बताते हैं कि जब कारीगर पत्थर के टुकड़े को तराश कर मूर्ति बना रहा था तो एक पत्थर तो चोट न सहन कर सका और छिटक गया। दूसरा आधा बना। तीसरा पूरी तरह से छेनी हथौड़ा खाता रहा और मूर्ति बन गया। तब स्वयं पुजारी ने भी उसको माथा टेका और सारी दुनिया उसके आगे जाकर झुकी। बस जो अपने गुरू के पास गंवाता है वही अमर पद पा लेता है। यही गुरू की प्रीत है। तुम्हारा सुर भी गुरू के सुर से पूरा मिलना चाहिए। सेठ कहे सागर का पाणी मीठा तो भी कहिए हाँ जी हाँ। अपना मन बुद्धि गुरू को अर्पण करके गुरू वाक्य सत्यम करके चलो।

पत्र नम्बर 45

इसी ज्ञान में आप सभी अपने जीवन को अर्पित किये हुए हैं यही बड़ी खुशी की बात है। सभी को ये आत्म जागृति देते जा रहे हैं। बस जागना ही ज्ञान है, भागना नहीं है। आज बात चली कि किसी ने क्राइस्ट से पूछा पैगम्बर या अवतार कौन है। उन्होंने उत्तर तो कुछ नहीं दिया परन्तु आगे चलते गए और सब **Lights** जलाते गए। जिसका अर्थ है सभी के अंधेरे जीवन में जो प्रकाश लाए वही सच्चा अवतार है। दूसरी बात चली कि एक संत को किसी ने एक सोने की कैंची **Present** की। उसने उसे अस्वीकार करते हुए कहा मुझे यदि एक लोहे की सुई भी दोगे तो वह इस कैंची से बढ़कर है। इसका सिद्धान्त यह है कि तुम सभी के हृदय को प्रेम से जोड़ने वाले बनो। बाकी तो तुम कितने भी महान हुए और जीवन तुम्हारा न बना तो क्या लाभ है। अपने जीवन के आदर्शों को यथार्थ में उतारो। तभी जीवन सफल है। सारी दुनिया मूल कारण परमात्मा को ही भूल कर बैठी है। जैसे बाहर से पूरी बिल्डिंग दिखाई दे रही है परंतु उसकी नींव को सभी भूल जाते हैं। सुबह उठ कर पहले प्रकाश देखा। जिसके आधार से हर चीज देखी परंतु तो भी प्रकाश भूला हुआ है। बस अब उसी निराकार मूल कारण को न भूलें तो ही हमारा लक्ष्य पूरा हुआ। सभी में उसी परमात्मा को जानो तो सभी विकारों से छूट जाओगे।

पत्र नम्बर 46

सचमुच आप सभी का प्रेम सराहनीय है। हम सब धन्य हो गए हैं आप का प्यार पाकर। जीवन की सार्थ हो गया। माता से किसी ने पूछा आपने अड़सठ तीर्थ किए हैं तो बोले आधे तीर्थ तो गुरू मिलने पर हो गए बाकी आधे तीर्थ तो तुम सब के प्यार में हो गए हैं सचमुच यह निष्काम प्रेम ही जीवन को मधुमय बनाने वाला है। ज्ञान व प्रेम दोनों की ही जीवन में महानता है। परन्तु प्रेम की महानता तो ज्ञान से भी अधिक है क्योंकि केवल साबुन (ज्ञान रूपी) बिना प्रेम रूपी पानी के कुछ भी नहीं कर सकता है। केवल पानी कम से कम कपड़े को थोड़ा बहुत साफ तो कर ही सकता है। परन्तु दोनों ही यदि मिल जाए तो और भी अच्छा हो जाता है। सच्चे गुरू के चरणों में बैठकर दोनों की ही प्राप्ति हो जाती है। सचमुच जो गोपी कृष्ण के पास नहीं पहुंच पाई वो पहले ही वहां विराजमान थी। जेहड़ा हरि नूं ध्याये हरि रूप बन जाये। सभी प्रेम रंग में रंगे हुए हैं। आत्म स्वरूप तो पहले ही है बाकी माया रहित होने का पुरूषार्थ करना है। गुरू कृपा से ही यह संभव है। इसलिए कबीर ने कहा गुरू के चरण से लिपट रहना।

पत्र नम्बर 47

पत्र आज ही तुम्हारा मिला जिससे मनःस्थिति का पता चला। तुम भाग्यशाली हो जो ऐसा वैराग्य तुम्हें लगा है। जब रामचन्द्र भगवान की ऐसी अवस्था हुई तो वशिष्ठ ने दशरथ को बधाई दी कि ऐसा कोई भाग्यशाली पुरूष ही है जिसे सच के लिए जिज्ञासा होती है। नहीं तो सारी दुनिया माया के पदार्थों पर ही खुश होती है पर सच के जिज्ञासु को तो केवल सच से ही प्रीत है। ऐसें सच्चे जिज्ञासु को तो कोई माया में फंसा नहीं सकता। आज तीन प्रकार के जिज्ञासुओं की बात चली। एक तो वे जिन्हें रोज जाकर घर से निकलना पड़ता है। जैसे पुरानी गाड़ी को ठेलकर, धक्का दे दे कर चलाना पड़ता है। वो पेट्रोल भी ज्यादा खाती है और **Servicing** के खर्च भी अधिक होते हैं। ऐसे भक्तों के साथ गुरू को बहुत मेहनत करनी पड़ती है। टाईम भी लेते हैं। फिर भी उन्नति कम दिखाते हैं। दूसरे तो सत्संग रोज आएंगे प्रश्न भी करेंगे पर आधे माया के आध ा भगवान के चलेंगे, पूरा नहीं। तीसरे तो एक प्रतिशत गुरू की मेहनत लेते हैं और 99 प्रतिशत अपना पुरूषार्थ यानी गुरू के इशारे पर चलते हैं। वे उत्तम जिज्ञासु हैं। ऐसे भक्तों पर तो गुरू को भी नाज होता है कि यह हमारा कार्य कर पाएंगे। विवेकानन्द ने गुरू का पैगाम हर जगह पहुंचाया। अपने जीवन की पूर्ण आहुति देकर सभी को सत्य मार्ग पर चलना सिखाया बस यही उद्देश्य बना लो कार्य में लगे रहने पर आलस्य नहीं आएगा। नींद नहीं आएगी। दूसरे का आंसू पोंछने पर अपने आंसू बंद हो जाते हैं। तुम जागे तो फिर किसको जगाया है। सोचने से अधिक कार्य में लग जाओ। सर्व से प्यार, सत्संग का नियम, घर जाकर भी मनन, निध्यासन करो। किसी बात में भी उलझो नहीं। मूर्ख हर काम में उलझता है। सियाणा चलता रहता है। आगे बढ़ा कदम। जो पेड़ बढ़ता नहीं उसे हटा दिया जाता है। उन्नति करते चलो।

पत्र नम्बर 48

है धन्य जगत में वो प्रेमी जिसने प्यार प्रभु का पाया है।
प्रीतम की प्रीत के पीछे जग सारे को ठुकराया है।।

ये प्रेम ही तुम्हें मंजिल तक पहुंचायेगा। कदम जब आगे बढ़ जाए तो वो लौटाए नहीं जाते यह दीपक प्रेम के ऐसे बुझाए ही नहीं जाते। बस यह प्रीत मेरे सतगुरू से लगी रहेगी सदा, मेरी नज़रें सतगुरू से मिलती रहेगी सदा तभी तो इन आंखों में फिर कोई माया का स्वप्न नहीं दिखता। माया उसे अपने चंगुल में नहीं फंसाती। मन पंछी तब लग उड़े, विषय वासना माहिं, प्रेम बाज की झपट में, जब लग आयो नाहिं। आज गुरू ने ही हम सबकी कीमत बढ़ा दी है। लोहे की तलवार को सोने का बना दिया है। हर रोज गुरू के शुक्राने याद करो और जानो गुरू ने तुम्हें क्या बनाया है। **Know Thyself and you know god.** अपना जीवन प्रभु के हवाले कर दो। वो ही पग पग पर संभाल कर रहा है और करेगा। तुम केवल अपने को गुम कर दो। दस्तूरे मोहब्बत बस है यही हस्ती को मिटाना पड़ता है। जरा गफलत हुई या नजरें झुकी चाहूं ओर सभी ने घेर लिया। गुरू ज्ञान का दीपक मन मंदिर में हर वक्त जलाना पड़ता है। हर समय सावधानी रहे कि कोई मेरा यह धन लूट तो नहीं रहा है। प्रेम प्याला गुरू दियाजा सिहुं मस्त मगन हम थिया। बस यह प्रेम का अखूट खजाना सभी में बांटते चलो। बांटन वाले को लगे ज्यों मेंहदी का रंग प्रेम देने से ही प्रेम बढ़ता है। नित्य नए प्रेमी बनाओ। सभी को इसी मस्ती में डुबो दो। सदा है होश कुछ बाकी उसे भी अब भुलाता जा। यही प्रेम की पराकाष्ठा है कि प्रेम व प्रियतम सदैव के लिए एक हो जाएं। अपना मैं पना भूल जाएं।

पत्र नम्बर 49

आपने पूरी तरह से अपने को शरणगत किया है तभी अपनी हर बात सच्चाई से सामने रखी है। सच बात है जिसने अपनी डोरी परमात्मा के हाथों में सौंप दी है उसको कभी भी चिंता करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। मेरी चिंता हरि करे मुझे न चिंता कोई। अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में। आपका भविष्य परमात्मा ने सुनहरे हाथों से लिखा है। फिर हार जीत, पास फेल, दुख सुख तो प्रारब्ध अनुसार ही है। मनुष्य का कर्म में अधिकार है फल में कभी भी नहीं। आपका सब हमारा है आप भी हमारे हैं। फिर चिंता किसी बात की है। अपने अंदर का मोह परेशान करता है। आया है जग में तू ही इक अकेला। न मैं किसी का न कोई मेरा। बस अपनी बची हुई आयु भी इस कार्य में लगा दीजिए। जीना उसका जीना है जो औरों को जीवन देता है। मनुष्य मजूरी देत है तो क्या राखे भगवान। परमात्मा अपने भक्तों को हाथों हाथ उठा लेता है। हर बात में भलाई देखते चलें। सब अपने समय पर ठीक हो जाएगा। तुम करो भला हम भलो न जानो। चिंता मनुष्य को जीते जी जलाती है। इसलिए उसे चिता समान कहा है। हर हालत परमात्मा की तरफ से आती है इसलिए सुखदायी लगनी चाहिए। ईश्वर इच्छा पर चलना सीखें जो तेरी इच्छा सो मेरे लिए अच्छा निराकार का ड्रामा तो पहले से ही **Fix** है हम सब तो केवल दृष्टता होकर देखना है। शायद परमात्मा उसको कुछ और महाम बना कर महान कार्य करवाना चाहता हो। इसलिए कभी भी उसके इंसाफ से निराश नहीं हो। यह इंसाफ का मंदिर है। **Wait and See.** ही पिक्चर की **End** बहुत ही अच्छी है। आप सदा ही अपनी ब्रह्माकार वृत्ति में रहें। न मालूम जीवन की कौन सी घड़ी अंतिम घड़ी हो जाए तो जीवन मुक्त हो हासिल कर ही ले। जीवन मुक्त भी विदेह मुक्त है। आप सभी योगी हैं। बस अब अंदर बाहर से शांत हो जाइए।

पत्र नम्बर 50

आपके लगन व उत्साह से सत्संग में सभी का प्रेम बढ़ता ही जा रहा है। प्रेमियों के सत्संग से प्रेम बढ़ता है एकता व प्रेम में बहुत शक्ति है उसी से ही बड़े से बड़े कार्य हो सकते हैं आपने सत्संग इकट्ठा किया यह भी बहुत अच्छा हुआ। एक दूसरे के नए नए अनुभव ही सुनने को मिलते हैं और प्रेम भी बढ़ता है। गुरू ने सभी को एक परिवार की तरह जोड़ दिया है जिससे अलग कभी नहीं हो सकते। ऐसा लगता है सदियो पहले की पहचान हो। अभी से ही जो इस कार्य में लग गया उसका तो जीवन का एक एक क्षण सफल हो गया। गुरू का आदर्श आगे रखकर बढ़ते जाएं। हिम्मते मर्दा मददे खुदा। खुदा की मदद उसी को मिलती है जो अपनी मदद खुद करता है। नसीब उसका गहरा दोस्त है जो उससे मुंह मोड़ता है अर्थात पुरूषार्थ करता है। केवल प्रारब्ध के भरोसे पर नहीं रहता। पुरूषार्थ तेरा दैव है। **Thinking is not your real nature** आत्मा का धर्म सोचना नहीं है। वही **thoughtless** है। बाकी ख्याल आता है मन में। सोई तू तो मन भी नहीं है। मन की अलग शक्ति है। उसी शक्ति में रहकर तू मन बुद्धि व इन्द्रियों से परे है। अपने साक्षी भाव में रहो। और ख्याल का अर्थ है जो तुम्हें तंग करे। जो अंदर टिक जाए लहरों का आनंद लेने वाला तू अलग है लहरों में डूबो नहीं यही **thoughtless** होना है।

पत्र नम्बर 51

आप सभी की मीठी याद सदैव आती रहती है। सभी आत्मिक उन्नति में लगे हुए हैं ज्ञान हर एक के लिए बहुत जरूरी है कल एक प्रश्न चला कि मीरा को जब प्रेम हुआ तो वो नाचने लगी और भगवान बुद्ध को जब बोध हुआ तो वो मौन हो गए। ऐसा क्यों? आप सभी भी इस प्रश्न का उत्तर लिखना। सभी ने आग्रह किया है वहां आने का सोई सब हुकुम व अन्य जल तथा आपका प्रेम है। जैसे भी बनेगा वैसे ही चलना पड़ेगा। एक **Point** आज चला जैसे गीले कपड़े को आग जल्दी नहीं पकड़ती ऐसे ही ज्ञानी को ज्ञानी जो प्रेम रस में भीगा है उसे दुख असर नहीं करते। प्रभु के सिमरण दुख न संतापे।

पत्र नम्बर 52

सभी इसी आत्म आनंद में मस्त हैं। सत्संग की सभा में सब रहते हैं। आप संपि औरां नाम झपावै, सुनत कहत रहत गत पावे। बांटने में ही खुशी है। स्तुति से ही स्थिति बनती है। सदैव मछियारिन वाली **Dress** याद रहे। आज गुरू ने अपनाया है इसलिए जीवन की भी कीमत हो गई है। सौ का नोट भी है पर कागज पर सरकारी मोहर लगने से उसकी **Value** सौ रूपये हो गई है। ऐसे ही गुरू का ठप्पा हम सबके जीवन पर है। तभी इस जीवन की **Value** है। अब केवल सभी को अपना यह निष्काम प्रेम देते चलें। बांटने से ही धन बढ़ता है। मीरा कहती है पायो जी मैनें राम रतन धन पायो। भक्त कहता है भगवान तुमने मुझे धन दौलत एश्वर्य सभी कुछ दिया है। अब केवल थोड़ा सा धीरज और दे दो। जीवन में हर मुसीबत के पहाड़ को केवल धीरज से ही सहन किया जा सकता है। जब धीरज साथ है तो हृदय की धड़कन क्यों होती है। धीरज के जहाज पर चढ़कर ही हर मुसीबत से पार हो सकते हैं। यह जीवन प्रभु के हवाले हो जाए। डोर मेरी सतगुरू से बंधी रहेगी सदा पतंग डोर से जुड़ी है तो पूरे आकाश की सैर कर आती है पर यदि किसी से उसका पेंच लड़ गया तो कट जाती है। और बच्चों के हाथ लगकर तहस नहस हो जाती है पतंग उड़ाने वाला चाहे उसे अपने हाथों में रखे या उड़ाए दोनों में उसका फायदा है चाहे सतगुरू के चरणों में रहें या निष्काम के आकाश की सैर करें दोनों अवस्थाओं में ध्यान गुरू में है। चकोर की आंखें मरने के बाद भी चांद की ओर ही होती हैं। पपीहे की प्यास अंत तक स्वाति बूंद के लिए ही होती है। शरीर का मिलन भी हुक्म अनुसार बन पड़ता है।

पत्र नम्बर 53

शल का नाम खुमारी सदैव चढ़ी रहे यह प्रेम दिनों दिन बढ़ता रहे क्योंकि प्रेम ही है परमात्मा। प्रेम बिना थोथे सभी ज्ञान, ध्यान, व्रत, नेम। यह जीवन भी यज्ञ हो जाए। **What the people say Let then say.** आंख, कान, मुंह मूंद के नाम निरंजन ले। देहवासना लोकवासना और शास्त्रवासना तीनों रूकावटें हैं इस राह पर। देहवासना है कि मैं तंदुरूस्त रहूं, सुंदर लगूं, मेरा नाम हो। मुझे सब **right** समझें, किसी ने मुझे समझा नहीं। यही देह अभिमान दिन भर दुखी करता है। फिर लोकवासना, लोगों को खुश करने की इच्छा सोई लोग तो कभी खुश होंगे नहीं तो क्यों न अपने को प्रसन्न किया जाये। बिन्दी अपने को लगाने से आईने में खुद ही परछाई को लग जाती है। बस हर समय अपने को ही **change** करना है। दोष भी अपने में देखें। दुख का कारण तो अपना ख्याल ही है। अपना ख्याल हमें दुखी ना करे तो भगवान भी नहीं कर सकता है। शास्त्र वासना है हर तरह के शास्त्र पढ़कर विद्वान बनूं, होशियार हो जाऊँ। पर ब्रह्मविद्या ही सब विद्याओं का राजा है। बाकी तो सब अविद्या है। गुरू मुख नादन गुरू मुख वेदन ......। गुरू के मुख में ही वेद, ग्रन्थ, पुराण, कुरान हैं। एक ही शास्त्र पढ़ना है जिसने गुरू को पढ़ लिया उसने समझो सब शास्त्र पढ़ लिये। गुरू ब्रह्मा, गुरू विष्णु ....। सब ग्रन्थों ने शास्त्रों ने इसलिए सतगुरू की महिमा गयी है। फिर तो सारी सृष्टि ही शास्त्र बन जाती है। दत्तात्रेय ने 24 गुरू किये। प्रकृति की हर चीज से उसने गुण उठाया। गुण ग्राहक दृष्टि रखें तो जीवन ही स्वर्ग बन जाता है। गुरू ने हर तरह की कंजूसी से छुड़ाया है। प्रशंसा करने के भी कंजूस नहीं बनना है। सारी दुनिया को एक प्रेम सूत्र में बांधते चलो। फिर देखो भगवान का हुक्म कब सभी को मिलाता है।

पत्र नम्बर 54

इस प्रसाद का तो सभी को सदैव लालच रहना चाहिए। गुरू मुख नाम झपै। रोज कैच करते रहें। यही बांटने में लग जायें। आज एक **Point** चला कि बांटने से रोज बढ़ता ही रहता है चाहे ज्ञान चाहे प्रेम चाहे धन। जैसे तराजू में एक बाट रखते हैं तो दूसरे पलड़े में उतने ही वजन की वस्तु रख दी जाती है अब हम ये देखें कि कितना बड़ा बाट रखते हैं। 1 किलो या सौ किलो जितना बांटते हैं उतना ही ये प्रेम व ज्ञान मुस्कान बढ़ती ही रहती है। देने वाला भी आनन्दित होता है और लेने वाला अपने को भाग्यशाली समझता है। गुरू ने वो अनमोल खजाना दिया है जो दिन दिन बढ़त सवायो। पायो जी मैंने राम रत्न धन पायो। ये दात केवल दातार ही दे सकता है। ईश्वर की तरफ से ये अनमोल खजाने **Free** मिले हुए हैं। केवल हम अपने कंजूसी छोड़ दें। कल यहाँ लखनऊ में सहारा शहर वालों के बेटे की शादी थी और उसने अपनी हैसियत के हिसाब से चार सौ करोड़ रूपये लगाये। देश विदेश के **Actor** नेता वगैरह को बुलाया। हर जगह उसका गुणगान यानि चर्चा फैली हुई थी। जब वो धन बांटने वाले खुले हाथों से बिखेरते हैं तो लोग चारों ओर से वाह-वाह करते हैं तो यदि आज ये असली धन भी मुक्त हाथों से बांटेगें तो क्यों नहीं हर जगह खुशहाली छा जायेगी। बस तत्परता से ये मुक्त हाथ व दिल से बांटते रहो सच्चाई से तो जीवन में प्रेम बरसेगा।

पत्र नम्बर 55

यह जीवन मिला ही है देने के लिए देते चलो सारी सृष्टि को **Love is like a one way traffic** प्रेम एक बेशर्त दान है, मांग नहीं। ज्ञानी जब मैदान में हैं तो संसार के लोग उसे पहचानते नहीं हैं, छींटाकशी करते रहते हैं परन्तु इनसे भय कैसा? वो तो शब्द और दृश्य से परे हो जाता है। अपनी शुद्ध आत्मा में अपने ही विकास में लगा रहता है। बाकी दुनिया भला कहे या बुरा उसका ख्याल वो नहीं करता। मैं हूँ नहीं **Be nothing & Do nothing** गुरू ही पक्का कराता है। ये शरीर तो धर्मशाला है जिसमें सब राहगीर विश्रांति पाते हैं। जो लक्ष्य हमारा है उसी पर हमारी दृष्टि रहे। हरेक अपना ही उद्धार अन्त तक कराता है। दूसरा है नहीं तो किसको सिखायें, किसको सुधारें। अपना ही निश्चय पक्का हो इसलिए सत्संग में अपनी रियाज़त होती है। पानी में उतर कर ही तैरना सीखते भी हैं और सीख जायें तो भी पानी में ही तैरना है। ऐसा नहीं है कि जब सीख जायेंगे तभी सागर में उतरेंगे। विशाल परिवार गुरू ने दिया है। हजार हाथों से प्रभु का कार्य हो रहा है।

पत्र नम्बर 56

तुम्हारे द्वारा भेजी हुई **C.D.** और कैसेट मिले। अभी देखे नहीं हैं। फिर देख लेंगे। वैसे तो अंतदृष्टि से देखी हुई है कि कितनी अच्छी होंगी। तुम पर हमारा विश्वास है कि तुम्हारा हर काम सुव्यवस्थित होता है। हर बच्चा जो इस राह परर अपना तन मन धन जीवन कुर्बान करके बैठा है उसका सकार्य कैसे अच्छा हो नहीं सकता? सभी का जीवन फले फूले, सभी प्रसन्न रहें तो उसे देखकर ही गुरू को खुशी होती है। अपने जीवन को ही बनाना है। जो गुरू समर्थ है वह सभी को सब कुछ दे सकता है। जो खुद पूर्णता को प्राप्त कर चुका है वही हमें पूर्ण बना सकता है। अब बाकी मुझे क्या चाहिए ये जानें। ये सब सच्ची जिज्ञासा से ही मिलता है। सीखने की खिड़की हमेशा खुली रहे। मन नींवा मत ऊँची। हम सब भाग्यशाली हैं जो ऐसा सतगुरू मिला है जो हमे पूर्ण बनाने के सिवाए नहीं छोड़ता। मुझको उठाने के लिए तुझे झुकना ही पड़ेगा। मैं नीवीं मेरा सत्गुरू ऊँचा उचियां नाल मैं लाई, सदके जावां उनां सत्गुरां तां जिन नीवियां नाल निभाई। यह गुरू की गरिमा है जो हमें अपना सब कुछ देता है। प्रेममय आनन्दमय बनाता है। सत्य स्वरूप में टिकाता है। मानसिक तौर से कमजोर नहीं होना चाहिए। सन्त ने किसी का नुकसान नहीं किया है। सन्त तो सभी को ऊँचा उठाने में लगे रहते हैं। उन्हें तो हर एक पर तरस ही आता है। धर्म का बूटा बढ़ता है। परन्तु धर्म क्रोध पर विभंगा। एक वृक्ष **15** साल से लगा है। फल फूल लग गए हैं। उसे यदि तोड़ना हो तो एक क्षण में काट सकते हैं। प्राकृतिक मैल को बढ़ाने वाले मनुष्य ही हैं। मन की मैल को बढ़ाता भी मनुष्य ही है। सारा संसार मैला है। एक सन्त ही निर्मल है। प्रेम

का बूटा बढ़ने में समय लेता है पर तोड़ने में तो क्षण भी नहीं लगता। जोड़ने में समय लगता है, तोड़ने में समय नहीं लगता है। एक बच्चे को बढ़ने में **15-20** वर्ष लगे पर मारने में तो एक जहर की पुड़िया ही काफी होती है। जीवन में धर्म की स्थापना में, अन्दर जीवन शुद्ध बनाने में कितना समय लगता है परन्तु एक विकार के अधीन होने पर भी जीवन बर्बाद हो जाता है। बस अपने इस ज्ञान के बूटे को और बढ़ायें। सुन्दर बनायें और विकारों से बचायें और सभी को इस जीवन से लाभ पहुंचायें। अपने भक्त का योग क्षेम का भार तो परमात्मा उठाकर ही बैठा है। हमें क्या सोचना है। सोचियां सोच त होवई जे सोचीं लख वार। प्रभु की कृपा सभी पर समान रूप से है।

पत्र नम्बर 57

दो अक्षर देखकर आप सभी को इतनी खुशी होती है ये जीवन तो पूरी की पूरी तुम सब के लिए ही है। अपने लिए जीना तो कोई जीवन का मकसद है ही नहीं और सअब तो तुम भी अपने जीवन की आहुति इस ज्ञान यज्ञ को अर्पण कर ही चुके तो तो इसके **Result** को भी अनुभव किया होगा कि हर चीज बांटने से सौगुनी हजार कगुनी होकर अपने को ही मिलती है। हर समय ज्ञानी को अपना उद्धार ही ध्यान में है। दूसरा तो उसकी निगाह में है ही नहीं। इसलिए परोपकार भी नहीं करता वरन अपना ही उपकार है। हर क्षण सुमरण का ही अभ्यास चलाता है कि मिटने ही ते पाइये पूरन परम आनन्द। प्रकृति हर सुख ऐश्वर्य दिखाकर ज्ञानी को वैराग्य दिला देती है कि इसमें भी क्या? कामनी कंचन कीर्ति सभी कुछ मृगतृष्णा की नदी है। जहां सुख है नहीं तो मिलेगा क्या? बाहर जिसने सुख ढूंढा उसके अंदर के सुख की बत्ती कभी नहीं जलेगी। इसलिए अंत तक ज्ञानी को ही परहेज में रहना पड़ता है क्योंकि उसके आदर्शो की सारी दुनिया नकल करती है। आज महापुरूषों के उच्च आदर्श ही हम सभी के प्रेरणा स्रोत हैं कि कैसी भी माया में वो विचलित नहीं हुए। उनके इरादे हमेशा बुलंदियों को छूते रहे। विवेकानन्द ने कहा अपने सुख स्वार्थो के लिए मेरा जीवन नहीं है। जब तक किसी विधवा के आंसू न सुखाए कोई धर्म तो मैं उस धर्म को नहीं मानता। बीज अपनी कुर्बानी देकर सभी को छाया फल लकड़ी वगैरह देकर तृप्त करता है। औरों की तृप्ति में मेरी तृप्ति है। अपनी आवश्यकताएं न्यूनतम करता जाता है। **Last** में दादा ने अपने लिए एक कमरा भी नहीं रखा। बालकनी में सोता था।

तो सारा विश्व उसका अपना घर बन गया। सभी ने प्यार से अपने दिल में स्थान दिया तो आज अमर पद पाया। तपस्या से ही हरेक इस राह पर आगे बढ़ा है। तपरहित व्यक्ति को मैं नहीं मिलता और सबसे बड़ा तप है मैं को विलीन करना। यह हर समय हर जगह सभी से जुड़कर काम खराब कर देती है। बस इसी से हर पल सावधान रहें। निष्कामी केवल ब्रह्मज्ञानी है जिसने मैं को विसर्जित कर दिया है।

पत्र नम्बर 58

अब ना तो कोई दूरी है ना देरी लखनऊ दिल्ली हर जगह का आकाश एक ही है। इसलिए तुम वहाँ नहीं यही पर हो। जब विचारों की एकता हो गई तो तुम कहीं भी हो हमारे पास हो और हम कहीं भी हैं तुम्हारें पास हैं। प्रभु की सृष्टि में जो कुछ होता है अच्छे के लिए होता है। हर बात में क्या राज छिपा है यह पता तो नहीं चलता पर है सब रहस्य की बातें। हर हालात हमें ऊँचा उठने के लिए ही आते हैं। धधक रहा संसार हमारा डूबा भाग्य सितारा, किसको पता है इसका भीतर क्या है प्रभु का इशारा। यह सब जीवन के पल जाएंगे एक दिन बदल। बदला मौसम बदला जीवन बदला ये जग सारा। अपने बदलते ही बदल गई दुनिया। दोष दृष्टि चली गई तो द्वेष भी चला गया। जित बल देखूं उत बल प्यारा। जहां तहां प्रभु का ही नजारा है। आत्म दृष्टि से ही पूरी सृष्टि को देखना है तो मैं मेरे की दुनिया खत्म हो जाएगी। ना मैं किसी का ना कोई मेरा पर सर्वत्र मैं ही तो हूं। अद्वैत में द्वेत और द्वेत में अद्वैत है। अपना जीवन आनन्दमय प्रेममय बन जाए। निष्कामी का हर फल आनन्द में व्यतीत होता है। ना कोई चिंता ना कोई उलाहना है। सरल आनन्दमय जीवन मिला है। गुरू ने भूल भुलैया के खेल से निकाल लिया। हर रंग में तू हर वेश में तू। केवल तू ही तू है तो मैं कहां रहा। अजब तसववुर हुआ ये कैसा कि राम मुझमें मैं राम में हूं। है ही परमात्मा अब शेष जगत तो रहा नहीं। गुरू ने बांध मोक्ष की कल्पना से भी ऊंचा उठा दिया। जब देह है तो बंधन की बात सोचें बाकी परमात्मा तो सदा से मुक्त है। पक्षी स्वाभाविक उड़ता है मछली स्वाभाविक तैरती है और तू पहले से ही मुक्त स्वरूप है। गुरू

का काम है जागृत करना। जागो पर भागो नहीं। अधीरज नहीं हो जाओ। धीरज धर वो रहमत की वर्षा बरसा ही देगा। जिस प्रभु ने दर्द दिया है वही दवा भी देगा। ना **Past** है न **Future** केवल आज का दिन मैं हूं तो क्या सोचें? सोचने वाले ने सोच दिया है, लिखने वाले ने लिख ही दिया है। अपना योग क्षेम का भार उतार दो और अंदर से योगक्षेम को भी न चाहने वाला बन। पहले बनी प्रारब्ध पीछे बना शरीर। मकान का **map** पहले से बन गया। मकान तो बाद में बना है।

पत्र नम्बर 59

सभी प्रेमी जो नहीं आए हैं उनका भी इंतजार है। अब जल्दी ही मुलाक़ात करना। यहां पर सभी प्रेमी खूब आनंद का अनुभव करके आ रहे है। सत्संग रूपी तीर्थ में स्नान किया है। उसी का प्रसाद आप सभी को भी बांटेगे। सबसे बड़ा है यह ज्ञान दान। तीर्थ व्रत आदि से कोई उन्नति नहीं होगी। यह केवल मृगतृष्णा ही है। सारा संसार तीर्थ व्रत में फंसा है। ठंडे पानी से नहाने से कोई प्रगति नहीं होगी केवल बाहर के अनुष्ठान से ईश्वर प्राप्ति नहीं होगी। सत्य को जानना होगा। परिस्थिति को नहीं बदलना है। स्वयं को बदलना है। संतों के अंदर करूणा होती है। तुम अपने को जानो। अपना उद्धार करना है। लोग पत्थरों को पूजते हैं तो पूजने दो। तुम्हें भीतर को देखना है। उस सौन्दर्य को देखो जिसके कुछ छीटों से संसार सुंदर दिखता है। कोई बादल नहीं कोई बारिश नहीं फिर भी मेरी चुनरी भीग रही है। उस अमृत वर्षा से जो भीतर हो रही है। वहां सूर्य नहीं है परंतु एक अलौकिक प्रकाश है बिन सूरज उजियारा। वहां कोई आशा कोई उपेक्षा नहीं रखो उस निराकार के साथ तदात्मय संबंध बनाना है जहां तक समय है तुम अपना काम उतारो। अपनी आशाएं छोड़ दो। भीतर इतनी संपदा है तुम क्यों इतने उदास घूम रहे हो। तुम्हें उदास होने की आवश्यकता नहीं। कोई विरला ही इस तत्व को जानता है। जिसे ऐसा सच्चा सद्‌गुरू मिल जाता है वो हरिदास हो जाता है। भीतर गोविन्द को जान लो। सारे भ्रम मिट जाते हैं। तुम भी ऐसे सतगुरू की ओट ले लो और अपने जीवन को सफल बनाओ। यही लक्ष्य है जीवन का। मैं को गुम करो तो मेरा भी हट जाता है। कैसे जगत की प्रलय हो जाती है। आप मुए जगत प्रलय। दुनिया के लोग तो भ्रमित होते रहते हैं। कि काहे को दुनिया बनाई पर ज्ञानी इस दुनिया की सैर करके अपनी ही मौज और आनन्द को स्वयं में पा लेता है। सब खेल है खेल था खेल डाला इसी चाल से।

पत्र नम्बर 60

सदैव अपने सच्चे स्वरूप में स्थित रहकर ईश्वर के विराट रूप के दर्शन करो कि सब मैं ही तो हूँ। न मैं ही न मेरा इसी में पूरी दुनिया है। न मैं न मेरा तो जगत का नाश हो जाता है। ज्ञानी के पास दया नहीं पर करूणा है। कि तुम आज ही जीवन मुक्त होकर इसका आनन्द लो। बाद में कहां जाना है। आना जाना ही खत्म हो जाता है। न स्वर्ग न नर्क। सब अपने ही ख्यालों में हैं। दादा ने ख्यालों से खाली किया है। ख्यालों का ही सब खेल है। ख्याल क्यों आया इसका ख्याल ही गुम कर दो। जो हो रहा है होने दो। तुम अपने साक्षी भाव में ही रहो कि **Whole world is filled with God. Everywhere is God and everything is god.** हर समय सावधान होकर रहो। बीमारी दुख गरीबी मुझमें नहीं है यह शरीर दुखों का घर है सुख तेरी गली में। शरीर तुम तीनों काल में नहीं है। पीड़ा शरीर को है पर तुम इसको भी जानने वाले हो। ये भी गुजर जाएगा वो भी गुजर जाएगा। गुरू ने ही यह' दिव्य दृष्टि दी है कि अब आंखें विखणा। सुख के दिन भी बहुत देखे हैं अब यह भी नहीं रहेंगे। सब एक ड्रामा है ज्ञानी इस ड्रामे में भूलता नहीं हैं केवल अभिनय कर रहा हैं तुम केवल दृष्य होकर देखो। कोई शुभ अशुभ इच्छा नहीं बचे। शुभ अशुभ इच्छा का त्यागी ही मेरे को प्यारा है। खेल को खेल देखो। गुरू ने सब मन के झगड़ों को खत्म कर दिया है। निर्वासनिक कर दिया है। शांत अकरता भाव में रहना है। थकान भी शरीर को है मुझमें नहीं है। **I want nothing. I possess nothing.** मेरा नहीं है पर मैं ही तो हूं। मजेदार मैं खुद हूं। स्वयं का रस पीता हूँ।

पत्र नम्बर 61

सदैव अपने सत स्वरूप को जानकर पायो परम विश्राम। राम से जुड़ गये तो विष भी राम बन जाता है। कुछ भी कहना शेष नहीं रहा सब काम पूरे हो गए। आनन्द आनन्द भयो मेरी माई सतगुरू मै पायो सतगुरू पायो सहज से ही मन में शहनाईयां बजने लगीं। पृथ्वी शेषनाग पर खड़ी है जैसे शेषनाग चलता है ऐसे पृथ्वी गोल गोल घूमती है। स्थिरता के ऊपर खड़ी है। हर व्यक्ति में दया पूर्णता सभी कुछ है। अपने जीवन का विकास करो। गुरू तुम्हारे अन्दर हृदय को छू लेता है। तुम्हारी शक्ति तुम्हारे अन्दर है वहीं से पनपेगी। ज्ञान को जीवन में लगाओ। प्रश्न :- ज्ञान लगने में देरी नहीं लगती फूल तोड़ने में देरी है। जब चीज पसंद आती है तो पसंद करने में देरी है क्या? हमारे अंदर चेतन शक्ति है उसे प्राप्त करने में कितनी देर लगती है। चखुद ही निंदा मत करो समर्पण करो खाली हो जाओ। गलतियां करो पर नई नई गलतियां करो मतलब दुबारा गलती नहीं करो। उपवास से शरीर को **Rest** मिलता है। केवल यही फायदा है। वस्तु से हटकर चेतना की बात करो। केवल पत्थरों के महात्मय की बात मत करो। जो है सो वर्तमान है। भूत व भविष्य के विषय में सोचना तुम्हारा धर्म नहीं है। कोटि ब्रह्मांड है। अनंत ब्रह्मांड में पृथ्वी तो एक छोटा सा ब्रह्मांड है।

पत्र नम्बर 62

जिसने अपनी हस्ती गुरू के प्रम में खत्म कर दी वही सारी माया से ऊँचा उठ जाता है। बीज फलता है सदा मिट्टी में मिल जाने के बाद। यह जन्म तुम्हारे लेखे। देने में ही लेना समाया पड़ा है। सभी कुछ देते चलो। गुरूवचनों पर ही मर मिटना है। गुरू को **Yes** और मन को **No** करते चलो। सेठ कहे सागर का पानी मीठा तो भी कहिए हां जी हां। तुम जहां भी हो मेरे पास हो। मैं जहां भी हूं तेरे पास हूं। सदा बसत हम साथ।

पत्र नम्बर 63

सारी दुनिया नींद में है उसे जगाना तुम्हारा काम है। दुनिया के दुख दूर करके सर्व को इस सच की पहचान देते चलो। अवर कारज तेरे किते ना काम, मिल साध संगत भज मेरे नाम। मुसीबत में मुस्कुराना और तकलीफ में तरावट समझ कर आगे बढ़ते चलो। अपना लक्ष्य हमेशा याद रहे। सदगुरू से लगन और ब्रह्माकार वृत्ति सदा बनी रहे। माछाणी वाली ड्रेस हमेशा याद रहे। निभ जाए मेरी तोड़ सतगुरू प्यारिया। कामनी कंचन कीर्ति से हमेशा सावधान होकर रहो। सतोगुणी माया, तमोगुणी माया को पहचानो। सारी दुनिया छूटे पर गुरू का प्रेम नहीं छूटे। मैं तेरा तू मेरा। मेरा सो तेरा तेरा सो मेरा। ये सौदा पूरा हो जाए। हमेशा जागृत और सावधान होकर रहो।

पत्र नम्बर 64

हरेक अपनी अमानत अपना प्यार ले लेता है। अच्छे प्रश्न करके अपना हल ले लेता है। बस आप अकेला सब कर धट में लहर उपाय। ये शरीर तुम्हें प्रसाद रूप में मिला है। पैसे से चश्मा मिलेगा नज़र नहीं मिलेगी। ऐ खुदा तुमने जो जिन्दगी दी है तो सार्थक करो। तेरे एक पल की रहमत सौ साल के गुनाहों से बड़ी है क्योंकि हर समय बख्शीश करता है। यदि किसी को रोशनी नहीं दिखती है तो उसने अपनी आँखें बन्द कर रखी हैं। तुद चित आवे महा आनन्दा जिस विसरे सो मर जाये। उसे भूलना ही दुख है। प्रभु ते भूलियां व्यापन सभेई रोग। प्रभु की स्मृति चलती रहे तो दुख जम नसै। जिसके पास जो होगा वो ही तो देगा। अवर कारज तेरे किते न काम मिल साथ संगत भज केवल नाम। और कुछ करना ही नहीं है। ध्यान में भीतर डुबकी लगाओ। सब कुछ करते हुए भी अन्दर अकर्ता रहना है। निकलो नदी से ऐसे जो भीगो बिल्कुल नहीं। कोई ऐसी चीज नहीं जिस पर सवारी नहीं करके जा सके। सभी गए परंतु भीगते गए। किसी ने सोचा **Long Jump** करके भी भीगें सभी को उत्सुकता हुई कि यह कैसे निकलेगा संत भी निकला तो वो भी भीगा हुआ ही निकला तो शिष्य ने प्रश्न किया की महाराज आप भी तो भीग गए। गुरू ने कहा नहीं मैं कहां भीगा। मैं तो सूखा ही रह गया। अर्थात अंतःकरण नहीं भीगा। ज्ञानी अंदर से नहीं भीगता नहीं फंसता इस माया के इशारे को समझो। तुमसे अलग होकर भी जो सबकुछ करता है। जो हमारे हृदय को धड़कन देने वाला निर्बल को बल देने वाला हर जगह विद्यमान है। अंर्तमुख हो जाओ एक धुंध अज्ञानता का छाया है तो वो नजर नहीं आता। थोड़ा सा भी मैल आंखों में आ जाए तो दिखाई नहीं पड़ता। मल विक्षेप आवरण का पर्दा आ गया है।

पत्र नम्बर 65

शान्त स्वरूप में हर समय रहें। मन का निग्रह इन्द्रियों का निग्रह से ही अंदर की सब शक्तियां प्रकट होती हैं हर पल गुरू को ही अंग संग जानकर ही अपनी मैं को गुम कर सकते हैं। पानी का स्वरूप ही शान्त है। आग के सम्पर्क में आकर उबल जाता है और जलाने का काम करता है। केवल उसे आग के सम्पर्क से हटा दें तो अपने आप शीतल हो जाता है। असंगता ही सब दोषों से हटाती है। समर्पण – अपनी चलाना छोड़ दो प्रभु इच्छा से चलो। अपना मन नहीं। इष्ट में मन लग गया। हमारे पास मन नहीं रहा। चित्त भी उसी में लीन हो गया। सारा भाव धारा उसी में जुड़ गया। चेतना कोई नहीं रही। अपने वर्तमान को बदल सकता है। भविष्य में जो चाहता है उसमें जा सकता है। अपना देहाभिमान नहीं रहा। नाम और अपनी स्मृतियां भूल जाएं। प्रभु के सिवाए कुछ भी न रहें। अपनी योग्यताओं को भी भूल जाओ। अगर तुम किसी को कोई आशीर्वाद दो तो हृदय में अपने ईष्ट से जुड़ जाओ और आशीर्वाद दो तो सफलता मिलेगी अपनी सत्ता परम सत्ता से जोड़ देना केवल वही अर्थ रहे। योग्यताएं प्रकट हो जाएंगी प्रभु से जुड़ने से। सब सिद्धियां प्राप्त हो जाती है। बिना प्रकिया के जो चलता है वो वहां तक पहुंच नहीं सकता। अपने ईष्ट से इतना तदात्मय करें कि उसके सिवाय कुछ न रह जाए। अपने आगे अपने सतगुरू को रखो। उसी का स्वरूप तुम्हारे सामने रहे। अज्ञात रूप में तुम्हारे गुण प्रकट होने लगते हैं। केवल मंत्रों का उच्चारण नहीं करना है। वो तो रोम रोम में जमा है वह जानो। ओ3म् में स्थित रहो। जागृत होकर जियो कभी ज्ञान कभी अज्ञान जैसे मिट्टी के तेल में पानी मिला है तो फड़-फड़ करता है। जिसने आत्मा का पता नहीं जाना वो पूछता रहेगा। जब तक पूछता है यानि पूछ है तो ज्ञानी नहीं वरन वानर है। जो घर की माया की बात करता है वो मुमुक्षु भी नहीं है। दूसरों को पार करने में खुद भी बह जाएगा। एक आत्मा को जाना तो कुछ भी जानने की आवश्यकता नहीं है।

पत्र नम्बर 66

तुम्हारे हृदय का प्रेम हमेशा पहुंचता रहता है। अन्दर की तारें मिली हुई हैं तो तुम कहीं पर भी हो यहीं पर हो। आज गुरू पूर्णिमा का पर्व है। क्यों गुरू की महिमा आज के दिन हृदय से निकलती है। आज का दिन समर्पण का दिन है। जिस गुरू ने हमें अंधकार से प्रकाश में लाया। हर व्यक्ति अंधकार में ठोकरें खाता है और प्रकाश में सब सूझता है। गुरू पूर्णता की ओर ले चलता है और उस समय मन गदगद हो उठता है। और अंदर से आनन्द की लहरें प्रकट होती है। जीवन धन्य धन्य हो जाता है। तमसो मां ज्यातिर्गमय असतो मा सदगमय मृत्योर्मा अमृतम गमय। गुरू हमारे हृदय में ज्योतिरूप होकर प्रकट होता है। असत शरीर से सत्य आत्मा में स्थिति करता है हमारे सभी भ्रमों का नाश करके आत्म निश्चय में खड़ा करता है। हमारी सभी कामनाओं को जलाकर निष्काम बनाता है। सभी सकामी कर्मो से बचाकर जीवन का हर पल सभी पर लुटाना सिखाता है। मैत्री करूणा मुदिता अपने प्रति करना सिखाया। सच्ची मित्रता है कभी किसी हालत से विच्छेदता में न आना। करूणा अपने पर की यह जीवन अब व्यर्थ बातों मे न जाए। और अपने आनन्द में अर्थात मुदित में रहे। यही हमारा लक्ष्य सतगुरू कृपा से पूर्ण हो जाए। यही आशीर्वाद गुरू से लेना है। मेरा जीवन प्रभु तेरे हवाले है यही गुरूदक्षिणा गुरू को देनी है। और कोई चाह बाकी न रहे। प्रभु न मैं पृथ्वी न मैं जल न मैं गगन न वायु न अग्नि हूँ मैं कौन हूँ यही जानना है। मेरा स्वरूप न गृहस्थी न वानप्रस्थी न त्यागी हूँ। मैं केवल मैं को मिटाने आपके पास आया हूँ। गुरू हमें अपने स्वरूप में मिला दो। अब मेरी कोई चाह बाकी न रहे। बंधन मोक्ष की

कल्पना मिट जाए। यह जिज्ञासा जिसके मन में जागृत हो गई उसका कल्याण हो गया। उस मां की कोख धन्य हो गई जिसने ऐसे पुत्र को जन्म दिया। जिसके अंदर ऐसी जिज्ञासा प्रकट हुई और जिसने इस लक्ष्य की प्राप्ति में अपना तन मन धन सर्वस्व स्वाहा कर दिया। न मैं हूँ न मेरा है। यहां तो पहले दिन से ही गुरू हमसे ये मेहनत करके हमें आप समान बनाकर ही प्रसन्न होता है। और सभी कितने भाग्यशाली हैं जो आज हमें इस कलियुग में ऐसा सच्चा गुरू मिला है जिसने हमें सच की प्राप्ति कराई। **I may die you may live** कैसे निरअहंकारी सत्गुरू से सभी निरअहंकारी हो जाते हैं। गुरू पहले हमें आकर्षित करता है फिर प्ररित करता है फिर अपने जैसा बनाके पूरी तरह से बदल देता है। सभी को यह बोध कराओ। **Make I thy single refuge** सभी के भीतर बैठे सत्गुरू को प्रणाम करते चलो। सभी को वंदना करते चलो। जन्म तुम्हारे लेखे। एक पल भी व्यर्थ न जाए। विदेही होकर जियें। जीवन मुक्त का आनंद लें। गुरू हमें आनंदित होता देखकर ही आनंदित होता है। इसलिए दिल हर घड़ी शुकरानों में डूब जाता है। न मैं तन रहा न मैं मन ही रहा, सत्गुरू मिलने से झगड़े खत्म हो गए। अब ये एक अवस्था बनी रहे। मन की स्थिरता और तन कार्य में लगा रहे। आलस्य कभी न आए। हर श्वांस में हो सुमरन तेरा ही मेरा बीत जाए यूं जीवन मेरा। सभी के मुरझाए उपवन को खिलाकर उन्हें भी अपने पैरों पर खड़ा करना है। एक पल के लिए भी उदास रहते हैं तो यह हिंसा हो जाती है क्योंकि वो सोचेगा यह क्यों उदास है। प्रसन्नचित्त रहना ही लक्ष्य हो। सभी पर प्रेम अमृत बरसाते चलो।

पत्र नम्बर 67

यह सच का संदेश सभी में बांटते चलो। विरले ही ऐसे होते हैं जो गुरू के संदेश को हरेक तक पहुँचाते हैं। भाग्यशाली हो जो यह जीवन का कीमती समय (पीक टाईम) बीस से पचास साल भगवान के चरणों में डाल दिये हैं। बांटन वाले को भी लगे इस मेंहदी का रंग। रंगवाले को एक रंगवाले ने कहा अपने ही रंग मोहे रंग दे। बस यही रंग लगाते चलो। प्यार ही प्यार।

पत्र नम्बर 68

जीवन का ताजा फूल ईश्वर चरणों में अर्पित हो चुका है। बस अब इस ब्रह्माकार वृत्ति को संभाल के रखना। सर्व में आत्माभाव रखने से अब विकार गुम हो जाते हैं। **See God every where.** हर चीज भगवान है। गुरू ने विवेक खोल दिया है। अब सत्य असत्य की पहचान तुम्हें मिली है तो असत्य में कभी ना फंसना। दूसरा देखने से ही सब विकार उत्पन्न होते हैं। सारी सृष्टि मेरा अपना आप है। इसलिए **Love all alike** प्रेम, नम्रता, सेवा अन्त तक बनी रहे। **A best prayer is healing of a broken heart.** सबके आंसू पोंछते चलो। ना मैं किसी का ना कोई मेरा पर सब मैं ही तो हूँ। आगे बढ़ा कदम रूकना तेरा काम नहीं चलना तेरा शान चल चल रे नौजवान। हर हालत में अपने को मिटाते चलो। **Egoless** ही **Thoughtless** हो सकता है। सहज समाधि में रहना। हमेशा मुस्कुराते रहो। शुकराने गाते चलो।

पत्र नम्बर 69

You laugh and the world will laugh with you and you weep, you weep alone.

Meaning of Love

L - Look

O - Observe

V - Verify

E - Enjoy your life.

Love and be loved that is the goal of your life. Smile miles of your smile. This is your morning exercise.

Know thyself and you know god.

Be Still होना ही परम व अन्तिम पुरूषार्थ है। Know the trutgh and truth will make you free. सच्चा योग है परमात्मा से सदैव जुड़े रहना। गुरू से प्रीत अंत तक रहे क्योंकि कभी-कभी Stock Checking भी होती रहती है। श्रद्धा विश्वास की भेंट चढ़े सत्गुरू चरणों में रखते हैं वही भव से पार उतरते हैं। सुख शान्ति उनको मिलती है आगे बढ़ा कदम रूकना तेरा काम नहीं चलना तेरी शान। बीच बीच में speed breakers भी आते हैं तुम पर सभी से धीरज व प्रेम से आगे बढ़ते चलो। व्यवहार को भी परमार्थ का रंग लगा दो।

पत्र नम्बर 70

पत्र तुम्हारा कई दिनों से नहीं आया क्या बात है यहां से बराबर सब तरफ पत्र गए हैं। सत्संग तुम्हारा कैसा चल रहा हैं लगन में अगल दिनों दिन बढ़नी चाहिए। यह प्रेम दिनों दिन दूज के चन्द्रमा की तरह बढ़ना चाहिए। टहनी पेड़ से जुड़ी है तो हरदम हरी भरी रहती है। तवा गर्म है तो कई रोटियां पक जाती हैं। अंगारा अंगीठी में है तो दहकता रहता है। तुम्हारी ही शोभा है विराट से जुड़े रहने में। वैराग्य की नींव पक्की है तो कोई माया में नहीं घसीट सकता है। अपने अन्दर की सच्चाई ही काम करती है। सच के लिए जिसे प्यार है उसे माया की कोई शक्ति अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकती। छोटी-छोटी बातों में विक्षेपता में न आओ। भागवना नहीं है पर जागना है। सीख के जिओ जग में। नम्रता में अमरता है। मनोमय सृष्टि दुखदाई है। ईश्वर सृष्टि में तो कोई भी दुख नहीं है। मुड़ने में ही सच्चा सुख है। प्रेम ही है परमात्मा। परमात्मा से ही प्रीत सच्ची प्रीत है बाकी नाते सब झूठे हैं। सब मतलब के हैं यार, मत करो किसी से प्यार। अपने सुख से सब जग बांध्यो, क्या दारा क्या मीत।

पत्र नम्बर 71

तुम सभी ने प्रयास किया है तो सफलता भी अवश्य मिलेगी। आज दादा भगवान की बगिया जो इतनी सुन्दर सभी को लग रही है उसके पीछे भी इसी कुर्बानी का ही बीज है। सारी दुनिया से आला हमारा सत्गुरू है। गीता में निष्काम कर्म की महिमा लिखी है। लेकिन आज दिन तक किसी को भी ऐसा निष्कामी दिखाई नहीं दिया। गीता पर प्रवचन करने वालों ने भी दान पात्र रखे हुए हैं पर आज दादा भगवान ने जो यह ज्ञान दिया है इसमें कभी भी उन्होंने एक पैसे की भी उम्मीद नहीं रखी है। केवल दातार होकर यह ज्ञान यज्ञ किया है। आज सारी दुनिया झण्डे की सलामी करती है परन्तु उसका सजो आधार है डण्डा उस पर किसी की दृष्टि नहीं होती है। दादा भगवान ही इस झण्डे का डण्डा हैं। सारा श्रेय आज तक उन्हीं को है। कल **29th April** थी दादा भगवान की पुण्य तिथि। जिस दिन वो ज्योति जोत समाये थे। अपना कार्य पूरा करके हम सबके आधार स्तम्भ बने। गांधी भवन में सत्संग हुआ। **6-700** लोग करीब इकट्ठा थे। सभी ने प्रेमपूर्वक उनकी महिमा का गुणगान किया।

पत्र नम्बर 72

यह जीवन प्रभु के हवाले कर देने में ही मजा है। सब कुछ प्रभु अर्पण कर दें तो हल्के हो जायेंगे। पत्थर भारी है तो डूब जाता है परन्तु तिनका हल्का है तो तैरता है। तुम लोगों का प्यार ही तुम्हें आगे बढ़ायेगा। आज नहीं तो कल ये रूकावटें समाप्त हो जायेंगी और पूरा ही जीवन प्रभुमय हो जायेगा। तुम निष्कामी है इच्छा अहंकार से खाली तो निष्काम कर्म तेरे सामने जरूर आयेगा। यही निष्काम का फल है। सत्संग से ही अन्दर के विकार नष्ट होते हैं। प्रभु का सिमरण साध के संग न कि घर बैठ के। घर में बैठने पर तो वृत्तियां बिखरती हैं। एकाग्रता नहीं होती। पर सत्संग में जब अपने ही मुख से वाणी निकलती है तो अपनी ही दृढ़ता होती है।

पत्र नम्बर 73

खुशी होती है कि तुम लोगों को भी प्रभु ने ये कार्य दिया है। निष्कामी के सामने ही निष्काम कर्म आता है। जहाँ चाह है वहाँ राह भी है। सत्य की आखिर जीत होती है। यही जीवन प्रभु तेरे लेखे। ऐसे संकल्प करने से सचमुच प्रभु ही इस रथ को आ के चलाता है। **Readymade house** में आ के खुद ही विराजमान होता है। सच्ची लगन वाले के लिए कभी कोई दिक्कत नहीं आती है। विराट से **Conncection** जुड़ा ही रहे। तुम सबके अच्छे संकल्प जरूर ही एक दिन मिलवायेंगे भी। आपघात की बात तुम लोगों ने लिखी है सोई हरेक अन्दर आत्मा की हत्या करके बैठा है। यही बड़े से बड़ा पाप कर रहा है। बाकी सभी पाप तो छोटे पाप हैं। जीवभाव में रहकर मनुष्य मन के अधीन है और अन्दर से अतृप्त वासनायें हैं या सूनापन है जो गुरू के प्रेम के सिवाय नहीं भर सकता है। अब तो उसके बारे में न सोचकर अपने बारे में सोचें कि हम क्या कर रहे हैं। हम तो कहीं वही भूल नहीं कर रहे हैं जो भीतर वाले भगवान की हत्या अन्दर में करके बैठे हों। सच में रहेंगे तो हर दुख से बच सकते हैं बाकी वैसे तो कभी भी नहीं।

पत्र नम्बर 74

आप सभी का प्रेम भी बढ़ रहा है अब देखो फिर कब निराकार यह मिलन भी करवाता है। सब कुछ **Fix** ही है। आप सभी यह प्रेम बांटने में लगे हुए हैं। सचमुच इस संसार में ऐसे कम ही लोग हैं जो निष्काम जीवन जीते हैं। बाकी तो सारी दुनिया में मेरे की आग में जल रही है। इच्छा व अहंकार गुरू भीतर से खत्म कर देता है और हर प्रकार की कंजूसी खत्म करा के जीवन मुक्ति का आनन्द दिलाता है। हमेशा ही इस आनन्द को बढ़ाते चलो। सत्य को जानो तो मुक्ति तुम्हारे कदम चूमेगी। हमेशा प्यार में ही जीवन बिताओ। एक से प्यार बन्धन है, सर्व से प्यार मुक्ति है। सत्संग जोर शोर से करते चलो। तुम लोग भी अपने आत्म निश्चय में पक्के रहो।

पत्र नम्बर 75

बस गुरू ने ऐसा ही जीवन बनाया है जो हर समय खुशी ही खुशी, मेले ही मेले हैं। आप सभी का निश्छल प्यार बार बार याद आ रहा था। सचमुच यह प्रेम ही अनोखा है। कैसे सारी दुनिया अपनी हो जाती है। गुरू मै। मेरे की दुनिया से ऊँचा उठ कर विशालता की सैर करवाता है। मै। नहीं मेरा नहीं तो हृदय बिल्कुल **full sponge** हो जाता है। सर्व दुखों की निवृत्ति और परम आनंद की प्राप्ति हो जाती है। बस यह लगन अगन में बदलती जाये। जीवन सर्व के लिए हो जाये। मैं मैं न रहूं तू तू न रहे हम राम में ऐसे रम जायें। गुरू ने अपने अन्दर ही सब शक्तियां प्रगट करवा दीं। जिसको यह लगन लग गई उसका बेड़ापार है। बस यह जवानी प्रभु के अर्पण हो जाये तो जीवन सफल हो जाये।

पत्र नम्बर 76

इतनी छोटी **Age** में यह लगन तुमको लगी है यह बड़ी ही खुशी की बात है। शरीरों का तो कोई ठिकाना नहीं है। जितनी जल्दी हो सके यह आत्मनेष्ठा हासिल कर लें। जितना ज्ञान मिला है उस पर रहणी भी बनायें और बांटते भी चलें। यह अमूल्य धन तुम्हें गुरू ने दिया है। प्रभु का कार्य ही तुमसे होना चाहिए। सत्संग करना शुरू कर दो। सभी से प्रेम करते चलो। राह मिलती जायेगी। तुम राम को, कृष्ण, नानक सभी को याद करते हैं बाकी अपना दादा बाबा सब भूल गए क्योंकि राम, कृष्ण व नानक ने अपने को शरीर नहीं जाना। जो अपने को आत्मा जानता है वही अजम अमर हो जाता है। कृष्ण का ज्ञान सच्चा है जिसमें कोई नाम, जप नहीं है। इसमें यथार्थ वचन हैं। कई शास्त्रों में भयानक, रोचक वचन हैं। पर गीता में ही यथार्थ वचन हैं। यथार्थ से ही तेरा कल्याण होगा। देह अभ्यास में न गिरना। भयानक वचन वाले तुम्हें अनेक भयानक बातें बता कर अपना घर धन से भरते हैं। रोचक का अर्थ है रूचि दिलाने वाले शब्द। जैसे कहते हैं अजामिल ने **Last** में नारायण बोला तो मुक्त हुआ। वेदों में त्रिगुणी माया का विस्तार है। पर ज्ञानी माया से परे है। वेदान्त माना वेदों का अन्त, सार तत्व। असर सार है **You are God.** मनुष्य खुद ईश्वर है। यदि आपने अपने को जाना नहीं तो मिट्टी जितना भी मूल्य नहीं है। मनुष्य मरे कित कामन ना आवे। पशु मरे सौ कार्य संवारे। जानवर की खोपड़ी का दाम मिला मनुष्य का नहीं।

पत्र नम्बर 77

हरेक अपने को लायक बनाये। ये तेरा अहंकार है जो तुम कहते हैं मैं अपने आप चलूँगा। गुरू के आगे नम्रता से प्रश्न करो और गुरू वाक्य सत्यम् करके चलो। पर जब अहंकार आयेगा तो गुरू का भी नहीं सुनेगा। जीवभाव है तो भूल होगी पर आत्मभाव में भूल न होगी। जिसका जितना **receiving mind** होगा उतना ही सुनेगा, समझेगा। इसलिए किसी से खफा न हो जाओ। किसी की भूल न देखो पर सबको पहले प्रेम के बन्धन में बांधो तो कोई तेरी बात सुन सकेगा, समझ लेगा। सच्चा ज्ञान कभी न कभी सभी को **Fit** होगा। 12 बजे दोनों सुई इकट्ठी होंगी इसलिए धीरज चाहिए। इन्कार करते-करते इकरार हो जाता है क्योंकि गुरू सच्चा है, निष्कामी है। मन बुद्धि बीच में रोला करता है। नम्रता से एक-एक से बोलो। गुरू भी देश काल पात्र देखकर ही ज्ञान देता है। **Time** से ही कोई बात करता है। आखण औखा सांचा नाम - सबको आत्मिक शक्ति देता है पर किसी की भी भूल नहीं देखता है। पूछे तो दें, स्वयं कर्म का आरम्भ नहीं करता है। तुम शान्त करो और कोई शोर नहीं तेरा की। मन बुद्धि से कभी तुम भगवान को नहीं जान सकेगा पर गुरू वाक्य सत्यम् करके तुम उठाते चलो तो आपे ही ज्ञान हो जायेगा। हरेक अपनी भूल ढूंढे। दूसरे की भूल तो एक बच्चा भी निकाल देता है। हमारा काम है सर्व से प्रेम, एकता व मिलाप रखें। पहले पहले तो ज्ञानी को सर्व से प्रेम रखना है। किसी का दोष न देखें। गुरू जाणी जाणनहार है। हरेक एक दिन स्वयं ही ठीक हो जायेगा। कर्म और विकार दूसरे के देखेंगे तो अपना आप कब देखेंगे। पाण मंझ ई पाणु पसु वियो तू दर्शन बंदकर सावधानिअ साणु पर जो सारोई चिन्तन बंदकर। दूसरे का चिंतन क्यों चलें। मेरे सिवा दूसरा है ही

नहीं। तैरना सीखना है तो केवल मास्टर को और अपने को देखो दूसरे को नहीं। गुरू ने मेरे को क्या दवाई दिया। गुरू को अपना मन, बुद्धि देकर आज ही आनंद में आ जाओ। तेरे पास जो आए आत्मा का निश्चय कराओ। नाम रूप की बात न करो। तुम अपनी दवा ले के जाओ। जो टोपी तेरे को **Fit** हो तो लो। आज के सत्संग से मैंने क्या उठाया। तन मन धन बुद्धि सब गुरू का है जैसे चलाये तैसे चलें। कृष्ण ने अर्जुन को भी पहले आत्मा समझाया फिर युद्ध कराया। कर्ताभाव से रहित हो जाओ। गुरू कि **Main** सेवा है उसके वचन कमाना कि मेरे लिए गुरू का क्या उपदेश है? किसी से विक्षेप में न आयें। ज्ञानी भक्त के लक्षण 12वें अध्याय के 13वें श्लोक में है। हर समय अपने को ही जांचो।

----- **Judge** किसी को फांसी की सजा देता है तो भी निर्दोष है क्योंकि इंसाफ की कुर्सी पर बैठा है और दूसरा कोशिश करता है खून करने की **Intention** था, मर्म देखना चाहिए। तुम्हारा बाहर का कर्म लेखे में नहीं आयेगा पर तुम्हारी मुराद क्या थी? जैसे सेठ घर बैठे तनखा देने जाता था पर अन्दर लड़की में नजर थी। **If the wrong man uses the right means, the right means work in the wrong way.** चाहे इच्छा कर्म भी किया पर नतीजा खराब ही निकलेगा क्योंकि तुम अहंकार, इच्छा, वापसी की इच्छा, स्वार्थ रखकर करता है तो नतीजा स्वर्ग नरक मिलेगा पर निष्कामी दूसरे की भलाई के लिए जीता है तो उससे **Wrong** कर्म हो नहीं सकता और उसका आवागमन मिट जाता है तुमको **Adjust** करने का है या पूरी दुनिया को बदलने जायेगा? **You change yourself.** कर्म ही तुम्हारा है तो रोता किसलिए है? ये

अज्ञान करके तुम शिकायत करता है पर ज्ञानी सारा दिन शुकराने मानता है। बुरा देखन जो मै। चला। तुम्हारी **Evil eye** है जो खराबी नजर आती है पर जब है ही भगवान तो किसकी बुराई देखूं आत्मा छोड़कर? जो बांदा बाणिया है वो ही संभालता है कि **10** साल पहले मेरी सास ने मुझे ऐसा कहा था पर एक **Second** पहले क्या हुआ ये ज्ञानी को याद नहीं। **Present** में रहो। जिसका भाग नहीं है वो कम्बख्त है **Time** नहीं है सत्संग के लिए। सारा दिन बच्चों की कूं-कूं सुनता है पर कभी बगीचे में जाकर कोयल की मीठी आवाज नहीं सुनता है। भगवान की कितनी सहुलियत बनाई है। **Yesterday is a cancelled cheque.** कल परसों की बात करेगा तो मर जायेगा। बैंक में पैसा छोड़कर जायेगा पर जो उमंग प्यार का उठता है अभी पूरा करो दूसरे क्षण में तुम्हारा शरीर न हो तो। यह मनुष्य दो दम का है तो वक्त कैसे गंवाते हैं? आत्मा का कितना मनन किया, कितना श्वांस प्रेम का निकाला और कितना मोह, राग-द्वेष में निकाला। फिजूल बातों में **Time** गंवाते हैं। सारी उम्र **Fun and feast** में दिया पर मिला क्या? सुख में **Party** करते हैं और दुख में रोते हैं। पर मन के ईश्वर बनो। यह तो तुम खिलौना है। गुरू को अधिकार है कि किसी को मारे-कूटे पर तुमको अधिकार नहीं है किसी का अवगुण देखने का। भूल नहीं देखो क्योंकि तुम खुद दोषी हो। पांच विकार तो हैं फिर कैसे कहता है कि फलाणा खराब है। तुम **Perfect** हुआ ही नहीं है। गुरू अगर किसी का अवगुण बताता है तो भुला भी देता है पर तुम नफरत करके बैठता है। आत्माकार आत्मा ही देखता है। तुम खुद को **Surrender** करता है कि मेरी भूल बताओ। गुरू का काम है तुमको जगाना। **Fitfalls** दिखाना तो तुम अपनी भूल खुद **realize** करो। गुरू साफ

आईना है। दृष्टान्त - **Mary** को सभी आदमियों ने पापी समझकर मारा पर **Christ** ने कहा उसको ही अधिकार है मारने का जो निष्पाप है। पर **reformers** अपने आप के चाहिए। अपनी रहणी बनाओ तो सारी दुनिया बनी पड़ी है। प्रेम के **vibrations** भेजो तो सब भगवान हैं। सब भगवान हैं तो सब खिंच कर आयेंगे। छोटी बड़ी आत्मा है नहीं। करोड़ दीयों में एक ज्योति समाई पड़ी है। दूसरे की गन्दगी में जाता है जब कोई दोष देखता है। तुम शान्त बनो कोई शोर नहीं। तुम बुरा है तो बुराई दिखती है। विकार अन्दर में पड़ा है सिर्फ साधन चाहिए बाहर निकालने का। बाहर वासना पड़ी है और दोष देता है स्त्री को कि चंचल है। एक है मायाकार वृत्ति जो सिर्फ पदार्थ, **T.V. Building** हीरा देखता है। अच्छा दूसरे को दिखाता है तो भगवान की **Insult** करता है। जो अपनी आत्मा पर मोहित है वो दूसरे पर आशिक कैसे होगा? जो नजर देख लेती है तुझको वो नजर फिर तरसती नहीं है। वो आंख ऐसी है मरी हुई बिल्ली की तरह जगत दिखाई नहीं देगा सिर्फ भगवान ही दिखेगा और फिजूल की बात भी नहीं सुनेगा। जिसने गुरू के मुख से महावाक्य सुना तो दोस्त दुश्मन कौन है? दूसरी ब्रह्मकार वृत्ति जो **Sameness, oneness.** सबसे एक जैसा प्यार है तो शान्ति आ जायेगी और गुण दोष दिखने में नहीं आयेंगे और शरीर में मन जायेगा। नहीं तो वैराग्य वृत्ति हो जायेगी। एक है देह का प्यार, मोह और दूसरा है आत्मिक प्यार जो आने जाने, बिछड़ने में दुखी नहीं होता है। सबके आगे नम्रता में चलेगा तो कभी दुखी नहीं होगा। सच्चा योगी ज्ञानी वो ही है जो सुख दुख लाभ हानि मान अपमान में सम है।

पत्र नम्बर 78

Christ ने कहा **Forgive them oh Lord** अभयदान दिया। गुरू किसी को नतीजा नहीं देता। गुरू भगवान व जज से भी ज्यादा होशियार वकील है तुम्हें छुड़ा सकता है। तुम कहता है मैंने किया, जो आपे ही कहता है उसे जरूर मिलेगा पर गुरू कहता है मुकर जाओ। सपने की बात जागृत में न करो। सपने का पदार्थ, पाप जागृत में नहीं सतायेगा। गुरू धर्मराज से छुड़ाता है पहले ही लेखा ले के कागज फाड़ देता है। हम मरेगा ही नहीं तो लेखा कौन लेगा। कल तक जो हुआ वो पिछला जन्म हुआ। संचित, प्रारब्ध, क्रियामान सब खत्म हो जायेगा। ज्ञान अग्नि ऐसी जले जो मैं मेरा खत्म हो जाये। आपे ही तुम गधा बन के बैठा है, बोझा उठा रहा है। तुम आत्मा है तुमने कुछ किया ही नहीं है। **Doer** नहीं **Seer** बनो। तुम अकर्ता है, साखी है, आत्मा है। **Pure** व पाक है अपने को जानो। आकार में है तो विकारी, निराकार में है तो निर्विकारी है। गुरू तुम्हें देह से ऊपर करता है। मेरा भक्त सर्व आरम्भों का त्यागी है। हम न तुम दफ्तर गुम। तेरा **Computer** साफ हो जाये। राग द्वेष रहित हर समय आत्मा में है। कहीं भी मेरे सिवाय कुछ नहीं देखता। तुम देखना सारा दिन कर्म बना कि नहीं। नहीं तो खाना बन्द न होगा। प्रारब्ध कर्म काटो पर बनाओ नहीं। बाप ने माँ ने पड़ोसी ने दुख दिया पर तुमने बदला लिया तो कर्म बना। सपना समझ के भुला दो। **Repeat** नहीं करो। किसी का दोष न देखो। तेरे ही बीज का फल मिला। भगवान ने अपने प्रिय भक्त के ये सब लक्षण बताये हैं। किसी का भी कर्म याद नहीं है। अगर तुमने किसी से कुछ किया है तो वो उससे माफी मांगो, प्यार भी करो और उसका राजपा हासिल करो।

सदाचारी, दुराचारी, पाप-पुण्यी, सन्त-असन्त में एक ही आत्मा देखो। सब जगह मैं ही हूँ। तुम अपना दुश्मन न बनो। वासना और कर्मों की गठरी खलास हो जावे तब समझना तू जीवन मुक्त है। निंडाखड़े बालक की तरह सब भूल जाता है। पुरानी **History** व बातें भूल जायें। एक अपनी पुरानी **Life** ऐसे सुनाता है जैसे सपना और कोई सच्ची करके बताता है भूल जा जो देखता है जो है देखा भूल जा। **Today is the best day.** क्योंकि मैं जिन्दा हूँ, भगवान हूँ, सर्व से प्यार करता हूँ। प्रेम की गंगा बहाते चलो। एक आदमी बुरा संकल्प करेगा सारी दुनिया में पहुंचेगा जैसे **T.V.** का **Vibrations.** ब्रह्मज्ञानी का होना ही सारी दुनिया के लिए शीतलता प्रदान करता है। गंगा भी सन्त की शरण में अपने पाप धोती है। एक-एक जो ब्रह्मज्ञानी बनेगा वो सारी दुनिया के लिए फायदे वाला है। भीतर बाहर शुद्ध है मेरा भक्त। अन्न भी शुद्ध, शरीर की भी सफाई है। पराया अन्न खायेगा तो उसके लिहाज व डर में भी आयेगा। पाप की कमाई न खाओ। शुद्ध अन्न खाओ। मन शुद्ध इतना हो जाये कि किसी के लिए खराब सोचना बन्द हो जावे। मेरा भक्त चतुर है। माना जिस काम के लिए आया वो पूरा किया। जब तुम काम पूरा करके बैठेगा तो हम उससे खुश है। कामना का त्यागी, मन इन्द्रियों के वश करने वाला बन।

.... मेरा भक्त फल की कामना नहीं करता है। सेवा सबकी करता है पर सोच नहीं करता है। कर्म के फल का त्यागी है। मैंने कुछ नहीं किया भगवान ने ही सबकुछ किया। किसी में स्वार्थ नहीं रखता, इच्छा नहीं करता, शोक नहीं करता। तुम कहते हैं कि नहीं मांगेगे तो भगवान कैसे देगा। बच्चा भी रोता है तो माँ उसे देती है। तो वो कोई बेवकूफ माँ

है पर पढ़ी लिखी माँ **Time** से अपने आप से सबकुछ बच्चे को देगी। जो नहीं मांगता उसको पूरा पूरा हक आपे ही भगवान देता है। **Man-Desire=God** जहां चाहना है वहां शान्ति नहीं है। राम भी है उसका गुलाम। योग क्षेम भगवान पर है। भगवान के ही सिर में आकर दर्द पड़ता है कि इसे क्या दूँ इन्द्रलोक का राज्य भी उसे नहीं चाहिए। सब पदार्थ मिल भी जायेगा तो शान्ति छिन जायेगी। चोरों का डर रहेगा। **Happiest man is without a shirt.** जब आवे संतोष थन सब धन धूल समान। भगवान ने भी सबकुछ दिया है पर तुम्हें शांति, संतोष नहीं है तो दुखी है। निन्दक नेरे राखिए, कबीर सत्गुरू पाईया निन्दक के प्रसाद। सबका शुकराना मानो। कैसी हालत हो जिसका शुकराना न मानेगा? मुंह बन्द हो जाये तो कहो आंख है दर्शन तो कर सकते हैं। **Actress** की टांग टूटी तो **Drama** लिखना शुरू किया। दृष्टान्त - मीरा, सीता, द्रौपदी जैसा कष्ट तो नहीं आया है? अन्त तक भगवान में विश्वास रखो। राखे राम तो मारे कौन। है ही इन्साफ। जो बीज बोया है वो की मिलेगा। संकल्प ही बीज रूप है जैसा संकल्प किया है वैसी सृष्टि बनी है। सबको दुआएं दो। सबकी भलाई के लिए सोचना। हेतु रहित दयालु है। सबके लिए प्यार व करूणा हैं भगवान देखकर शान्त हो जाओ। गुण देखेगा तो गुण अन्दर आयेगा। विकार देखेगा तो विकार आयेगा। प्रेमी बनो मजदूर नहीं। तुम आशिक नहीं मजदूर है जब तू मांगता है फल मेरे को चाहिए। नहीं अभिमान, अहंकार नहीं है। बड़प्पन का छोटेपन का अहंकार नहीं है। शत्रु-मित्र, मान अपमान में सम है। सर्दी-गर्मी, सुख दुख से ऊपर है यानि सर्दी या गर्मी की शिकायत नहीं करता बाकी ऐसा नहीं कि सर्दी गर्मी के कपड़े नहीं पहनेगा। दुख मिले अथवा सुख हर हालत

में प्रसन्न रहता है। मेरा मकान कहेगा तो उसमें सांप होकर आयेगा। जहां रहा हुआ है तेरे लिए है पर तेरा नहीं है। अपने मकान में इच्छा न रखो कि मैं मरूं, रहूं। किरायेदार से झगड़ा करते हैं। रहने के स्थान में ममता न हो। सारी सृष्टि परमात्मा की है। तेरा कुछ है नहीं। अपने साथ क्या क्या लाया, द्वैत, द्वेष कितना रखता है। लखपति करोड़पति भी खायेगा कितना? बाकी सारा दिन इच्छा वासना रखकर अपना जन्म गंवाता है। ज्ञानी एकाग्र वृति में रहता है, विक्षेप में नहीं आता है। देह भी जड़ है। दीवार उसे भी क्या गाली लगी। अपमान लगता है तेरे अहंकार को। रावण ने भी अहंकार किया 10 सीस यानि 10 इन्द्रियों का अहंकार था। गुरू तेरा 10 सीस उतार लेता है। मन, इन्द्रियों के राजा को ही खलास कर देता है। मन जीते जगतीत। जो सुनता है वो मनन करता है। ऐसा मननशील पुरूष मेरे को प्यारा है। मेरे परायण-जैसे पवित्रता स्त्री पुरूष परायण आधारित है। मेरा पति कैसे राजी रहे। एक से भी द्वेष किया माना भगवान से किया। मेरे को ही सब जगह देखे। मेरे को ही ध्यान में रखे कि मेरा भगवान कैसे राजी रहे। राजी तब होगा जब तू **Egoless** होगा। जैसे स्त्री पति के लिए ही जीती है ऐसे भक्त भगवान के लिए ही जीता है। ध र्म मय अमृत - जो भक्त के लक्षण हैं वैसा रहता है। मैं उसको प्रिय हूँ वो मेरे को प्रिय है। सर्व में मेरे को देखो

क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ को तत्व से जानने वाला ज्ञानी है। सब क्षेत्रों में क्षेत्रज्ञ भी मेरे को जान। क्षेत्र के विकार व क्षेत्रज्ञ को अलग करना यही ज्ञान है। फिर ज्ञान के 9 साधन बनाकर आगे चलकर उनमें अभिमान का त्याग एवं वैराग्य का वर्णन किया है। भगवान समझ के सबकी सेवा करें। गुरू का भक्त गुरू से बढ़कर है। चरणधूल सबकी हो जाओ। गुरू का रूप

देखें। सबको सुखी करेगा, सुख की इच्छा नहीं रखेगा। मैं केवल गुरू की नजर में आ गया तो सारी दुनिया मानेगी। सरलता, आरजू, मन, वाणी की शुद्धता यह ज्ञान है। धीरज इस रास्ते में बहुत है। साहिब मिलेंगे सबूरी में। रीस नहीं, हसद नहीं। जो-जो तुम्हें समय पर मिला है उसका कद्र करो और बाकी के लिए धीरज रखो। उतावलापन न हो, ईर्ष्या रीस न हो । हरेक की तपस्या **Time** पर फलीभूत होती है। इच्छा वाले को लगता है कि मेरे को कुछ नहीं मिला है। एक बूंद मिले तो भी समझो सागर मिला है। दूसरे गुरूओं के पास देखो क्या पूछते हैं? सारी दुनिया उनके पीछे दौड़ती है उन्हें क्या मिला है? पर तुम्हें तो इतना मिलता है। गुरू मोटर में घुमाता है, खिलाता है, पिलाता है तो भी कद्र नहीं है। दूसरे गुरू के पास तो दर्शन भी दूर से दूरबीन से करते हैं। गुरू का दर्शन माना उसे **Deep** में जानना। **One touch, one glance of true Guru is enough to show God.** अर्जुन जैसी श्रद्धा चाहिए। नम्रता भाव से उत्तर प्रश्न करना चाहिए। मन की उलझन बार-बार पूछो। हजारी बारी भी सवाल करो। रामजी ने वशिष्ठ से बार-बार कहा कि जगत सत दिखता है। बार-बार उन्होंने भी उसे फर्क ढंग से समझाया है। कल पूछो, फिर आज पूछो तभी निर्णय होगा, थको नहीं। तुम्हें बाहर से पता भी नहीं चलता पर अन्दर ही अन्दर लग जाता है। एक जन्म भी एक पलक ही है ऐसा समझो। लाख सीस देह हरि मिले। मुश्किल को आसान बनाने वाला मेरा सतगुरू है। 12 बजे दोनों सुई इकट्ठी होंगी। जन्म-जन्म का कीड़ा है विष्ठा का ये मन। बार-बार मोहित करता है। मिले हुए की खुशी करो।

पत्र नम्बर 79

Love is not an action, it becomes your nature. It is a state of self action. करेगा तो कभी गलती में करेगा। एक से करेगा तो दूसरे से नहीं करेगा तो द्वैत सिद्ध होगा पर प्रेम का सागर हो जाओ बर्फ का स्वभाव ठण्डक का है वह आकर ठण्डा नहीं करती तुम उसके सामने जाएगा तो ठण्डक महसूस होगी। ऐसे ही ब्रह्मज्ञानी का प्रेम स्वभाव है वो करता नहीं है पर जो उसके सामने आता है वह प्रेम को पा जाता है। गुरू के अन्दर की हालत ही ऐसी है जो उसका प्यार ही प्यार है वह सूंघ कर प्यार नहीं करता है। **Attachment** रखना मोह है, स्वार्थ है, सकाम है पर निष्काम प्यार जिसमें कुछ नहीं चाहिए। अपने घर में पास आ जाओ। ब्रह्मलोक का सुख ही तुच्छ है पर आत्मा का सुख ही सच्चा है। जो बाहर भटकता है वो दुखी होता है। गुरू अन्दर वाले भगवान को प्रकट करता है। **Love is the only divine law.** प्रेम बिन थोथे सभी जाप, ताप, व्रत और नेम। प्रेममय हो जाओ। सच्चा प्रेम हो जावे की सर्व में पेखे भगवान। 24 घण्टा भगवान याद है तो दूसरी कौन सी बात याद आयेगी। सारी माया **dull** हो जाती है। अपना आप समझकर प्यार करना ही सच्चा प्यार है। बादाम के तीन पर्दों को उतारा गया तो उन्होंने कहा कि हमने बादाम को संभाला है, सर्दी गर्मी में रक्षा की है, हमें मत फैंको। पर गुरू ने कहा कि पर्दों का मूल्य बादाम की वजह से था इस तरह शरीर का मूल्य अन्दर की आत्मा की वजह से है और वह आत्मा सदा शरीर से अलग है। विजूद माना शरीर। शरीर के परे आत्मा सदा है ही है। दुख सुख चलेगा जब तक मुक्त

न हुआ है। जो हुआ सब ईश्वर ही इच्छा, इन्साफ हुआ है, वाह गुरू करके देख। आत्मा पश्यन्ति आत्मा। आत्माकार आत्मा को पहचानेगा। आत्माकार बनो, देहअभ्यास जाना चाहिए। भगवान पाने के लिए **pathless land** है। सतगुरू ही समझता है। गुरूमुख नाम झपै एक बार। **Morality and Spiritualioty - Morality** माना दुर्भी, पाखण्डी, सदाचारी जब **non-possession** हो जाता है। **Then there will be no desire and its object when you see nothing but God.** ईश जीव बन देखन आया। आपसे आप ही भूल्या। कृष्ण भगवान ने हिंसा करवाई जो अर्जुन को ही खत्म कर दिया। **It is easy to strike but lord to stay the land.** अपरा विद्या से मुक्ति नहीं मिलेगी। मोक्ष की इच्छा मत रखो। सिर्फ अज्ञान को ज्ञान से निकालो। अधिष्ठान देखो, नोड़ी देखो तो सांप का भ्रम जायेगा। **Love all alike and the world disappears. See rope and snake disappers. Where is not God fell like this. See God everywhere. Meditation means absence of thoughts and action.** माया निकम्मी, भोग रोग है। मोह को फर्ज समझता है पर सर्व कभी न परितज्य। मोह वाला लोभ और आसक्ति में जलता है। **Do nothing and you have to renounce nothing.** ब्रह्मज्ञानी परधर्म में नहीं आता। आत्मा साध्य वस्तु नहीं है, सिर्फ मन अमन हो जाये तो आत्मा तुम पहले है। **Everything is inhalited by God. No fear no hatred, Sameness and Oneness. All that happens is more**

right. सब दुख का कारण तुम्हारा अज्ञान है। इसलिए गुरू के मुख से आकर नाम को **Catch** करो। हमारे पास **escapism** नहीं है। भागने का नहीं जागने का है। **To see God is to be God.** भगवान देखने से भगवान हो जायेगा। प्रेम से परमात्मा भी मिलता है और सारी सृष्टि का प्रेम भी उसे मिलता है पर तुमने प्रेम सीखा ही नहीं। सबमें मोह रखा, इच्छा रखी इसलिए कुछ मिला ही नहीं। लेकिन प्रेम वाला वापिसी की इच्छा नहीं रखता। जिसको एक भगवान का आश्रय मिला वह **Self dependent** हो गया, आजाद हो गया। न आसरा न उम्मीद न शिकायत। प्रेम की दुनिया बढ़ाते चलो। सारी दुनिया प्रेम से खाली है। प्रेम देना सीखो तो सब तुम्हारा हो जायेगा।

पत्र नम्बर 80

जो बाहर से सुख आता है वो जाता भी है पर भीतर का आनन्द कभी नहीं जायेगा। कल 1,00,000 आयेगा तो फिर परसों जायेगा भी। माया एक जगह नहीं रहती। गुरू तुम्हें अपनी नजर देता है कि सर्वत्र ब्रह्म जानो। अपने को जानो फिर सर्व में जानेगा। गुरू को देखते देखते, पहचानते पहचानते वैसा ही हो जायेगा। वो अद्वैत में ब्रह्मरूप हर समय एक रस है तो मैं क्यों नहीं हूँ। डाक्टर **Patient** को जैसे **Dose** देता है ऐसे ही गुरू भी तुम्हें समय पर ज्ञान देता है। अश्रद्धालु नाश जाण। गुरू से नम्रता भाव से बात करनी चाहिए। कभी भी अहंकार से न चलो। द्वैत की बदबू भी न आवे। अद्वैत में ही रहो। द्वेत का धुंआ नहीं पर अद्वैत की आग को जलाया जाये उसको तो रहे न उसकी राख। निराकार भी वो है तो साकार स्वरूप भी उसका ही है। पहले सत्ता सब ब्रह्म की है। बाहर के नाम रूप में जायेगा तो गिरेगा। धैर्य से ही यह रास्ता तय होता है। माया से खींचकर गुरू ही बचाता है। **100% truth** या ज्ञान है।

सच और झूठ को पूरा-पूरा जान लो। पहले माया खिंचती थी अब धक्का लगाती है। इस लोक व परलोक के भोगों की कामना से रहित हो जाओ। मन इन्द्रियों का निगृह इसमें मेहनत है पर आखिर सच्चा सुख मिलेगा। गुरू की भी श्रद्धा व भक्ति सेवा। उसके वचन की सेवा। गुरू की **Personel** सेवा क्या करेगा। निष्काम सेवा भी गुरू की सेवा है। मेरे से भी मेरे भक्तों की सेवा अधिक है। दुखी को जा के ज्ञान सुनाओ। जहाँ तहाँ मेरे को देखो। गुरू हमको बिठाता भी नहीं था अपने सामने। कृष्ण बोला मेरा ज्ञान जो

मेरे प्यारे भक्तों में बांटता है वो मेरा परम प्यारा है। सेवा के लिए ही तुम इधर आया है। भक्ति प्यार व श्रद्धा होवे। द्वेत, द्वेष से रहित। सबमें गुरू का स्वरूप देखो। बाहर के सुख भगवान से मांगने वाला कल्याण के बदले काल मांगता है। मिले मिलिया ना मिले जे मिले मिलया होय, अन्तर आत्म जे मिलेती मिलया कहिये सोय। अन्दर का मिलाप होना चाहिए। **heart to heart talk** होना चाहिए। त्रिगुणी माया भी जीवभाव में सताती है। पहले आत्मा को जानो तो त्याग स्वतः हो जाता है। गुरू से जब सच मिलता है तब झूठ छूटता है। सूर्य से अन्धेरा नहीं मांगेगा सूर्य निकला तो अन्धेरा भाग जायेगा। मुक्ति का साधन है सच्चा गुरू और सच्चा ज्ञान। पहले पहले कृष्ण ने अर्जुन को ज्ञान क्यों सुनाया क्यों नहीं पहले लड़ाई करवाया। पहले-पहले आत्मा की बात ही शुरू किया है। आत्मा में ही टिकाया है। फिर अर्जुन ने जब सवाल पूछा है मन के बारे में तब कृष्ण ने उसको ऐसा ज्ञान दिया कि मन वश में कैसे हो। आत्मा की मुरली सुन के मान शान्त हो जाता है। अमृत पी के कोई जहर नहीं पीयेगा। विषय का रस सब जहर है। कभी भी तृप्ति नहीं आती। हजारों साल भी कोई यह सुख ले तो भी शान्ति नहीं आती। ब्रह्मानंद के सिवाय अन्दर तृप्ति नहीं आयेगी। विवेक व विचार जब उत्पन्न होगा तब शान्ति आयेगी। परमात्मा को जानो। माया के पीछे न घूमो। मन माया में रम रहियो विसरयों गोविन्द नाम। अपना उद्धार पहले कर लो। **Have you got peace of mind?** तुमने अपना उद्धार न किया तो तू अपना दुश्मन आप है। लोकारीत, माया सब याद है। अपने सुख व शान्ति की खोज करो तो सारी दुनिया खुश हो जायेगी। ज्ञान समझो असत की पीछे न जाओ।

पत्र नम्बर 81

तुम अपना शरीर भुलाओ तो कोई दुख दर्द तुम्हें नही लगेगा। गांधीजी ने जेल को तीर्थ बना दिया तो अंग्रेज उसे दुखी न कर सके। कृष्ण भगवान ने कहा है कि मेरे को कोई कर्तव्य शेष नहीं है लेकिन तो भी जैसा मेरा आदर्श होगा वैसे दुनिया चलेगी इसलिए मै। भी ऐसी तरह से चलता हूँ जैसे कोई खराब न हो जाये। अज्ञानी तो अपने को **Free** समझता है, बेपरवाह है। माँ-बाप बीमारा होगा तो भी स्त्री के साथ घूमने चला जायेगा। बाप का या माँ का पांव तो दबाता है पर कहने पर नहीं चल सकता है। यहाँ पर गुरू प्रेम में तेरे मन को मोड़ता है। रबड़ की गुड़िया जैसा फिर तू दुनिया में किसी को भी झुक सकता है। हारिये तो हरि मिले जीते तो जम जाये। सब दुनिया में पहले अपने सुख के लिए ही जीआ था पर तुम्हें पहले मोह था उसी से ही द्वेष है। प्राणों से प्यारी भी बोलता है फिर-फिर द्वेष भी उसी से है। तुमने औरत को **Furniture** जैसा समझा है। अपने **order** में चलाया है। वो चेतन आत्मा है जड़ चीज नहीं है। आज बच्चे को तुम जूता लगायेगा तो बड़ा हो के वो बदला लेता है। बूढ़ा आश्रम में छोड़ आता है इसलिए सबको भगवान करके देखो। बच्चा बड़ा है तो तेरा दोस्त है पर तुम सारी उम्र बच्चे को बच्चा समझाता है। वो तुमसे ज्यादा अक्ल वाला है। पर तुमने उसकी कलाएं छिपा दी है। जो बड़प्पन की होशियारी है वो अन्दर से निकाल दो। **A to Z** जो भी विद्या ली वो अविद्या है उससे तू बेवकूफ ही रह गया। अपने को नहीं सुधारा मन में शान्ति नहीं है। विकार सब भरे पड़े हैं। भगवान की तरफ तेरी कोई होशियारी नहीं चलती। जिसका यहाँ मन मुड़ा वो सब तरफ मुड़ेगा। मन,

मारण की औषधि सत्गुरू देत बताय। किसी के **under** मन तो मुड़ा नहीं। गुरू प्रेम से जब मोड़ता है तब सीखता है। तुम जब खुद यहाँ सीखने आा है तब गुरू तेरे मन को मोड़ता है। गुरू तेरे मन दुश्मन को मोड़ के बनाता है। दुनिया में तुम किसी के आगे न मुड़ा वहां से दो गाली खा के भागेगा। गुरू को छोड़ के जायेगा तो तेरा ही नुकसान होगा। **Pride comes before a fall.** जो गुरू के पास नहीं मरेगा उसे दुनिया मारेगी। गुरू यहाँ नम्रता करके निरअहंकारी हो के हमें नम्र व निरअहंकारी बनाता है। गुरू ही कहता है मैं कुछ नहीं हूँ तो तुम कैसे कुछ बनेगा? माँ ने भरत को जब भाई का हक दिया तो उसने नहीं लिया। **Pure** हो जाओ तो फिर यह ज्ञान लगेगा। वैराग्य वृति हुई तो रामचन्द्र ने वशिष्ठ से यह ज्ञान लिया। वैराग्य पक्का है तो ही ज्ञान पक्का होगा। जिसको दुनिया की इच्छा है, स्वर्ग की इच्छा है तो उसको भगवान न मिलेगा। ब्रह्मलोक का सुख भी मिले तो भी नहीं चाहिए। कोई भी **Present** मिलती है तो तुमको खुशी नहीं होती है या नहीं। हनुमान ने मोतियों की माला के एक-एक दाने को तोड़कर फेंक दिया कि इसके अन्दर राम नहीं हैं। ये मोती, ये हीरा, ये जवाहरात मैं क्या करूं। सारी दुनिया एक तरफ मेरा भगवान एक तरफ है। तुम समझते हैं कि थोड़े **Time** का सुख तो माया में है पर उसे रामचन्द्र के सिवाय कुछ नहीं चाहिए। सीता ने भी एक हिरन की कामना की तो रावण के पास जाकर पहुँची। तुम्हें माया प्रिय है, थोड़ी भी ली तो भगवान हाथ से खिसक जायेगा। एक मर्द औरत पर कितना हक रखता है। तुम गुरू का इतना हक अपने ऊपर रखता है। वो पति भी कहता है तू केवल मेरी है मेरी होकर रहना। तुम

भगवान के सिवाय कुछ न देखना। सारी दुनिया से **Unconcerned** रहेगा तब भगवान से प्रीति है। कहाँ भी राग रहता है, प्रीति रखी तो फंसेगा पर अव्यभिचारिणी भक्ति योग से भगवान मिलता है। **God is jealous lover.** वह भी नहीं चाहता है कि मेरे अलावा तुम कहीं भी अपनी दिल लगाओ। दुनिया में लोग प्यार करके गिरते हैं। **They fall in love,we rise in love.** यहां आत्मिक और दुनिया में वासनिक प्यार है। मीरा प्यार में चढ़ गई। एक कदम कोई बढ़ता है तो 100 कदम भगवान चल के बढ़ाता है। **What is our aim?** अपना स्वरूप पहचान, गफलत छोड़। माया मरी न मन मरा मर-मर गये, शरीर, आशा तृष्णा न मरी कह गये दास कबीर। आशा, तृष्णा महाचंडाल हैं। कभी मरने वाली नहीं है। आप भये बुढ़े तृष्णा भई जवान। तुम कहता है मैं जल्दी ठीक हो जाऊं बीमारी से। तो गुरू कहता है उठ के तू फिर माया में ही जायेगा और क्या करेगा। पैसे के पीछे न जाओ पर भगवान के पीछे जाओं। गर्भ जेल में भी तू चिल्लाता है कि फिर माया में न जाऊंगा पर निकल के फिर क्या किया। तुम कहता था यह जन्म तेरे लेखे दूंगा पर इतने साल क्या किया। अब भी जब बीमारी, दुख आयेंगे तो जल्दी-जल्दी आयेगा पर जब फिर सुख़ मिलेंगे तो तू घर बैठ जायेगा। गरीब सोचता है साहूकार होता तो सुविधाएं होती तो जल्दी आता सत्संग में। साहूकार कहता है इतनी माया न होती तो जल्दी आता। पर इधर दोनों ही नहीं आते है। यहां तो प्रेम व लगन वाला ही आता है। जिसका बख्त भाग खुलता है तो तुम सब भाग्यवान भगवान हो जाता है। प्रेम से नियम, नियम से परमात्मा मिलता है। गैर हाजिर माना घर हाजिर। घर में

तो जरूर माया की बात चलती है। गुरू के सामने 10 भूल होती हैं तो गुरू से दूर रहकर हजार भूल होंगी फिर गुरू के पास रहते तू भूल रहित हो जायेगा। अहमता, ममता, कर्ता, समतायोग से जायेगा। तुम कहता है **I wish to sit in samadhi** ये विष है, जहर है। समाधि से नहीं पर अध यात्मिक ज्ञान से तेरा भ्रम संशय जाता है। आत्मा न मरती है न मारती है। अर्जुन से सबको मरवा के भी अर्जुन ने किसी को नहीं मारा। शरीर सब मरने वाले हैं। शरीर अमर नहीं हो सकता है। आत्म ज्ञान से ही ये समझेगा कि **There is no death** चार अवस्थाओं की तरह ये शरीर भी **change** होता है। वासनानुसार जा के नया चोला धारण करता है। वासना को **Shelter** चाहिए। प्रभु के सिमरण गर्भ न बसे, दुश्मन टरे, भय न वियापे। कोयला कभी न उजला पर भट्ठी में जल के भस्म होता है।

.... निष्कामी कोई विरला ही होता है। इस ज्ञान में ज्ञान सुनाकर तुम इच्छा रखेगा उसमें तो वो सकाम हो जायेगा या सोचेगा मैं इतना धूप में, बारिश में, गर्मी में आया गया मुझे क्या मिला। शुद्ध बुद्धि वाले को ज्ञान जल्दी लगेगा। थिर मन ब्रह्म अथिर मन संसार। दूजा भाव न होये। एक ही भाव हो जाये। समदृष्टि, समभाव रखना है। गुरू को अपना तन मन धन भेंट चढ़ा देता है तो अन्दर आनन्द आता है। महात्मा गांध ी को एक औरत ने अंगूठी दी। जो उसकी टोटल मल्कियत थी वह दी। महात्मा गांधी ने उसका दान सबसे बड़ा माना। एक ड्रेस, एक साड़ी, एक चादर गुरू को दिया बाकी सब तुमने अपने लिये रखा तो यह कैसा प्यार है। रानी का 10 लाख का चेक नदी में बहा दिया तो सारा दिन कहती थी सब आपका

है तो भी आकर महादुखी हुई। तेरा तो कुछ था ही नहीं। 10 लाख उसका अपना ही था गुरू तेरा अहंकार निकालता है। इसलिये यहां गुरू ने किसी का एक पैसा भी नहीं लिया है। जब तू भी न रहे तेरा भी न रहे तब तेरा एक झूठा बेर भी गुरू रखता है। मैं अगर देखूं तो देखूं तुम न मुझको देखना ऐसा निष्कामी भक्त होवे। राजाओं की राजाई भी फेंक देता है प्रेम स्वीकार करता है दिखावा नहीं। जो नम्रता सेवा प्रेम में है, निष्कामी भक्त है उसका सब खाता बन्द है। शरीर मन और संकल्प विकल्प होशियारी सब गुरू को देवे। गुरू से कभी फल नहीं चाहो। तुम कहेगा इतना गुरू को दिया, सब गुरू के लिए छोड़ा, गुरू ने मेरा कद्र ही नहीं किया। मेरे लिए सब कुछ गुरू ने ही किया तप भी, साधना भी। यज्ञों का भोक्ता भी मैं हूँ। पुरूषार्थ भी गुरू ने ही अन्दर किया। गुरू ने ही हमारा ध्यान किया है। मैं हूँ ही नहीं। जो न्याज से, श्रद्धा विश्वास से चलता है उसका पत्र पुष्प प्रेम से लेता हूँ। जिसे कुछ चाहिए नहीं, जो सर्वस्व कुर्बान कर दे। न मैं अपने लिए और न अपने वालों के लिए रखता है। अपने वालों के सुख की इच्छा नहीं। **Total** सर्व के लिए जीयें।

सर्वधर्म पाने में जो कष्ट उठाता है वो भी मेरे को अर्पण कर दो। सब भगवान ही कर रहा है। जो कुछ **life** में किया है सब मेरे को अर्पण करते चलो। सब कुछ भगवान तुम ही है मैंने कुछ नहीं किया है। तुम कुछ भी देगा तो याद करेगा इसलिए पहले निरअहंकारी होना है। गुरू सब तरफ से तुम्हें छुड़ाता है। जब तक छूटेगा नहीं तब तक आत्मा में नहीं टिकेगा। घुटन के बाद बारिश होती है। फिजूल बात नहीं करता। फिजूल खाया ये ज्ञान नहीं है शब्द भी हंसी मजाक

में **wrong** बोला तो कोई तुम्हें ज्ञानी या जिज्ञासु नहीं समझेगा। अन्दर ही अंतर्मुख होते जाओ। घूमने ही इच्छा भी नहीं। सारा दिन मौन रहकर दिखाओ। आत्मा का जवाब दियो। फिजूल न बोलो न हंसी मजाक करो।

सब कर्मों का फल अर्पण कर दो वह सन्यासी है। दो प्रकार का योग भगवान ने बोला है। निष्काम योग और सन्यास योग माना कर्मों का फल अर्पण कर दो। निष्काम कर्म योग आसान है, सुगम है। साधन में देह अध्यासी के लिए यह साधन बहुत कठिन है वो बंधज्ञानी हो जायेगा। राग द्वेष से ऊपर है यह ज्ञान। समदृष्टि होवे समवर्तण नहीं। **Willing renunciation** खुशी से ख्वाब। कर्म करने में तू स्वतंत्र है फल भोगने में तू परतंत्र है। जिसको कर्म का फल नहीं चाहिए वो क्या कर्म करेगा। प्रेम में दिल जुड़ जाती है नफरत में दिल टूटती है। तुम यदि किसी का दिल जोड़ नहीं सकते हो तो तोड़ते भी क्यों हो। अंगुलिमाल डाकू को बुद्ध के प्रेम ने बदल दिया। गुरू के एक वचन से विवेक खुल गया। सभी को **auto-suggestion** दो कि **you are getting better.** गुरू कहता है तू अजर अमर आत्मा है। जो आत्मा में है वो सदैव हंसता रहता है। तुम भगवान के नए कपड़े पहनने में रोता है तुम छठी की खुशी करो बाकी जाने का मातम क्यों करते हो। तुम समझो बेटा **America** गया है। तुम तो था कंजूस। उसे शायद पैसा न देता घूमने के लिए तो वो नए शरीर में आकर घूमेगा। सत का अभाव नहीं और असत का भाव नहीं। अशोक रहना तेरा धर्म है। जीते हुओं का चाहे मरे हुओं का ज्ञानी शोक नहीं करता है। सच्चा धर्म है तेरा अशोक रहना। मोह, शोक में रोना पड़ता है। दृष्टा

साक्षी होकर **Picture** देखते चलो। नाटक का अर्थ है न अटक, न टिकने वाला। **God has plan for you.** तुम सच करके समझेगा तो दुखी होगा। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की तरह भूल न जाओ। तुमको कोई विधवा रोके अपनी **History** सुनायेगी तो तुम रो पड़ेगा। पर ज्ञानी उसकी झूठी **Story** करके समझता है और अगले को भी ज्ञान सुना के झूठ करके दिखाता है। भगवान ने तुमको बेटा दिया अमानत तुम अपना समझ के बैठा है। जिस प्रभु से नहीं चारा, वाको कीजे सदा नमश्कारा। भगवान से तुम पहुंच नहीं सकेगा। सब चीज (तुम भी तेरा भी) की गठरी बना के रख दो तो किसी बात का शोक न होगा। सब कर्म फल भगवान को दे देगा तो भगवान में ही लीन हो जायेगा। मुक्त जो है वो शुभ अशुभ के फल नर्क व स्वर्ग से छूट जायेगा। मुक्ति का ज्ञान है। फल ही नहीं मिलेगा। तुम मुक्त है? चित्रगुप्त **Computer** अन्दर ही है सब हिसाब किताब लिखता रहता है। गुरू को सब हिसाब बता दियो तो तुम सब कर्म से छूट जायेगा। सपने में जो कर्म हुए उनका हिसाब नहीं मिलेगा। तुम इधर ही मुक्त हो गया तो फल कौन भोगेगा। मुकर जाओ। गुरू होशियार वकील है। भगवान से भी छुड़ा के आयेगा। तुम्हारा सब विकार अहंकार उसमें जल के भस्म हो जायेगा। देह में न जाओ। पिछली कल तक की कहानी भुलाओ। जो कुछ किया इस शरीर से किया। आज तू ये शरीर नहीं है। बुरी आदतें आज फेंको नया जन्म नया जीवन आज से तू **Son of Man** नहीं **Son of God** है।

पत्र नम्बर 82

सत का कभी अभाव नहीं असत का भाव नहीं। न आप मरता है न मारता है। जमे न मरे न नाश थिए। अजूनी और अविनाशी है। नया कपड़ा पहनने के लिए पुराना छोड़ना पड़ता है। पैदा होगा तो अवश्य मरेगा। इसलिए शोक काहे का करे। आत्मा आश्चर्यवत है। सब देह के अन्दर है अमर देहवासी। योग माना युक्ति। कोई भी मरता है तो अशोक रहो। सब दान से उत्तम दान यज्ञ दान है। अच्छे से अच्छे दान है कि फिर उसे भीख मांगनान पड़े। इच्छा मात्रम अविद्या। यह तेरा अज्ञान है। हमको इच्छा नहीं है और तुम इच्छा मोह नहीं छोड़ सकता है। ये अन्तर देखो। महात्मा गाँधी ने जेल तीर्थ यात्रा बना दिया। **Adjust your will with the will of God. You do nothing and everything is already done Troubles won't come if you invite them not. Love not your country but you kind.** परधर्म में न जाओ। करतूत पुश के मानुष जात लोक पचारा करे दिन रात। सब करम करना कसूर है, सब कर्म में दोष है। तू त्रिगुण अतीत हो जाओ। जनक ने सक कर्म त्याग दिया। जगत मिथ्या है जैसे भूल भुलैया का खेल अधिष्ठान देखने से झूठ गुम हो जाता है। **When knowledge dawns the world disappears.** कर्मकाण्ड से मुक्ति नहीं है। त्रिगुणातीत बनो। जो जानै मैं कुछ करता तब लग गर्भ जूण में फिरता। **A Good deed binds, the doer as much as a sin.** राजा जनक ने सब कर्म त्याग किया त्रिगुणातीत हो गया। सर्व कर्मान् सन्यस्य, सर्व धर्मान परितज्य माम् एकम् शरणम् त्वज्र। **Make I thy single refuse.** माँ की

शरण लो। चुप का है संसारा। आठ ही पहर समाधि में रहो। विवेक, विचार, पुरूषार्थ, अभ्यास, वैराग्य, उत्तर प्रश्न करने से निश्चयात्मक बुद्धि हो जाती है। **Willing renunciation** हो जाता है। असमर्थ भोगता है, समर्थ खुशी से ख्वाब करता है। देहअभ्यास छोड़ने से मुक्ति है सर्व दुखों की निवृति और पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति ही मुक्ति है। सत्पुरूष जिन जानिया सत्गुरू तिसका नाम। अपने को सत्पुरख परमात्मा समझा है। गुरू ईश्वर गुरू ब्रह्मा, गुरू पार्वती माई। गुरू माया का पति है। दस अवतार तुम्हारे ही हैं। सो प्रभु दूर नाहिं। संत लोग पुकारदे कर-कर लम्बे हाथ, तू परमात्म देव है तू त्रिलोकी नाथ। निराकार साकार धारे आयो जगत में। अल्लाह आदम बन के आया। आत्मा बिना हर चीज को दिल से सदा नाकार करो। सत्गुरू तेरा है आत्म। **God is within** परधर्म में नहीं जाओ। मनुष्य देह है केवल छूटने के लिए। 84 लाख दरवाजे वाले किले से अंधा कैसे छूटे जब खुले हुए दरवाजे पर ही खुजली होने लगती है। खेल को जीव सत करके समझता है तो दुखी सुखी होता है। साखी दृष्टा हो के खेल देखो। **director** जब अपनी **film** देखेगा तो कहेगा मेरे से ही यह सब हुआ है। नाटक का दृष्टा है **Seer not doer.** अज्ञानी कहता है ऐसा क्यों हुआ वैसा क्यों हुआ। जीव **criticize** करता है पर ज्ञानी कहता है तो तद् भावे। जो सीन आती है उससे सीख के आते हैं। हर हालत से हम सीखें। हर परीक्षा से पास होते चलें। यह पढ़ाई चल रही है। दुख सुख तो आते ही रहेंगे पर तुम पहेली **Solve** करके बैठो। यह सारी सृष्टि एक पहेली है। जो इसको **Solve** नहीं करता है वो दुखी होता है। ज्ञान के बाद हर हालत अच्छी लगने लगती है। **God has a plan for you.** भावना

अच्छी रखो। बीज स्वरूप परमात्मा है। जैसा संकल्प करोगे वैसी सृष्टि हो जायेगी। भगवान तेरी परीक्षा लेता है फिर तू क्या सीखता है? अज्ञान में आ गया जीव बन गया पर तू शेर का बच्चा शेर है। **Son of God, God** ही है। बकरी का बच्चा बकरी का ही है। गुरूमुख से आज हमारा नया जन्म हुआ है। परमात्मा का बच्चा होकर भी भूल गया सच तो हम भगवान से आया है, परमात्मा ही एक से अनेक हुआ है। जिसके अन्दर ज्ञान धन है वो कभी गरीब नहीं हो सकता है। दुनिया में ही कोई बड़ा आदमी दोस्त होता है। तो भी कितनी खुनकी होती है। फिर जब भगवान से दोस्ती हुई है तो कितनी खुनकी होनी चाहिए। भगवान ही शक्ति है, भगवान मेरे साथ है। सब अच्छा ही होता है। राम राज्य में इंसाफ ही होता है। बुरे को बुरा अच्छे को अच्छा ही मिलता है। तुम सर्व से प्रेम करो तो सब तुमको प्रेम करेंगे। सब अच्छा ही अच्छा है। सबके अन्दर भगवान ही बैठा है। तुम भगवान देखकर खुशी करो। भगवान नहीं देखेगा तो दुखी सुखी होता रहेगा। राजा शराब के नशे में वजीर का **dress** पहन लिया तो एक दुश्मन ने उसे मार दिया। तू भी मरता है जब राजा को भूलता है। राजा (भगवान) देह बनकर आया है। गुरू आकर जागृत करता है। मैं तो शाहों का शाह हूँ। अभी मन के अधीन है फिर मन तेरे अधीन होयेगा। गुलामों की गुलामी कर रहे हो। मन ने कहा दुखी हो तो दुखी हो जाता है। सदा एकरस रहो। दुख सुख, लाभ हानि में समान रहो। किसी की भूल एकदम उसे न बताओ। कम से कम 24 घंटा कुछ ना कहो। जल्दबाजी में कह के फिर पछतायेगा। ज्ञानी को बहुत धीरज है। **Forgive & Forget.** कोई गाली देवे तो भी 2 मिनट में हम उसे प्यार कर सकते हैं। बिचारे का अज्ञान उसे सता रहा है। पागल की

Hospital में **doctor** पागलों से खफा नहीं होता है। इसलिए ज्ञानी **forgive & forget** करके बैठता है। सारी दुनिया मनमुख है गुरूमुख से नया जन्म होता है। **Son of God** सतचित आनन्द मुक्त परमात्मा हूँ। तेरे बाप की **surname** तेरी है। आत्मा ही है।

.... तुम को जब तक इच्छा है तब तक तृप्ति न होगी फिर भी कुछ न कुछ मांगता ही रहेगा तब तक तू मुक्त नहीं है। यह भगवान का ऐसा रास्ता है जिसका कोई रास्ता है। सहज त्याग हो जाये। **Light** आने से ही चला जाता है। **Be still and know that you are that.** इसलिए तुम्हारा धर्म है शान्त हो जाना। ब्रह्मज्ञानी का धर्म है **Willing remincition** वो आत्मा से आत्मा में संतुष्ट है। खोजी होय तुरंत मिल जाये एक पल की तलाश में। गुरू के वचन से भीतर में खोज तुरंत मिल जाये एक पल की तलाश में। गुरू के वचन से भीतर में खोज करो कि बाकी क्या इच्छा है प्रभु के लिए कोई रास्ता नहीं है क्योंकि आकाशवत है। **God is highest.** रास्ते सब धरती पर हैं। श्रद्धा विश्वास से ही केवल भगवान जाना जाता है। अश्रद्धालु नाश जाण। श्रद्धावान लभते ज्ञानम्! गुरू कहता है **You are not body.** आज दिन तक किसी का एक भी विकार निकला नहीं है। पर देह अभ्यास जायेगा। तभी तू विकार रहित होगा। प्रभु के सिमरन दुश्मन टरै, काल पर हरै। मन तू जोत स्वरूप है अपना मूल पछाण। तू निरंजन है, दाग रहित है, शुद्ध रूप है। जब तू मन के अधीन होता है तो अनेक पाप कर्म कर लेता है। अज्ञानी की मोटर की **break** वश में नहीं है। देहअध यासी नहीं करे तो भी करे। जब तू अहंकार, इच्छा व

कर्ताभाव से रहित होगा तो कोई कर्म खाते में नहीं है। उसे कोई इच्छा नहीं है। जीवभाव से आत्मभाव में आना है। आत्म विश्वास अपने में विश्वास। पहले अपने में फिर गुरू में फिर सर्व में आत्मा देखो। एक है मायाकार दूसरी है ब्रह्माकार वृति। तुम अपने से पूछो तुम्हारी वृत्ति कैसी है। (रंका और बंका)। चोर साध को एक पहचानो। **Nothing can touch Atma.** अंतर्मुखी सदा सुखी। देह देखने से सब विकार आयेगा। आकार में विकार है निराकार निर्विकार है। अभेद, अव्याभिचारी व अनन्य भक्ति योग से परमात्मा मिलता है फिर राग न द्वेष। पता नहीं देह का उनको तो फिर क्या औरों से मतलब। मन का स्वभाव है कहीं न कहीं अटकना पर मन को मोड़ो। योगी हृदय निवास, भोगी हृदय उदास। गुरू रोज-रोज तुम्हारी आत्माकार वृत्ति बनाता है। किस संग में तू बैठा है? **As the company so the colour.** तुम एक कदम पीछे जाता है तो कहां पहुंचेगा। आत्माकार वृति न होने का यही कारण है। समय, प्राण किसी के लिए खड़ा नहीं रहता है तो तुम देखे तेरे श्वांस-श्वांस में गोविन्द का सिमरन है। कबीरा ऐसा कठिन। जिसको समय का कद्र नहीं है समय उसका कद्र नहीं करता। यह ज्ञान सुनने का नहीं है पर पीने का है। **Juice Pass** करने के तो कई साधन हैं पर यहां **Change** लानी है। यह वचन है स्वाति की बूंद जैसे मुंह बन्द किया तो सच्चा मोती बनेगा पर अगर मुंह खोल दिया तो पानी का पानी ही रहेगा। **Much wants more.** फकीर फिकर से खाली। दुनिया के धन से तृप्ति न आयेगी पर आत्मिक धन तो साथ ले जाओगे। भूले मार्ग जिसने बतलाया ऐसा सत्गुरू बड़भागी पाया। किनका जिस इक जीव जीव वसावे ताकी महिमा गणी न जावे। ओ सिक बिकूड़ी सिक, जे

सिके सूण ना मिले। मैं तो हूँ विश्वास में। सच में स्थित हो जाओ तो झूठ आपे ही छूट जाता है। जिसका कर्ता भाव खत्म हो गया वही आनन्द में हैं। मैं मेरा खत्म हुआ तो भगवान प्रकट है। मैं मुआ। शब्द मरै ता फल। दुनिया की जितनी होशियारी सीखेगा उतना फंसेगा। आशिकों की सच्ची नमाज है देह भुलाना। जहां **ego** निकले वहाँ अपने को मिटाओ। **duty** फर्ज से ऊँचा उठो। भगवान पाने की इच्छा भी भगवान पाने में रूकावट है। शुभ अशुभ इच्छा का त्यागी मेरे को प्यारा है। **you are already God.** इसमें निश्चय रखना है बाकी कोई इच्छा नहीं रखनी है। आनन्द स्वरूप तू है तो तेरा आनन्द व शान्ति फिटती है? घर मे जाता है, अहंकार आता है तभी अशान्त होता है। यहाँ अपनी औरत या बच्चे पर क्रोध करके दिखाओ। 24 घंटा भगवान को जहाँ तहाँ देखेगा तो कभी विकार नहीं आयेगा। **To see God is to be God.** केवल अपने को आत्मा जाना और किसी को दोस्त दुश्मन देखा तो **right** नहीं देखा। एक बच्चे को मारा क्योंकि सामने वाले में भगवान नहीं देखा। खाली तुम भगवान हुआ तो भगवान दास हुआ, कृष्णदास हुआ, कृष्णदास रामचन्द्र हुआ। भगवान तो काई और हस्ती है। जो सर्वत्र व्यापक है। मुर्दे में भी आत्मा है बाकी तू कहां भगवान देखेगा नहीं। तुम राजा व रंक में एक आत्मा देखो। तुम कहीं भी किसी के घर जाता है तो पदार्थ पर नजर आती है तो पदार्थ अभाविनी नहीं हुई। भगवान गाड़ी से उतारता है तो मोटर में चढ़ाता है। **wait and see** जैसा तू लायक है वैसी लायकी तुम्हें मिलेगी। चाह गिरा देती है। ब्रह्मपद से जो राजी है वो राजा है। राजा भी शक्ल फिराए तो फकीर है मियां मरे तो भी हलवा खाओ।

पत्र नम्बर 83

मैं हूं यह बड़े में बड़ा रोग है। कोई कहता है मैं सिंधी, पंजाबी, हिन्दुस्तानी हूँ ये गलत है पर सच तो ये है कि तू आत्मा है। न तू कभी मरेगा न जन्मेगा टरे इतने सब फायदे यहाँ पड़े हैं। दुखों से दूर हो गए हैं। डर होता है दूसरे से पर जहाँ तहाँ मैं ही तो हूँ तो डर किसका करूँ। जब आत्मा को भुलाते हैं तभी गरीब, अंधा, भिखारी, लूला लंगड़ा देखता है। आत्मा जानने से तेरा हाथ ही रूक जायेगा। इधर आत्मा का ज्ञान सुन के सिर्फ धर्म करता है तो जन्म मरण में आयेगा जायेगा। सत्कर्म व बदकर्म तेरे खाते में आ जायेगा। तुम अपने बाल बच्चों से भी कर्म बनाते हैं तो छूटेगा कब? खाली सतकर्मी कोई नहीं होता बदकर्म भी साथ होते हैं। रजोगुणी कर्म भी होते हैं। कभी कभी तमोगुणी भी आ जाते हैं। सतकर्म का फल स्वर्ग मिला पर बदकर्म का फल नर्क जरूर मिलेगा। मुक्ति की **Class** के लिए कोई कर्म न करो। सत्कर्म सोने की बदकर्म लोहे की जंजीर है। ये ज्ञान है मुक्ति का नर्क, स्वर्ग का ज्ञान नहीं है। कोई कर्म खाते में न हो। मैं अच्छा हूँ तो वो अच्छाई भी तेरे खाते में रहेगी तो याद रहेगा। सतकर्म बदकर्म दोनों बता दिये। निष्कामी बनो तो सब ठीक ठाक हो जायेगा। मैंने अपनी सेवा की अपनी ही मदद की दूसरे के लिए नहीं किया। यह शरीर मिला ही है चलने के लिए। ये तुमने किया या परमात्मा की शक्ति से हुआ। तुम अहंकार न करो। बैडमिंटन खेलते समय चिड़िया गिरने नहीं देते हवा में ही उड़ाते रहते हैं। ऐसे ही मन को भी गिरने ना दो नहीं तो तू **Out** हो गया। आत्मा से भूल गया पर फिर भी निराश ना हो जाओ। भूल तेरे लिए सीढ़ी का काम दे। भूल से सीखो और

दूसरे को सावधान करो। **Weakness is death and strength is life** कल तक भूल हुई आज न होवे। गुरू के वचन धोये-धोये पी मतलब समझ सोच के उत्तर प्रश्न करके एक-एक बात उठाओ, शंकाओं का समाधान करना है। गुरू तुम्हें छुड़ा के कहाँ रखेगा। मन से छुड़ाता है, बुद्धि से छुड़ाता है। मन तेरा बदमाश है तू उसके कहने पर चलता है। ये दीवार है, बादल है जो सूर्य को प्रकट नहीं होने देता। जब शंकाए निवृत हो जायें तभी शान्ति मिलेगी। ख्याल दे के फिर गुरू के विचार पर चलो। निर्णय करके उठो। मन तो दिया पर गुरू का आत्म भाव नहीं लिया तो शक्ति नहीं आयेगी। मन के खिलाफ ही गुरू बोलेगा। वो गुरू ही नहीं है जो तुम्हें **right** समझे क्योंकि तुम अज्ञान में है। तू मन में **Mix** न हो जाओ अर्जुन कौरवों से **Mix** नहीं था। कृष्ण से मिला था। श्रद्धा से उसका एक-एक वचन उठाया। क्षेत्र क्या, क्षेत्रज क्या है अनेक बात पूछी। उसको भगवान करके समझा और उसकी एक-एक बात श्रद्धा से उठाता जाता। उठा के आज अपनी भूल निकालो। कौरवों का साथ नहीं लियो। मन का साथ देना छोड़ो और गुरू का साथ लो। गुरू की बात गांठ बांध के सच-सच करके उठाते चलो तो मन मरता जायेगा या तू मनमुख या गुरूमुख है। जीवभाव देकर आत्मभाव ल के जाओ। गुरू तेरा द्वेत निकालेगा भगवान का दीदार करायेगा। मान न मान तू है भगवान। हीरे की दुकान पर हीरा ही मिलेगा। कृष्ण ने पछाड़ी तक यथार्थ ज्ञान ही सुनाया है अर्जुन की बात से कहीं पर भी सहमत नहीं हुआ है। आखिर अर्जुन को कृष्ण का कहना मानना ही पड़ा आत्मा ही सुनूं, देखूं, सुनाऊं। आत्मा माना अद्वेत, प्रसन्नी चल शान्त एक रस। मैं मन का मुखी हूँ मन मेरा मुखी नहीं है। सूर्य रूप आत्मा को जानो। आंख का

operation करता है गुरू। तुम जीवभाव का सवाल पूछेगा तो आत्म भाव ही देगा। जो भी तेरी बात है वो गटर की ही बात है। माया की प्रलय करके ईश्वर का निवास तो करो, साफ दिल हो जाओ। एक भी ख्याल छिपायेगा तो ईश्वर का निवास न होगा। एक ख्याल भी भगवान से दूर करेगा। खाली होगा तो नींद अच्छी होगी। ख्याल होगा तो अन्दर भारी होगा, गैस होगी। ख्यालों की बीमारी की दवाई सतगुरू के पास हैं सबसे नम्रता, प्यार से चलेगा तो आनन्द आयेगा। गुरू के राज पर आज्ञा पर चलेगा तो मरेगा और कोई रास्ता नहीं है। पंडित पिण गुरू प्रेम बिन लहे न आत्मा राह। जब तू आत्मा में रहेगा तभी प्रसन्नचित होगा। तुम कैसी भी बात ले आओ हम आत्मा ही सुनायेगा। मन इन्द्रियों का **control** मन को वश करो जहां तहां अपना स्वरूप दिखाओ और कोई बात नहीं बताई अर्जुन की तरह तुम अपने फायदे आकर नहीं सुनाते हैं। अपने घर में न जाओ तो तुम भूल होवे पर मेरे घर में जाओ। तुम ज्ञान सुर के परहेज नहीं करते हैं। मन को मोड़ते नहीं हैं। हर रोज **Change** होते हैं। हर रोज **Change** करते जाओ। भगवान देखते चलो। थक न जाओ तो शान्ति आ जायेगी। ज्ञानी का प्रारब्ध पर निर्वाह है पर सन्यासी भाग कर खाता है। गृहस्थी सबकी सेवा करता है, पालन करता है विष्णु होकर। सरकार तुम से लेकर फिर कार्य करती है। **trains, roads,** मकान वगैरह खरीद के बेच के बड़े **roads** बनाती है। तुम्हें **passport** देती है। कमाने के लिए हो मैं दीर्ध रोग है पर आज से बोलो मैं ना। सिमरन माना तन मन एकरस पर मन तेरे वश में नहीं है। यह जिन तुम को तरह-तरह के खेल दिखाता है। सब में आत्मा ही देखो। भगवान एक से अनेक हुआ है। हमारे सामने जो भी,

आता है हम उसे भगवान करके देखते हैं। तुम्हारा कोई रिश्तेदार नहीं है। **pathless, effortless** है पर किसी साधन से भगवान नहीं मिलेगा। कौन कहे साहब को यूं कर यूं न कर। मन और आत्मा दोनों अदृश्य चीज गुरू ने दिखाया है। दोनों को समझ सकते हैं। मन मान ख्याल। तेरा ख्याल दुखी न करे तो भगवान भी दुखी न करेगा।

Man - desire = God भगवान ने कहा सब कुछ तुम्हें मिलेगा पर केवल तुम इच्छा न करना। **forbidden apple** खाया उस दिन से इच्छा आ गई। सच को जानने वाला निष्पापी हो जाता है। सर्व में भगवान देख के सच को पूजता है। गुरू जब कहता है सब को भगवान देखता हूँ तुम भी देखो तो तुम देख नहीं पाता। लगातार जो मेरे में मन रखता है वो मेरा ही रूप हो जाता है। भगवान से प्यार होगा तो आत्मा ही आत्मा रह जायेगी। नामदेव को दिव्य दृष्टि मिली जो कुत्ते में भी भगवान देखा। तुमको अभी तक नहीं मिली है क्या? तुम्हारा किसी से भी द्वेष है तो आज द्वेष निकाल दो ताकि उससे हमेशा के लिए प्रेम रखो। नम्रता, प्यार करके द्वेष निकाल के आयेगा किसी से प्यार होगा तुम उसका कर्म न देखेगा। कर्म से मुक्ति चाहिए अगर तो सबको प्रेम करो। दुश्मन का फूल भी न भायेगा और प्रेम में पत्थर भी सह लेगा। एक से द्वेष है माना भगवान से द्वेष है। हरेक खुद ही द्वेष से भरा है तो दूसरे का द्वेष कैसे देखा? पहले अपना अवगुण निकालो। ये जगत आरसी है परमात्मा है अपना दाग उसमें देखना है। दिल में विकार नहीं है तो सर्वत्र निर्विकारी आत्मा है। ज्ञानी सबको आत्मा ही करके देखता है। भगवान कहता है मेरी माया ही ऐसी है पर जो मेरी शरण लेता है तो

मैं उसे माया से रहित कर देता हूँ। आदम और **eve** ने इच्छा किया तो सजा भुगतता रहता है। आज भी अपने को रोको **break** लगाओ वो रास्ता ही नहीं है। तुम इच्छा में, वासना में, मोह में नीचे उतर रहा है। सर्व कामनाओं का त्याग ही सन्यास है। कामना की पूर्ति होगी तो भी शान्ति न आयेगी। मृग तृष्ण के जल में प्यास बुझेगी ही नहीं। सच्ची शान्ति पदार्थ में नहीं है। सगल दृष्टि का राजा भी दुखी है और कितना भी मिलेगा तो भी क्या? ब्रह्मा भी मुक्त नहीं हुआ, आयेगा जायेगा दुखी सुखी होगा। चाहना तृप्त न होगी तो शान्ति नहीं आयेगी। चाह में प्रारब्ध रूकावट है। किसी इच्छा का बीज फलीभूत होगा और इच्छा दूसरे जन्म में होगी तो आना जाना पड़ेगा। पालक का बीज जल्दी फलता है और अखरोट का देर से। देवता को पूजने वाले देव लोक को, पितरों को पूजने वाला पितर लोक को, भूतों को पूजने वाला भूत लोक को प्राप्त होता है। भगवान से पदार्थों की चाहना ऐसी है जैसे कोई स्त्री अपने पति को न चाहकर उसके द्वारा सदैव पदार्थों की कामना करे और कामना के कारण ही सीता राम से दूर हुई। तुम अपने श्रेय साधन से गिर जाते हैं। पहले गुरू नानकदेव ने रे मन ऐसो कर सन्यास फिर गुरू जब ख्याल देता है तो मन ही ते मन मानिया फिर आगे चलकर यह मन ज्योति स्वरूप बन गया। हरिजी तेरे नाल हैं। बाहर टोले सो भ्रम भुलाई धन स्त्री बच्चे में सुख खोजा पर ना मिला। आखिर मिला न जे रब और सब कुछ मिला तो क्या हुआ। जब तक नहीं जागा है भगवान नहीं मिला है तब तक शान्ति नहीं है खुदी के बदले खुदा को पा जा। **body conscouisness must go.** पेवत प्रेम बिसर गई काया। जब तू कर्ताभाव में है तो तुम्हें सब याद है। अभी जब कर्ता भाव गया तो सच्ची मैं निकलेगी। **Capital I** जिसमे

अहंकार की बिन्दी नहीं है। अन्दर का धन है संतोष धन। कान से परमात्मा देखे सबको आत्मा की सुजाग दियो। तुम कितना **plan** बनाता है पर तेरी एक भी नहीं चलती है। अपने अन्दर खोज करो। खोजी होय तुरन्त मिल जाऊँ पलभर की तलाश में। आशिकों की सच्ची नमाज है देह भुलाना। एक है शेर की बोली एक है बकरी की बोली। तुम सारा दिन अपने को जानो कि कौन सी बोली बोलता है। एक टेप रिकार्ड रख दो वो भर के देखो। सुबह को सुखमनी पढ़ने के बदले वो टेप सुनो तो बाकी कहाँ मौन रखते हो। आत्मा माना मौन शान्त। देह से भर जाओ, मौन करो। बोलने की वासना है तो औरत को बाजू में बिठा के सत्संग की बात करता है। दादा ने औरत को कहा करतूत पशु के मानुष जात लोक पचारा करे दिन रात। अपने उद्धार की बात करो। सत्संग में कहता है मेरी डोरी तेरे हाथ। घर जाकर कहता है तेरी डोरी मेरे हाथ। आत्माकार की दृष्टि वृति कैसी है यह देखो तुम्हारी है? दूसरे अध्याय का स्थित प्रज्ञ का लक्षण तेरा है? मिले मिलिया। बाहर का मौन देवता मन का मौन भगवान बनाता है। सारा दिन देखो मन किधर गया? जो बाहर से मौन रखता है वो मन को जानेगा। ज्ञानी से कैसी भी बात करो तो आत्मा की ही बात सुनायेगा। अर्जुन का भाइयों का झगड़ा था तो भी लड़ाई करके हक नहीं दिलाया पर आत्मा की बात ही सुनाई। पहले 18 अध्याय ज्ञान के सुनाये। तेरे से अन्दर की आत्मा की बात निकलती है या नहीं या आत्मा की बात केवल सत्संग तक ही करता है। सीढ़ी उतरा और आत्मा से फातिना और फिर खात्मा हो गया। यहाँ की यह सीखाता है कि कैसे **unconcern** रहना है। तेरा आनन्द कम ज्यादा होता है क्या? तेरी शक्ल से ही पता चलता है। हर हालत में ज्ञानी

मुस्कुराता है। हर बात में हां न निकालो मुंह से। **It is but natural** धीरे से हर खबर सुनाना अज्ञानी को दुख पत्थर की लकीर की तरह लगता है पर ज्ञानी को हवा की लकीर भी नहीं। हर दुख्या के लिए तैयार रहता है तो भगवान कौन सा दुख देगा। तुम काका पगला कहने पर चिढ़ता है तो तुम्हें और चिढ़ायेंगा पर तुम शान्त होगा, मौन होगा तो कोई कुछ न कहेगा। दुख **opposition** आती है तुम्हें चमकाने के लिए। भगवान के पास अन्धेरा नहीं है पर इन्साफ है। द्रौपदी की तरह पुकारो नहीं। तू जहां विश्वास रखता है भगवान वहीं है। तुम समझता है भगवान को राज्य चलाना ही नहीं आता है तो तुम घर में कैसे रहेगा। अपनी इच्छा की वजह से तू भगवान में भी अवगुण देखेगा। **Adjust your will with the will of supreme power.** जब भगवान को मिला तो फिर किसी के लिए शिकायत न रहेगी। कोई **wrong** नहीं है कोई **right** नहीं है। कोई ऊँचा नहीं, नीचा नहीं मेरा शिष्य तेरा शिष्य भी नहीं है। द्वैत का धुंआ नहीं। **Self-seer** न कि जगत का ड्रामा देखने वाला हूँ। खेल भी मैं। गिरने मरने वाला सब मैं हूँ। खेल का दृष्टा बनेगा तो भी जगत का हर दुख सुख तुम्हें लगेगा। राजा भी मैं भिखारी भी मैं हूँ। चोर चंडाल में जो एक ही आत्मा देखता है वो सच देखता है। वही मुक्त है जो मैं ही तो हूँ में स्थित है। खेल का नहीं पर अपने का दृष्टा होना है। माया आने जाने वाली है। माया के जाने के कई रास्ते हैं। तुम माया भगवान से सदा मांगता है तो तू लोभी लालची है। तू दुनिया में आया तो क्या-क्या ले के आया। तुम्हारा कुछ है नहीं। आज तुम माया का **use** करो पर अपनी न समझो। पक्षी का आधार उसके पंख हैं ना कि डाल। चूहा उसी डाल पर होगा नीचे आग

लगेगी तो मरेगा। अज्ञानी उसी हालत में गिरता है ज्ञानी हर हालत में सीखता है।

Points - अज्ञानी दौड़े माया की ओर जिज्ञासु दौड़े प्रभु की ओर, और गुरू कहाँ दौड़े वो तो केवल भक्तों की पुकार पर जल्दी से दौड़ता है। मनुष्य अगर अपने जीवन को खेल समझे तो कभी भी दुखी सुखी न होगा। मैं हूँ और मेरा है तो दुख है। **Today is the best day** हर समय वाह-वाह करेंगे तो हाय-हाय न होगी। जो शुकराना करता है वो शिकायत न करेगा। इच्छावाला दीन व दुखी है। किचन में कोई फुलका पकाता है तो भी पसीना आता है और फुटबाल खेलने में भी पसीना आता है तो उस को बोझ नहीं समझते पर फुलका पकाना बोझ समझते हैं। हर कार्य खेल समझ कर करो फर्क है केवल ख्याल का जैसे तू सिनेमा हाल में बैठा है रोज नया-नया खेल सामने आयेगा। **Nothing is new under the sun.** कोई भी ख्याल गहराई में न उठाओ क्योंकि तू देह नहीं है। देह के लिए ही कोई शब्द कहता है। कृष्ण पर भी मीठा चोर का कलंक आया तुम निर्दोष है तो भी दोष रखा जाता है तो भी तू निहकंलकी अवतार हो जाओ। शरीर व मन तो है ही दोषी। ज्ञानी एक सेकण्ड में भूल जाता है तुम 10 साल पुरानी बात याद करते हो। कोई भी कुछ करता है या कहता है तो उसे खेल करके देखो। तुम हर समय सच में रहो। जो आत्मा में रहता है उसके लिए जगत मिथ्या है। जगत की कोई खबर सच्ची करके न सुना। निंदा में दुख, प्रशंसा में खुशी होगी। जो हर द्वन्द जोड़े में अशान्त नहीं होता वो ज्ञानी है तो स्थित प्रज्ञ के लक्षण में रहो। अज्ञानी है तो ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश करो।

पत्र नम्बर 84

जिस सुख के साथ दुख नहीं उस सुख को फेंक देना। भगवान ने यह दुनिया बनाई है वो जो भेजता है हमारी भलाई के लिए। बच्चे को टीचर **Paper** बनाकर देती है जिससे ऊपर चढ़े कभी सुख देता है तो तुम अच्छा समझते हैं कि **2x3=6** लेकिन उल्टे नमूने जब सुख देता है यानि दुख में समाया सुख देता है तब हम उलझा जाते हैं समझते नहीं हैं कि **3x2=** भी **6** ही है। शेर का बच्चा शेर है। इच्छा दर-दर का धक्का खिलायेगी। मांगती फिरती थी, दुनिया, भगवान की रमज पहचान जाओ कि निरिइच्छा होयेगा तो सबकुछ मिलेगा, तो भी अतृप्त। मांगन मरन समान है। मत कोई मांगो भीख मांगन ते मरना भला ये सत्गुरू की सीख। चाहिए तो जीव ही रहेगा। चाह से कुछ मिलेगा तो भी अतृप्त व आदती बनेगा। **Satisfaction temporary** न होवे पर पक्का होवे। मेरा सच्चा प्यार गुरू से है तो गुरू का भी सच्चा है। तेरे को प्यार है तू निरिच्छा है तो आनन्द में है। तुम अपने को निर्मल बनाओ। भले ही फिर सारी दुनिया दुखी होवे पर तू अपने आनन्द में रहो। अज्ञान में हरेक दुखी है। देना सीखो लेना न सीखो। भिखारी नहीं राजा बनो। मांगने वाला, दूसरा देखने वाला हमको पसंद नहीं है। भगवान के राज को समझो। इच्छा गली-गली घुमाती है। जिसे इच्छा नहीं वह शहंशाह है। माँ-बाप को पता है इसे क्या चाहिए। गुरू की कृपा से एक बूंद जितना प्यार या ब्रह्मज्ञान मिलेगा तो तृप्ति आयेगी, मस्ती आयेगी पर अपनी इच्छा से चाहे करोड़ भी मिले तो भी शान्ति नहीं मिलेगी। मांगने वाले को सारी दुनिया धिक्कारती है। राजा को तू ऊपर बिठायेगा। मांगने वाला, सगी बहन-भाई, मां-बाप

भी, बच्चा भी पसन्द न आयेगा। **Desireless** खुद भगवान है। तेरी आत्मा से सुन्दरता का ख्याल निकला तो कौन बड़ा हुआ। आत्मा करके ही सब प्यारे लगते हैं। दूसरे के पीछे क्यों भागें? कुत्ता भी इच्छा के कारण कुत्ती के पीछे जाता है। भगवान को जानो तो भगवान हो जायेगा। निरिच्छा वाले को मिलाकर एक कर देता है। आत्मा में कोई इच्छा या मांग नहीं है। तुम्हें खुनकी होनी चाहिए कि ब्रह्मलोक का सुख भी मुझे नहीं चाहिए। मेरा भगवान मेरे साथ होना चाहिए। बाहर का भगवान इसलिए ही मिला है कि अपनी **Light** अपने में जलाओ। जो मैं हूँ सो तू है। दो जिस्म मगर एक आत्मा है। जान एक है। गुरू की और मेरी आत्मा एक ही है।

पत्र नम्बर 85

कमजोरी मौत है। निश्चयात्मक बुद्धि भगवान हमारी आसानी के लिए स्वयं जहाँ तहाँ आकर खड़ा हुआ है। निराकार ने अपने को कुर्बान कर दिया है और साकार बन गया है। इतने अवतार सब हो गया हूँ पत्थर; भितर, ठिठर सब हो गया हूँ। कोई चीज भगवान के सिवाय नहीं है। प्रेम अपने आप को करने में क्या कठिनाई है। सब पहले अवतारों से आज का अवतार सबसे बढ़कर है क्योंकि वो सबको जान रहा है। आसान तरीके से मझाया है कि इसी जन्म में ही तू मुक्त हो सकता है। फूल तोड़ने में भी देरी है और ज्ञान आने में इतनी भी देरी नहीं है। शेर कभी लकड़ी के पिंजरे में फंस नहीं सकता है। तू शेर आत्मा इस देह से पहले ही अलग है। तेरा ख्याल है कि मैं बंधन में हूँ। पहले सब डरते थे अब कैसे आ जाते हैं। हरेक अपने ख्याल से बंधा पड़ा है। **You are Free** कोई भी ख्याल नहीं करो। शरीर क्षेत्र में जो बीज बोयेगा वैसा फल मिलेगा। कर्म तो बंध गया। ज्ञानी कोई कर्म करता है जो पछताये। **Man - Desire = God.** जो जीवन मुक्त है वो ही विदेह मुक्त है। **Free from thoughts, desireless, egoless, deathless** हूँ। तूने जीव भाव में अपना स्वरूप भूला के गरीब, दुखी सुखी, बंधन में अपने को माना है। तू कभी बंधन में नहीं आया है। **You are free just like breeze** तेरे में बंधन है नहीं। अपने को दासी पुत्र समझ के मार गया पर अब तू **Son of God** है जो कभी मरेगा नहीं। कर्ण अपने को दासी पुत्र समझ के शक्ति गंवा के बैठा था वैसे था सूर्य पुत्र। तुमको भी घरवालों ने भुलवा दे दिया।

बंधन डाला गया फिर जब गुरू ने कहा **You are son of God.** तू शेर की औलाद शेर है। गुरू मुक्ति का अभिमान दिलाता है। मैं मुक्त हूँ, आत्मा हूँ तो तू जेल में भी जेलर साहिब है। देह का, बुद्धि का, अहंकार का मालिक है पर तुमको अपने में पूर्ण विश्वास होना चाहिए कि मैं मुक्त हूँ। सबसे बड़े में बड़ी मन की बीमारी है। सारा दिन शिकवा और शिकायत लगी पड़ी है। सगल सृष्टि का राजा दुखिया। अभी भी तू दुखी न होता तो सत्संग में कैसे आता। दुख का कारण अज्ञान है। देह अभिमानी सदा दुखी है। अभी भी जितना ज्ञान है उतना सुखी है। जितना अज्ञान रह गया है इतना दुख है। सबको अपनी-अपनी शिकायत है ही है, बड़े-बड़े बंगले वाले करोड़पति भी दुखी ही हैं। दो मिनट में सुखी दो मिनट में दुखी हैं। सबको ज्ञान की जरूरत है। ज्ञान के सिवाय कोई सुखी नहीं है। जो मनुष्य कभी निराश नहीं होता है वही आत्माकार है। माया में कभी भी पूराई न होगी। तू है जीव तो हमेशा अतृप्त रहेगा। जो आज अपनी हालत में खुश नहीं है वो बाहर कभी भी खुश न होगा भले यहाँ कितना भी सुख है पर अचानक किसी ने कोई शब्द कहा तो तू जेल जायेगा। गुरू का भी प्यार है तो भी विक्षेप में आ जायेगा। तुम भगवान का तो है, भगवान का प्यार तो है तो भी खुश नहीं होता है। बाहर का सुख तो है ही नहीं पर अन्दर आत्मा का ज्ञान चाहिए। खारे पानी के समुद्र से प्यास नहीं बुझेगी पर अन्दर की एक बूंद भी तृप्त करेगी। जिसको कुछ भी नहीं चाहिए वो गुरू से मिल के एक हो जाता है। तुम इच्छा को दबाता है तो वो केवल **Spring** की तरह केवल दब जाती है पर खलास तो नहीं होती है। सन्यासी भी इच्छा को दबाते हैं और एक

चाय के कप की भीख मांगते हैं। कुरस्म के पीछे तुम जाता है लोकारीति करता है। तुम्हारे आत्मा का अज्ञान करके बंधन पड़ गया है। तुमको भ्रम पड़ गया है देह का ये आत्मा ज्ञान से ही मिटेगा। दुनिया का आदमी अज्ञान में, द्वेत में है और भगवान भूल गया है। जगत मिथ्या समझ के तुमको वैराग्य रखना है। क्या मांगू कुछ थिर नहीं। आम में कीड़ा देख के तू उसे फेंक देगा। ऐसे ही जब जगत मिथ्या समझेगा तो जगत को फेंक देते हैं। इस वक्त आदमी अपने को सुधारने में लगे पड़े हैं। मानसिक उन्नति के सिवाय आत्मिक उन्नति न होगी। मन जीते जगजीत। साईंस ने अज्ञान निवृत नहीं किया है। राग द्वेष द्वेत उसका गया नहीं। अपने अज्ञान को जब तक निवृत न करेगा तब तक तू सुखी न होगा। हालातों वो ही है अज्ञान की लेकिन पहले तू दुखी आज सुखी हो गया है। माया का विकार हटायेगा, संतोष लायेगा तो सुखी हो जायेगा। जगत को सत करके छोड़ेगा तो राग की निवृति न होगी। सन्यासी अभी तक चाहिए में पड़ा है पर यहाँ गुरू ने चाहिए अक्षर की भी निवृति कर दी है। जैसे मन्दिर के देवता से पूछता है कि ये चीज चाहिए, ये भोग चढ़ाऊं ऐसे ही हरेक भगवान है उनके सामने प्रसाद रखो पर उससे पूछो नहीं कि ये चाहिए। चाहना ब्रह्मपद से गिराती है। राजा जनक मिथ्या बुद्धि से रहा पड़ा था। याद रख दुनिया नहीं है दिल लगाने की जगह क्या खुशी जीवन की जिसकी मौत आये एक दिन। किसी से भी दिल लगाई है तो वो रहेंगे नहीं। शरीर सब विनाशी है। दिल जो शरीरों से लगाई है ये मरने जलने वाले हैं। किसी भी शरीर से मोह न रखो पर सबके अन्दर जो भगवान है उससे प्रीत करो फिर तेरा कुछ है नहीं । अल्लाह ही आदम बन के आया है। त्याग

भावना से रहा पड़ा है। अमानत की गठरी बांध के रख दो। मेरा कोई वश न चलेगा। होटल से कोई चीज तू ला नहीं सकता है। सब तेरे लिए है पर तेरा नहीं है। हर चीज **enjoy** करो पर अपनी न समझो। **Beauty is to admire not to touch** ऐसा समझ के दुनिया में रहेगा तो खुश रहेगा। नयी बात कौन सी होयेगी जो तू रोयेगा। **take everything easy.** जैसे हम सब **adjust** है वैसे तुम भी हो जाओ। हम तो सबको छोटा बच्चा समझता है। मन सबका बच्चा ही है। बड़ी **Age** में विकार और भी ज्यादा है। सभी हमारे बच्चे हैं तो हम किसी से विक्षेप में नहीं आते हैं। मन बच्चे को राज प्यार से समझाते रहते हैं। सच्चा ज्ञान है जिसमें तुम ही खो जाओ। तेरी खुदी खलास हो जाये। एक राजा के पास पंडित महाभारत सुनाने जाता था। राजा उसे कहता था तुमने ही अभी नहीं पढ़ा है। हर रोज ऐसा सुन के एक दिन एकान्त में पढ़ा तो उसी में खो गया, लीन हो गया था। प्रभु प्रेम में मस्त हुआ पड़ा था। राजा व स्त्री बच्चे जब उसका दर्शन करने गये तो उन्हें भी न देखा। उस दिन राजा उसके पांव पड़ा कि तुमने भागवत आज ही पढ़ा है। ऐसी एकाग्रता आ जाये तब है सच्चा ज्ञान जब कुछ दिखाई न दे। जिसको भगवान चाहिए वो दूसरा देखता ही नहीं है। दुनिया में कुछ सत ही नहीं है। माया में उसका कोई **Interest** नहीं है। माया के लिए तो हमेशा रोया है पर अब भगवान के लिए रोना आवे। अर्जुन जब कृष्ण के पास आया है तो कहता है मैं धर्म से बेवकूफ हूं मेरे को कोई सरल रास्ता समझाओ। ऐसी समझ से यहां तुम भी आओ। आत्मा कभी मरता नहीं है। 84 लाख जूणि के बाद ये सुन्दर स्वरूप भगवान का तुम्हें

मिला है। भगवान कृष्ण भी तेरे जैसा ही आया था। तुम कहता है आप भी उंगली पर पहाड़ उठा के दिखाओ पर भगवान तो हर जगह है। गुरूनानक ने धर्मशाला के मालिक को कहा मेरे पांव उस तरफ करो जिस तरफ तेरा खुदा न हो। पर गुरूनानक के शिष्यों ने कहा कि मक्का उधर घूमने लगा जिध ार उनका पांव घुमाया गया। मक्का मदीना तो वहीं पर खड़ा है पर उन्होंने सच समझाया कि भगवान हर तरफ हर जगह है। **Where is not God?** बच्चे ने कहा मास्टर को हम तुम्हें दो सेब देंगे **God is omni present** जड़ और चेतन में मैं ही तो हूँ। अर्जुन ने विराट स्वरूप देखा चर्च में जूता पहन के जाते हैं। तेरे मन्दिर में टोपी पहन के चप्पल उतार के जाते हैं। तुम लोगो ने ग्रन्थ न बाईबल समझा है। तुम गेरू कपड़े वाले के आगे दंडवत पड़ जाते हैं। सोने के बर्तन निकाल के उसमें खिलाते हैं जिसमें कभी अपने मर्द को भी न खिलाया होगा। **Christ** ने कहा **Don't throw pearls before a swine** सूअरी कद्र नहीं करेगी। सच तुमसे करोड़ रूपये देकर भी ले जायेंगे इतना कद्र तुम्हारे वचन का हो जायेगा। मेरे वचन पक्के करते जाओ। पहली पहली बात है कि तू आत्मा है। आत्मा दिखने में नहीं आती है मन भी दिखने में नहीं आता है। इस मन को पहचानो नहीं तो ये तुमको मार डालेगा। मन को अमन करने का साधन है यह अद्वैत मत। तुम गधा, कुत्ता, माँ, बाप, तेरा मेरा देखता है पर कृष्ण कहता है **Oneness, sameness, oneness of God.** एक ही भगवान अनेक हो गया है। **God is in all-all in all.** सब भगवान है और सब में भी भगवान है। **You ae all + in all God.** अब बताओ कौन सी जगह कोई

चीज है भगवान के सिवाय। तुमने अब तक केवल बकवास की है कि है भगवान पर देखते नहीं है। **You are say but see not.** आज ही सुधरो और आज ही जा के सबको देखो इसी को **Self relization** कहा है। आज न जाना तो 84 की चक्की में जायेगा। प्रभु के सिमरन गर्भ न बसे। फिर न पैदा होगा इसी को मुक्त कहते हैं। **deathless birthless state** नहीं तो अब तू जमेगा (पैदा होगा) एक-एक कर्म के लिए एक-एक जूण तुम्हें मिलेगी। इसीलिए मैंने अहमता, ममता, कर्ता तेरे तीनों रोग निकाल दिये हैं। मैं ना करते चलो न मैं शरीर न मेरा कुछ है। मैं भी हूँ और नमाज भी है दो हो गया पर **God is one** पर **his names are many.** कहाँ कुछ पुरूष और नारी खुद बना है। **One in all + all in one.**

.... जो खुद निबंधन नहीं है। जिसको अभी खुद गुरू से कुछ चाहिए वो तुम्हें क्या देगा या निंबंधन कैसे करेगा? सेवा का निंबंध की जो पल में दे छुड़ाय। गुरू के पास कोई खाली हो के आये तो वो उसको शीश उतारेगा। तुम्हें अभी भी कर्तापन है और तू गुरू समान कहलाता है तो कैसे हुआ? गुरू, कितना मौन व शान्त में है। जब गुरू की पूजा लोग देखते हैं तो रीस से कई गुरू बन जाते हैं। थोड़ा बहुत **Lecture** करना आया। बात करनी आई तो गुरू बन गये। दुनिया के लोग अंधे हैं उपदेश ही सुनते हैं, आदर्श नहीं देखते हैं पर इध र गुरू शीश कटा के बैठा है। इच्छा कभी भी पूरी न होगी तो बाहर का आधार लेना सीखेगा। **When God wishes to punish you he answers your prayers.** बाहर की खुशी उधारी खुशी है। जब भगवान

तेरी इच्छा पूरी करे तो रोना कि फकीर बना मैं तो फिर भी इच्छा की तो भगवान से मिला के एक तो नहीं हुआ। भगवान तेरे से जुदा हो गया। पर भगवान तो निरिच्छा वाला खुद हो जाता है। हारने वाले का आधा मुंह काला और जीतने वाले का पूरा मुंह काला। इच्छा पूरी होवे या नहीं? मैं अगर मांगू तुम ना कुछ देना मुझे। इच्छा और अहंकार वाला भक्त मेरे को पसंद नहीं है। तुम दूसरे की थाली के लड्डू को देखता है कि मेरे को मिले तो डायण हुआ। कबीर मन निर्मल भया जैसे गंगा नीर, पीछे लागा हरि फिरे कहत कबीर कबीर। तुम सोचता है तू निरिच्छा होगा तेरे को प्यार न मिलेगा तब तो भगवान तुम्हें मिला के एक कर देगा। इच्छा वाले दर-दर पर रोते हैं। निरिच्छा वाला तो प्यार ले लेके थक जाता है। जात हमारी आत्मा परमेश्वर परिवार। सब हमारे **Family member** हैं। जुदाई काहे की। किसको बैर करें। कम प्यार करें अधिक प्यार करें। दीये करोड़ हों भी पर जोत एक ही है। सब घट मेरा सांइयां सूनी सेज न कोय। बलिहारी वा घट की जो घट प्रकट होय। दीया बाती तेल सब तैयार है केवल गुरू के संग में जल जाते हैं। अकेले दुखी हो रहे थे। सबकी प्रारब्ध पहले से बनी पड़ी है। **Man proposes + God disposes.** ईश्वर की मर्जी से अपनी मर्जी मिला दो। जो बना पड़ा है अच्छा बना पड़ा है। कुछ भी कर्म धर्म करो पर रजा में राजी नहीं है तो सब व्यर्थ गया। तेरी इच्छा वो मेरी लिए अच्छा। परमात्मा की इच्छा मेरी इच्छा है। **everything comes from God** जैसी-जैसी इच्छा स्वभाव है वैसा तुम्हें मिलता है। बीज बोयेगा खेत में तो उसका फल वैसा मिलेगा। ज्ञानी निष्कामी न अच्छा न बुरा कर्म करता है।

सबका सुहृदय है। सब खुश हो जायें। सबके लिए अन्दर प्रेम है। अपने आपको ही प्रेम करता है। जो मेरा भक्त है उसे मै। यह तत्वज्ञान देता हूँ। तेरी कृपा इतनी है कि तू सत्संग में आ गया। भक्ति रखी तो गुरू तेरे अन्दर प्रकट होकर अज्ञान को निवृत कर देता है। बाहर अब गुरू नहीं है अब अन्दर गुरू प्रकट हो जाता है। **Thoughtless** कैसे हो गया। ये सब काम गुरू ने आप कर दिया। सूर्य उदय होने से अंधेरा, कीचड़, बदबू सब खत्म कर देता है। श्रद्धा विश्वास की खिड़की खोलो तो गुरू सूर्य की कृपा हो जाती है। जो मेरे को ही भजता है उसके अंदर का अज्ञान अपने आप में नष्ट कर देता हूँ। तुम कभी भी सत्संग न छोड़ना। वाणी है पवित्र गंगाजल इसी से तू पवित्र हो जायेगा। बाहर से तो तुम्हें पता भी नहीं चलेगा। सुदामा को भी पता नहीं चला कि अन्दर की अन्दर कैसे झोंपड़ी महल में बदल गयी। गुरू हमारे मन का दुश्मन है। मन का अंत होता है तभी गुरू का काम शुरू होता है। गुरू यूं-यूं करके आत्मा के पंख जमाता है तो तू आत्मा को जान लेता है। आप की लीला को कोई जान सकता है जैसे तुम्हारा वर्णन सभी ने किया है ऐसा मैं सत्य करके मान रहा हूँ। पहले तू निराकार परमात्मा है ये सब पीछे हुए। अभी मैं सत्य को जान रहा हूँ। अपने आप को तुम स्वयं ही जान सकते हैं। जो गुम होवे तभी तुम्हें जाने। जब तक मैं हूँ तब तक नहीं जान पाते हैं। मेरी बुद्धि मेरा मन काम नहीं करेगा। मैं मन बुद्धि वाला जीव तुम्हें नहीं जान सकता पर तुम मुझे ऐसी समझा दो। तुम्हीं अपनी बढ़ाई सुनाओ। तुम ही अपनी विभूति को जान सकता है। तुम जब मुखारविन्द से सुनायेगा तब मैं जान सकूंगा। मैं कैसे चिन्तन करूं तू कैसे योग्य है ये अपने मुख से बताओ तो मैं तुम्हें जानूं। तुम जितना सुनाते हो उतनी उत्कंठा और बढ़ती

जाती है। जैसा तुम सुनाता है वैसे लगन और बढ़ रही है। मेरे विस्तार का अंत नहीं है तो भी मैं तुम्हें थोड़े में सुनाता हूँ। सब के अन्दर जो आत्मा है वो मैं हूँ। आदि मध्य अंत भी मैं हूँ। जिसने मुझे जहाँ तहाँ जाना उसने मुझे पूरा जान लिया। सबमें जो खास-खास चीज है वो मैं हूँ। मन भी मैं हूँ क्योंकि उसको भी हस्ती मेरी है। मन तू ज्योत स्वरूप है। इन्द्र मैं हूँ। वेदों में सामवेद क्योंकि उसमें ब्रह्मज्ञान है। सब पर्वतों में सुमेर पर्वत मैं हूँ। कुबेर मैं हूँ और पुरोहित में बृहस्पति मैं हूँ। जलाशयों में समुद्र मैं हूँ। **Pride comes before a fall.** मैं के कारण ही गिरता है। भगवान का कारखाना चल रहा है। तुम मैं क्यों करता है। अंगुली चक्र में क्यों डालता है। **room to room** दान होता था बाहर वाला अभिमान करता है। मैं ही दुखी सुखी होती है। अगर भगवान जहाँ तहाँ देखे तो अपनी मैं तो गुम हो जायेगी। भगवान ने कहा है अपनी इच्छा न करना। ईश्वर इच्छा से हो उस पर चलो। तुमने मन किया हुआ खाना खाया भगवान का कहना नहीं माना। तुम आज तक नहीं सुधरा है। धर्म भूजिन काम मैं हूँ। एक से अनेक हो गया। जीव कर्ता बन के अलग-अलग सृष्टि बनाता है। ईश्वर सृष्टि में वापिस आ जाओ और खाली दृष्टा साक्षी होकर देखो। महर्षियों में भृगु ऋषि, वेदों में महावाक्य ओंकार शब्द मैं हूँ। हिमालय पर्वत भी मैं हूँ। घोड़े में उच्चेश्रवा, शस्त्रों में बज्र, गायों में कामधेनू मैं हूँ। तुम कहते हो मैनें बच्चा पैदा किया है। गुरू से परमात्मा से ही सारी सृष्टि उत्पन्न हुई है। अनाज से वीर्य, उससे बच्चा हुआ और अनाज वृष्टि से, वृष्टि मेरे से हुई तो सब शक्ति मेरी है। मनुष्य को कोई शक्ति नहीं है। यमराज भी मैं हूँ। आकाश मैं पाताल भी मैं। शेर, गरूड़, शेषनाग, मृगराज, सिंह सब मैं हूँ। तत्वज्ञान के लिए वाद

संवाद भी मैं हूँ। सवाल भी मैं जवाब भी मैं हूँ। अक्षरों में अकार, स्त्रियों में जो सुन्दरता धारण शक्ति सब मैं हूँ। काल भी मैं हूँ कालों को महाकाल भी मैं हूँ तथा छह महीनों में माघ का महीना, बसंत ऋतु भी मैं हूँ। जुआ करने वालों में जुआ भी मैं हूँ। मतलब जुआरी को खराब न देखो। घृणा किसी से न करो। जीतने वालों में विजय मैं हूँ। तुम्हारी धारण शक्ति, स्मरण शक्ति मैं हूँ। विजय का अहंकार तुम न करो। पांडवों में धनंजय भी मैं हूँ वासुदेव भी मैं हूँ और तेरा सखा भी मैं हूँ। कवियों में शुक्राचार्य वेद व्यास भी मैं हूँ। दुमन धरने वालों का दंड हूँ। ज्ञान भी मैं मौन भी मैं हूँ। तत्वज्ञान भी मैं हूँ। मेरे सिवाए कुछ भी नहीं। चर अचर जगत मेरे सिवाए नहीं है। यह सब तो संक्षेप में है पर मेरी विभूतियों का अंत ही नहीं है। खास-खास शक्ति मैं हूँ। जो-जो विभूति युक्त, कांतियुक्त आकर्षण वाली चीज देखो वो मेरा ही तेज है। तेरे तेज का केवल थोड़े ही अंश लेकर सब चीज सुन्दर लगती है। योगियों में योग, तेज बुद्धि सब मैं हूँ। मेरी माया मेरे थोड़े अंश से पैदा हुई है। ये सब **sample** हैं। **Everything is God + Everywhere is God** इसलिए मेरे को जानो पर मेरी माया में फंसो नहीं। अपनी आत्मा को जानकर दूसरा देखकर तू फंस जाता है। मेरे को जानो। मेरा गुणगान करो। जानने योग्य मैं हूँ न कि मेरी माया है।

पत्र नम्बर 86

दुनिया का आदमी अज्ञान में द्वैत में है। सब पदार्थ मिथ्या हैं तो उससे प्रीत क्या रखेगा। आम में कीड़ा देखेगा तो आप ही फेंक देगा। स्प्रिंग जैसा फिर उठ जाता है। इच्छा को दबायेगा तो इच्छा फिर-फिर उठेगी। त्याग के अहंकार का भी त्याग। जगत ही नहीं है तो त्याग काहे का तुम कहता है मैंने विषयों का त्याग किया है। ज्ञानी शुकराना मानता है कि कचरे से विषय से छुड़ा दिया। सत्संगियों के भय से माया छोड़ी तो क्या भय हुआ। इच्छा को दबाया तो फिर उठेंगी। पर सच्चा वैराग्य ऐसा है कि तुमको अपने अन्दर का वैराग्य होवे कि लाखों का खजाना कोई तुम्हें दे तब भी तुम्हें बदबू आये। तुम कहता है थोड़े **time** के लिए तो सुख हैं जिस दिन तेरी एकाग्रता न हो तो तुम्हें ना खाना ना साड़ी ना जेवर अच्छा लगेगा। बेवकूफ आदमी, अविवेकी को थोड़े समय के लिए माया से सुख मिलता है। जिसका मन खुश नहीं है उसको बाहर कहीं से खुशी नहीं मिलेगी। मन स्थिर नहीं है तो बाहर कहीं से खुशी न मिलेगी। मर्द में स्त्री में सुख समझेगा तो सात दिन उससे बैठो तो झगड़ा करके मारपीट के तलाक ले के उठेंगे। ज्ञानी को एकाग्रता है तो जहां तहां से मजा ले सकता है। उसका तन मन रोता नहीं है। तेरा जब कुछ छूटेगा तो तू दुखी होगा। तुम अपनी मस्ती अपने में ढूंढो। लखपति करोड़पति अपने बंगले में भी दुखी है। अपने को महादुखी समझते हैं। भोग महारोग हैं। इच्छा खुजली की बीमारी की तरह है बढ़ती ही जाती है। इच्छा को दबाता है वो ही है जो अपने को भी माया को भी सच मानता है। गुरू विवेक की दूरबीन रोज तेज करता रहता है। सब अपने संबंधियों कोक देखो तो कौन सुखी

है? राजा भी दुखिया, प्रजा भी दुखिया, सकल सृष्टि का राजा दुखिया, हरि नाम जपत होय सुखिया। इच्छा रूपी अग्नि सभी को जला रही है। गुरू तेरी नजर का **operation** करता है। जानबूझ के कैसे दलदल में फंसेगा। गुरूमुख से जो वैराग्य लेगा वो सच्चा वैराग्य है बाकी कहीं सुख है ही नहीं। एक राजा हो के भंगिन के पीछे जाये तो कैसा लगेगा। तुम भगवान हो के माया के पीछे जाता है। थूक शरीर के पीछे जाता है। ज्ञानी की लार नहीं टपकती है कि बात में वो जाती ही नहीं है। (एक नशई गिरा गटर में मरा चूहा खा रहा था तो समझा चिकिन मटन खा रहा हूँ) जब तक तू जीव है और जगत सच समझता है तू गटर में ही है। सुख के साथ अनेक दुख हैं। जो जगत मिथ्या है तो उसका सब सुख भी मिथ्या है। सब कल्पना ही है। सारा दिन सीढ़ी चढ़ता उतरता है। कोई भी दुख आ जायेगा। तो फिर गिर जायेगा। माया के थपेड़े खा के दरबदर हो रहा है। सुख तूने बाहर समझा है पर बाहर सब तेरी परछाई का सुख है। बाहर सुख होवे तो मिले ना जो अपनी आत्मा में तृप्त है संतुष्ट है वही सुख है परदेश में धक्के न खाओ लोभ, माया का संग करके बैठा है। साईंस ने जो पदार्थ बनाए हैं। वो तुम्हें तृप्त न कर सकेंगे। जो तृप्त हैं वो झोंपड़ी में भी खुश हैं। बाहर की हालतें उसको नहीं उलझाती है। तेरी आत्मा को काई भी हालत नहीं हिलाती मैं जगत के पीछे क्यों फिरूं माया मेरे पीछे घूमेगी। पुरूष माँ प्रकृति मुहिंजी दासी रहेथी। ज्ञानी शरीर रूपी नगरी का राज्य करता है। अज्ञानी मन, इन्द्रियों का गुलाम हो जाता है। ज्ञानी लोकारीति से ऊपर है। ज्ञानी अपना उद्धार करके बैठा है। दीन गंवाया दुनिया के लिए। अपना उद्धार करो। तुम कहता है जब हम बूढ़ा होगा तो

ज्ञान लेगा पर तू अपना आज उद्धार कर। देह अभ्यासी अपना दुश्मन है। देह अभ्यासी का **fun & feast** में **time** चला जाता है। दुनिया की बातें करके ही लौटता है। कौन सी **progress** की है तुमने। आप भये बुढ़े तृष्णा भई जवान। विकार सब बढ़ जाते हैं। होशियारी दुनिया की भगवान के पास नहीं चलेगी। ब्रह्म विद्या ही सार है। गुरू मुख से वो विद्या सीखनी है। ब्रह्म स्वरूप आनन्द स्वरूप तू है। जब तक ये ना जाना तब तक तुम्हें **peace of mind** नहीं मिलेगी। दुख का कारण तेरा अज्ञान है। वो अज्ञान जायेगा ज्ञान से। **How to happy in this world.** सर्व कामनाओं का त्याग कर देता है। सबकी प्रारब्ध बनी पड़ी है। ज्ञानी कामना रहित है तो बहुत सुखी है। ज्ञानी सुख सागर और दुख सागर करके समझता है। बाकी मेरे को ये नहीं है बाकी वो नहीं है। जिसका दुखी होने का स्वभाव है वो सदा दुखी होता ही रहेगा। शुभ अशुभ का त्यागी मेरे को परम प्यारा है। ईश्वर जो करता है वो अच्छा ही करता है। सारी सृष्टि का तू मालिक है। 24 घंटा जो मुस्कुराए वो ही मनुष्य है। सुख लेने के **time** तो तू हंसा। अब दुख के समय भी तुम हंसो। परमात्मा की इच्छा पूरी होवे तो खुश होना। दुख में तेरी अध्यात्मिक उन्नति होती है। सुख में तो तू वैराग्य में नहीं रहेगा। दुख में सब बहुत ऊँचे आदमी बने हैं। सब न हालतों को **cross** किया। गुरू नानक को जेल में डाला। **Christ** को सूली मिली, कृष्ण को मणि चोर कहा। दुखमें जो मुस्कुराये वो ज्ञानी है। जो पदार्थ थोड़े समय के लिए मिले उनमें तू फंस गया है। मेरा कह के दुखी हुआ है। तुम क्या कर सकता है? जीव जड़ शरीर क्या कर सकता है? प्राणपति अंदर बैठा है। उसकी हर चीज है तो तुम

को उसको खुशी खुशी देना। **Are you son of God?** जो हर बात में राजी है वो भगवान का बेटा है। जो तेरी इच्छा वो मेरे लिए अच्छा। शरीर को घटा के पूरा करो तो भी हो मैं मैल न जाएगा। रजा में जो राजी है वो राजा है। नाराज नहीं पर अशोक हो के रहो। किसी के साथ भी अन्याय नहीं हुआ है। **God is just** भगवान ने जो कुछ किया है वो सब **right** है। ये तेरा **wrong attitude.** कभी भी खराबी नहीं हुई है। पूरा - पूरा राम राज्य है। जैसी भी हालत तेरे पास है ये सब तुमने ही कभी न कभी मांगा था। जब **result** निकलता है तो तुम दुखी होता है। कर्म कते समय क्यों न सोचा अब क्यों रोता है। कर्तापन के अभिमान के कारण तू रोता है। जो जाने मैं कुछ करता तब लगि गर्भ जणि में फिरता। जो अहंकार से एक भी कर्म किया तो उसका दुख देखना पड़ेगा। तेरी मैं दुखी कर रही है। **false ego** ही तो सताने वाला है। एक **capital I** एक **Small i** है। ये देह अभिमान ही दुख का कारण है। जो **egoless** है वही **thoughtless** है। जिसके अन्दर भगवान प्रकट हो गया वो अपनी मैं नहीं करता है। गुरू तेरे अन्दर की शक्तियों को प्रकट करता है। गृहस्थ में आ के फंस गया था। गुरू ने कहा ये **past** था। तू सबको जानने वाला है। अज्ञानी बेवकूफी करके पछताता है। जगत एक कहानी है। घटना है। तुम सब से प्रीति रखो। सच को पहचानो। माया आने जाने वाली है। तू कूटस्थ है निश्चल है। सुख दुख भोगना आत्मा का धर्म नहीं है। **Do nothing + Be nothing** सच में टिको। देह में कुछ भी बनेगा तो दुखी होगा। सेठ नौकर से, औरत मर्द से, मां बच्चे से दुखी ही रहेगी। जीव सृष्टि में ही दुख है।

कल्पना में ही दुख है। परमात्मा की सृष्टि में कोई दुख नहीं है। आत्मभाव में ही आनंद है। ब्रह्म में कोई शब्द, कोई दृश्य नहीं है। हारमोनियम में आवाज वायु का है। शब्द वायु के कारण है। गुण गुणों में वर्तते हैं आत्मा अकर्ता है। एक विषयों से वैराग्य लेता है। एक विषयों से द्वेष करके चला गया है। ज्ञानी न भागता है न भोगता है पर जागता है। राग द्वेष से ऊपर है प्रेम। जो विषयों के रस में नहीं जाता है वो तृप्त है। आत्मा में रमण करने वालों को कोई विषय खुश नहीं करते हैं। अज्ञानी को दुनिया के सुख मिलते हैं तो खुश होते हैं। जब तक कोई रस है तो दुनिया से बंधा है। जब इच्छाएं छूटी रस छूटे तो **free** हो जाता है। अकेला आनन्द में है किसी भी आधार पर नहीं है। भय है द्वैत के कारण। भगवान है अंदर तुम बाहर ढूंढता है। गुरू अंधेरे में रोशनी करता है। माया बहुत चमकदार है पर उससे सुख नहीं मिलेगा। तू आनन्द स्वरूप खुद है तो बाहर क्यों भटकता है। इन्द्र देवता भी दुखी सुखी होता रहता है। जो भी कुर्सी मिलेगी उसे जाने का डर है। ब्रह्मा की हजारों सालों की आयु है तो भी वह जब तक ब्रह्म ज्ञान न लेगा तब तक कितना भी दुनिया का सुख लेवे तो तृप्ति और मुक्ति न होगी। जो जगत को सच मानते हैं तभी माया में खिसक जाते हैं। फिर-फिर वैराग्य लो। अपने से पूछो कि क्या चाहिए जो रोज-रोज जाता है। ऊंट कांटा खाना नहीं छोड़ता। अंधेरा जायेगा तो ज्ञान होगा। ज्ञान इतना पवित्र है जहाँ एक भी इच्छा रह नहीं सकती है। सब मैं ही तो हूँ। जिसने आत्मा को जान लिया उसने सब जान लिया तू पुरूष परमात्मा है प्रकृति आपे ही कार्य करती है। जब तक जगत को मिथ्या नहीं जानेगा तो उसी में डूब जायेगा। सब से अधिक प्रिय अपना

आत्मा है। अपने सुख के लिए सारी दुनिया इधर आयी है। ज्ञानी की दौड़ धूप बंद हो गयी। जो अपने आधार पर है वो कभी दुखी न होगा। परमात्मा तो जहाँ तहाँ है। **Self seer** किसी को प्रिय अप्रिय नहीं समझेगा अपना आप भूलता है देह अभ्यास के कारण। जीव सदा दुखी सुखी रहेगा। क्योंकि हद में है तो अतृप्त है। परिछिन्न देह अपने को माना है। देह मानने में चाह बनी रहेगी। आत्माकार किसी में इच्छा न रखेगा। शुभ अशुभ का त्यागी है। आनन्द या शान्ति चाहिए नहीं पर मैं शान्त स्वरूप हूँ। कौन सी इच्छा वासना है जो अशान्त है। पानी स्वाभाविक शान्त है पर इच्छा रूपी लकड़ियों के कारण पानी गर्म होता है। रजा पर राजी रहना ही मुक्ति है। मुझे अधिक कुछ नहीं चाहिए। जिसे निष्काम भावना है, निस्वार्थ प्यार है वो खुश रहेगा। वापिसी चाहने वाला सकामी कृपण कंजूस है। सर्व के भले के लिए जीना ही केवल आनन्द है। तुम देने वाला कौन है? सब परमात्मा की चीज। तू अकर्ता आत्मा है। तू देने वाला कहां जो वापिसी मांगता है। 5 रूपये देगा तो भी समाधि में याद करके रोयेगा। भगवान ही चोर के रूप में आकर ले जायेगा। ये माया सब भगवान की अमानत समझो। तेरे लिए है तेरा नहीं है।

पत्र नम्बर 87

हर समय मुस्कुराते रहना मोतियों का कोष दान करने से भी उत्तम है। आत्माकार की मुस्कुराहट ही सच्ची है क्योंकि अन्दर एक ना दो। मूर्ति सदैव मुस्कुराती है तो उसे सब पूजते हैं। रोते हुए को एक कोने में अकेला रोना पड़ता है पर हंसने वाले के साथ दुनिया हंसती है। **You laugh and the world will laugh with you, you weep and you weep alone.** क्या कारण है अब रोने का। भगवान ने जब सब कुछ तुम्हें दे दिया है तब भी तुम रोते रहते हो भगवान ने किसी को भी कम ज्यादा प्यार नहीं किया है। क्योंकि भगवान सर्वत्र है। तुम भगवान से, मां बाप से, गुरू से भी खुश नहीं हो क्योंकि तुमने कसम उठाई है कि मैं जिन्दगी में हरदम रोता ही रहूंगा। तुम सारा दिन दूसरे की थाली देखते हो कि उसकी थाली में दो लड्डू है मेरे में एक है तो अपना एक लड्डू मैं नहीं खाता। बीमारी, मान, अपमान, दुख-सुख सब तेरी परीक्षा के लिए आते हैं। जिस **Subject** में फेल होगा वो इम्तिहान फिर देना होगा। हर हालत चढ़ाने के लिए आती है। क्रोध का कारण सामने आवे और तुम्हें क्रोध न आए। काम का कारण सामने आवे और तू न फंसे कोई पुरूष नहीं है कोई स्त्री नहीं है। पदार्थ अभाविनी हो जाए। किसी का लाखों रूपये का सोना जेवर पड़ा हो, कोई बंगले में रहा पड़ा हो तो भी तेरा मन उसमें न जाए। वे सब अंदर से खून के आंसू बहाते हैं पर सुखी बसे मिस्कीनिया आप निवार तले। नम्रता वाला ही सुखी है। धोबी के पास कपड़े दूसरे के हैं। तुम्हारे पास भी जो कुछ है वह दूसरे की अमानत है। तुम्हारा कुछ है नहीं अपने को मीस्कीन समझो। तुम अहंकार करते हो वो सब पैसा चला जाएगा। कामना किसी के हाथ में नहीं है। सब परमात्मा की मेहर है। बड़े बड़े अहंकारी नानक

गर्भ गले। सुंदर, जवानी, पैसा, पदार्थ सब जा सकते हैं। कोई चीज रहने वाली नहीं है तो किस बात का अहंकार करता है। सब जगह भगवान देखेगा तो शान्ति आएगी। प्यार की खोज करो। सारे ज्ञान का एक शब्द में अर्थ है नम्रता। जितना ज्ञानी हैं उतना ही झुकेगा। सब कुछ भगवान ही समझता है। गुरू शिष्य भी नहीं है जो तू है सो मैं हूँ। गुरू भी निरअहंकारी होवे शिष्य भी निर्भिमानी होवे। ऐसा न कहे कि मैं सच्चा भक्त हूँ। ये भगवान की मेहर है जो तेरे अन्दर ज्ञान पक्का करता है। भगवान तेरे पास परीक्षा भेजता है। ये भाग्य की निशानी है कि तुम्हें परीक्षा के योग्य समझा। जो परीक्षा हाल में बैठने दिया है। हर समय सजग रहना है। झूठा नहीं खाना है। **Everything comes from God** राजी रहां रजां ते तुहिजे सदाई सतगुरू कुरकी न दिल खे कारो कडीह बि भी करयां शल। हर हालत में **enjoy** करो। तुम अपना घर और जीवन धर्मशाला बनाओ। उदारचित बनो। हर चीज इधर ही छोड़ जानी है हमारा सत्संगी आएगा। तुम पूछोगे कितने जन हमारे पास आएंगे। फिर वो बाथरूम जाएगा घर खराब करेगा तुम उसको सहन न करोगे। पर जब तेरे रिश्तेदार, बहु, पोते, पोती घर में फर्नीचर पर नाचेंगे तो तू सहेगा। तुम उदारचित नहीं हो। आसक्ति रहित नहीं है। गुरू तेरी चीज न लेगा पर आसक्ति निकालेगा। तेरा ज्ञान पर उसकी नजर है वो तुम्हे लप्पड़ मारेगा। तू एक **wrong** कर्म करेंगा। तो गुरू पर दोष आएगा पहले मां बाप पर आता था। एक भी अज्ञान का कर्म न हो जो दुनिया तेरे पर हंसे। तुम ममता, मोह करोगे तो सब पुलिसवाले बनके तुम्हें सुधारेंगे। इसलिए हर कदम ज्ञान सहित उठाओ। कदम कदम गुरू की सलाह से चलो पुरानी आदतें, हठ सब तुम्हें छोड़ना है। एक एक वचन, ज्ञान, श्रद्धा, भक्ति से उठाओ मीठा लगेगा नहीं तो कड़वा लगेगा।

पत्र नम्बर 88

मेरे संकल्प से ही यह सृष्टि है, दृष्टा भी मैं हूँ। सफेद पर्दा केवल सत्य है। तमाशा तुझ में होता है तमाशे में क्यों रोता है। कील दीवार में लगती है फिर उसे हिला कर देखते है। भूल को जानने वाला भी तू भगवान है। एक दिन फिर अभूल भी जायेगा। जब भूल का पता नहीं है तो मन से तू **Mix** है। जब तू अकर्ता है तो सारी दुनिया **Strike** पर है। एक दृष्टा है एक कर्ता हैं। सारी दुनिया **opposite** भी हो जाये तो भी तुम्हारा कदम पीछे न हटे। जो अज्ञानी है वो तुम्हें कोई **right** रास्ता नहीं बतायेंगे। अज्ञानी, दुनिया की बात भी तुम क्यों सुनता है। सारी दुनिया कहेगा ये तेरा फर्ज, **duty** है पर ज्ञानी अकर्ता दृष्टा हो के अपना ही खेल समझ के चलता है। करना था सो कर लिया। सर्व के आत्मा से मेरी शादी हो गई। सबकी आत्मा मेरी प्रेमिका है तो शादी किससे करेगा। मैं पुरूष परमात्मा हूँ तो कृष्ण की समझ की तरह फिर तो तुम्हें गोपियाँ मिलेंगी। मन को जानो बाकी उसके कहने में आकर उदास मायूस न हो जाओ। पहले अपने को बनाओ। शान्त समाधि में स्थिर हो जाओ तो सब काम अच्छे में अच्छे हो जाते हैं। सब शान्त समाधि से कार्य होते तो तुम्हारे हर काम से सब खुश हो जाते हैं। जिसको भी देखो भगवान की निगाह से। हर कर्म पूजा है। कर्मन कंदे अथस समाधि। तू ही दुखी है तो सब दुखी हैं। तू अंदर शान्त है, प्रेममय है तो सभी में प्रेम नजर आयेगा। जो अंदर सुखी है उससे सब सुखी हैं। ज्ञानी ने अपने को **adjust** किया है। अपने को मिटा के सबको खुशी देता है। वापिसी की इच्छा नहीं है। केवल भगवान करके देखो और कुछ भले ही न करो। गुरू की नजर से ही हम भगवान हो

जाते हैं। गुरू का प्यार आंतरिक है। गुरू तेरे मन के शीश को देखेगा तो उसे कतलोम करता है। प्रेम का दिखावा नहीं करता। ब्रह्मा, विष्णु, शिव भी गुरू होता है। तभी तुम्हें शुकराना आता है जब संशय भ्रम जाता है। जब सब में आत्मा देखा तो शान्त हुआ। शरीर सब मायामय हैं। मैं नहीं मेरा नहीं तब शान्ति आई। तेरे अंदर भी संग्राम चलेगा कोई ऐसी आग लगाये। हम अंधे अज्ञानी थे। गुरू ने ही बांह पकड़ के चलाया। अब अपनी बुद्धि व मन न चलाओ। जो मन की बाग पूरी-पूरी देता है वो शान्त हो जाता है। कैसा-कैसा शान्त किया। 12वें अध्याय में पूरा भक्त का लक्षण बताया है। ज्ञानी भक्त मेरे को प्यारा है। शरीर की सेवा, सेवा नहीं है, प्रसन्नता उसमें नहीं है। अंदर पहले ज्ञान होवे फिर भक्ति तुम्हें खुशी देगा। 2 अध्याय में आत्मा का ज्ञान दे के फिर भक्ति सुनाया है। ज्ञान के साथ सेवा करके तो खुशी आयेगी। जब तलक। पहले तू आत्मा है, शान्त है तब तेरी सेवा भी सफल है। पहले सवाल यही होवे कि ईश्वर आहियां। ज्ञान सहित भक्ति सहज होयेगी। मैं अलग ये अलग तो शान्ति न आयेगी। सर्वत्र आत्मा है अंदर बैठ के भगवान की सेवा लेता है। निष्कामी के अंदर सारी सेवा व शक्ति आ जाती है। मैं सिर्फ सेवा के लिए ही आया हूँ। ऐसा स्वभाव बनाओ जो खुशी मिले। सब में **interest** रखो। नम्रता रखो। नम्रता माना न मरता। सबको भगवान देख के पहले मुस्कुराओ फिर बात करो। मुस्कुराने का स्वभाव बना लो तो आनन्द आ जायेगा। मुस्कुराने वाला ही गुरू को पसन्द आता है। मुस्कुराना छोड़ेगा तो पाप करेगा। प्रसन्नचित वाले को यह ज्ञान शीघ्र ही लग जाता है। शुकराने में तुम्हें रोज आना चाहिए। कुत्ता भी अहसान मानता है। तुमने माना है?

सबके आगे झुको, नम्रता करो तो अन्दर से भगवान प्रकट हो जायेगा। हर खंभा (शरीर) है उन सबसे भगवान प्रकट हो जायेगा। साक्षात दर्शन हो जायेगा। से सुता ई जाग्रन निंड तिन्ही जी इबादत ज्ञानी सोता ही नहीं है। नींद में ही उनकी इबादत बंदगी होती है। अपने को सुधारने की बजाय दूसरे को सब सुधारने में लगे हैं। दोष दृष्टि से अज्ञानी को कभी-कभी वैराग्य आ जाता है। जैसे सन्यासी दोष देख के जंगल में चला जाता है। प्यारे में प्यारी स्त्री भी खड़ी हो तो ज्ञानी का मन नहीं जाता है। दुख देखकर तो अज्ञानी को भी जंगल पसंद नहीं आता पर ये सच्चा वैराग्य नहीं है। निर्मोही को सुख, मोह, बीमारी नहीं है। निर्मोह दवाई है। जिसे हो मैं दीर्घ रोग है उसे मोह भी राग व द्वेष सब होगा। प्रेम द्वन्दों से ऊपर है। आत्मा जान के प्रेम करने के सिवाय रह नहीं सकता। हम हर रूप में भगवान को पहचानते हैं खफा नहीं होते, रूठ नहीं जाते। जैसे प्रकृति में भगवान की मूड कभी ठंडी कभी गर्म है तो ऐसे ही कोई ठंडी प्रकृति का कोई गर्म है तो उससे दुखी क्यों होवे? कौन सा दुख या सुख है। संत से किसी ने पूछा ब्रह्मज्ञानी को कैसा आनन्द है। मां का बिछुड़ा बेटा मिले, सख्त बीमार पति ठीक हो जाये तो जो खुशी होगी वो है। संत ने कहा सब खुशियाँ **temporary** है। संत को बहुत भारी परीक्षा में दुख नहीं है। तुमको उसी **time** भगवान भूल जाता है। सुख दिया तो विश्वास दुख दिया तो विश्वास निकल जाये। प्रेम सगाई सबसे ऊँची। विदुर के घर साग खाया। बाकी सब रिश्ते झूठे हैं। भाई तो बहन का पैसा भी खा सकता है वो 5 विकार, विषय, राग, द्वेष वाला आदमी क्या रक्षा करेगा? भाई अपनी विधवा बहन को भी नहीं रखेगा क्योंकि अपना सुख

प्यारा है। सच्चा नाता परमात्मा को है। भक्तों पर भीड़ पड़ी। हमेशा वो है ही है। तुम्हारा भाई जब तक कलकत्ता से आये तब तक तुम्हारा काम खलास। मारने से बचाने वाला नजदीक है। प्राण की रक्षा करने वाला भगवान है ईश्वर पर भरोसा रखो। जो मेरे आसरे रहता है मैं उसका योग व क्षेम उठाता हूँ। उसका **connection** भगवान से लगाता हूँ और फिर उसकी रक्षा करता है। आज ही इसका दुख उतारूँ ऐसा करूणानिधान भगवान छोड़ के हम किसी देह का आधार क्यों लें। परमात्मा ने तुम्हारी प्रारब्ध बना रखी है। शेर को मांस तोते को आम कौन देता है? जो तुमको आ के चिन्ता लगी है। जल में जीव उपाया तिन्हा भी रोजी दे। एक ही दाता राम। **Oh fool knowest not thou God feeds the world.** परमात्मा सारी दुनिया को देता है। तुम **future** की चिन्ता करता रहता है। अनाथ, विधवा, पत्थर के अंदर कीड़ा भी खाता है बाकी तुम को न देगा। गुरू अगर तुमने बाहर माना तो भी दुखी है। वाणी गुरू गुरू है वाणी विच वाणी अमृत सारे, वाणी गुरू कहे सेवक जन माने प्रत्यक्ष गुरू निस्तारे। एक जगह नहीं पर हर जगह गुरू है। बेगमपुर वासी है। गुरू भगवान है तो कहाँ नहीं है। निगाहों में तुम हो, ख्यालों में तुम। जिसके दिल दिमाग आँख में भगवान है तो वो जन्नत नहीं है तो और क्या है। प्रभु ते भूलिया तो व्यापन समेई रोग। यह देह ही नर्क है तो तू नर्कवासी है। तू आत्मा है तो सदा बैकुंठ में है। भोग है रोग। साध के संग शक्ति, आनन्द आ जाता है। जहां देहअभ्यास नहीं है। प्रभु का सिमरन साध के संग। जो संत का संग करता है वैसा तू हो जाता है। देहअध्यासी के संग तू भी वैसा होगा। जहां जहर पीते हैं वहाँ

तुम्हें भी पिलाया जायेगा। **As the company so the colour** तुम सबको आत्मा की बात सुनाओ। जो खाया है उसकी डकार देगा। ज्ञान होगा तो ज्ञान अज्ञान होगा तो अज्ञान निकलेगा। छिपी शक्तियों को भगवान प्रकट करता है। दुनिया के लोग कमजोर बना के जायेंगे। बीमारी के बिस्तर से भी गुरू उठा के आयेगा। प्रेम का रिश्ता सबके साथ रखो। प्रेम सूत्र में बांधो। सभी रिश्ते टूटने वाले पर आत्मा का रिश्ता सदैव है। कूड़ राजा कूड़ प्रजा। झूठों का सरदार कभी न कभी तुम्हें छोड़ देगा। एक पाप करके भाई बाप या मर्द को बताओ तो वो **forgive forget** नहीं करेगा पर भगवान करेगा। किसी को भी भगवान तलाक न देगा। एक शूद्र को भी ज्ञान लग सकता है। जिसे चाह नहीं उसे संकल्प विकल्प नहीं है। यह चाहना ही चमार चुहिड़ी है। चाहना वाला चमार से भी खराब है। देहअध्यासी चमार हो गया कसाई हो गया सारा दिन मांस (शरीर) में मन है। जो आत्मा करके देखता है वो आत्मदृष्टि वाला है। चम दृष्टि वाला चमार है ये दोस्त ये दुश्मन है। आत्माकार जोत पर ही नजर रखता है। ना किसी से दोस्ती ना किसी से वैर। उसने सब से दोस्ती कर ली है। जो परमात्मा को जानता है वो उसे जहाँ तहाँ जानता है और वही तेरा योग क्षेम उठा रहा। गुरू ही निराकार साकार हो के आया है। ओउम् की तेरे ऊपर कृपा होगी तो ज्ञान की नेष्ठा होगी। अमृत भी वही पिलाता है। तुम उसे बाहर देखता है। माम् एकम् की शरण माना उसकी समझ, उसकी वाणी, उसका आदर्श अन्दर ग्रहण करो। तुम्हारा भगवान तुम्हारे साथ है। बाहर का सब भूल जायेगा पर भगवान न भूलेगा। साकार को अगर पकड़ेगा तो वो आज है कल नहीं है। बाहर से आयेगा

तो जायेगा भी पर निराकार है ही है। सब परमात्मा से पैदा हुई है। जिस परमात्मा से सब भूत प्रणी उत्पन्न हुए हैं पर सारी प्रकृति में ओत प्रोत है। सब कर्म दोष से भरा हुआ है जैसे धुंये से अग्नि। क्षत्रिय का धर्म है लड़ाई करना पर ज्ञानी मारते हुए भी किसी को मारता नहीं है। अर्जुन ने इतने आदमी को मारा तो भी किसी को नहीं मारा। कसाई का धर्म है बकरे काटना। **Live in the realization and recognition of oneness with the me, as you know me as I am so shall you be.** सब कर्म सन्यास करके मेरे परायण हो जाओ और विवेक बुद्धि से अपने को आत्मा जानो और देह करके नहीं मानो। जैसा मेरे को तू पहचानेगा वैसा तुम भी हो जायेगा। जो मेरे को मधनमल समझा है वो अपने को जरूर तुलसीदास समझेगा। तू मेरे को क्या समझता है? मेरे को समझने का दरकार है। मेरे को भगवान जानेगा तो आप भी वैसा हो जायेगा। अपने को मेरे जैसा समझो। जैसे पुतली का नाच ऐसे तुम परमात्मा की शरण लो। ओउम् एक टिक उसमें रहो। ओउम् की कृपा से तू परमशान्ति को पायेगा। मन मेरे में रख। मेरी पैरवी करो। जब हम अहंकार नहीं करते तो तुम भी न करो। **Abide in me** मैं माना भगवान तू अपने शरीर को जानेगा तो मर जायेगा।

पत्र नम्बर 89

पत्रों द्वारा भी अच्छी पहचान होती रहती है। आज सत्संग में बात चली कि सब कहते हैं कि सभी जगह ऐसा ही ज्ञान है। उस पर उत्तर मिला कि ज्ञान भले ही एक सा हो पर कोई भी गुरू हमें मायातीत, मायारहित नहीं कराता। हमारी इतनी सम्भाल नहीं करता। जो निष्काम प्यार गुरू एक एक को यहां देता है ऐसा प्यार निष्काम कहीं भी नहीं है। हर जगह माया का व्यवहार है। परन्तु यहां की गुरू जो स्वयं माया नहीं चाहता तो हमें भी माया से उपराम्ह करता है। माया तो अपने मालिक को खुश भी नहीं कर सकती है फिर तृष्णा भी बढ़ती ही जाती है। गुरू ही संतोष में जीना सिखाता है। माया मेरे राम की खिन आवे खिन जावे। आज सच झूठ की परख गुरू ने दी है। मन व आत्मा दो अदृश्य चीजें गुरू ने ही दिखलाई है। सर्व से प्यार करना सिखोया है। हर समय मुस्कुराते रहो। **Smile miles of smiles you smile. You laugh and the world will laugh with you. If you weep you weep alone.** तुम्हारे हंसने से पूरी दुनिया हंसेगी। **Live and let live.** फिर गुरू तो सच्चा कहता है **I may die that you may live.** अपनी कुर्बानी करके हम सबका जीवन बनाता है। हरेक को अपने सुखों की कुर्बानी करनी पड़ेगी तभी आप समान हो सकेंगे।

पत्र नम्बर 90

आज सत्संग में बात चली कि यह मोह कैसे निकलेगा। उस पर उसे उत्तर मिला कि सत्संग में आकर हरेक माल बहुत बड़ा चाहता है। मगर उसकी फीस नहीं देना चाहता। बच्चों को एक **Degree** लेने के लिए 14 साल लग जाते हैं फिर 8-10 घंटे स्कूल की पढ़ाई फिर **Private Tution** और **Homework** वगैरह। फिर कई परीक्षायें देनी पड़ती हैं। परन्तु इस ज्ञान के लिए, ब्रह्मविद्या के लिए, मोह निकालने के लिए न तो समय देना चाहते हैं और न ही कोई परीक्षायें। इस राह पर मीरा, ध्रुव, प्रहलाद वगैरह की परीक्षायें याद करें तो कितने कष्ट उन्होंने सहे हैं सच के लिए। परन्तु आज कोई दो शब्द भी नहीं सक सकता। चखना चाहे प्रेम रस और रखना चाहे मान, एक म्यान में दो खड़ग, देखा सुना न कान। परन्तु इस प्रेम में तो वही बढ़ सकता है जो हरेक बात को सहने के लिए तैयार हो। रामायण में भी लिखा है कि जांके प्रिय ना राम वैदेही तजिये ताहि कोटि वैरी सम यद्यपि परम सनेही। तज्यो पिता प्रहलाद, भरत महतारी (भरत की माँ)। संग दोष से भी बच कर चलना है। निष्काम में बढ़ने पर ही संग **Change** होता है। राजा भरत ने मोह के कारण दो देह धारण की। संग सदैव सत्संग का होना चाहिए। उसी से ही यह अहमता ममता कटती है। सच ही है यह ज्ञान बुढ़ापे, मौत, दुखों व बीमारियों छुड़ाने वाला है। पहले से ही सब आधार छोड़कर एक प्रभु का आधार लेना था और निराधारों का आधार बनकर सच्ची रोशनी दिखाओ। ज्ञान माना **Complete Change** मैं और मेरे से अलग हो जायें। गुरू से भी पूरा पूरा सौदा करना है कि मेरा सो तेरा और तेरा सो मेरा। बस सच्ची लगन की ही जरूरत है फिर तो राह अपने आप ही मिलेगी। ऐसा न हो इस राह में रह जायें अधूरे। सारी दुनिया रूठे लेकिन श्याम न रूठे। बस यही निश्चय लेके आगे बढ़ो।

पत्र नम्बर 91

अपने ऊपर कृपा करके थोड़े से समय में ही काफी ज्ञान तुम लोगों ने ले लिया है। गुरू के महत्व को जाना है और अपने जीवन में भी **Change** लायी है तो प्रकृति भी आपको आगे बढ़ाने में मददगार होगी। कभी भी जीवन में निराश नहीं होना है। आगे ही आगे बढ़ना है। धूप मिलया या छांव कभी रूके न पांव। यही मानकर आगे बढ़ना है। गुरू का आशीर्वाद सदैव आप सभी के साथ है। शुद्ध हृदय वाले तो सचमुच धन्य हैं। गुरू भी उनके पीछे घूमता है। कबीरा मन निर्मल भयो जैसे गंगा नीर, पाछे लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर। कबीर का अन्तःकरण शुद्ध था। ऐसे सच्चे भक्त की प्रभु को भी तलाश है। ब्रह्मज्ञानी को खोजे महेश्वर। तुम सब ब्रह्मज्ञानी हो। तेरे जैसों की तलाश में गुरू महेश्वर भी घूमता है। योगभ्रष्ट ही योगयुक्त होता है। थोड़ी सी चाहना के कारण पिछले जन्म में गिरे हो तो इस जन्म में एकदम निरिच्छा हो जाओ अपना पूरा बोझ गुरू को दे दो। हल्के होकर जीओ। एक बार एक व्यक्ति सिर पर भारी गट्ठर उठाकर पहाड़ी रास्ते से ऊपर जा रहा था। एक सन्त ने पूछा कहां जा रहे हो। बोला ऊपर ब्रह्मज्ञानी महापुरूष से मिलने जा रहा हूँ पर बोला जाने के लिए इतने बड़े गटठूर की क्या जरूरत है। उसे बात समझ में आ गई और उसने वो गटठूर फेंक दिया। फिर जब आगे बढ़ा तो दूसरे सन्त ने भी उससे यही प्रश्न किया कि कहाँ जा रहे हो। बोला ब्रह्मज्ञानी से मिलने सन्त ने कहा जब अब कुछ बोझ नहीं है तो तुझे जाने की जरूरत नहीं परमात्मा खुद तुझे खोज लेगा और अपनायेगा और सचमुच ऐसा ही हुआ। मतलब तो यही हुआ कि पहले हम गुरू के पास कितना बोझ

लेकर आते हैं। पर गुरू कहता है सत्य तक बोझ उठाकर न पहुँच सकोगे। तब हम यह मैं मेरे का बोझ उठाकर फेंकते हैं। चिन्ताओं का गट्ठर उतर जाता है तो स्वयं ब्रह्म हो जाते हैं। जानत तुम्हीं तुम ही हो जाई। दूसरी एक बात चली कि जब तुम नया कपड़ा खरीदते हो उसकी कितनी **Value** तेरे **mind** में होती है पर जैसे-जैसे वह पुराना होता जाता है तुम उसकी **Value** घटा देते हो। घर में पहनने लगते हो और अन्त में चिथड़ी के काम आता है। ऐसे ही अज्ञान में हर शब्द की **Value** थी। दिल के **Hanger** में टांग कर रखते थे परन्तु आहिस्ता आहिस्ता ज्ञान सुनते सुनते तुम्हारे अन्दर से शब्द की **Value** घट जाती है और तुम आनन्दित हो जाते हो।

पत्र नम्बर 92

तुम हमें चाहो हम नहीं चाहें ऐसा कहीं हो सकता है। तुम जैसे नौजवानों पर तो हमें भी नाज़ है जो कुछ कार्य कर सकें। जिनके उत्साह व उमंग अभी जवान हैं। कुछ करने का शौक हो। जो कार्य जोश वालों से होता है वो होश वालों से नहीं। ये **Art** भी किसी किसी को होता है किसी के हृदय को जीतने का। बाकी तो सभी ज्ञान सुनकर फिर शान्त होकर बैठते हैं। परन्तु पुरूषार्थी कहता है ये जन्म तुम्हारे लेखे और इस कार्य में जुट जाता है। आगे बढ़ा कदम रूकना तेरा काम नहीं चलना तेरी शान। बाधायें तो आयेंगी पर जो बाधाओं को पार करता जाये वो ही सच्चा वीर है। जो अपने सिर पर कांटो का ताज पहन सकता है उसी के सिर पर विजय का सेहरा बांधा जाता है। **Christ** का नाम पहले जीज़स था परन्तु जब उसने कुर्बानी के **Cross** पर अपने को चढ़ाया तो उसका नाम जीज़स **Christ** पड़ गया। अपने सुखों को एक तरफ रख के कुर्बानी की पुल बन जाओ। यह जीवन दे डालो सभी के लिए। पता नहीं कितना वक्त बाकी है। इसे यूं ही न गंवाओ। श्वासों पर एतबार नहीं वक्त हमें खोना नहीं। आज भी **Point** चली कि जब तुम माया में जाते हो तो अपने से पूछो कौन सी इच्छा तुम्हें लोकारीत में ले के जाती है। वहाँ जाकर क्या करते हो। कम इन्सान बनकर ही तो लौटते हो। यह जीवन तुम्हें प्रभु के लिए ही तो मिली है। हर समय अपना लक्ष्य सामने रख कर चलो तो कभी भी गुमराह न होंगे। जीवन का मकसद हासिल किये बिना एक पल भी नहीं सोना है। जिन सोया तिन खोया। हम तो तेरी याद के रूप में हमेशा तेरे साथ हैं।

पत्र नम्बर 93

निष्काम जीवन के सिवाय सकामी बन्धन नहीं टूटते। गुरू से आन्तरिक **Link** रखनी पड़ती है। पक्का **connection** हो जाये। लाख कोस साजन दूर बसे तो भी हृदय मांहि हजूर, द्वारे पर दुर्जन बसें तो भी लाख कोस है दूर। जीवन की डोर गुरू के हवाले करके तुम निश्चित हो जाओ। जैसे प्रीत हराम में वैसी हरि से होय, चला जाये बैकुण्ठ में तो पल्ला ना पकड़े कोय। व्यवहार में भी परमार्थ का रंग लगा दो। कोई न कोई प्रेमी तेरे पास आता रहे जिसमें ये ही ज्ञान की वार्तालाप चलती रहे। एक एक क्षण जीवन का अमूल्य है जिसे हमें यूं ही व्यर्थ ही नहीं गंवाना है। उसका सदुपयोग होना बहुत जरूरी है। ओउम् में मेरा ध्यान रहे। आत्मा के सागर में मैं डूब के खो जाऊँ। मैं मैं न रहूँ तू तू न रहे, हम राम में ऐसे रम जायें। अपनी हस्ती जो तेरे कदमों में मिटा देते हैं। बस वही सत्गुरू को मना लेते हैं और सत्गुरू को रिझाना ही **main** मतलब है। जिसके ऊपर गुरू की रहमत हो गई उसे फिर किसी बात की कमी नहीं रहती है। हर समय निराकार व साकार के शुकराने मानते चलो। समय कम है काम अधिक है। सत्गुरू से व्यापार कर लो। हाय हाय दे कर वाह वाह ले लो, चिन्तायें देकर आराम। जीव सृष्टि में दुख, ईश्वर सृष्टि में सुख है। छोटी दुनिया से छूटकर परमेश्वर परिवार में आ जाओ। प्रभु से प्यार ही सच्चा प्यार है। जीवन का सार क्या है? जीवन किसके लिए है? इसका विचार हर समय चले। पशुओं की तरह बंधे रहना जीवन नहीं है। बन्धनरहित मुक्त। जीवन मुक्त ही विदेह मुक्त है।

पत्र नम्बर 94

हम सभी सुखपूर्वक यहां लखनऊ पहुँचे होली के दिन प्रेम के रंग बरसाते हुए। सभी प्रेमियों ने जैसे अपने जन्मों की प्यास बुझाई। शाम का सत्संग एक प्रेमी के घर में रखा था करीब 250-300 के लगभग प्रेमी थे सभी खुश थे। सभी के चेहरे प्रफुल्लित थे। गुरू का प्रेम सभी के हृदय में हिलोरें मार रहा था। कई दिनों बाद वाणी सुनकर सभी तृप्त हुए। आँखों में प्रेम के आंसू थे। सचमुच आज गुरू के ही अनन्त शुकराने हैं जो इतनों के प्यार के काबिल बनाया वरना हरेक एक गृहस्थ की चक्की में फंसकर अपना जीवन केवल दो चार की परवरिश में बिता देता है पर आज गुरू ने हजारों के प्यार का हकदार बनाया है। हर शहर में गुरू ने ही हम सबके लिए इतनी सुविधायें कर रखी हैं। हर जगह प्यार व आनन्द का खजाना भरपूर दिया है। सारी सृष्टि का मालिक बना दिया है। सचमुच इस प्रेम में व सांसारिक प्रेम में कितना अन्तर है। यहाँ कैसे गुरू ख्यालों से खाली कर देता है और वहाँ सारी जिन्दगी भी दे दो तो आखिर क्या है। अन्दर ही अन्दर तुलना करके देखनी है कि सच्चाई कहाँ है। गुरू के प्रेम में थोड़े बहुत संसार वालों के उलाहने जरूर खाने पड़ते हैं पर फिर जो जीवन सुन्दर बनती है वो माया में कभी भी नहीं बन सकती। गुरू का प्यार हमें मुक्ति दिलाता हैं। माया का प्यार बंधन में बांधता है। गुरू आवागमन से छुटकारा दिला कर हरेक के दिल का राजा बना देता है। सचमुच सारी दुनिया अंधी है जो जगत को सच मान कर वहाँ से सुख प्राप्ति की आशा करती है। पर यहाँ तो गुरू हर दुख से ऊँचा उठा देता है। नित्य सुख सच्चा सुख क्या है उसकी खबर देता है। तुम कोई चिन्ता ना करो। सब प्रभु के हुक्म पर छोड़ दो।

पत्र नम्बर 95

तुम लोगों की श्रद्धा विश्वास प्रेम देखकर अपार हर्ष होता है। ऐसी ही लगातार कोशिश रही तो एक दिन तुम लोग दूज के चन्द्रमा से पूर्णमासी का चाँद हो जाओगी। जिसका दिव्य प्रकाश चहुं ओर फैलेगा। सारे संसार को आज इस ज्ञान की आवश्यकता है केवल कोई सच्चाई से देने वाला चाहिए। ज्ञानी का जीवन शमा की तरह जलता है सभी को रोशनी देने के लिए। सूरज न बन पाये तो बन के दीपक जलता चल, फूल मिले या अंगारे सच की राह पर चलता चल। प्यार दिलों को देता जा और अश्कों को सावन देता जा। जीना उसका जीना है जो औरों को जीवन देता है। मधुबन खुशबू देता है। सागर सावन देता है। प्रकृति सारी हर समय देती ही रहती है। एक मनुष्य ही हैजो कि लेते लेते भी थकता नहीं। पर यहाँ पर गुरू हमें देना ही सिखाता है। हर मसय जो कुछ तेरे पास है सभी का है। सर्व से प्रेम करते चलो। तुमने पत्रम पुष्पम फलम तोयम का अर्थ पूछा है सोई पत्रम यानि पत्ता। सोई पत्रम पुष्पम फलम तोयम का अर्थ पूछा है सोई पत्रम यानि पत्ता। सोई यह शरीर की तुलना पत्र से की है। हमें अपने जीवन रूपी पत्र को भगवान को चढ़ाना है। पुष्प बाहर के फूल नहीं परन्तु हृदय रूपी पुष्प भगवान को देना है। फलम यानि हर बात का फल भगवान पर छोड़ना है। कर्म कर फल की चिन्ता मिटा दे। तोयम का अर्थ है। तो बाहर का पानी भगवान पर लोटे में लेकर चढ़ाते हैं। पर जो ईश्वर के प्रेम में आंखो से पानी निकालता है वही चढ़ाना है। संसार के लिए भी खूब रोये हो पर कभी प्रभु के लिए नहीं रोया कि तू नहीं मिला गोपियां कृष्ण के वियोग में खूब रोती थीं कि प्रभु कब मिलेंगे। यह सूक्ष्म अर्थ भी गुरू के बिना कोई भी न बताता। मत कोई भ्रम भूले संसार, गुरू बिन न कोई उतरस पार। प्रेम व उत्साह से इसी कार्य में लग जाओ। यही समय है यह कार्य का। प्रभु की नौकरी का फल बहुत ही मीठा मिलेगा। सब बोझ भगवान पर रखें। चिन्तायें सब वही दूर करेगा।

पत्र नम्बर 96

कितने प्रेम से तुम लोगों ने सेवा स्वीकार की उसका हम सब धन्यवाद कहते हैं। आप यदि प्यार से न सुनते तो हम किसे सुनाते। सच तो यही है कि अर्जुन जैसा भक्त ही कृष्ण के अन्दर से गीता जैसे रहस्यमय ग्रन्थ को निकाल सका वरन तो भगवान भी यही कहते हैं कि मुझ परमात्मा को ये मूढ़ लोग नहीं जानते क्योंकि मैं साधारण रूप में आता हूँ। इसलिए मुझे जानने के लिए दिव्य चक्षु चाहिए जो मैं केवल अपने श्रद्धायुक्त भक्त को ही देता हूँ ताकि वो मुझ अविनाशी को पहचान सके। सच्चा भक्त ही भगवान को ढूंढ लेता है और उसके चरणों में सिर रख कर अपना जीवन सफल बनाता है। प्रिय देखो कितनी न अजीब बात है कि जब मनुष्य क्रोध से भरा होता है तब उसका जूता दूसरे के सिर पर होता है और जब वह प्रेम से भरा हुआ होता है तो उसका मस्तक सन्तों के पैरों पर झुका होता है। झुकना ही उठने की निशानी है। तेरी हार भी नहीं है तेरी हार। तुम्हारी है भगवान की शरण में ही अपनी हार मानती है कि मेरा कुछ भी नहीं है। एक सूई में भी यदि आसक्ति है तो हम ब्रह्म से दूर हैं। संसार वाले परमात्मा को छोड़कर उसकी माया के पीछे जाते हैं। उनके पास हैं हीरे मोती और तेरे मन मन्दिर में ज्योति, कौन हुआ धनवान रे बन्दे, मत कर तू अभिमान। माया का अंधकार निराला, बाहर उजला भीतर काला इसको तू पहचान। बस यही त्रिगुणी माया ही सब मुसाफिरों को भ्रमाती है। पर तुम इस माया को जानो। सुजाग रहो। **Be carefull and you won't fall** यदि कहीं हम काई से फिसलते हैं तो दुबारा उस जगह से संभल कर चलते हैं कि कहीं फिर फिसल न जाएं। ऐसे ही जहां कल भूल

हुई आज नहीं होनी चाहिए। जो गलती को न दोहरायें उसे इन्सान कहते हैं उसे भगवान कहते हैं। तू अभूल आत्मा है तुझे कोई माया के बंधन में नहीं बांध सकता है। वह आती माया को **No** करने की **Power** रखता है। **He is a brave man who can say no.** जो बुजदिल है वो इस मैदान में आया नहीं करते। भगत भगवान के संकट से डर जाया नहीं करते। आज ज्ञान हम सबका कवच बन कर रक्षा करता है। सब ख्यालों से खाली होकर **Free** और **Fresh** होकर जीओ। कुछ भी सोचना तेरा धर्म नहीं है। तुम्हें निर्विचार जीवन बितानी है। सब कुछ प्रभु ने पहले ही सोच लिया है। तुम बच्चों की तरह निश्चिन्त रहा करो।

पत्र नम्बर 97

तुम्हारी मेहनत सफल हुई है और अंदर का सच्चा संकल्प भी पूरा होता ही है। शमा जलती है तो परवाने हटाये नहीं जाते। बस अब तो इस सच के प्रेमी तुम लोगों के पास अपने आप आते रहेंगे। सच्चे प्रेम की यही बढ़ाई है। निष्काम का फल ही है कि निष्काम कर्म तुम्हारे सामने आयेगा। हरेक को इस सच की सख्त जरूरत है। हरेक दुखी है क्योंकि जब सारी सृष्टि का एक राजा भी दुखी है तो तुम फिर कैसे सुखी हो सकते हो माया में। इसमें तो रद्दोबदल चलती रहेगी पर तू **Unchangeble** आत्मा है। हर हालत में शुकराना मानने के योग्य ही है। दुख सुख दोनों सम कर जानो और मान अपमान। शरीर के दुख भी आकर चले जायेंगे। ज्ञान श्रद्धा प्रेम से सुन रहे हैं बस अवश्य ही सफलता मिलेगी। एक **point** चली कि ज्ञान व धन में से अधिक महानता किसकी है। काफी बहस के बाद भगवान तक बात गई तो भगवान ने कहा जिसका भी सही समय पर सही उपयोग हो। यदि ज्ञान का दुरूपयोग किया तो अहंकारी बने तो व्यर्थ हो जाता है और धन का दुरूपयोग भी इन्सान से शैतान बना देता है। गुरू ने पहले ही देह से अलग कर दिया है पर फिर भी इसका सही समय पर सही इलाज हो जाये तो यही शरीर फिर निष्काम कार्य के लिए उपयोगी हो जायेगा। हरेक को यह ज्ञान ही शान्ति देता है। जो बिना उपाय वाली बात है उसके लिए दुखी होकर क्या मिलेगा। अपने आत्म संतोष में रहें। यही जीवन की उपयोगिता है। सियाणे मनुष्य जीते हुओं का या गए हुओं का शोक नहीं करते।

पत्र नम्बर 98

बस यही संतों के मेले हमें आगे बढ़ाते हैं। केवल प्रेम करना ही हमारा धर्म है। बाकी तो कुछ भी कर्म धर्म मुक्ति नहीं दिलायेंगे। तुम लगन व उत्साह से आगे बढ़ रही हो तो प्रभु की सहायता भी तुम्हें मिल रही है। यह जीवन जिस कार्य के लिए मिला है उसे पूरा कर लो तो बाकी कुछ भी सोचना नहीं पड़ेगा। सच्चाई के रास्ते पर बढ़ते चलो। प्रभु की मेहर तुम पर है ही। बस ये शरीर तो सब पानी है। इनके लिए शोक करने से भी कुछ प्राप्त नहीं होगा। दुनिया दुखों का घर है, सुख है तेरी गली में। आप पक्के इरादे से चलती रहो मन्जिल तो मिली ही पड़ी है। एकता व नम्रता से ही यह मार्ग मिलेगा।

पत्र नम्बर 99

तुम लोगों ने जीवन का कीमती समय प्रभु को दिया है। इसलिए ही तुम लोगों को आनंद की प्राप्ति भी हुई है। माया के सुख सभी अधूरे हैं। अंदर के आनंद को नहीं दे सकते हैं। परमात्मा अपने प्यारों को दुख, गरीबी व निन्दा रूपी तीन मिठाइयाँ देते हैं। हम लोग सोचते हैं कि जिनके पास माया अधिक है वे सुखी हैं या उन्नति उन्हीं की है परन्तु जितनी माया अधिक है उतनी परमात्मा से दूरी है। और फिर अमीर चाहे गरीब दो फुलके खाके जायेगा बाकी तो सारी माया ऐसे ही छूट जाती है। इस पृथ्वी पर समुद्र पर्यन्त धन भी किसी के पास हो परन्तु तो भी सबके त्याग के बिना शान्ति नहीं। ज्ञानी माया में भी त्याग भावना से रहता है। इस शरीर को भी प्रभु की अमानत समझता है। श्वांसो की पूंजी को खूब संभाल संभाल के खर्च करता है। जिस काम के लिए आया था वो काम पूरा करता है। शमा की तरह जलता है सभी को रोशनी देने के लिए। सूरज न बन पाये तो बन के दीपक जलता चल। शरीर की बीमारी, दुख, तकलीफों से भी इस आत्म निश्चय द्वारा ही छूट सकते हैं। यह शरीर धर्मशाला है। जब तक रहते हैं खूब सफाई वगैरह करते हैं परन्तु छोड़ देने के बाद पीछे मुड़कर भी नहीं देखते। ऐसे ही अपने निज घर में, आत्म स्वरूप में आने के बाद शरीर की क्या चिन्ता। मेरी चिन्ता हरि करे मुझे न चिन्ता कोय। हर हालत से पहले यह ज्ञान मिल जाता है तो फिर कोई हालत असर नहीं करती। दुख न संतापै, काल परहरै, दुश्मन टरै, भव न व्यापै। सर्व सुख होवत। सत्संग में प्रेम व प्रेमी दोनों बढ़ाओ।

पत्र नम्बर 100

आप जैसे प्रेमियों का प्रेम मिला तो हम भी भाग्यशाली हो गए। तेरे जैसे वीर ही कुछ कर दिखायेंगे। कुछ भी नहीं है मुश्किल अगर ठान लीजिये। बस एक सच्चा संकल्प है तो सारा कार्य हो जाता है। बड़े-बड़े ज्ञानियों के पास पैसा नहीं पर इरादे शक्ति थी कुछ कर दिखाने की तो बस माया भी उनके पीछे पीछे आ गई। रामतीर्थ विवेकानन्द के पास धन नहीं था पर दृढ़ संकल्प था देश को जगाने का। आये हैं तेरे दर पे तो कुछ करके उठेंगे, या तो हासिल हो जायेगा या तो मर के उठेंगे। ख्याल की शक्ति सबसे बड़ी है। उसी से ही सब कार्य हो सकते हैं। **Will Power** वाले को कोई भी माया में नहीं घसीट सकता। अपना लिहाज़, डर ही मोह में बांधने वाला है। बाकी तो कोई भी शक्ति संसार की बांधने वाली नहीं है। अपनी ही हथकड़ियों से लुहार बंध गया। फिर जब सोचा मैं ही बंधन का कारण हूँ और मैं ही बंधन खोल सकता हूँ। आजादी हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। फिर गुरू तो पूरी तरह से अन्दर बाहर से आजाद करता है। मन जीते जग जीत। मन की कमजोरी के ख्याल लाकर हमें जगत से बांधता है। और गुरू का प्रेम मोक्ष दिलाता है। सारी दुनिया रूठे लेकिन श्याम न रूठे। अपने असली स्वरूप से मरहूम न रहना। दुनिया की बातों में कभी तुम समय न खोना। जैसे जल बिन मछली को कुछ भी न भाये, सच्चे आशिक को प्रभु बिन चैन न आये। इश्क की आग में जलते रहना। प्रेम में डूबे रहना। बस यही जीवन का लक्ष्य है। भरिया उसका जाणिये जाका तोड़ चढ़े। बाकी प्रयत्न में सभी लगे हुए हैं। **Many are called but few are chosen.** सच की राह पर बढ़ते चलो।

पत्र नम्बर 101

सत्संग तो आप सभी का जोर शोर से चल ही रहा है। यह प्यार तो दिनोंदिन बढ़ता ही रहता है। लगन में अगन हो और बाहरी बंधनों से मुक्त होकर गुरू का संग करते रहें। उसी से हीय यह जीवन बनेगी। एक अपने ऊपर कृपा और सत्गुरू का संग हो तो मुक्ति अवश्य मिलती है। हर समय आत्म जागृति में ही रहो। नाम रूप व जगत की बातें बंद करो। समय कम है काम अधिक है। इसलिए संकोच भी खत्म करके गुरू से प्रीत बढ़ाओ। प्रभु मिलने का यही अवसर है। सारी सृष्टि अपने ही संकल्प के आधार पर है। अपना संकल्प लय करो तो सृष्टि की प्रलय हो जाती है। अपने ही संकल्प से मिर्ची बनाई तो संकल्प से लड्डू भी बना सकते हैं। कभी भी हिम्मत नहीं हारनी है। गिरना ही चढ़ने की निशानी है। गिरते हैं शाह-सवार मैदान-ए जंग में, वो क्या गिरेंगे जो चलते ही घुटनों के बल हैं। बस दिनों दिन उन्नति हो रही है। यह मन में पक्का विश्वास रखो। परमात्मा भी उन्हीं की मदद करता है जो अपनी मदद स्वयं करते हैं। ये भी गुजर जायेगा वो भी गुजर जायेगा। गुरू की कैद में रहने से ही माया की कैद से छूटते हैं।

पत्र नम्बर 102

आप सभी तो प्रेम के पक्के धागे में हम सब से बंध गए हैं और प्रेम का नशा ऐसा चढ़ा है जो कोई उतार नहीं सकता है। वैसे तो नशे अनेक हैं पर ये नशा कुछ और है। साकी जो पिलाये इक बार जिसे रहता है सदा खुमार उसे। बस यही खुमारी दिन रात चढ़ी रहे। इसी में जीवन बीत जाये। दिन दूना हो विरह वेदना पल भर चैन न आये। यह आग भड़के और सारे विकारों को, जगत को भस्म कर दे। जोश वाले से जो होगा वो होशियार से न होगा। **Intellect and wealthy man** को ज्ञान मुश्किल से लगता है। भोले भाव से मिलता है परमात्मा। बस सरलता, सिधाई व सच्चाई रख कर आगे बढ़ते चलो। गुरू की शरण में आ गए हैं तो अब अवश्य ही पार हो जायेंगे।

पत्र नम्बर 103

जिस जिस की अमानत जहाँ है वो पहुँच जाता है लेने के लिए। सचमुच गुरू के संग रहकर पहले हरेक को अपनी नींव पक्की करनी है। जैसे पेड़ पहले अपनी जड़े मजबूत करता है तभी दूसरों को छाया दे सकता है और निष्काम सेवा के समय भी ये ध्यान रहे कि इसमें मेरा ही उद्धार समाया हुआ है। अभी कहीं भी कुछ बनना नहीं है। तुम जीव बनो चाहो ब्रह्म बनो, बनना ही है तो है अज्ञान बड़ा। पर यहाँ तो गुरू हस्ती को ही मिटा देता है। इस रास्ते पर बहुत ही संभल कर चलना हैं। सदैव गुरू का हैंडिल बनकर की कार्य करें। कामिनी, कंचन, कीर्ति से सदा ही दूर रहें। ये सब रास्ते पर गिराने वाले हैं। गुरू तो हमें बार-बार सावधान ही करता रहता है। परन्तु यह मन सुख का कीड़ा है। जहाँ इसे सुख मिलता है वहीं भागता है। पर सबसे ऊँची प्रेम सगाई। कभी भी यह न भूलें कि आखिर यह आनन्द हमें मिला कहाँ से है। मछियारिन वाली **dress** सदैव याद रहे। मेरी जिन्दगी में क्या था तेरे मिलने से पहले।

पत्र नम्बर 104

वैसे तो जो कुछ हो रहा है सब शुभ है। अशुभ तो कुछ भी नहीं होता। परन्तु फिर भी नये साल में जो संकल्प जो लेगा उसके वे पूरे हो जाते हैं क्योंकि सत्संग भी एक कल्पवृक्ष ही है। संकल्प का अर्थ भी यही है जो कार्य कल्प में योनि युगों में होने वाला हो वो गुरू के संग से जल्द से जल्द हो जाये। सोने का संग करके व्यक्ति सुनार, लोहे का संग करके लोहार कहलाता है। फिर गुरू का संग करके भला गुरू रूप क्यों न हो जाये। आजकल यहाँ सत्संग हर रोज एक-एक **Point** को लेकर होता है। **Main** बात है उस **Point** पर हमारी रहणी बन जाये जैसे एक दिन चला - 1) गुरू का संग करके गुरू जैसे हुए या नहीं, 2) पूर्णतया निरिच्छा हो जायें - जो तेरी इच्छा वो मेरे लिए अच्छा, 3) **Love all alike** अपने अन्दर के भेदभाव पूरी तरह निकल जायें। आज की जा के सभी से प्रेम करके आयें। 4) मन बुद्धि पूरी तरह से अर्पण करके हर वचन सत सत करके उठायें। 5) सब कुछ गुरू को सौंपकर ज्ञान अज्ञान दोनों को बोझ समझ छोड़ दो। जैसे साबुन से मैल निकालने के बाद साबुन कपड़े में नहीं रहने देते ऐसे ही ज्ञान से अज्ञान निकालकर ज्ञान अज्ञान दोनों को छोड़ दो। 6) कामिनी, कंचन, कीर्ति से दूर रहें। प्रशंसा मीठा जहर है जो मनुष्य को गिराती है। 7) तुम माया के लिये रोयेगा तो माया न शायद न भी मिले पर प्रभु के लिए प्रेम में आंसू बहायेगा तो अवश्य मिलेगा। गुरू के लिए प्रेम बढ़े तो अच्छा ही है। इसी प्रेम में ही तो संसार की विस्मृति होती है। भाग्यशाली को ही यह प्रेम नसीब होता है।

पत्र नम्बर 105

ऐसा लगता ही नहीं कि आप हमसे दूर हैं क्योंकि दिल की बातें भी रोज होती हैं और प्रेम भरी मुलाकातें भी। जब मन से एक हैं तो बाहर की दूरी तो कुछ भी नहीं है। सचमुच गुरू के पास भी तुम्हारा **Interest** जमा होता रहता है। आकर के निकलवा लेना चाहिए। हरेक काम की जल्दी लगती है पर केवल ज्ञान की नहीं। अभी भी अपने से पूछो कि माया को अधिक समय देते हो या भगवान को। भगवान तो तेरे अंग संग है फिर माया की कैद किसलिए? यहाँ पर **Bombay** से एक प्रश्न आया है कि कोई पूछता है अगर तुम भगवान हो तो तुम टूटी उंगली जोड़ सकते हो या उंगली पर पहाड़ उठा सकते हो या मुर्दे को जिन्दा कर सकते हो? तो फिर अपने को भगवान कैसे जानते हो। उसका उत्तर लिखकर भेजना। जैसे माल की खरीददारी व बेचना दोनों जरूरी है वैसे ही गुरू से आकर पूरा ज्ञान लो। फिर जाकर सभी में बांटो तो अंदर से खुशी आयेगी। बादल सब एक दिन छंट जायेंगे और सच्चे सुख का सूर्य चमकने लगेगा। अपने को मैं ना कर लो। मैं मुआ तो खुदा हुआ। मैं कुछ हूँ तो सब दुख है मैं नहीं तो कुछ भी नहीं। आप सभी की मधुर याद सदैव आती है। खूब मेहनत करके आपने गुरू कृपा भी हासिल कर ली है। अब और क्या चाहिए।

पत्र नम्बर 106

हरेक के अन्दर सच के लिए प्यार व लगन देखकर बड़ी खुशी होती है। यह लगन में अगन हर वक्त पड़ती रहे। प्यार गुरू से दूज के चन्द्रमा की तरह बढ़ता ही रहे। ज्ञान को गहराई से समझना है। कभी अपने को अकेला न समझो। सदा बसत तुम साथ। दादा भगवान ने यह ज्ञान का दायरा ही ऐसा बना दिया है जिसमें दुख असर नहीं करते। हरेक से यह निष्काम प्यार करते चलें। तभी सभी का उद्धार होगा और संग में हमारा भी उद्धार हो जायेगा।

पत्र नम्बर 107

समय की पाबन्दी तो प्रेम में होती नहीं है। प्रेम को तो सब अधिकार है। जहाँ मीरा प्रेम में दीवानी हो जाती थी तो कौन सा समय देखकर भक्ति करती थी। यहाँ दम दम पे होती है पूजा, सिर उठाने की फुर्सत नहीं है। फिर इसी नियम से ही सारी माया कटती है। माया वाले भी यदि एक बार लौट जायेंगे तो समझ लेंगे कि ये अभी पूरी ही भक्ति के रंग में रंग गई है। अब इस दूजा रंग नहीं चढ़ेगा। वैसे ही गुरू माया से परहेज ही बताता है। जिसे सत्संग का शौक होगा वो तो सत्संग के समय पर ही आयेंगे। बाकी माया की बातों से तो मौन ही रखना है। मिले सन्त कुछ कहिये सुनिये, मिले असन्त मुष्ट हो रहिये। बस साधना यही सत्संग है। साधना के बिना सिद्धि हासिल न होगी। अब तो सत्संग व सच ही हमारा जीवन है, जिन्दगी सच में गुजरती है। बाकी सत्संग तो जोर शोर से चल रहा है। ये यहीं से दिखाई दे रहा है।

पत्र नम्बर 108

यह जीवन जिस कार्य के लिए मिला है वही कार्य इस तन से होना चाहिए। दुख दर्द चिन्तायें सभी कुछ अपने स्वरूप के अज्ञानता के कारण हैं। अपने को पहचान ले कि मैं कौन हूँ। **Self Enquiry** करें तो सभी कुछ **Solve** हो जायेगा। जब मैं आत्मा हूँ तो फिर मेरा कहाँ से आया। ना मैं किसी का ना कोई मेरा। बस थोड़े समय का नाटक ही तो है। उसमें हरेक **Part** पूरा करके चला जाता है। बाकी आत्मा का ना तो जन्म है ना मृत्यु फिर बिना उपाय वाली बात के लिए क्या शोक करें। हरेक बात का समय निश्चित है। बस हर समय शुकराने मानते चलें कि कैसा सच आपको मिला है। बस यही प्रेम जब आप सभी में बांटेगे तो खुशी आयेगी। गीता में भगवान ने कहा है कि तुम देवताओं को प्रसन्न करो और वे तुम्हें प्रसन्न करेंगे। तो ये देवता यही तो हैं। जिसके अन्दर में दुख व ख्याल भरे हुए हैं। उन सबसे उन्हें छुटकारा दिलाना है निष्काम प्रेम देकर। अपने लिए जो जीता है और खाता है वो चोर है। परमात्मा का तीन टाईम भोजन तो खाते हैं लेकिन देते क्या हैं? यही देखना है। अपने तन का मन का धन दूजों को जो दान वो सच्चा इन्सान इस घर का भगवान हैं। सचमुच यह प्रेम ही परमात्मा है। प्रेम से ही हरेक के दिल को जीत सकते हैं। कीड़ा वो जरा सा जो पत्थर में भी घर बना लेता है। इन्सान वो क्या जो ना किसी के दिल में घर करे। हरेक के दिल में घर बनायें सेवा द्वारा, प्रेम द्वारा। आपके अन्दर से प्रभु स्वयं बात करेंगे। आप अकेले नहीं हैं। सदा बसत हम साथ।

पत्र नम्बर 109

आप में कुछ भी करने की क्षमता है। सचमुच यह सच का रंग है ही ऐसा जो एक दूसरे को पूरा ही रंग देता है। फिर इसके ऊपर कोई भी माया का रंग नहीं चढ़ सकता है। जीवन के हर मोड़ पर जिसको सच का साथ है उसे फिर चिन्ता गमी से क्या मतलब। हर समय **Positive Thinking** रखो। अपने मन को कभी गिरने न दें। जिसके ऊपर तू स्वामी सो दुख कैसे पावे। सचमुच गुरू ही हमारी भीतर की गुत्थियों को सुलझाता है। हमें ऊँचा उठाता है। निस्वार्थ प्रेम देकर। बाकी तो सारी दुनिया मोह में गिराती है। गुरू इस मोह की दलदल से निकालता है। आज सत्संग में **Point** चली कि सभी अपने अज्ञान को ढक कर चलते हैं ज्ञान तो हरेक सुन रहा है पर भीतर मरे हुए अज्ञान को कोई नहीं निकालता। पहले से ही बर्तन में गंदगी पड़ी होगी तो अच्छी चीज भी उसके संग में गंदी हो जायेगी। इसलिए अन्तकरण की शुद्धि बहुत जरूरी है। मन अपने दी करो सफाई, फिर देवेगा प्रीतम दिखाई। पाँच विकारों से अपने को बचाना है। अपने मन इन्द्रियों पर संयम भी जरूरी है। जीवन के रथ पर बिठा दो अपने प्रभु को। वो ही कुशल सारथी है जो भवसागर से पार उतरेगा। मन को सारथी न बनाओ। वो तो गड्ढे में डालेगा। आगे बढ़ा कदम। हर समय अपना लक्ष्य ही सामने रहे। गुरू से प्रीत दिनों दिन दूज के चन्द्र की तरह बढ़ती रहे। निष्काम कर्म का दायरा जारी रहे। आपके मुख से स्वयं परमात्मा ही बात करेंगे।

पत्र नम्बर 110

ऐसी प्रीति तो किसी भाग्यशाली को ही लगती है और यह प्रीत ही परमात्मा से मिला देती है। संसार के लिए तो हरेक बहुत रोया पर भगवान के लिए कोई विरला ही आंसू बहाता है। अंसुअन जल सींच सींच प्रेम बेल बोई, मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई। मीरा ने तो यही सुनाया सभी को और उसी में ही उसे अनमोल रत्न धन भी मिल गया। ऐसा निश्छल प्रेम ही अन्तकरण की शुद्धि करता है। फिर जहाँ चाह वहाँ राह भी अवश्य ही मिल जायेगी। **When pains are highest the God is nearest.** मन मन्दिर में बसे भगवान तो कोई निकाल भी नहीं सकता है। शरीर कार्य में है तो मन मधुसूदन में है। फिर तो कोई भी दुख असर नहीं करते। दुखों की बारिश तो बरसती है पर ज्ञान का छाता तुम्हारे पास है तो कोई भी हालत असर नहीं करेगी। सब कुछ तो गुजर ही जाता है। सब **Passing show** है। दृष्टा बनो जगत में पर कुछ न मुँह से कहना। साक्षी भाव में ही आनन्द है। कुछ प्रेम में ऐसा दिल डूबा, अपनी हालत खुद ही समझूँ लेकिन तुमको समझा न सकूँ तुम पास रहो हरदम इतने फिर भी क्यों तुमको पा न सकूँ। यह प्रेमी पागल की अवस्था होती है। वह एक मिनट को भी अपने प्रभु को नहीं भूल पाता है। फिर मीरा को तो सभी बावरी कहते थे। सभी अथक मेहनत में लगे हुए हैं।

पत्र नम्बर 111

सच पूछो तो प्रभु ते भूलियां तो व्यापन सभेई रोग। यानि जब अपने को प्रभु यानि आत्मा नहीं जानते तभी दुखी असर करते हैं। बाकी जब मैं देह हूँ नहीं तो दुख कैसा। प्रभु के सिमरन दुख न संतापे। यानि अपने को जाना मैं कौन हूँ। बाकी शरीर के कर्म तो शरीर हीजाने। अपने को देह से अलग करो तो सभी दुखों से छुटकारा हो जायेगा। काले बादलों से भी तो पानी स्वच्छ ही मिलता है। ऐसे ही जीवन के भी दुखों से अनुभव स्वच्छ आगे बढ़ाने वाला ही मिलता है। ईश्वर को मानना अलग बात है परन्तु स्वयं को वो सत्य रूप जानना यह अलग बात है। जब अपने को आत्मा जाना तो तू पहले से ही मुक्त स्वरूप है। मुक्ति कहीं बाहर से हासिल नहीं करनी है। आज ही देहरहित हो जाओ। कर्म करत होय निःकर्मी। निष्काम भाव से सब कर्म होते रहें। बाकी मैं तो वैसे भी निर्लेप न्यारा हूँ। मैंने कभी कोई कर्म किया ही नहीं है। वैसे करने वाला वही है। उसी की शक्ति से तो सब शरीर चल रहे हैं। वही पल पल में सभी का मददगार है। उसकी मदद के सिवाय तो पत्ता भी नहीं हिलता। बाकी जैसी चाह है छूटने की तो वो भी निराकार परमात्मा कर देगा। चाह वाले को राह मिल जाती है। भगवान से मिलने की इच्छा नहीं पर स्वयं को जानो तो वो मैं हूँ। ओउम्, सोहम, शिवोहम, अहम् ब्रह्म। सभी का यही अर्थ है कि वो मैं हूँ। **Know thyself and you know God. God realization** नहीं परन्तु **Self realization** की जरूरत है।

पत्र नम्बर 112

बिना देखे भी आपने इतना विश्वास रखा है ये आपकी बढ़ाई है। मुझे पहचानने वाला मुझसे भी बड़ा है। जानत तुमहीं तुम ही होई जाई। गुरू हमें शब्दों के द्वारा नहीं परन्तु अपने आदर्श से सिखाता है। गुरू की देह का दर्शन कोई सच्चा दर्शन नहीं है पर उसका आदर्श ही हमारा आदर्श हो जाये। वैसी हमारी जीवन बन जायें। गुरू ही रह जाये मैं खो जाऊँ। न मैं तन ही रहा न मैं मन ही रहा, सत्गुरू मिलने से झगड़ा खत्म हो गया। देहअध्यास ही झगड़ों की जड़ है। ज्ञान अंजन गुरू दिया अज्ञान अंधेर विनाश। गुरू ही हमारे मन में यह ज्ञान का दीपक जला कर हमेशा के लिए अमर अजर अवनाशी बना देता है। इस इस राह पर बढ़े हो तो बढ़ते ही चलो। इस प्रीति को अन्त तक निभाना है। जिसने गुरू की शरण ले ली उसे यह माया व मन नहीं सता सकते। एक ख्याल भी यदि मन में रह जाता है तो हमें मण भर भारी बना देता है। फिर एक एक करके और भी ख्याल आते ही रहते हैं। जैसे बड़े बाट के ऊपर और सारे बाट रखे जाते हैं ऐसे ही ख्याल के ऊपर और ख्याल आते हैं और तुम्हें भारी कर जाते हैं। पर गुरू कहता है मन मुझे दे दो और तुम हल्के हो जाओ। मन बेचे सत्गुरू के पास, तिस सेवक के कारज रास। गुरू रूपी दर्पण में अपना स्वरूप देखो। हरि दर्शन की आरसी, सत्गुरू की देह, लखना चाहे अलख को उसी में लख ले। गुरू ब्रह्मा, गुरू विष्णु, गुरू देवो महेश्वरः, गुरू साक्षात परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः। हमारा अवतार तो आज का गुरू ही है जो हमें माया की दलदल से निकाल कर अपने निजस्वरूप का पता देता है।

पत्र नम्बर 113

गुरू सदैव हरेक को इस देह से ऊँचा ही उठाता है। जड़ चेतन की गांठ खोल देता है और अन्दर अपने स्वरूप में स्थित करा देता है। आत्माकार ही सुख दुख मान अपमान में सम रह सकता है। आज हर जगह से अनुभव मिल रहा है कि सगल दृष्टि का राजा दुखिया पर सो सुखिया जिस नाम आधारा। फिर जो चाहे सभी ओर से दुख इस देह को भी घेरे हुए हों तो भी उसे असर नहीं होता। गुरू हम सबका बोझ उठा के बैठा है। सोना सुनार को दे दिया उसके बाद वह जरूर ही उसे गहना बना देता है। **Egoless, Thoughtless** गुरू बना देता है। अपनी न चलाओ न सोचो। नजर गुरू की जिस पर हो जाये, बन्दे से वो तो खुदा हो जाये। हर हालत गुजर ही जायेगी। सदैव मुस्कुराते रहने से ही कोई भी दुख दर्द वापिस चला जाता है। तू थोड़ा नहीं पर घोड़ेसवार हैं। पहले से ही सारे विकारों से गुरू ने दूर कर दिया है। जीवन मुक्त ही विदेह मुक्त है। मर के जीयो जगत में। **Die before you die.** गुरू से जिसने जीते जी की मौत खरीद की उसे कोई मौत मार नहीं सकती। क्या मारेगी मौत उसे जिसने खुद को मारा है। शरीर लीला खेल रहा है तू तो उसे भी जानने वाला है।

पत्र नम्बर 114

सत्य के लिए लगन जिसे भी लग जाये उसे फिर मंजिल मिलने से कोई देरी नहीं है। माया व विषयों का सुख बूंद के समान है और ब्रह्मानन्द सागर के समान। वे सभी क्षणिक हैं और यह है **permanent bliss** जो कभी न खत्म होने वाला अक्षय आनन्द। इसी आनन्द के लिए ऋषि मुनि भी तरसते हैं। अपनी प्रसन्नता के लिए किसी की भी ओर न निहारना ही मुक्ति है। दोष दृष्टि रहित हो जायें तो सभी से प्रेम हो जायेगा। तमोगुणी भक्ति है एक व्यक्ति में भगवान देखना। सतोगुणी है सर्व में भगवान जानना और रजोगुणी भक्ति हैं कहीं कहीं भगवान देखना। वैराग्य का अर्थ है समस्त सृष्टि के पदार्थों को ईश्वर भाव से देखना। मन की हलचल तभी तक है जब तक मन में कोई चाहना है। जिस जीव को चाह नहीं सो शाहों का शाह। गुरू की वाणी आवाज़ आसमानी। किसी भी हालत में मन में विक्षेप न लाओ। प्रेम भाव रखो क्योंकि प्रेम ही है परमात्मा।

पत्र नम्बर 115

सभी को जगाते जाओ। आत्म जागृति में ही रहो। अविद्या अज्ञान की नींद से जागो। मैं मेरे की सृष्टि में दुख है परन्तु आत्मा तो आनन्द रूप है। मैं पाँच कोष से दूर, साखी स्वरूप है मेरा। मैं आदि, मध्य, अन्त मेरा यही स्वरूप है। निराकार रूप मेरा, साकार सृष्टि। जीव व जगत मिथ्या है तो उसकी चिन्ता क्या करें। मेरी चिन्ता हरि करे मुझे न चिन्ता कोय। राग द्वेष ईर्ष्या द्वेत कुछ भी मन में न आये। हर समय अपने उद्धार की ही चिन्ता रहे। बाकी तो सभी अपने आप बनते रहेंगे। तुम लोगों ने श्रद्धा विश्वास से ही यह ज्ञान उठाया है। यही अपनी कृपा हर समय बनाये रखो। अन्त समय में भी वृत्ति मेरी कहीं न जाये। जो जीवन मुक्त है वो ही विदेह मुक्त है।

पत्र नम्बर 116

आपकी जीवन प्रभु को समर्पित है अब बाकी और क्या चाहिए। आज बात चली कि एक दीया घर में जलाकर रखते हैं, एक आरती में जलता है परन्तु फिर भी दोनों में अन्तर है। आरती के दीये का सम्मान है और उसके ऊपर से लोग हाथ फेरा के अपने मस्तिष्क पर रखते हैं कि काश हमारा जीवन भी इस दीये की तरह प्रभु के कार्य के लिए समर्पित हो जाये। सभी को हमारे से ऐसा प्रकाश मिले। घर के दीये से भी प्रकाश तो मिलता है किन्तु वह पूजनीय नहीं हो पाता। इसी प्रकार मनुष्य को माया में भी अपने को घिसना पड़ता है। सारा दिन काम भी करना पड़ता है। परन्तु वहां सेवा करते करते सभी मर जाते हैं परन्तु पूजनीय नहीं हो पाते हैं। बस सकाम व निष्काम में यही अन्तर है। मैं व मेरे लिए तो हरेक अपने को घिस रहा है और बदले में चिन्ताओं व दुखों के बोझ के अलावा उसे मिलता ही क्या है। सारी जिन्दगी ऐसे ही चली जाती है। मनुष्य जन्म लेते वक्त रोता है और शिकवा शिकायत करता हुआ बड़ा होता है और अंत में निराश होकर ही मर जाता है। पर गुरू के पास आने से शिकवे शिकायत बन्द होकर शुकरानों के गीत लब पर आ जाते हैं और अंत में भी जीते हुए संसार से जाता है मुँह ऊँचा करके। इसलिए ही सन्तो महात्माओं का मुख खुला हुआ रखते हैं। उनके अन्तिम दर्शनों के लिए लोगों की भीड़ इकट्ठी हो जाती है। हरेक प्रसन्न होता है उन्हें देखकर उनका जीवन लोक संग्रह के लिए है। सांसारिक, लोकारीत करते हुए मर जाता है। आज आप सभी का जीवन देने के लिए है। दीये का अर्थ ही है दीये जा। अपना प्रकाश औरों को देकर सुखी हो जा।

पत्र नम्बर 117

भगवान भी खुश होते हैं उससे जो अपना ज्ञान अपने प्यारे भक्तों में जाकर बांटते हैं। यह निष्काम बीज हरेक के हृदय में पनप कर सभी का जीवन संवार देता है। किनका इक जिस जीव बसावै ताकी महिमा गनी न जावे। गुरू के प्रेम में ही हस्ती व अहंकार गुम होता है। फिर तो केवल गुरू ही गुरू रह जाता है। बाकी मैं गुम हो जाता हूँ। सो क्यों विसरे जो विख ते काढ़े जन्म जन्म का टूटा गांठे। गुरू ही हमारा टूटा रिश्ता जोड़ता है। इसलिए कहा राम तजूं गुरू को न विसारूँ? गुरू के सम हरि को न निहारूँ। हरि ने पाँच चोर दिया साथा, गुरू ने लई छुड़ाय उनाथां। गुरू ही गोविन्द से मिलवाने वाला है। हमें हर इच्छा वासना से ऊँचा उठाता है। लोक वासना, शास्त्र वासना, देहवासना ये तीनों प्रकार की वासनायें हैं। ज्ञानी को प्रेम सीखना पड़ता है परन्तु प्रेमी को ज्ञान स्वतः आ जाता है। उसे कोई साधन यत्न करना नहीं पड़ता है। प्रेम सहज समाधि है। जिस जिस से तेरा प्रेम हुआ उससे तुम्हारी मुक्ति हो गई। आप गंवाइये तां शहु पाइंये। यह प्रेम मंजिल मिटने से ही मिलती है।

पत्र नम्बर 118

दृढ़ इरादे वाले की ही जीत है। मन को आत्मा की राह दिखा दे वरना मन नहीं मानेगा। यही मन पहले माया में फंसाता था तो अंधला नीच जात परदेसी कहलाता था। फिर मन से ही मन को मनाया तो यही मन ज्योति स्वरूप हो गया। निष्काम प्रेम ही सच्चा प्रेम है। प्रेम बांटते चलो तो जीवन ही धन्य धन्य हो जायेगा। सच को जानो तो सच्चा कल्याण हो जाता है। श्रद्धावान लभते ज्ञानम् अश्रद्धालु नास जान। **As the company so the colur.** धूल यदि पानी का संग करती है तो नीचे कीचड़ बनती है और जब ऊपर हवा का संग करती हो तो ऊँची उठती है। ब्रह्मज्ञानी गुरू के संग से ही हम आगे बढ़ेंगे। सत्संग जोर शोर से करते चलो। यह जन्म प्रभु के लेखे कर दो।

पत्र नम्बर 119

सभी पत्र आप सभी के लिए ही होते हैं। वाणी भी एक दूसरे से लेकर पढ़ लिया करो। सचमुच इस प्रेम में ही आनन्द है। यह जीवन मिला ही है प्रभु के लिए प्यार करने के लिए। जीवन में द्वेत और त्रिपुटी निकाल दो। दूजा भाव खत्म कर दो तो कोई भी दुख असर नहीं करेगा। तू व मैं मैं ही सारा दुख है पर हम न तुम तो दफ्तर ही गुम है। गुरू हमारे अन्दर से द्वेत के बीज को ही नाश कर देता है। त्रिपुटी भी खत्म हो जाती है। अद्वैत आत्मा में ही आनन्द है। द्वेत का धुंआ नहीं अद्वेत नहीं अद्वेत की आग, जला या जाये उसको तो बचे न उसकी राख। दूजा भाव न होय। सर्वत्र में ही मै हूँ तो ईर्ष्या द्वेष राग सभी कुछ समाप्त हो जायेगा। अपने ऊपर कृपा करना बहुत जरूरी है। अपनी कृपा जिस आप करे सो सेवक गुरू की मति ले। गुरू की मति तू ले तू इयाणे, भक्ति बिन बहु डूबे सयाणे। इस राह में होशियारी बहुत रूकावट है। भोले भाव मिले रघुराई। सरलता व नम्रता से ही हम किसी का दिल जीत सकते हैं। राम की रहणी व आदर्श से ही सब सीखेंगे। अन्दर ही अन्दर अपने को निर्वासनिक करते चलो। निर्वासनिक पुरूष की मुक्ति को प्राप्त होता है। सत्संग तो सब तरफ अच्छा ही हो रहा है। तुम्हारी मेहनत अवश्य रंग लाएगी।

पत्र नम्बर 120

सचमुच जो भी इस राह पर पड़ा है उसे भला फिर कैसा डर है। निश्चिन्त होकर आगे बढ़ते चलें। जहाँ इतना आनन्द मिला है। वहां और भी मिलता रहेगा। यही सच्चा जीवन है। देने से ही यह आनंद बढ़ता है। अभी तो आप सभी खूब तृप्त होकर गए हैं। अब केवल यही प्यार बांटते चलो। प्रेम का व्यापार ही सच्चा व्यापार है। हरेक के शुकराने मानते चलो। जो भी इस राह पर तुम्हारा मददगार होता हो। जीवन में मुस्कुराने की व शुकराने मानने की आदत डाल दें। आज भी विराट स्वरूप की बात चली कि तुमने देखा है? सर्व में भगवान का दीदार करते चलें। कोई बुरा नहीं है भले मन के वास्ते । इस मन से मिल जाते हैं प्रियतम कभी कभी। हरेक के लिए अच्छी भावना रखते चलो। भावनाओं का भी असर अगलों पर होता है। मन अपने से बुरा मिटाना, पेखे सगल सृष्टि साजना। कुछ भी सोचना तेरा धर्म नहीं है। **Thinking is not your real nature. Thinking** तुम्हें **un-natural** बनाती है। कल का नाम है तेरा काल। **Best is Today.** तेरे सोचने से ही कुछ भी नहीं।

पत्र नम्बर 121

पत्र तुम लोगों का कई दिनों से आया हुआ है और कई दिनों से तुम लोगों को भी लिखने की सोच रहे थे। मगर न मालूम क्यों देर होती चली गई। खैर देर हुआ दुरूस्त हुआ। जो कुछ हुआ उसमें भलाई ही भलाई है। सबसे ऊँची प्रेम सगाई। जो प्रेम गुरू सिखाता है तभी हम सभी जीवन का जीवन महकता है। सच्ची खुशी आती है। तुम लोग भी यही खुशियाँ बांटते चलो। अन्दर से दृढ़ वैराग्य और आत्मा का पूर्ण निश्चय। आत्मा के निश्चय से ही तुम मुक्ति पा सकते हो। बाकी किसी साधन से नहीं। साधन करे है जब तलक नहीं ब्रह्म जाना जाये है, साधनरहित है ब्रह्म तो साधनरहित ही पाये है। राजा जनक के तीन प्रकार के कर्म त्याग किये काथिक, वाचिक और मानसिक। पर गुरू कहता है ये सभी कर्म अद्वेत आत्मा के निश्चय में विक्षेपता पैदा करने वाले हैं। इसलिए इन तीनों का त्याग कहा गया है। ज्ञानी तो कर्मतीत हो जाता है क्योंकि कर्म करने से हम कर्म के बंधन से नहीं छूट सकते हैं। मैं आत्मा हूँ। सर्वत्र आत्मा है। यही निश्चय मुक्ति दाता है। बाकी सब जग चलनहार, किस नाल कीजै दोस्ती।

पत्र नम्बर 122

कितनी भी मुश्किलातें हो तो भी पत्र लिखने की सुस्ती नहीं करनी चाहिए। पत्र भी आधी मुलाकात है। जिसमें हृदय का पूरा पूरा हाल लिखा जाता है। जब अंदर से कचरा निकलता है तभी तो अमृत उसमें पड़ सकता है। गुरू के द्वारे तेरा आना ही बहुत है बोल की न बोल पछताना ही बहुत है। सच्चा पश्चाताप **life** का एक बार होता है कि मैंने इतनी उम्र माया की सेवा में व्यर्थ गंवा दिये तो बाकी का बचा हुआ जीवन हम नहीं खो सकते। यही प्रतिज्ञा करें कि अब लौं नसानी अब न नसैहों। जीवन का प्रत्येक क्षण प्रभु की स्मृति में हो। उसके कार्य में ही बीते। और कारज तेरे किते न काम, मिल साथ संगत भज केवल नाम। साध संगत में ही पूरी शक्ति है। माया में रहने से धीरे धीरे आत्मिक शक्ति कम होती है। **Will power** घट जाता है पर सत्संग से बढ़ता रहता है। मकान की चिन्ता भी तुम लोग न करो। भगवान को जिस दिन जहाँ पांव रखवाना होगा वहाँ रखवायेगा। तुम जीवन का रथ प्रभु को सौंपकर निश्चिन्त हो जाओ। वो ही तेरी नैया लगायेगा पार। हिम्मते मर्दां तो मददे खुदा। तेरा जैसा अन्दर का संकल्प होगा वैसा ही मार्ग तुम्हें मिलेगा। यह ज्ञान तो एकदम सरल है। केवल निश्चयात्मक बुद्धि हो जाये। संशयात्मक बुद्धि विनश्यति। यानि कभी देह कभी आत्मा न बनो परन्तु पूर्ण निष्ठा हो कि मैं ब्रह्म हूँ। **I am not this body but I am that.**

पत्र नम्बर 123

खूब प्रेम की मस्ती चढ़ी हुई है। सचमुच जैसी प्रीत हराम में वैसी हरि से होय, चला जाये बैकुण्ठ में तो पल्ला न पकड़े कोय। यही तड़फ लगन ही परमात्मा तक पहुँचाती है। प्रेम ही है परमात्मा। प्रेम बिना कोई पंथ न दूजा, प्रेम ही इबादत प्रेम ही पूजा। प्रेम इतना बढ़े कि प्रेमी बिना जी न सकें। सचमुच अब तो एक ही सच की नौकरी लें लग जायें। हरेक माया के व्यवहार धीरे धीरे घटाने हैं न कि बढ़ाने हैं। माया बढ़ानी सरल है। इसका दायरा घटाना बड़ा कठिन है। इसलिए ही गुरू पहले ही सावधान करता है कि इस माया के झंझटों से दूर ही रहो।

पत्र नम्बर 124

प्रभु की कृपा से अब तुम्हारे सामने भी यह निष्काम कार्य आया है। सच है संकल्प का बीज अवश्य फलीभूत होता है। संकल्प में ही सृष्टि है; जैसा तुम सोचते हैं, कहते हैं वैसी ही तुम्हारी जीवन बननी है। निष्कामी के सामने ही निष्काम कर्म भी आता है। भगवान ने कहा जिन्हें विषयों की चाह है उन्हें मैं उस ओर ही धकेलता हूँ और जिसे सच की चाह है उसे सच प्राप्त हो जाता है। तुम्हारा काम है सर्व को निष्काम प्रेम देना और यह प्रेम भी कोई **action** नहीं है, दिल की हालत है। **Love all alike.** कम ज्यादा प्यार नहीं होना चाहिए। भक्ति की तीन अवस्थायें हैं (1) मैं तेरा हूँ (2) तू मेरा है (3) तू मैं एक रूप हूँ। तुम्हारी इनमें कौन सी स्थिति है लिखकर भेजना। ज्ञानी की दृष्टि में कोई स्त्री पुरूष नहीं है परन्तु सच्चे जिज्ञासु को ही यह ज्ञान लगता है। ज्ञानी तो सबको आत्म रूप करके ही देखता है। सच की ही जीत होती है। सत्यमेव जयते। सदैव अपने में आत्म विश्वास रखो कि मैं कौन हूँ तो सामने वाला भी ब्रह्म ही है। निष्काम भावना से सभी को यह ज्ञान देते चलो। निष्काम का अर्थ है इच्छा व अभिमान के सिवाय जैसे फूल अपनी सुगन्ध देता है वापसी की इच्छा नहीं रखता। तुम ऐसे ही हो जाओ। अपने तन का, मन का, धन का दूजों को देगा दान वो ही सच्चा इन्सान, अरे इस धरती का भगवान है।

पत्र नम्बर 125

अपनी कृपा अपने ऊपर की है तो प्रभु की अनुकम्पा व गुरू की पात्र भी हो गई हो। सचमुच परमात्मा भी उन्हीं की मदद करता है जो आप अपनी मदद करते हैं। आज सत्संग में बात चली कि भगवान अपने प्यारों के आगे इतनी रूकावटें क्यों भेजता है। हमने कहा **Parliament** में **Opposite party** से ही बल मिलता है और परीक्षा न हो तो फिर **class** आगे कैसे मिले। दुख दारू सुख रोग भया। सच्चा भक्त तो भगवान से सुख नहीं मांगता क्योंकि उसे पता है दुख दारू है। और फिर सुख भी जितने प्रारब्ध में हैं उतने ही मिलेंगे। कभी भी उदास न हों कितनी दीवारें आती हैं जो कोई सच की राह पर चलता है, चाहे कोई उसे गिरा भी दे तो गिर कर भी संभल जाता है। चाहे दुनिया उसे कुछ न समझे तो भी वो लाखों में एक होता है। आज मीरा या **Christ** चमके तो इन्हीं दुखों के कारण ही तो। जब उन्होंने उसे अमृत समझकर ग्रहण किया। सन्त अपनी गोदड़ी में बिच्छू रखता था कि ये काटते रहेंगे तो प्रभु का सिमरण होता रहेगा। ये बिच्छू ये दुख ही तो है। परन्तु यहाँ ज्ञान में तो गुरू हर दुख से पहले ही हर हालत के लिए पक्का कर देता है। सत्संग में आने पर दुखों का असर भी नहीं होता क्योंकि हर दुख सुख सब अपने ख्यालों से ही है। तुम्हारा ख्याल दुखी न करे तो भगवान को भी ताकत नहीं है दुखी करने की। **Troubles won't come if you invite them not.** जो हर समय सत्य में रहता है उसे तो दुख छू भी नहीं सकते। सुखों में ही ज्ञान पक्का कर लें तो दुख काहे को होय।

पत्र नम्बर 126

तुम सबसे प्यार करना चाहते हैं तो एक के मोह में न फंसना। मेरा एक भी नहीं है। मैं ही तो हूँ। **Non-possession** हो जाओ जिस आनंद को हम ढूंढते हैं वो हमारे अंदर ही है। पर तुम उसको बाहर ढूंढता है ये तेरी भूल है। **You must change your attitude.** जगत को मिथ्या और ब्रह्म को सच समझना है। हरेक चीज ब्रह्म है ऐसा ही समझो। **You have come for self realization. 10** नम्बर का दाहिरी नहीं बनो। अपना तमाशा देखने को तुम आया है। जब तू अपने को देह न मानेगा तो क्राइस्ट की तरह सूली भी न लगेगी। संशय दूर होने के बाद **willing rennuciation** हो जायेगा। जैसे रोशनी से अंधेरा गायब। सेठ नौकर को जवाब देगा तो रोना पड़ेगा। समर्थ खुशी से ख्वाब करता है और असमर्थ से भोग छूट जाते हैं। तू अपनी देह भुलायेगा तो भगवान हो जायेगा नहीं तो तू अंधा ही रहेगा। ज्ञानी अन्दर से सब अभी छोड़ के बैठा है। गाय है तो दूध पी और गयी तो गोबर उठाने से छूटा। समर्थ अंदर से ही सबसे मोकलाणी करके बैठा है। तुम नहीं मारेगा तो वो तुमको मार के जायेगा। पहले से ही विकारों से छूटो। पहले से ही मुक्त होकर बैठो। मैं मेरा नहीं है। अचानक शरीर छूटे बीमारी आये कोई चला जाये तो तू दुखी होगा। अगर कभी जवाव नहीं दिया तो मन को भी जवाब दो कि तू मायावी है जड़ है मैं ब्रह्मकार वृत्ति वाला चेतन हूँ। मैं अहंकार को जवाब दो। तुमने बाहर से जो सुख लिया होगा वो हट जायेगा तो तू दुखी होगा। तुमने भगवान् से जो सुख लिया होगा वो हट जायेगा तो तू दुखी होगा। तुमने भगवान से विश्वास निकाल के देह की नौकरी पर आधार रखा। आज शरीर छूट जावे तो बीमार होये तो शरीर को प्रारब्ध पर छोड़

दो। मुझे आत्मा का सुख है न कि शरीर, पैसा संबंधी के आधार पर हूँ। शरीर धारण ही भगवान ने किया है तो इसकी चिंता भगवान आपे ही करेगा। तेरे सोच से उद्यम से कुछ भी बना है? दो रोटला आपे ही सबको मिलेगा। करोड़पति तेरे से भी कम खाता है। खाना पीना और 6 फुट जमीन आपे ही मिलेगी। बाकी जासती पैसा किसके लिए चाहिए। जो कम में गुजारा करता है वो खुटेगा नहीं। ज्यादा इच्छाओं वाला ही खुटता है। पैसे के सिवाय भी मैं रह सकता हूँ। योगक्षेम सब का भगवान ने उठाया है। इन्द्रियों की, मन की, नौकरी की, संबंधियों की गुलामी से छूट जायेगा। ज्ञाने से तुम किसी का खायेगा तो उसे डरेगा, उसके लिहाज में चलेगा। उसी भगवान का डर रखो। उसके प्यार व लिहाज में चलो। तुम्हारे घर में तुम्हारी प्रारब्ध उनको मिलती है या वो खिलाते हैं। **God has plan for you.** पहले बनी प्रारब्ध फिर बना शरीर, तुलसी ऐसा जान के मन ना बांधे धीर। भगवान आपे ही सबकी संभाल करता है। तुम पुरूषार्थ ज्ञान के लिए करो। मुझे किसी की गुलामी नहीं है क्योंकि इच्छा ही नहीं है। जब तक इच्छाएं है। तब तक **disappointment** है। आत्मा भूल जायेगी। कब मिलेगा सोचो तो। नहीं मिला तो भी दुखी, मिलेगा तो भी दुखी है। इच्छा को जड़ से उखाड़ दियो। भगवान जैसा भी चलाये। जो पहले दिया है वो भी कम नहीं है। बाकी की इच्छा ब्रह्मपद से गिराती है। आत्मा का लाभ भी सबसे बड़ा लाभ है। क्या चाहिए जो खुशी मिलेगी। जीव होगा तो इच्छा जरूर होगी। इच्छा का तू घोट गोला नहीं तो इच्छा घुमाती है गली गली। तुम दामाद ढूढने के लिए जगह जगह जाएंगे समय गंवाएंगे। क्या मांगू कुछ थिर नाहीं लोग तुम्हें कुत्ते के साथ खिलायेगा। नौकरी की इच्छा होगी तो आफिसर के लिहाज में खराब होगी तो तेरा मर्द बन के बैठेगा। एक दिन नौकरी देगा फिर हमेशा के लिए गुलाम कर देगा। तुम भीख मांगना पर

किसी के गुलाम न बनना। हर जगह सत्यानाशी होती है। अपनी **Safety** देखना कि कहां है लोभ, लालच वश फंसना नहीं है। लड़कियों का शरीर बहुत कीमती है। उसकी संभाल करनी है। ऐसे ही लड़कियों की देह कीमती है। कोई आधार छूटता है तो रोना पड़ता है। इसलिए निराधारों का आधार बनो। आत्मा का ही आध ार रखो तो किसी का गुलाम न बनेगा। **He is a brave man who can say no.** देहअध्यासी के संगत में न बैठो। ऐसी **company** में न बैठो जहां माया की बातें हो जुआरी के संग में एक दिन शादी करेगा। इतना **strong will power** रखो जो सब देख के डर जायें। कोई लड़का पैदा ही नहीं हुआ है जिसकी ओर मैं देखूं। लड़की का भाव ही अंदर से खलास हो जाये। तू पुरूष परमात्मा है। माया की कितनी बड़ी **offer** भी मिले तो भी **No** करो। आखिर मिला न जे रब और सब कुछ मिला तो क्या हुआ, दनिया में दिल का मतलब पूरा हुआ तो क्या हुआ। भगवान जैसा कोई लाभ नहीं है। इच्छा तो ब्रह्मपद से गिराएगी। राजा भी कहे मेरे से शादी करो। क्या तुम करेगा? अच्छा आदमी कोई नहीं है। 5 विकार सभी में हैं। कोई भी आदमी तुम पर जीत न पा सकेगा। एक इच्छा के कारण सारी उम्र की गुलामी सहनी पड़ेगी। समर्थ खुशी से पहले ही देह छोड़ के बैठा है तो खुशी खुशी देह त्याग कर देगा। काल ज्ञानी के पास आयेगा ही नहीं क्योंकि वो कालों का महाकाल है। वो मौत से ऊपर है अब तुम मौत से ऊपर उठ गये हैं। यहां छोटी-छोटी लड़कियां भी मौत से ऊपर हो गई है। कोई भी मुझे मार नहीं सकता तो आए हैं अमर हो गये हैं। तुम भी नहीं मरता है तो दूसरा कोई भी नहीं मरता। कर्म भक्ति वाला मरेगा। 84 लाख जूनि में आयेगा। जब तक ज्ञान नहीं लिया। ज्ञान से तू अपने को अमर आत्मा समझता है। भगवान के बाप को शक्ति नहीं है जो तुम्हें मारेगा। तेरे अंदर द्वेत की बात

पड़ी है। तुमने अद्वैत भी सुना नहीं है। द्वैत विवेक, विचार पहचानने के लिए मिला है। **God is with in you.** सदा बसत तुम साथ। हम यहां किसी लड़की से **test** लेने को पूछते हैं कि अकेले आये हैं? तो वो कहते हैं दादा हम कभी अकेले हैं क्या? जहां तहां भगवान है। भगवान के सिवा कुछ नहीं है। सत्य है भगवान। **Truth** है ही है। **Truth can not be achieved.** आत्मा प्रश्यन्ति आत्मा। हस्ती है हरि की। जो जाने मैं कुछ करता तब लग गर्भ जूणि में फिरता। अज्ञानी नहीं करे तो भी करे। जड़ भरत जड़ हो के रहा। उसको याद था कि एक मोह के कारण भरत धरी दो देह। तुम कहते हैं सत्कर्म तो करना चाहिए पर गुरू बोला कोट कर्म बंधन के मूल। तुम कहता है एक देवे दस पावे। आज 10 लाख मिला है तो भी सुख है? एक बेटा बीमार मिलेगा तो सारी उम्र उसकी चिन्ता है। साहूकार माया में अंधा है। माया अपने मालिक को खुश नहीं कर सकती है।

मैं आता हूँ तुम सबको आप समान बना के जाता हूँ। तुम एक-एक भगवान हैं कोई दूसरा बड़ा भगवान नहीं है। भगवान होना भी तुमको पसन्द नहीं है। तुम कंजूस है। **Don't play misers part.** पूरे गुरू का सुन उपदेश पारब्रह्म निकट कर देख कांचे गुरू ते मुक्त ना होय। सूर्य सारी दुनिया को रोशन कर देता है पर अंधे को नहीं। गुरू तो अंधे को भी **Light** देता है। तुम उदारचित बनो कंजूस नहीं। कैदी को सहूलियतें दो या कैद से निकाल के आओ तो क्या अच्छा है। गुरू तेरा आना जाना ही खत्म कर देता है। देश सेवा से मानव सेवा अधिक है। **Love not your country but your kind.** पहले तू अक्षर जानता होगा तभी भजन लिख सकेगा। ऐसे ही पहले अपने को जानेगा तो तू सर्व को जान सकेगा। सब पूछते हैं पहले आत्मा क्यों सुनाते हैं जो जब तक आत्मा को नहीं समझेगा तब तक कुछ नहीं

जान सकेगा। सब बांह वाला हाथ वाला भगवान ही है। चार भुजा के भजन में तू भूल जाता है। भगवान हर मनुष्य में और हर जगह है। **Be you as perfect as your father is in heavens. Christ said I am son of God but you deney God.** क्योंकि तू कहता है मैं मनुष्य का बेटा हूँ। तुम मन की सुनो नहीं। तुम तो अपना मालिक बना के बैठा है। **Money is useless. Money at the most can spoil a man.** अमेरिका सबसे अधिक अमीर मुल्क है पर तब भी अधिक से अधिक आत्महत्या करते हैं। तू मन को अपना गुरू बना के बैठा है तो तू दुखी होता है। मन को गधा बना के रख दियो नहीं तो मन को न आने दो। **No entry, no admission.** लगा दो मन को भगवान पाने के लिए। मन, बुद्धि, अहंकार काम में नहीं आयेगा। गुरू की बात मान लो। तेरा भाणा मीठा लागे। गुरू वाक्य सत्यम करके उठाओ। श्रद्धावान लभते ज्ञानम्। गुरू को कहो जो कुछ तू कहता है वो सच है। अर्जुन 2 घंटे में सीखा, राजा परीक्षित 7 दिन में मुक्त हुआ। तुम्हें कितने दिन लगेंगे। तुम यहां क्या लेने आता है। मेरे को क्यों बुलाता है तकलीफ देता है क्या चाहिए? तुम निश्चयात्मक बुद्धि रखो। तुम हम और ये सब आत्मा ही है। ये सब न मरने वाला आत्मा है। यह निश्चय अपने दिल में रखो। तुम्हारा गुरू भगवान भी हमें नहीं मार सकता। प्रभु के सिमरन गर्भ न बसे। जन्म में नहीं आयेगा इसलिए मरेगा नहीं। यहाँ तो मरता ही नहीं है तो जन्मेगा कैसे। निडर हो जाओ। तुम भी मरने वाला नहीं है। अभी भगवान के पास जगह ही नहीं है जो तुम्हें मारेगा। महात्मा गांधी ने अंग्रेजों को कहा कि अधिक से अधिक जेल में रखेगा तो कितने लोगों को तू जेल में रख सकता है? कोई खौफ खतरा नहीं रहेगा। भगवान का बाप भी तुम्हें खिलायेगा। सो साहिब चिन्ता करें जिस

उपाया जग। **Christ said knowest not than that God feeds the world** तुम चिंता नहीं करो। एक माई कहती है हम नहीं पकायेगा तो खायेगा कैसे? भगवान सब को खिलाने वाला है कोई मर्द बेटा चला जायेगा तो खायेगा कहा? सो साहिब चिंता करें जिस उपाया जग। **I am not this body as same day this will leave me because it is perishable.** ये **body** मिली है प्रारब्ध के अनुसार **due to at that time I merge into the ocean.** जैसे सागर में लहर समा सकती है ऐसे ही मैं समा जाता हूँ। हम सागर में मिल जाते हैं और मेरा शरीर मेरे को छोड़ जाता है। **because I am desireless and egoless** जैसा कि **Lord Krishna** ने कहा है **that is Nirvana Pad, that is Moksha. I am amar atma immortal** अविनाशी **all pervading** अद्वेत, निष्काम, निरिच्छा, जीवन मुक्त, सर्वत्र. **Self seer.** जहाँ तहाँ अपना आप देखता हूँ। **All in all, like witness.** दृष्टा तुम ऐसा है? **In the beginning was word the word transplanted into the world and lord myself is hidden in it.** पहले केवल नाम था मैं भी निराकार था। मैं एक से अनेक हो गया तो सारी दुनिया मेरे स्वरूप से भर गई है। पहले बच्चे पर नाम नहीं था। वो आत्मा ही था। फिर माता पिता ने उसके ऊपर नाम रखा। जिसने शरीर धारण किया है उस पर नाम रखा है। नाम के बाद तेरा सत्यनाश हो गया। वो तेरा मां बाप बन के बैठा सबको अज्ञान में डाल दिया। माता पिता सब अज्ञानी है मगर माता मदालसा जैसी लोरी नहीं दिया। **I am ashok atma.** मरने का डर या ख्याल नहीं करो। अमर अविनाशी तू भी मेरे जैसा

है या नहीं **Invisible** अनादि **all pervading** हम जहां तहां है अद्वैत है मेरे पास द्वेत नहीं रहता है। मेरे सिवाय कोई नहीं है। निराकार निष्काम मेरे को इच्छा, कामना, अहंकार नहीं है। तुम ही कहता है भगवान हमको खिलाता है। बाकी सच तेरे अंदर आपे ही आ जाता है। **Non possession** मेरे में **possessive mood** नहीं है। मैं जीवन मुक्त हूँ। ये शरीर मेरे को छोड़ जायेगा प्रारब्ध के अनुसार इसलिए मैं जीवन मुक्त हूँ।

दुख दारू सुख रोग भया। आंखा जीवां विसरे मर जावां। घड़ी ना मिलते तो कलयुग होता। तुम कैसे समय गंवाते हैं ये तेरे लिए शर्म की बात है। तुम राजा परीक्षित जैसे ज्ञान नहीं सुनते हैं कि जन्म मरण का डर निकल जाये। तेज धारा सदृश मेरे में वृत्ति रखे। आत्मज्ञानी किसी की भी सेवा कर सकता है। ज्ञानी भक्त, ज्ञान व भक्ति से अहंकार चला जायेगा। पूरा अज्ञान ज्ञान से नाश हो जाये। ज्ञानी स्वयंभव हो के सारी सृष्टि के उद्धार के लिए आता है। **Sweet will** से आता है ज्ञानी। जीते जी सबमें समाया हुआ है तो बाद में भी समाया पड़ा है। ज्ञानी है ही है। प्रगट होता है कब-कब किसके-किसके लिए। जब-जब धर्म की ग्लानि होती है तब मैं मिलता हूँ। सन्त ना होते जगत में तो जल मरता संसार। आम पकेगा तो गिरेगा। तुम्हें पहले क्यों नहीं मिला था। था तो कहीं पर प्रगट होता है भक्तों के सामने। जिसने अपने को आत्मा प्रगट किया वहाँ आ जाता है। मैं आत्मा सदा हूँ। जिसने याद किया उसके लिए प्रगट होकर दर्शन दे के मुक्त कर देता है। जिस-जिस ने पुकारा है सच्चे दिल और जान से उसके लिए ही आता है भगवान कभी-कभी। जिस ओर दीवार का झुकाव होगा उधर ही गिरेगी। ज्ञानी का लगाव कभी भी नहीं है। **God is truth reality.** जब हम तुम्हें आत्मा कहते हैं तो यह गारंटी का ज्ञान है। यह प्रत्यक्ष फल देने वाला है जो सुनेगा वो अमर हो जायेगा। मैं भगवान

हूँ ये याद रखना। सब आत्मा बनकर जाओ। बच्चे बालक छोटे बड़े सभी समझ जाते हैं कि मैं आत्मा हूँ। करंट की तरह तेरे से दूसरे को भी यह ज्ञान लग जाता है। अब तो हूँ मैं अमर पुण्य व पाप के बंधन में ज्ञानी नहीं फंसता। आत्म दृष्टि वाला किसी में नहीं फंसता। जैसे एक जज खूनी नहीं है जैसे अचानक आग में कोई गिर जाता है या दरिया में डूब जाता है तो वो आग या जल हिंसक नहीं कहलाते। खूनी के हाथ में बंदूक होवे तो भी वह दोषी है। कर्म का मर्म जीतता है। कर्म करने में क्या मुराद है। जज का काम ही है इन्साफ का। किसी को सजा देता है। किसी को माफी देताा है। सतोगुणी ज्ञान है कि एक ही आत्म सत्ता **Undivided** दिखाई देती है। जैसे करोड़ दीयों में एक ज्योति जारी और दूसरा है? जिस ज्ञान से मनुष्य जुदा-जुदा आत्मा को बेशुमार धार-धार करके जानता है। तमोगुणी ज्ञान तो अज्ञान ही है। **Know theyself and you know God.** तुम दादा भगवान को देखते हैं पर अपने को नहीं जानते हैं। हमको कोई भगवान कहते हैं। तो हम उसको लात लगाते हैं कि तू वो भगवान है। से सिमरै जिस आप सिमरावे। पहले तुम्हें ये निश्चय करना है कि तू भगवान है तू कोई न कोई कर्म करता है तो गिरता है। कृष्ण सबको कहता है मैं ही तो हूँ। मीराबाई जहाँ तहाँ भगवान को देखती थी पर अपने को भगवान नहीं जानती थी। कर्मकांडी अहंकारी है मरता है पर अकर्मी अकर्ता है वो मरने में नहीं आता सदैव है। हे अर्जुन प्रवृति मार्ग में जैसे राजा जनक और शुकदेव सनकादिक सन्यासी थे। राजा जनक भी प्रवृति में रहता था लेकिन कोई काम ऐसा नहीं करता था जिससे कर्म उसके खाते में आये। जिस परमात्मा से सारा जगत व्याप्त है जैसे बर्फ जल से व्यापक उसे पुरूषार्थ के द्वारा हासिल करते हैं। पहले है जल फिर बर्फ जम जाती है सब पानी ही है ऐसे ही सब वेद शास्त्र बोलते हैं कि सब परमात्मा से ही हुआ

है। निराकार से ये साकार सृष्टि हो गयी। **Whole world is filled with God.** भगवान जहां तहां है। सतोगुणी सर्व में एक आत्मा देखता है। रजोगुणी अलग-अलग आत्मा देखता है। तमोगुणी एक व्यक्ति में अटकना कि ये मेरा भगवान है। मीरा ने खुद को भगवान नहीं जाना। अपनी आत्मा से ही सामने वाले को भी भगवान देख सकता है। मैं कैसे आत्मा हूँ। **Know thyself and know God.** अपने को जाना कि मैं क्या हूँ। जैसे जीव ब्रह्म में कोई फर्क नहीं है। तो तेरा भ्रम है। प्रवृत्ति में निवृति मार्ग जिसने मन में केवल कहा कि मैं कर्ता हूँ, मैंने जगत छोड़ा है ये याद है तो पूरे का पूरा जगत में है। सारे दिन में ज्ञानी एक भी कर्म नहीं करता। ज्ञानी किसी में अटकता नहीं है। मैं कर्ता हूँ ये भाव है तो वो प्रवृत्त है और सब कर्म करते हुए भी ज्ञानी नहीं समझता कि मै। करता हूं तो वो अकर्ता है। ज्ञानी किसी को भी कर्ता नहीं देखता तो कर्मातीत अवस्था में है। वो सब को आत्मा में टिकाता है। मैनें ऐसा किया था वैसा किया। जीवभाव के भ्रम में ही कहता है मैनें किया। मशीन अहंकार नहीं करती केवल साक्षी है **(witness)** जज के सामने आपने ही दोष कबूल करते हैं। यहां भी तू आपे ही आकर बोलता है। तुम कहता है मैनें पाप किया था पुण्य किया तो प्रकृति सजा देती है, फल देती है। ज्ञानी कर्ता भाव में आता ही नहीं है। सत्कर्म का इनाम बदकर्म का फल नर्क मिलेगा। ज्ञानी हर वक्त अपनी आत्मा की मैं करता है। ज्ञानी स्वयंभाव है, कर्मों में बंधा नहीं आता है पर **Sweet will** से आता है। मैं भोक्ता नहीं करता नहीं ज्ञनी के अन्दर निश्चय है आत्मा का। मैं मरूंगा ही नहीं तो जन्मूंगा कैसे? पाप पुण्य का हिसाब अज्ञानी के लिए है। सर्व दुखों की निवृति परमानंद की प्रप्ति ही मुक्ति है। मैं पर धर्म में क्यों जाऊँ। सब धर्म मेरे में नहीं है। मैं आत्मा हूँ कहीं आता जाता नहीं हूँ ये निश्चय करना है।

पत्र नम्बर 127

जो अपने को आत्मा करके जानता है तो जहाँ तहाँ अपना आप देखेगा। न गुरू न शिष्य **See God everywhere** तो उसके अंदर विकार कैसे आयेगा। तुम किसको देह देखेगा तो अंदर विकार आ जायेगा। देह भूलेगी प्रेम से, सर्व की भलाई सोचता है तो देह भूल जाती है पर जो अपने में पड़ा है तो बीमारी भी याद आयेगी। पीवत प्रेम विसर गई काया। ये परमात्मा का नशा ऐसा है जो सभी के देह से नजर हट जायेगी और अपना आप रह जायेगा। दुख का मूल कारण ही है द्वेत। मन को आत्मा की राह दिखा दे वरना मन नहीं मानेगा। **once without second.** राग द्वेष होता ही है दूसरे से, ख्याल भी दूसरे का चलता है। जहाँ दो चूड़ी है वहां आवाज होगी ही। अंदर हलचल है क्योंकि दूसरे में भाव पड़ा है अखियूं सदा सजगण रे। तो सारा दिन हम क्या देखते हैं? गुण अवगुण देखेगा तो प्यार नफरत होगी। पर पहले तो अपने आप को दुखी करते हैं। भगवान खुद परेशानी की पोशाक पहनता है। जब क्रोधित होता है क्योंकि पहले तो अंगीठी की तरह खुद जलता है। भेद है मन में तो कुछ नहीं बन पायेगा। व्याभिचार करते हैं। जब भगवान के अलावा कुछ देखते हैं तो हर पल में कितनी भूल करता है पर ब्रह्मज्ञानी का पेखन ब्रह्म। वो **quality** देखता है कहाँ राजा कहाँ भिखारी तो शल हम उसको पहचान सके। एक संत ओउम्-ओउम् कर रहा था और कुत्ता भौंक रहा था तो एक आदमी ने चिढ़ाया कि तुम दोनों में क्या फर्क है तो संत ने कहा सच पूछो तो ये कुत्ता महान है हमे से क्योंकि उसका मालिक कौन सी **dress** पहनकर आयेगा तो भी उसको पहचानेगा पर हम मनुष्य ऐसे हैं जो भगवान ने इतने स्वांग पहने हैं तो नहीं पहचानते हैं। जो जीने की चाह रखता है तो उसको मरने का भी डर होगा। ये ही बंधन है जो शरीर में अटकाता है। जगत सत् है जो जीना

चाहेगा। सुख की इच्छा रखेगा। ये घर कैसे छोड़ूं मेरे बच्चे कैसे चलेंगे। हजार ख्याल अंदर चलेगा कि मैंने ये काम पूरा नहीं किया है पर ज्ञानी ने सब काम उतार दिये क्योंकि उसने **main** काम उतार दिया। पूरा सत्गुरू भेटिया तो पूरी हुई युक्त पीछे हसंदियां खेलदियां खावंदिया विच होय मुक्त। न बीमारी न मौत का डर। एक-एक पल आनन्द में गुजरता है। वजीर को सजा दी मौत की राजा ने पूछा तो वजीर ने कहा अभी तो दो घंटे पड़े हैं तो जिसको रमज है कैसे एक एक मिनट में मजा ले तो वह जीने लायक है। सुख शान्ति संतोष में जीता है पर अज्ञानी सारा दिन डरता है कि कहीं **accident** न हो जाए। कभी बीमारी न होवे मौत का डर तो कैसे जीते हैं? कमजोरी मौत है पर शक्तिशाली ही सच्चा जीता है। जो भगवान पर विश्वास रख के बैठा है। जहां मेरा है वहां डर है। न तुम किसी में फंसा न किसी को फंसाओ। ये तुम पाप करता है। जैसे विवेकानन्द को किसी ने कहा कि लिखकर दो मैं तुम्हारा हूँ तो उसने कहा **very sorry** कहाँ पर मन ही मन जले राधिका मोहन तो है सबका प्यारा। भगवान है आजाद पक्षी किसी को भी मेरा समझा यानी पिंजड़े में फंस गया। गुरू सबको **free** करता है कि किसी को देह करके न जानो न अटको पर टिको आत्मा में। दुख का कारण है द्वेत यानि मैं तुम जुदा पर देहअध्यास चला जाये। जगत प्रलय हो सिर्फ आत्मा बच जाये तो झगड़ा खत्म। मन है तो संसार है पर जहाँ तक जाती दृष्टि है। तो है ही आत्मा। **One without second** मैं वो एक हूँ जहाँ दूसरे का धुंआ है ही नहीं। जहां द्वेत है वहां एक दूसरे को जान नहीं सकता है।

पत्र नम्बर 128

कर्ण सूरज का पुत्र था उसे कोई जीत नहीं सकता था। कुन्ती को कुंवारेपन में हुआ था तो उसने उसे नदी में बहा दिया था। दासी ने पाला था तो दसी पुत्र हो गया। जब सूरज पुत्र याद करता था शाक्ति आती थी पर जब दासी पुत्र क्रहते थे तो उसकी शक्ति चली जाती थी। दासी पुत्र तुम भी माया में रहकर हो। गुरू को पता है **you are son of God** न कि **Son of man.** तेरे में भगवान जैसी ताकत है। सर्वशक्तिमान है, निरंजन है तो शक्ति आ जाती है। केवल बोलना नहीं है पर उसके लिए साफ पवित्र होना है। ऐसा नहीं कि तुम भूल करते चलो और **Son of God** बोलते चलो। अपमान भाव, दुख सुख नहीं लगना चाहिए। भगवान का बच्च होकर दिखाओ। अच्छे बच्चे को सारी बाप की मिल्कियत मिलती है खराब बच्चे के लिए बाप अखबार में लिख देता है कि ये मेरा बच्चा नहीं है। तुम्हें भी गुरू का खजाना तब मिलेगा जब गुरू की आज्ञा में रहेगा। जीवभाव में सारी दुनिया दुखी है। जब तक कुछ भी चाहिए तो तू सृष्टि का मालिक नहीं है। भिखारी राजा नहीं हो सकता। इच्छा वाला मुक्त नहीं है। मुक्ति के लिए इच्छा, अहंकार छोड़ना है। पछाड़ी तक इच्छा पर्दा है भगवान व तेरे बीच में। तुम कुछ भी न करो फिर शरीर का ड्रामा आपे ही चलता है। जिसने अपने को जाना उसने शुभ व अशुभ इच्छा छोड़ दी है। इच्छा गिराती है ब्रह्मपद से जीव को। इच्छा मात्रम् अविद्या। इच्छा व अहंकार के **deep** में जाओ। अति सूक्ष्म अहंकार को देखते चलो। तुमने ही अपने संसार को, दुख को **creat** किया है। तुम पुरूष है तो प्रकृति दासी है। तू जीव है तो जगत है जैसे रस्सी में सांप। तुमको भ्रम पड़ गया है कि ये जगत है। सच समझकर धड़कन बढ़ गयी है। मनोमय संसार तुम्हें दुखी करता है। बाहर जगत साफ आइने जैसे हैं जहां केवल तू ही त सच है। मैं तू तेरा मेरा दोस्त दुश्मन तूने ही बनाया है। तेरे संकल्प में पूरा जगत है। **To see God is to be God.** जब तुम भगवान देखेगा तो वो भी तुम्हें भगवान देखेगा। यहाँ

Double त्याग है। जगत देखा या जगदीश। जीव देखा या ईश। श्रवण, मनन, निध्यासन भी अकेले से नहीं होगा। सब गुरू के साथ है। गुरू का ज्ञान सुना सुन के माना तो मनन हो गया और निध्यासन आपे ही हो जायेगा। एक भाव वाले में भी विश्वास है। हवाई जहाज में **pilot** के ऊपर भरोसा रखा तो आपे ही पार होगा। **Be still** होना ही पुरूषार्थ है। सोचने से कुछ न होगा पर इच्छा, वासना के कारण सोच चलता है पर जवाब है **Be still** ईश्वर अर्पण कर दो आपे ही चलेगा। है ही ब्रह्म ऐसा जानने से इच्छा वासना शान्त होती है। तू जीव है तो राग द्वेष न जायेगा। पर आत्मा जानने से ही प्रेम के बाजार में आ जायेगा। आपने आप को **stop** कर दो कोई ख्याल न करो। कितना भी सोच किया होगा फिर भी सोच छोड़ने से शान्ति आती है। अंधे की लकड़ी तू ही है तू ही जीवन उजियारा। चिन्ता को चिन्ता लग जाती है। हजारों ख्याल आते हैं पर सौंपने से ही शक्ति आती है। गुरू के प्रेम से ही मन मुड़ता है अपने आप से नहीं, चतुराई से नहीं। मन तो ढीठ, कामी, क्रोधी, अहंकारी है वो आपे ही क्या करेगा। गुरू का राज्य ही चलेगा। मनन करेगा तो उसमें भी अहंकार आयेगा। तेरा कुछ है नहीं तो क्या छोड़ा? छूटने वाली चीज छूटी। **automatic** सच को जाना तो झूठ छूट गया। अपने आप से एक इंच भी नहीं बढ़ सकता है। कबीरा मैं क्यों चिन्ता करूँ मम चिन्ते क्या होय, मेरी चिन्ता हरि करे मुझे न चिन्ता कोय। बच्चे की माँ बैठी है सोचने को तेरा भी गुरू बैठा है। तुम कहेगा गुरू को इतने हैं वो हमारे लिए कहाँ तक सोचेगा। पर गुरू जितना विशाल है उतना विशालता में सबकी रक्षा करता है। तुम कहते हैं सत्कर्म ज्ञान से छूट गये हैं पर बदकर्म भी छूटे हैं या नहीं। बदकर्म एक भी सारे दिन में नहीं होना चाहिए। कर्म सब बंधन में फंसाते हैं। प्रेम चोट जिसको लगे और भासे संसार उसको झूठा जानिये कपटी और मक्कार। मीरा कहती है दर्शन तेरा जिस दिन पाऊँ हर चिन्ता मिट जाये। प्रेम में ही संसार भूलता है। अन्दर से आनंद शान्ति आयेगी। भगवान का साथ अंदर में लो तो भरपूर हो जायेंगे माया में खाली हो जायेंगे।

पत्र नम्बर 129

God made man into his own image and likness. You have command over all the world. शेर सर्प सबके ऊपर राज्य है तुम्हारा। हाथी इतना भारी भी उठकर तुम्हें नमस्कार करता है। तुम इतना बड़ा है। **you are son of God** कि तुम खुद भगवान है। भगवान की, राम की, कृष्ण की शक्ल एक सी है। एक ही फोटो है दो आंख है दो हाथ हैं पर अज्ञानी लोग चार भुजा, के भजन में भूले पड़े बहु संत मेरा भगवान ऐसा कि जिसकी भुजा अनंत वो दो-दो सबकी भुजाएं तुम्हारी ही हैं। तुम **Son of God** अपने को जान लो तुम को भुलाने वाला तुम्हारा संबंधी था तो अब तक भूल करता है। अब सच्चा गुरू तुम को सच्ची बात बताता है पर तू अब तक नहीं समझा। अब तक कितने अवतार आए हैं तुम्हें सुनाने अब मैं **last** का अवतार आया हूँ। तुम गुरू से मगरूरी से बात मत करो। हमारी एक-एक बात समझेगा तो ज्ञान जरूरी हो जायेगा। गुरू कहता है न भीख मांगो न भिखारी बनो। तुम भीख देगा तो भीख मांगने वाले जरूर बनेंगे। मांगन से मरना भला यह सत्गुरू की सीख है। जो कुछ सीखा है वो अभी भूल जाओ। अपने दिल के अंदर डुबकी लगाओ जहाँ तुम्हें सुजागी मिलेगी। तुम अपने को जो बंधन में मानते हैं। अभी अपने को छुड़ाओ कल का ख्याल नहीं करना। गुरू से पूछकर निश्चय करने से तू भगवान हो जाता है। मान न मान तू है भगवान। गुरू वाक्य सत्यम करो। मुझे कोई नहीं जानता है मैं सबको जानता हूँ। **I am not what is you are wht is not. It is sin not to say I am atma. Don't play misers part.** अज्ञानी से बात करना छोड़ दो। गुरू से श्रद्धा विश्वास से प्रश्न करो। श्रद्धावान लभते ज्ञानम। इस ज्ञान से लाभ है कि बुढ़ापा, मौत, बीमारी है ही नहीं। आत्मा कभी मरेगा नहीं वही **Universal love** है। जब सर्व से तेरा प्यार है तो बुढ़ापा शरीर को भी नहीं आयेगा। **Ever**

young and ever fresh तुम्हारा ख्याल, चिन्ताएं तुम्हें बूढ़ा बनाती है। ज्ञानी कभी अपने को बूढ़ा नहीं समझता। बुढ़ापा, मौत, बीमारी, दुख, आत्मा में नहीं है। ज्ञानी तो आत्मा उसका देह से कोई संबंध नहीं है। आत्मा सदा **free and fresh** है। अपने शरीर की चिन्ता भगवान को दे दो। योग माना **connection** वो भी करता हूँ और उसकी रक्षा भी मैं करता हूँ। इस शरीर को जिस चीज की जरूरत है वो भी देता हूँ और इसकी सलामती भी करता हूँ। अज्ञानी सारा दिन **future** की चिन्ता करता है। आत्माकार की जरूरत सारी दुनिया को है। तुम केवल निरिच्छा भगवान अपने को जानो तो सारी दुनिया तुम्हों हाथों पर उठायेगी। मैं पुरूष परमात्मा हूँ प्रकृति मेरी दासी है। तू प्रकृति का दास बनेगा तो दुखी होगा। मैं मेरे की चिन्ता ज्ञानी को नहीं है। ब्रह्म, विष्णु, शिव का नाश होता है पर मेरा नाश नहीं होता है। मैं सदैव हूँ। जब तक दूसरे का आधार है तब तक तू जीव है। पानी गिलास की इच्छा ज्ञानी को नहीं है। ज्ञानी की आवश्यकता तुम को होती है। बच्चों की प्रारब्ध भी **fix** है। शरीर की चिन्ता भी भगवान को है। विवेकानन्द को जब गुरू की लगन लगी तो घर के सब लोग दुखी हुए। बहन ने आत्महत्या भी किया। लोगों ने पूछा तुम्हें पाप नहीं लगा बोला हजारों बहनों की जीवन तो बच गई। जो पहले माया के मुर्दे के समान थे उनको ज्ञानी से जीवन मिलती है। एक छोटी **family** को छोड़ा बड़ी **family** से **mix** हो के आनंद लेने के लिए परमात्मा सभी को देता है पर बहन अज्ञान के कारण ही दुखी हुई। ज्ञानी न किसी से दुखी होता है न करता है। जो अपने मन, वचन, कर्म से किसी को दुखी नहीं करता तो साफदिल है। मेरा अहंकार मुझे दुखी कर रहा था। अज्ञान ही जलाता है। पानी का स्वभाव ठंडा पर लकड़ियों से गरम होता है। तू भी शीतल है। अपनी इच्छा वासना रूपी लकड़ियों निकालो। **I am before gos was** ऊँचे ते ऊँचा भगवंत।

पत्र नम्बर 130

शुभ-अशुभ मित्र, मान, अपमान, दुख, सुख आदि में समान। मैं निराकार परमात्मा हूँ उसकी कौन स्तुति या निंदा कर सकता है। आकाश की प्रशंसा करो या निन्दा उसे क्या होगा। चाहे आकाश को थूक लगाओ। दोस्त व दुश्मन है एक सा मेरी नजर में। **God has plan for you.** भगवान इन्साफ का धनी है उसे कौन मार सकता है। जिस के सिर ऊपर जू स्वामी सो दुख कैसे पाये। **I am Son of God.** द्रौपदी को नग्न न कर सका, भगवान को अगर ऐसा नहीं करना था तो नहीं हुआ। जिसके भगवान फायदे में हैं उसका क्या हो सकता है। भगवान का भक्त सबसे न्यारा है। मित्र कब देखें और मित्र शत्रु कहां से आया। द्वन्द जोड़े सब माया में है। परमात्मा में दूसरा है नहीं। जहाँ तहाँ तू रहता है। जो चीज है उसमें आसक्ति रहित है। अपना तन, मन, धन भगवान को जिसने दिया वो अपना घर क्या बनायेगा। सांप अपना घर नहीं बनाता। 2 रोटी 6 फुट जमीन व सत्संग से सब तो अवश्य मिलेगा। सत्संग के लिए माया की जरूरत नहीं है। कृष्ण ने कौन सा आश्रम बनवाया। ज्ञानी अपने **followers** नहीं पर आप समान बनाता है। कुछ अपना बनाता ही नहीं है जो आसक्ति पड़े। हरेक भगवान है बाकी मेरा क्या है जिसको मेरा कहेगा तो उसमें आसक्ति जरूर होगी। सब अर्पण कर दिया है। मननशील पुरूष-मन को मनाये गुरू वाक्य सत्यम करे। बाकी कौन सी भूल सुनाये। **Money is useless.** तुम हम को बताओ तुम **useful** कर सकता है तो कैसे? **Money is a good servent but bad master if a wrong man uses the right means, the right means work in the wrong way.** जब तक तेरा विकार नहीं जायेगा तो गुरू को उसकी सजा भोगनी पड़ती है। तुम अपने फायदे

भी नहीं बलाते, मन भी नहीं देता है। तुमने एक बार गुरू की शरण ली है तो गुरू को तुम्हारी **responsibility** है। मैं सर्वत्र हूँ, सबमें हूँ, प्रारब्ध का विश्वासी ही मुक्त है। **knowest not thou that God feeds the world** मैं क्यों चिन्ता करूं। प्रारब्ध सबकी **fix** है। माया की चिन्ताओं से ज्ञानी खाली है योग व क्षेम का भार मेरे ऊपर है। मैं योग क्षेम संभालता हूँ ये अहंकार है। तेरे प्राण की रक्षा करने वाला भी भगवान है। विश्वासी एक दो मिनट में करामत देखता है। अपनी होशियारी काम की नहीं है। तुम सब को प्रारब्ध दे रही है बाकी कोई होशियारी से तुम नहीं कमा रहे हैं। तुम को माया की **progress** नहीं पर अध्यात्मिक उन्नति करनी है। ज्ञानी दृष्टा साक्षी होकर अपना खेल देखता है। अपने उद्धार के लिए यह ज्ञान ही चाहिए। दुनिया में जब तक जीवभाव में रहेगा तब तक तू दुखी है। सुख देखे हैं तो भी उन्हें याद करके आज रोयेगा। दुखों को भी रोयेगा पर आज के दिन में संतुष्ट रहो। पछाड़ी की बकरी बच जाये तो भी विश्वास नहीं निकालना। अज्ञानी के अन्दर इच्छा रूपी छेद है जो आज की हालत में खुश नहीं है वो कल खुश नहीं होगा। ज्ञानी आज की हालत में अभी ही खुश हो के दिखाता है। हरेक खुश रहे अपने बख्त भाग्य में जितना मिला है पहले उसकी खुशी करके दिखाओ। तुम लायक भी नहीं था तो भी तुम्हें बहुत कुछ मिला है। कैसा भी नीच स्वभाव था तो भी शरण में रखा है। उसका शुकराना मानो **free** में भगवान तुम्हें मिल गया है। इतनी खुशी होती है कि **burden bearer** और **burden sharer** मिल गया है। **why destroy your present happiness with distant misery with may never come.** जितना समय तुम्हें यहाँ गुरू ने दिया है उसके शुकराने माने हैं? एक देवे दस पावे पर जिस-जिस ने दिया उनसे तेरा क्या बन गया। अभी फिर कर्म

बनायेगा तो रिश्तेदार तेर बन के आयेगा। तुम्हें न सत न बदकर्म करना है। सतबद कर्म साथ-साथ ही होते हैं। जो जीव त्रिगुणी माया के अधीन है वो कभी सतकर्म कभी बदकर्म भी करेगा। सतोगुण से जो अच्छे कर्म किये तो उनका स्वर्ग तो मिलेगा पर रजो और तमो के कारण जो बदकर्म हुए तो नर्क भी मिलेगा। सतकर्म सोने की और बदकर्म लोहे की जंजीर है। मुक्त माना तुम यहां भी जन्म मरण से मुक्त हो जाओ। अन्दर से अज्ञान व कचरा निकालो। गुरू के साथ बात करो। तुम निष्कामी होकर रहो तो निष्काम का कोई फल नहीं निकलता है। किसी की भी सेवा की तो समझो अपनी सेवा की। तुम है दूसरा है तुम्हारा अन्दर ही शुद्ध होगा। तुम्हें शरीर व मशीन मिली है। तुम्हें चलाने के लिए। ये तुमने किया या परमात्मा की शक्ति से हुआ। ये शक्ति सब परमात्मा की और तुम ये अहंकार करता है कि ये मैनें किया। वचन साध के धोय धोय पी अर्प साध को अपना जीव शंकाएं निवृत होंगी तभी समाध ाान हो गया। छुड़ाते हैं तेरा अज्ञान गुरू। गुरू मन से छुड़ाता है जो मन के चम्बे में तू आ गया है। तुम गुरू का एक इशारा भी नहीं समझता मन एक बादल है।

पत्र नम्बर 131

अपना नाम बदल दो तो कोई भी गाली तुमको असर नहीं करेगी। तुम जब तक चिढ़ता है दुनिया तुमको चिढ़ाती है। भगवान ही हर रूप में तुम्हारी परीक्षा लेता है कि कोई हालत **touch** तो नहीं करती है। बार-बार अपने स्वरूप को जानने की कोशिश करे। जब तक अपनी आत्मा को नहीं जाना तब तक ख्याल आते रहेंगे। ख्यालों को दबाओ नहीं पर अपने स्वरूप को जानो। सब पाप का अनर्थों का भूल का कारण है कमजोरी और डर। डर तुम्हें किसका लगता है और क्यों? प्रभु ते भुलियां तो व्यापन सभेई रोग। सारी दुनिया में झगड़ा है ख्यालों का, मैं और तू का पर याद रखो तू कौन और मैं कौन। पहला ही शब्द है निर्भय निवैर। गुरू से भी तुम डरते हैं खुल के बात नहीं करते हैं। गुरू से दोस्त हो के उत्तर प्रश्न करो। भगवान ने इतनी नम्रता किया है। तुम भी पूरा रथ भगवान को अर्पण कर दो। **gift** को **lift** मत दो। आज ही गला खराब हो जाये या शरीर रोगी हो जाये तो कैसे वाणी चला सकता है या गा सकता है या सेवा कर सकता है। अहंकार किस बात का है। सब प्रभु की मर्जी से होता है। तुम दूसरे पर आशिक होते हैं कि वह इतना अच्छा गाता है या बोलता है या बुद्धिमान है ये सब परमात्मा द्वारा ही होता है। हुक्मे अन्दर हर को बाहर हुक्म ना काये, नानक हुक्मे जे बुझे तो हो मैं कहे ना कोय। गुरू ने अपनी आत्मा को जगाया है तुम भी अपने को जगाओ। कोई भी कमजोरी नहीं आयेगी अपने को भगवान जानने से। शेर मन पर सवारी करने से तू दुर्गा जैसा शक्तिशाली हो जाता है। वरना इच्छा के कारण मनुष्य कमजोर हो जाता है, नीचा हो जाता है। अपने को जीव दीन

हीन दुखी समझते हैं, अपने को अकेला जानते हैं तो दूसरे की **company** की जरूरत होती है। तुम अपनी **value** जितनी रखोगे उतनी ही होगी। तुम आत्मा है तो सब तुम्हें भगवान कहेंगे पर तू अपने को औरत या लड़की समझते हैं तो सभी तुमको मर्यादा में, फर्ज, ड्यूटी में फंसाते हैं। ब्रह्मज्ञानी ऊँचे ते ऊँचा मन अपने ते सबसे नीचा। सारी दुनिया को इस ज्ञान की जरूरत है। तुम केवल निष्कामी हो जाओ तो निष्काम कर्म अपने आप सामने आयेगा। दुनिया में सभी दुखी हैं। सबकी दिल खाली है। सगल सृष्टि का राजा दुखिया पर जो अपनी आत्मा को जानता है तो सुखी हो जाते हैं। सुख सागर में आइके मत जाओ रे प्यासा प्यारे। सबसे ज्यादा भगवान ने तुमको **Free** रखा है। कर्म करने को तू स्वतंत्र है पर फल भोगने को परतंत्र है। तू जितना बहादुर है उतना ही कोई तुम्हें कुछ कहेगा नहीं। संशय अंदर न रखो। अंदर सफाई होनी चाहिए निर्विकार निर्भय। नींद से उठ के सबके भीतर प्रेम का बीज डालते चलो। जो आज तक उल्टे चले हैं उनके शुकराने मानें कि उनके कारण की भगवान तक आए हों। निंदक नेडे राखिए। **forget and forgive** अंदर मन जलता है। तुमने मेरे को ज्ञान दे के जन्म मरण के चक्कर से छुड़ा दिया है। गुरू को अंदर बैठाओ। गुरू तेरे को वाणी से, संकल्प से तार सकता है। दूर देश से फोन पर ऐसे बात कर सकते हैं जैसे सामने बैठकर बात करते हैं। ऐसे ही जब अंदर **line clear** है तो गुरू अंदर ही अंदर बात कर सकता है। कभी अकेला नहीं समझेगा। द्रोपदी ने बाहर से पुकारा तो भगवान देर से आया क्योंकि अंग संग नहीं समझा। दुनिया में काम नौकर की तरह नहीं पर सेवा समझ के करो तो थकेगा नहीं। न कर्म, न कर्ता है न त्याग है पर सहज ही एक दिन जरूर

तू भगवान के कार्य में **busy** हो जायेगा तो माया छूट जायेगी। अंदर से सच्चे संकल्प जरूर पूरे होते हैं। पर शहंशाह, राजकुमार फुटबाल खेलता है और मजदूर टोकरी उठाते हैं दोनों पसीना बहाते हैं पर एक प्रसन्नता से दूसरा दुखी हो के रहता है। बहादुर हो के एक दिन जीना अच्छा है सौ दिन कमजोर हो के जीने से। निष्कामी होने के सिवाय एक भी बंधन नहीं टूटेंगे। एक-एक को जोश आना चाहिए। एक-एक होशियार हो जाये। रोज बारी-बारी से एक-एक **lecture** करें तो शक्ति आयेगी। सत्संग में ही प्राप्ति की प्राप्ति हो गई है। भ्रम हुआ था भ्रम भुलाना। थोड़े समय के लिए भुलावा हो जाता है। गुरू ने भूल निकाली तो तुम कहता है मिल गया। नहीं कुछ खोया नहीं कुछ पाया। परमात्मा नजदीक से नजदीक है इसलिए देखने को गुरू रूपी आरसी चाहिए। गुरू कहता है जो तू है सो मै। हूँ। ये फर्क निकालो। गुरू का आदर्श देख के तुम भी वैसे ही हो जाते हैं।

पत्र नम्बर 132

आत्मा में कुछ ग्रहण व त्याग नहीं है सभी कर्म "द्वेत से होते हैं इसलिए तीनों कर्म देह के - दान, तपस्या, सत्संग करना। मन के - ध्यान, धारणा, संकल्प, विकल्प। वाणी के - भजन, कीर्तन, जप आदि। ये सब कर्म मैंने त्याग दिये हैं। ये सब **oneness** और **sameness** में रूकावट हैं। कैसा भी सत्कर्मी एकाग्रता से भूला हुआ है इसलिए मुक्ति के लिए केवल निष्काम ही चाहिए। सत्कर्म स्वर्ग नर्क में भटकाये है यानि 84 लाख जूणियों में दुनिया में 5 विषय व उनके सुख क्षण भंगुर है पर मैं देह नहीं हूँ तो कर्ता भोक्ता भी नहीं हूँ। अज्ञान आया तो चिन्तन व समाधि बेकार है। कर्ण था सूर्य पुत्र उसे दासी पुत्र कहते थे तो उसकी शक्ति चली जाती थी। दासी पुत्र बना तो मर गया। सूर्य पुत्र **Son of God** तो तू **God** ही है। **Christ** बोला है **Be as you pure as holly as humble as your father is in heavens.** निश्चयात्मक बुद्धि रखो तो कोई तुम्हें फुसला नहीं सकता। गुरू ने भी बोला है स्वयंभव। माँ बाप ने तो तुम्हें पैदा किया है। **God made man according his own likeness and own reflection.** हाथी, शेर, सर्प सब को तू वश कर सकता है। भगवान की एक-एक बात सच्ची लगती है। सारी दुनिया में तू ही भगवान जैसा है। चाहे कृष्ण, राम, नानक किसी की भी शक्ल देखो तो दोनों ही एक सा ही है पर दुनिया में चार भुजा के भजन में भूले पड़े बहु सन्त, मेरा भगवान ऐसा है जिसकी भुजा अनन्त। तुम मन्दिर गुरूद्वारों में सोना चांदी देकर दर्शन चार भुजा वाले का करके आता है क्योंकि तुम अज्ञानी है। तुम भगवान के जात का है या नहीं। तुमको भुलाने वाला तुम्हारा माता पिता है। सच्चा गुरू आकर सच्ची बात बताता है। मुहम्मद साहब, **christ** सब आये तुमने किसी को नहीं समझा। प्रत्यक्ष फल

देने वाला ये ज्ञान है। गुरू से मगरूरी से बात करना छोड़ो। जो कुछ सीखा है वो भूल जाओ। अपने अंदर डुबकी लगाओ। जहाँ शान्ति का महासागर है तू बंधन रहित है। कल का ख्याल भी न करो। गुरू से पूछकर निश्चय करो। **belive it or not but you are God.** गुरू वाक्य सत्यम् करके जानो। **No one know me and I know all. My past is worshipped. My present is ignored and my future is anticipated with great forvour.** भविष्य में मुझे सब याद करते हैं कि फिर कब आयेंगे। **I am that ancient one.** मैं ऐसा आश्चर्यवत हूँ जो मेरे पीछे वाले अवतार को सब याद करके पूजते हैं जैसे राम, कृष्ण और जब अवतरित होता हूँ तो **Present** में कोई भी नहीं जानता क्योंकि खुद जीवभाव में है। **Christ** सामने आया तो **crucify** किया, कृष्ण को मक्खन चोर कहा। ये बड़े में बड़ी बात है कि आज अवतार को कोई पहचानो। एक भी **change life** में आई वो भगवान की वाणी हुई। **doctor** सच्चा तुम्हें ठीक करता है। तुम अपना फायदा सबको सुनाओ। उनको जा के प्यार करो। उनका दुख दर्द जानो। तुम खुद ही निराकार से साकार हो के आया है और सबको ही ये ज्ञान सुनाओ कि तू ही भगवान है। गुरू शिष्य नहीं बनो। जो दुखी आवे उसका दुख दूर करो। तुम जहाँ भी बैठा है अपना फायदा बताओ तू कितना आत्मा में है। कोई भी ऐसा सवाल न होवे जिसका जवाब तेरे पास न होवे। आत्मा को जानने से हर बात का जवाब तुम्हें मिल जायेगा। दुनियावी प्रकार की लड़ाई थी तो भी कृष्ण ने अर्जुन को आत्मा ही सुनाया। अर्जुन को कहा तुम जीते हुओं को व मरे हुआ का शोक न करो। **defence** में लड़ना सिखाया, कायरता से छुड़ाया। तुम्हारे सामने हालत आई है तो उसे **free** करो। मोह व अहंकार निकालने के लिए कृष्ण ने उसे ज्ञान दिया। ऊपर से अच्छा आदमी हो के दिखा रहा था

इसलिए आत्म ज्ञान ही सुनाया। तुम ज्ञान में रहो झूठ में न आ जाओ। आत्म ज्ञान से ही कोई शान्त होगा। एक ही आत्मा है। शब्द वाला दृश्य क्या है? सब में मैं ही तो हूँ और कोई मरने वाला नहीं है। शरीर व आत्मा को अलग करके बताया। विचार काल में संसार है ही नहीं। सतो रजो तमो माया सुनाई। जब कृष्ण को अपनी नेष्ठा बताई तभी भगवान ने चुप किया। तब तक गुरू बोलता ही रहेगा जब तक नेष्ठा न होगी। हालत को **face** नहीं करता है पर भागता है जो भागता है वो गिरता है पर जो **face** करता है वो चढ़ता है। बहादुरी हिम्मत शक्ति से सब बात का सामना करें मैं ही नहीं रहा तो मेरा कौन? आत्मा न मरता है ना मारता है। निष्काम में कभी भी तुम्हें पाप न लगेगा। निष्काम कर्म ही मुक्ति का हेतु है। ज्ञानी तो है ही निष्कामी। निष्काम से तू सकाम से छूटेगा। वेदों में सत्कर्म व उनका फल लिखा पड़ा है। स्वर्ग तक सब वेद हैं पर हे अर्जुन स्वर्ग के कर्मों का उल्लंघन कर जाओ। सब वेदों में त्रिगुणी माया का वर्णन है। पर जब तू इस माया का उल्लंघन करेगा तो फिर ये ब्रह्मानंद पायेगा। ब्रह्मा भी सुख भोग के नीचे आता है इसलिए ये सुख है नित्य सुख ब्रह्माकार वृत्ति से गजे भी राम भजे भी राम होसी राम। **I am what is and you are what is not.** अपना अरब विला एन अ के बिना रब हूँ। **Don't play misers part.** आत्माकार को देहअध्यास छोड़ना पड़ेगा। भगवान ही आदमी से आदमी को पैदा करते हैं, लड़ाते हैं, मारते हैं। ये बात तुम्हें मालूम नहीं है इसलिए तुम समझते हैं हम मारने वाले हैं या मरने वाले हैं। सोने के बर्तन को कलई करने की जरूरत नहीं है। भगवान को पाने का कोई साधन नहीं है। किसी भी कर्मकाण्ड से तुम्हें आनन्द नहीं मिल सकता। सच्चा पारस सतगुरू है जो संत करे आप समान। बत्ती हाथ में ले के अंधेरे को ठहरा न सकेगा। हम तुम्हें **willing renunciation** सिखाते हैं। अज्ञान नाश हो गया ज्ञान से। ऐसा हमारा ज्ञान है।

सब कुछ भूल जाओ जो अब तक सीखा। **Make mental revolution** देहअध्यास **unreal** है। ज्ञान से ही तू मुक्त हो जायेगा। मैं आत्मा हूँ मैं परमात्मा हूँ ये नहीं जानते यही बंधन है। तुम सत चित आनन्द रूप है। राम राज्य में विश्वास में आ जाये तो द्रोपदी जैसा पुकारेगा नहीं। **God is within. Forgive me not oh lord but punish me for every fault.** ब्रह्माकार वृति से अंधा पापी ब्रह्म ही दिखेगा। मेरा कुछ नहीं है। अप्राप्त भी मुझे कुछ नहीं है। निष्कामी हो जाओ। सकामी, स्वार्थी कर्म को छोड़ो। कुछ भी न होगा। मर्यादा, फर्ज, धर्म ज्ञानी के लिए कुछ नहीं है। फुरना सब देह में है। काल मौत नहीं है। डर चिन्ता सब देह में चले गये। पक्का निश्चय करो। आत्मा का ज्ञान तुम्हें मुक्त करता है। शरीर जरूर मरेगा पर आत्मा नहीं मरता है। तू पहले से ही आत्मा कोट कर्म बंधन के मूल। अज्ञान गंवाओ। बछड़ा बन के आओ सारी दुनिया मे अज्ञान है। तू ज्ञानी है जो अज्ञानी करते हैं वो तुम नहीं करो। जगत बणया ही नहीं। **change your attitude, real value** और **view** रखो। अभी जगत मिथ्या व ब्रह्म सत्य समझो। दुनिया की समझ अज्ञान है। अहम आत्मा तत्वमसि। सबको आत्मा करके जानो। देह अध्यास हो मैं नहीं पर मैं ना। निष्काम हो जाओ।

अपनी आंख का आपरेशन कराओ। एक चिंगारी ज्ञान की तेरे पूरे अज्ञान को भस्म कर देगी। यह ज्ञान आपे ही काम करता है। यह ज्ञान का **capsule** ताकत का अंदर जायेगा तो बीमारी आपे ही खलास होगी। अज्ञान जायेगा तो ज्ञान टिकेगा खाली इदो मरजी वेंदो। सुख स्वरूप तू है इसलिए सुख की चाह है। बाहर ढूंढ के जब थकेगा तो अंदर आपे ही जायेगा। ज्ञान जब तक नहीं है तब तक भक्ति अधूरी है। सेवा ऐसी होवे जैसे अपनी ही होती है। हर चीज भगवान है तो

बाकी क्या प्रिय नहीं है। जड़ चीज में मूर्ति में भगवान देखता है बाकी इन्सान में नहीं देखता है। चलता फिरता चेतन भगवान नहीं देखता है बाकी जड़ में भगवान देखता है। खुद चेतन भगवान तू है तुझे जड़ मूर्ति क्या करेगी। सच्चा भगवान तेरे अन्दर **change** लायेगा। तुम सबको आपना फायदा बता सकता है। गुरू शिष्य कोई नहीं है। तू स्वयं भी तो सच है अगला भी नहीं है। निष्काम सेवा से तेरा ही उद्धार होगा। अपना संशय भ्रम गुरू से निवृत करो। आत्मा को जानने से पूरी पहेली **solve** हो जायेगी। तुम कैसी भी **problem** ले के आयेगा। तो गुरू आत्मा ही सुनायेगा। कृष्ण के पास अर्जुन दुनियावी झगड़ा ही लेकर आया था तो कृष्ण ने उसे यह ज्ञान ही समझाया। मोह निकालने के लिए अर्जुन को ज्ञान दिया। लड़ाई भी **aggressor** होकर नहीं कर रहा था। ज्ञानी यही है सच यही है। एकदम सबको आत्मा में टिकाओ। बोलने वाला कौन? शब्द कौन? तू कौन मैं कौन? देहअध्यासी आत्मसाक्षात्कार नहीं कर सकता। साकार भक्ति तो सरल है पर निराकार में ही परिश्रम है। जब गुरू कहता है तत्वमसि तो देहअध्यासी डर जाता है कि कहीं हम गुरू से जुदा हो जायेगा। पर सगुण शरीर तो मायामय हैं जो साकार देह जब अंर्तध्यान होगा तो फिर भक्त को दुख होगा। निराकार का भक्त तो गुरू रूप हो जाता है। मैं भक्त तू भगवान ये द्वेत की भक्ति सब करते हैं। भक्त में वियोग, संयोग, दुख सुख, विकार रहेंगे, राग द्वेष भी होगा। भक्त व भगवान मिल के एक हो जाये। द्वेत नहीं पर अद्वेत भक्ति। सर्व के भले के लिए रहेगा तो ये अति उत्तम भक्ति है। अनन्य भक्त मेरे में सब को अर्पण करता है। उसका संसार सागर से उद्धार करने वाला ह। शरण लेगा तो सबक मिलेगा। अपनी होशियारी बुद्धि छोड़ दें। कर्म भी तुम करता है फल भी मेरे को नहीं चाहिए। निष्कामी भगवान से कुछ मांगता नहीं।

पत्र नम्बर 133

ईश्वर सबको कर्मानुसार चला रहा है। जैसे बाजीगर पुतली को नचाता है। अज्ञानी की प्रकृति, स्वभाव अज्ञान के कर्म करता है पर पुरूषार्थ से अपने को बदल सकता है। गलत **Use** नहीं करो हथियारों का। मनुष्य स्वतंत्र है। कर्म मुकर्रर किया ही नहीं है पर प्रारब्ध मुकर्रर है। इन्सान आजाद है मरे या मुक्त होवे। मनुष्य पाप छोड़ के आत्मा में स्थित होवे। कर्मो भयो कंगाल। मुझ को जानेगा वो मरेगा नहीं। तेरे हुक्म के सिवाय कुछ नहीं होता है। ब्रह्मज्ञानी दूसरे जूण न लेगा। वो सदैव है ही है। **I am in future also** मैं आत्मा हूँ। बादामरोगन निकालने के लिए बादाम के तीन छिलके उतारे गए तो वो रोने लगा कि हम लोगों ने इसकी धूप गर्मी से रक्षा की है। उन्हें जवाब मिला की तुम्हारी **value** केवल उत्तम चीज बादाम के कारण थी। स्थूल, सूक्ष्म, कारण पर्दे आत्मा को ढक कर बैठे हैं। स्थूल शरीर को आत्मा समझना भूल है। सूक्ष्म शरीर, मन जो जड़ है और विकारी है। ये अज्ञानी का कहना है कि फलाणा मेरा आराम फिटाता है। अशान्ति वाला आदमी तेरी शान्ति को कैसे फिटा सकता है। इच्छा है खुजली की बीमारी, इच्छा मात्रम् अविद्या। आग के **contact** में सब गर्म हो जाते हैं। आत्मा ज्ञान स्वरूप जिससे **contact** होगा वो ज्ञानरूप हो जायेगा। छोटा बच्चा ब्रह्मज्ञानी की तरह (बड़ा है गंद का गटर छोटा है हृदय का टुकुर) विजूद (शरीर) से परे है सदा मौजूद योगी हृदय निवास भोगी हृदय उदास। तुम्हारा जो नुकसान करता है तुम उस पर क्रोध करते हैं। जो तेरा ध र्म, अर्थ, काम, मोक्ष नष्ट करते हैं तुम उस पर क्रोध करते हैं। जो तेरा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष नष्ट करते हैं। तुम पापी नर्क भोग के फिर बाहर निकेलेगा। साध जना की सेवा लागे। तू कर और करते रहो। साधु सेवा स्वीकार नहीं करते। जो होता है ईश्वर इच्छा समझो। जो होता है इन्साफ। सब

वाह-वाह करके देखो। चिंता ताकि कीजिए जो अनहोनी होए। स्थूल मन यह देह है। सूक्ष्म मन कारण **Deep** बीज गहरे में अज्ञान पड़ा है। उसके कारण देह मिलती है। तू आत्मा तीन देह के अधीन हो गये। 3 देह में ज्ञानी आता जाता है। दुख, सुख, मान, अपमान, मोह, ममता सब अंदर पड़ा है। मन वैरी जिसके साथ है वो जीव है। मेरा मन का मालिक है। मन तेरा बच्चा है। जिस-जिस का संग किया वैसा बन गया। ऐसा गटर गंदा मन न गुरू के पास ले आ फिर जब गुरू के पास आया तो गुरू ने उसे सच्चा मनुष्य बनाया। स्थूल नाते काटे फिर सूक्ष्म मन से भी अलग हुआ पर कारण में भी याद है तो भ्झी फिर दुखी सुखी होगा। गुरू की आज्ञा से तीनों देह से भी मैं निकल जायेगी। **Last** तक अपनी मैं को गुरू के आगे झुकाएं। आज्ञा में चलें तो अज्ञान का बीज नाश हो जाये। सपने में भी आत्मा याद रहे। कारण में भ्झी अपने को आत्मा जानो। बेहोशी की सुई लगे तो भी अंदर से अज्ञान न निकले। **Deep** में भी देहभाव न होवे। अंदर थोड़ा जहर भी होगा तो अमृत भी जहर हो जायेगा। जो झूठा अहंकार है उसको खलास करो। ये तीन शीश आ गुरू उतारता है। क्या समझ के बोला। अपना आप समझ के दर्द से बोलेगा तब सब तुम्हें प्यार करेंगे। अंदर ही आनंद आ जायेगा। फिर कोई गिरा न सकेगा। भगवान से दूर न कर सकेगा। गुरू जैसे गुण तेरे में आना चाहिए। गुरू जैसे हो निरअहंकार न होगा। श्रद्धा व नम्रता, प्यार में रहोगे तो भगवान से मिलाप से हो जायेगा। जो भगवान करेगा वो लगेगा मेरी भी मर्जी है। हर हालत में इन्साफ है। शुकराने माने। अज्ञानी जैसा भी चले तो तुम अपनी प्रारब्ध मानों पर तुम 2 की 4 सुनायेगा तो तू भी क्रियामान कर्म बनायेगा। भगवान मेरे से अलग नहीं है। कोई उल्टा चले सीधा चले हम भगवान देखें। गुरू के प्रेम व शक्ति से हम ऊँचा चढ़ेंगे। जहाँ मैं निकलेगी वहाँ गुरू गर्दन काटेगा। गुरू **Deep** अज्ञान दिखाता है कि बीमारी अब निकालो नहीं तो

बढ़ जायेगी। **A stitch in time saves nine.** एक टांका लगाओ नहीं तो दस और लगाने पड़ेंगे। गुरू मेहर कर रहा है कहर नहीं कर रहा। गुरू अगर तेरे सांप को नहीं मारेगा तो तुम्हें पूरा चैन न आयेगा। मन थोड़ा भी रह जायेगा तो दुखी करेगा। सांप जिंदा होगा तो फुंकारा लगाता रहेगा। वासना की क्षय और आत्मा की जय है। ज्ञानी जैसा स्वभाव तेरा भी हो जाये। भिखारी को ज्ञान नहीं लगेगा और वो सदा दुखी रहेगा। जिसने चाहिए को काट दिया वो दातार हो जाता है। ज्ञान है तो भी दो, निर्भय हो तो भी दूसरे को दियो, बांटो तो बढ़ेगा। करोड़ खर्चने से ही खुशी होगा जमा करने से नहीं। ज्ञान बांटने में मजा आयेगा। तू निर्भय है तो दूसरे को भी निर्भयता सिखाओ। ज्ञानी जब शक्तियाँ दूसरे को देता है। तू अपना देहाभिमान निकालो, आत्मा में टिको। जहाँ तहाँ आत्मा का दीदार करो तो तू अभी का अभी पाक पवित्र हो जायेगा। स्थूल, सूक्ष्म, कारण देह के पर्दे हटाओ तो हो आनन्द आयेगा। मनुष्य देही मिली है प्रभु पाने के लिए। **This is pathless land** कोई रास्ता नहीं है भगवान पाने का **God is highest** रास्ता कोई नहीं है। **God is pathless you be thoughtless and mindless.** मन नहीं आना चाहिए। **Egoless and actionless and sexless. Everything is God. You be doubtless.** शक न रखो विश्वास और श्रद्धा रखना। शास्त्र को पढ़ने से अच्छा गुरू को सुनने से है। **Actionless-effortless.**

You are already that. you be desireless endless, faultless, secondless, egoless ऐसे इतनी बातें होने से तू **unconcerned, unaffected, unattached like Ayah-bank cashier** उसका पैसे में मोह नहीं है। मैं मेरे का भाव निकाल दो। एक दिन सब भर के समान

यहाँ छोड़ गये। द्रोपदी को विश्वासी नहीं कहा है क्योंकि तकलीफ के **time** भगवान को बुलाया है। वृन्दावन वासी नहीं है पर है सदा बसत हम साथ। भगवान तेरे साथ ही है तो उसको ढूंढना बंद करो। वो करामातों की करामात है। विश्वास रखना। शास्त्र पढ़ने से बेहतर व कीमती है। **No Desire for God even desireless.** भगवान तू पहले से है ये जानना चाहिए। भगवान कोई छोटा बच्चा नहीं है जिसे ढूंढना पड़े। हरेक काम निष्काम हो के करो निरिच्छा व निरअहंकार। ढूंढना पड़े। हरेक काम निष्काम के हो करो निरिच्छा व निरअहंकार। तुम फल की इच्छा रखते हो। किसी बात को रोकने की इच्छा है पर इच्छा को **change** करो। ख्याल बुरा है उसे अच्छा ख्याल दो। आम में कीड़ा दिखायेंगे तो तू आपे ही फेंक देगा। एक आदमी बोला मेरे घर में अंध ेरा है मैनें उसे लालटेन दिया और कहा मैं अभी आता हूँ मुझे अंधेरा दिखाना तो अंधेरा था ही नहीं। ज्ञान से अज्ञान आपे ही उड़ जायेगा। तुम्हें पता भी न चलेगा। कृष्ण की गीता पहले अद्वेत मत सिखाता है तू दूसरा-दूसरा देखता है दूसरा नहीं है पर है ही भगवान। एक ही निराकार संकल्प से एक से अनेक से अनेक हो गया। क्राइस्ट को लोग कहते थे हम जंगल में है यहाँ भगवान टेबल ला दे तो क्राइस्ट ने कहा तुम लोग मूर्ख हैं। जानते नहीं है भगवान क्या नहीं कर सकता। भगवान ने मिट्टी से ही इतनी चीजें पैदा की है तो ऐसी कौन सी बात है जो भगवान नहीं कर सकता। तू मैं है मैं तू है। घट-घट वासी कण-कण में भगवान है। तू मैं एक होते हुए ऐसे समता योग से एकत्व में रहने से ही एक ही अनेक दिखता है। एक छिप गया है। तुम प्रकट दिखते हो। समता योग से तेरी, अहमता, ममता, कर्ता नाश हो जाते हैं। हो मैं ये दीर्घ रोग है। तुम्हें अहंकार है कि मैं हूँ। अब कहो कि मैं नहीं हूँ। है ही भगवान। समता से ही देह भूलेगी। तीनों रोग खत्म हो जायेंगे। तेरे लिए कोई कर्म धर्म नहीं है। सर्वकर्मान् परितज्य, सर्व धर्मान सन्यंसे।

भगवान के एक संकल्प से सब हो गया है। तुम आया ही इसलिए है। शल कुछ न बनो। जो जानै मैं कुछ करता तब लगि गर्भ जूणि में फिरता। आज ये किया कल मैं ये करूंगा ये आसुरी सम्पदा के लक्षण हैं। तुम इन्सान नहीं हो पर इन्सान की सूरत में जानवर हो। करतूत पशु के मानुषजात। तेरा कोई धर्म नहीं है तू याद कर कि तू क्या है? मैं ये देह नहीं आत्मा हूँ। नामरूप नाश है ब्रह्म का प्रकाश है। देह की पहचान झूठी है तू अज्ञानी है। प्रेम आहे परमात्मा। जिसे ये प्रेम है उसे भगवान मिल गया। **Know thyself** तू केवल अपना आप पहचानो। तू अपने आप को बाहर से नामरूप समझ बैठा है। ये संबंधी ने बनाया है ये झूठ है। भगवान है करूणा व प्रेम। अब इतना प्रेम है तो जहाँ लिखा है **No thorough fare I can enter everywhere** तो हम वहाँ भी चले जाते हैं क्योंकि वहाँ भी मैं हूँ। जहाँ मन है वहाँ तुम जा सकते हैं। क्षमा वो तपस्या है जो अपना आप समझ के करते हैं। दया है द्वेत में दूसरा देखा तो पाप किया। घड़ी इस विसरूँ राम कूं तो ब्रह्म हत्या मोहे होय। जहाँ भगवान न देखा वहाँ ये पाप किया। जहाँ नहीं दिखता तो नकाब उठा के देखो। जैसे दुरबुल नाचती है तो अंदर नाचने वाला और है। ऐसे तुम्हें चलाने वाला भी और है प्रकृति तुम्हें इशारे से चलाती है। प्रेम वाला बहादुर है किसी के दिल में भी महलात बनायेगा। मिनिस्टर के पास भी चला जायेगा तो डरेगा नहीं। सब लोग दुनिया से डरते हैं। प्रेम व नम्रता जीत के आती है। जन्मों का द्वेष भी इस ज्ञान से मिट जाता है। द्वेत के कुत्ते को गुरू गाली देता है। गुरू अपना आप दिखाता है कि मैं ही तो हूँ। अज्ञानी कुत्ते मिसिल जगत रूपी आईने में दूसरा देखते हैं, कर्म बनाते हैं। इस कुत्ते को ही भौंकना बन्द कराना है। बाहर का मौन नहीं पर अंदर का मौन चाहिए। अपना आप देखेगा तो **Love all alike** हो जायेगा। प्रेम ही समाधि है, प्रेम ही मुक्ति है। थोड़ा भी तरा तफावंत है तो प्रेम न होगा। क्या जीते

जगजीत ऐसे ही ज्ञानी सब पर जीत पाता है। मन दुश्मन बाहर भी ज्ञान के पास है यही शीश दिखायेगा ज्ञानी। तुम जिसकी शिकायत करता है तो वो भी तू ही तो है। जो बेवकूफी के ख्याल आते हैं उन पर हंसी आयेगी। सब **time** ज्ञान का ही ख्याल करो कि मैं सर्वत्र हूँ, सर्वशक्तिमान हूँ। मन को बुद्धि को जानने वाला मैं हूँ। गुरू के ज्ञान पर **reflect** जा के करो। बातें चलती रहेगी पर घोड़े को पानी पिलाते चलो। रहट बंद होगा तो पानी भी न आयेगा। दुनिया में जहां तहां विक्षेप तू, मैं, राग द्वेष रहेगा क्योंकि जहाँ तहाँ सबका स्वभाव अपना-अपना है। नम्रता प्यारवाला सब जगह **fit** है। निराकार व साकार जो करता है। उनकी मेरे से भलाई है। सारी संगत की आशीष जीतता है। इतना मैं प्यार करूँ जो एकदम वो असीस करे कि तू बहुत भला है। ज्ञान माना प्रेम है। जब तक प्रेम नहीं है तब तक कोई सिद्धि नहीं है। ज्ञान अज्ञान छोड़ के प्रेम नगर में रहो। यहाँ शादी गमी की रीत नहीं। ये ज्ञान व भक्ति की **art** है। राजी रहना **contentment** शान्ति, तृप्ति हर बात में वाह-वाह करे। करोड़ रूपये की **point** ये है। ये तुम ज्ञान का नहीं दूसरी बातों का अभ्यास करता है। एक से अनेक हुआ है पर अनेक सपना है पर मै। ही सच हूँ। राजा ने शीश महल बनवाया। सबमें पहचाना कि मैं हूँ। जिसे मैंने दूजा समझा वो मैं हूँ। नामदेव कुत्ते से नफरत करता था पर एक दिन भगवान समझा तो रोटी मक्खन सहित खिलाया। कबीर ने भैंसे में भगवान देखा।

आज सबने दुनिया में कृष्ण का जन्म मनाया होगा पर कृष्ण बोला मै। अजन्मा अविनाशी हूँ। तुम भी इस ज्ञान को समझेगा तो अजन्मा अविनाशी हो जायेगा। तू न मरने वाला न जन्मने वाला है। सच है तू आत्मा। आत्मा को न मार सकता है न काट सकता है, गुरू तुम्हें अपनी आत्मा से जगाता है। गुरू सिखाता है मेरा जन्म दिव्य, मेरा कर्म दिव्य है। हर छोटा-छोटा फर्ज धर्म बना के बैठा है पर कृष्ण ने कहा सर्व

कर्मान परितज्य **duty** में तेरी **beauty** चली गयी है। **tensions** लगे पड़े हैं। अब गुरू कहता है **No tensions but all attention.** हो मैं दीर्घ रोग है। अहमता के साथ है ममता और मैं कर्ता हूँ। ये शरीर पांच तत्व का बना हुआ है और पांच तत्व में मिलता है। आंख का धर्म है देखना पर तूने मन से देखा तो द्वेत अंदर में आ गया। द्वेत अंदर में लगा पड़ा है। आत्मा पश्यन्ति आत्मा। सब मैं ही तो हूँ तो वासना इच्छा खलास हो गयी बाकी इस तन से भक्ति होगी, सेवा होगी। कर्म छोड़ना नहीं है, छूट भी नहीं सकता पर गुरू ऐसी युक्ति बताता है कि कर्म तेरे खाते में नहीं आयेंगे। बदकर्म, निषेध, कर्म, रिश्वत, चोरी, ठगी खराब कर्म काम। सत्कर्म **Hospital** बनाना, स्कूल बनाना, दान पुण्य करना पर उनके साथ बदकर्म भी होगा फिर तू दुखी भी जरूर होगा। सगल सृष्टि का राजा दुखिया हरि नाम जपत होय सुखिया। शान्ति व आनन्द तो तुम्हें बरसों से मिला हुआ है। इच्छा, अहंकार, मोह जीव भाव के कारण होता है। बुद्धि है तेरी छेदवाली। एक प्रिय दूसरा अप्रिय तो अंदर की कर्म बनेगा, मन, वचन, शरीर द्वारा तू कर्म बनाता है। तू कर्म करने को स्वतंत्र है पर फल भोगने को परतंत्र है। बारिश में जैसा बीज डालेगा वैसा फल मिलेगा। बुरे का बुरा अच्छे का अच्छा पर जन्म मरण जरूर मिलेगा। **A good deed binds the doer as much as a sin.** कोट कर्म बंधन के मूल। गुरू हमारी जंजीर को तोड़ ही देता है। तू अपने घर में जरूर आ जा खुदी के बदले खुदा को पा जा। **dive deep** खोजी होय तुरन्त मिल जाऊँ पर भर की तलाश में मैं तो हूँ विश्वास में। श्रद्धावान लभते ज्ञानम। गुरू कहता है तू भगवान है **body** नहीं है। **body is perishable** तुम कितना सुन्दर है अंत में केवल राख की मुट्ठी ही मिलती है। बचपन, जवानी, बुढ़ापा व चौथी अवस्था मौत है। मरता भी नहीं है पर **change** होता है। शरीर जल-जल के खत्म होता है।

आशा तृष्णा ना मरे कह गये दास कबीर। जो-जो वाणी से प्रीति रखता है उसका मन अचाह हो जाता है। बिल्ली कभी चूहा खाती नहीं थी एक साहूकार की क्योंकि ऊपर दीया जल रहा था। तुम भी यहाँ बैठा है तो रोशनी में चूहा नहीं खाता। इच्छा वासना नहीं होती पर जहाँ अज्ञान का अंधेरा आया वहाँ फिर वासना उठती है। अंधेरे में सब पाप होता है। सत्संग में ज्योति जल रही है। काम, क्रोध, मोह, लोभ कुछ नहीं होता है। गुरू ज्ञान का दीपक मन्न मंदिर में हर वक्त जलाना पड़ता है। साकार रूप में भी गुरू है और अंदर सत्गुरां दा डेरा अंदर जोत जगदी। सब निष्काम कर्म होंगे। करूणा होगी। दादा ने कहा **I want to be happy but I won't be happy till I make you happy too.** तू वापस अपने घर में नहीं आयेगा। तो गुरू को भी चैन न होगा। जो शक, संशय, भ्रम होवे वो आकर निकालो। जनक को बोला है फूल तोड़ने में देरी है ज्ञान आने में देरी नहीं। राजा नशे में अपना स्वरूप भूल गया। खटाई से नशा उतरा तो अपने को राजा जाना। तू स्वयं भगवान है। त्रिगुणी माया के कारण तू भूल गया है। मैं माना हदवाला बन के तू बैठा है पर तू बेहद है, **Mystry** है तीनों कालों में तू देह नहीं है। शरीर अभी है अभी न होगा। तेरे बस में है क्या तू जान जरा तू है निर्बल तो वो है बलवान। इच्छा तो बहुत करता है पर पूरी होती नहीं। अपनी इच्छा परमात्मा की इच्छा से मिला दो। वाह-वाह गुरू कर देख। जब तलक है भेद मन में कुछ नहीं बन पायेगा। रंग लायेगी ये भक्ति भेद मिट जाने के बाद। तू मैं में ही झगड़ा है। दो चूड़ी में झगड़ा है हम और तुम अहंकार है तो टक्कर है। एक मिनट में रहेगा नहीं। मैं-मैं करता है पर चलती नहीं है। लकड़ी को शादी के बाद नाम बदल जाता है तो वो याद रहता है। अल्लाह आदम बन के आया। निराकार साकार धारे आयो जग में। अर्जुन ने स्थित प्रज्ञा के लक्षण पूछे हैं तो कहा है सर्व कामनाओं का त्यागी। आत्मा से आत्मा में संतुष्ट है।

जादूगरी में तुम नहीं भूलता। नाटक न अटक, न टिकने वाला। जहाँ मेरा है वहाँ फंसा हुआ है। भगवान को भूल गये हैं। झूठ को सच माना है। आया अकेला जायेगा अकेला मन रचित संसार। जागा तो सपना झूठा हो गया। एक घड़ी आधी घड़ी आधी से पुनि आध संतन सेति गोष्ठी जो कीन्हो सो लाभ। आध घड़ी है जागने की तुम जागा है या केवल आना जाना किया है। गोष्ठी माना प्रश्न उत्तर किया गुरू से। राजा जनक ने बहुत प्रश्न किये हैं। राजा जनक ने पूछा धन इकट्ठा करने में क्या नुकसान है? बोला गुरू से पारस मणि मिल जाये तो ध न संचय क्या करेगा? रोटी सबकी **fix** है। साहूकार की रोटी बंद हो जाती है वो **tablet** खाता है। शान्ति गयी अशान्ति आयी। सत्पुरूष कहते हैं वाह गरीबी। सुख शान्ति अंदर है। **much wants more.** एक आदमी को बीस करोड़ है तो भी जलता है क्योंकि दोस्त के पास चालीस करोड़ है। किसी को भगवान न मिले और करोड़ पदार्थ हो, हीरे की **pen** हीरे की टोपी भी है, बूट में, पैन्ट में, ऐनक में, पलंग में भी हीरे हैं तो भी सत्संग में क्यों आना पड़ता है? क्या चाहिए? दिल है अमानत सत्गुरू की दर-दर पे रूलाया नहीं जांदा। दिल में मर्द, बेटा बिठाया तो टुकड़ा-टुकड़ा हो गयी। **Myself** प्राणपति, जगतपति को जब तक नहीं बिठाया तब तक शान्ति नहीं। कितने भी हो पर एक के सिवाय माया कितनी भी मिले तो उसकी कोई **value** नहीं है। दासी से प्रीति रखी है। ब्रह्म सत्य है बाकी माया सारी छूटने वाली ,है। सगा प्रिय पुत्र गुरू के सिवाए नहीं है। कल शादी हुई आज तलाक लगा पड़ा है। सच्चा प्यार किसी ने नहीं किया है। स्वार्थ का नाता है। सारी खुशियाँ उसे मिले भी अगर फिर भी वो प्यासा-प्यासा रहता है। जगत मिथ्या तो उसका सुख भी मिथ्या। कूढ-कूढ़ से नेह लगाया। सच को जाना ही नहीं। जगत है रैन का सपना सब झूठा माया माना जिसका कोई सार नहीं है। माया का अनुभव बहुत है पर भगवान का नहीं। करोड़ों में कोई एक गुरूद्वार पर

आता है उसी के सब दुख दर्द खलास हो जाते हैं। **Free** सत्संग में कोई नहीं आयेगा। कृष्ण जन्म में दो बजे तक जागा फिर क्या मिला? थोड़ा प्रसाद ले के घर पर आ गया कृष्ण से तुमने क्या सीखा? कृष्ण अर्जुन को क्या समझ के आया। मंदिर में भीड़ भाड़ है **fun and feast** में सब खुश हैं। सबका **time** चला जाता है। अपना फर्ज धर्म गया। अपने विकार वश करके परमात्मा को कैसे जानें ये फर्ज था। करना कुछ नहीं है केवल वाणी सुनो तो अज्ञान चला जायेगा जैसे रोशनी अंधेरा। विचार के वश हम नहीं विकार हमारे वश में हो जाते हैं। **misuse** नहीं करो। मूर्ख अज्ञानी दुखी सुखी होता है। विकारों से ज्ञानी काम लेता है। काम, प्रारब्ध में कुछ न होगा तो कामना पूरी न होगी। चाहना रखो परमात्मा को पाने की। सब विकारों को **change** करो। क्रोध मन पर, लोभ आत्म धन का। चोर न लूटे कबहूँ न खूटे दिन दिन बढ़त सवाया। जड़ पदार्थ तुम चेतन को सुखी न कर सकेंगे। मोह हरेक की आत्मा से क्योंकि सब मैं ही तो हूँ। अहंकार मैं आत्मा हूँ-शुद्ध अहंकार देह का अभिमान जन्म मरण में जायेगा। **I am son of God** सारी सृष्टि का परम पिता कौन है। सब भूत प्राणी मेरे से है। न बाप न बेटा पर एक ही परमात्मा कहीं बाप कहीं बेटा बन के आया है। जो हाथी व चींटी दुराचारी सदाचारी एक ही ब्रह्म देखता है वो सच देखता है। माया में विकार लगाया तो हैवान इधर लगाया भगवान। मन तो एक है चाहे जिधर। ये उत्तम देही है जिसमें उत्तम विचार रखो। सत असत को जानो। परमात्मा को जाना तो दुख खत्म जगत के सुख **temporary** है। दो मिनट सुख के लिए जन्म गंवा दिया। मन की बीमारी के लिए कभी डाक्टर नहीं ढूंढा है। सच्चे गुरू द्वारा ही ये हो मैं का हठ चला जाता है। बकरी की मैं-मैं के कारण गर्दन कटी जाती है शेर की नहीं। प्रभु के सिमरन दुख जम नसै।

पत्र नम्बर 134

Abide in me- मैं माना आत्मा। अर्जुन भी मैं हूँ। तू है नहीं **You are not** हो मैं दीर्घरोग है। तुम शरीर के लिए बोलता है जैसे बकरी की भाषा है मैं-मैं। सब धर्म को त्याग कर एक मैं की शरण लियो। **What am I ?** तुम अपने से रोज पूछो **who am I** उसका जवाब मिल जायेगा कि मैं आत्मा तो तुम्हारी सब **problem solve** हो जायेगी। ये मैं तुम्हें सब पापों से मुक्त करेगी। अभी दुनिया के गुरू घंटाल कहते हैं मेरी शरण लियो। तुम गीता पढ़ेगा तो तुम नहीं समझ सकेगा। तुम माम को जानो। अपने को व मेरे को **real** तरीके से जानो। मैं भगवान हूँ तो मैं मरने वाला व मारने वाला नहीं हूँ। अमर हूँ अमर अविनाशी हूँ। कृष्ण योगेश्वर है उसके योग को कोई नहीं समझता है। तुम अब तक मरना सत्य समझते हैं तो रोते पीटते हैं। अर्जुन को कृष्ण मिल गया फिर वो दुनिया में कहीं भी नहीं गया। निष्काम भाव से मेरे को ही आत्मा भाव से देखने वाला मेरे को ही प्राप्त होता है। ब्रह्मा से चींटी तक मेरे को ही देखता है। भगवान से प्यार भी नहीं चाहिए। वापिसी भी नहीं चाहिए। मैं तू हूँ तू मैं हूँ केवल भगवान रह जाये मैं न रहूँ। जीवभाव खत्म हो जाये। मैं सेवा भगवान की करूँ ये भी भाव न होये। जो वापिसी मांगता है तो तुम मजदूर है। भगवान् तो देने वाला है लेने वाला है। मैं ही उसके दिल में बैठा हूँ मेरा भक्त मेरे जैसा ही हो जायेगा। निष्कामी भक्त ही सबमें मुझे देखेगा। भगवान के पास इन्साफ ही इन्साफ है। जो-जो कामनाएं हैं। गुरू आपे ही पूरी करेगा। मेरे को विश्वास है। ये शरीर भी भगवान का, मन भी भगवान का। भक्त भगवान में लीन हो जाता है। भगवान ही सब कराता है। ये शरीर हथियार है निमित्त मात्र है। निष्कामी भक्त मेरे को परम प्यारा है। निराकार का भक्त

जन्म मरण में आयेगा। सब मैं ही तो हूँ। गुरू व मैं एक ही आत्मा हूँ। मैं राम का, कृष्ण, नानक का भक्त हूँ तो आपस में झगड़ा करेगा। तुम शरीर होता तो जन्म मरण में आयेगा। निराकार का भक्त मैं हूँ और साकार का भक्त मेरा है माना दो हैं मेरी पूजा करता है, मेरे को समर्पण करता है पर जुदा है निराकार साकार में यही अन्तर है। निराकार का भक्त भगवान ही है उसका जन्म मरण नहीं है। ये मेरा भगवान मैं इसका भक्त हूँ। मेरा भगवान है तो जन्म मरण है ये अज्ञान है पर मैं ही तो हूँ तो मैं मुक्त हूँ। भगत माना ठगत। मेरी भक्ति ऊँची है। भक्त माना अहंकारी।

पाँच तत्व का शरीर है खेत इसमें तुमने ही बीज डाला था। कड़वा डाला तो वैसा ही फल निकलेगा। फल भोगते समय तुम रोता चिल्लाता है। जो कर्म किया उसका स्वभाव संस्कार ख्याल संकल्प पक्का हो गया। खट्टा मीठा फल मिलेगा क्योंकि ऐसा ही बीज डाला है। इच्छा वासना का बीज डालातो उसका फल जरूर मिलेगा। तुम जानने वाला आत्मा अलग है। आत्मा जाणी जाणनहार है। तुम आत्मा को न जानकर कर्म करता है तो फल भी भोगेगा। मैं शरीर नहीं हूँ? भोगता भी नहीं हूँ। जानने वाला क्षेत्रज्ञ हो के रहो। शरीर ने किया है शरीर जा के भोगे। तुम भोगाने वाला है भोगने वाला नहीं है। मन को, बुद्धि को, इन्द्रियों को जानने वाला मैं अलग हूँ। पहले संकल्प फिर इच्छा होगी फिर कर्म होगा। फिर स्वभाव व संस्कार बनेंगे और जन्म मरण तैयार है। गुरू के आत्मिक ज्ञान से ही इस क्षेत्र के विकार जानकर इससे छूटेगा। विकार सहित प्रकृति को दासी बनाया पर आत्मा अपने को नहीं जाना तो प्रकृति का दास ही रहेगा। क्षेत्र व क्षेत्रज्ञ दोनों को जानो। सब वेदों में मंत्रों सहित यही बताया है कि आत्मा क्या है? पांच ज्ञानेन्द्रियाँ, पांच कर्म इन्द्रियां चौबीस तत्व का विकारी देह है। जो अपने को देह नहीं मानता उसके लिए प्रारब्ध भी कहां है। प्रारब्ध अज्ञानी

भूखों को दिलासा देने के लिए शब्द है क्योंकि वो आत्मा को नहीं जानता तो ये नहीं समझेगा कि मेरा कर्म भी नहीं है। अज्ञानी दुखी व अशान्त है तो वो एकदम आत्मा नहीं समझेगा। ब्रह्मज्ञानी की सब लीला है वो कभी दुख के समय रोता चिल्लता नहीं है कि मैं भोग रहा हूँ। ज्ञानी की लीला है वो तीनों कालों में अपने को देह नहीं जानता तो उसको कर्म कहाँ लिपायमान होगा। जहाँ आत्मा की बात है वो शुद्ध देश है जहाँ शुद्ध बात ही होती है। क्षेत्र के सब विकार है। पर जो आत्मा है वो सबसे निर्लेप न्यारा है। जो आत्मा में है वो ज्ञानी है। क्षमा भाव होवे। आध्यात्मिक ज्ञान में ही उसका मन होवे। प्रिय अप्रिय में राग द्वेष नहीं है। प्रतिकूल अनुकूल परिस्थिति में समान। जो देह में है वो अज्ञानी ही है। अव्याभिचारी भक्ति योग में रहना। एक निराकार शक्ति ने ही ये लाखों शरीर धारण किये हैं। नामरूप से नजर उठा लियो। मैं दुखी मैं सुखी ये देहभाव का ख्याल है। तलवार का घाव भी मिट जायेगा। पर शब्द का चिन्तन किया तभी तुमको उसका असर होता है। ज्ञानी शब्दों को हवा में उड़ा देता है। तुम ने माना था तो दुखी था। ज्ञानी अपने को मैं ना करके बैठा है। अभी भी जो अपने को देह करके मानता है उसको शब्द लगता है। हालत को **change** नहीं करो पर अपने को **change** करो।

गुरू तुमको सच्ची मर्यादा सिखाता है। तुम्हारी नहीं चलेगी गुरू की ही चलेगी। हारिये तो हरि मिले। मन को मारना तो तुम इधर ही सीखता है। सबकुछ तुमने अपने सुख के लिए किया है। मोह है तो द्वेष भी है। जिस औरत से आज प्यार है उसे ही फिर लड़ेगा। थाली मुंह ये फेकेंगा। तुम अपनी औरत को **piece of furniture** समझ के बैठा है। जड़ पत्थर वो नहीं है पर चेतन आत्मा है। वो आज तुम्हारा सुनते हैं, बच्चे भी मार सहते हैं। पर बड़े हो के तुम्हें भी बुढढा आश्रम में छोड़ आयेगा। बेटा हमेशा के लिए तेरे आगे बेवकूफ है पर अगर तुम उसको आज ही प्यार करो उसकी कलाओं को

प्रकट होने दियो। तेरे अंदर जो बड़ेपन की होशियारी है वो निकाल दियो। तुममे **A to Z** जो विद्या है। इच्छा, वासना, काम, क्रोध सब भरे पड़े हैं तो तू महान बेवकूफ है। गुरू का सच्चा भक्त सच्ची मर्यादा कर सकता है। मन मोड़ना गुरू ही सिखाता है। मन मारण की औषधि सतगुरू देत बताय। तुमने लिहाज डर में मन मोड़ा पर अन्दर तुमको बात पसन्द नहीं है पर गुरू के पास तुम भी सीखने के लिए आता है। मारे कुटे हिम बैट। जब तुम खुद यहाँ सीखने के लिए आते हो तो फिर खुद ही मुड़ जाते हो। तुम खुद ही खुशी से मुड़ने के लिए आया है। कोई किसी को दुनिया में कह नहीं सकता। गुरू को छोड़ के तुम जायेगा तो तेरा ही नुकसान है। **Pride comes before fall.** गुरू ही रमज सिखाता है। नम्रता का मालिक है गुरू। गुरू निरअहंकारी होना सिखाता है। पुरूषार्थ सब गुरू ही करता है। सारा आदर्श जब गुरू दिखाता है तब तुम सीखता है। तुमने रामचन्द्र जैसी मर्यादा भी नहीं की है। भरत ने गद्दी भी नहीं लिया पर तुम तो दूसरे का हक हड़प लेते हो। रामचन्द्र जैसा भी कौन है? पहले राम तो बनो फिर ज्ञान मिलेगा। राम ने वशिष्ठ से ज्ञान लिया है। वैराग्य के सिवाए ज्ञान नहीं है। जिसको अभी तक कोई इच्छा वासना है तो भगवान नहीं मिलेगा। ब्रह्मलोक तक का सुख भी जब नहीं चाहिए तब वैराग्य है। एक कहता है सहज मिला तो दूध बराबर दूसरा कहता है पदार्थ मिलने पर दुख होवे। सीता माता ने हनुमान को मोतियों की माला दिया तो एक-एक दाना तोड़ कर फेंकता गया कि इसमें राम नहीं है पर सीता राम अंदर था तो छाती फाड़कर दिखाया। भगवान के सिवाए उसको किसी से प्यार नहीं था। हनुमान को किसी चीज से मजा नहीं आया। सीता ने राम को छोड़ के हिरन से प्यार किया तो रावण (माया) के पंजे में चली गयी। भगवान **jealous lover** है वो कहता है मेरे सिवाए किसी को नहीं देखना। तुम केवल मेरी हो और मेरी हो के रहना। भगवान के सिवाए तुम कुछ भी न देखो ये अव्यभिचारी भक्ति योग से मैं मिलता हूँ

unconcerned सारी दुनिया से हो जाओ। वहाँ भी तेरा राग है तो तू फंस गया। लड़का लड़की ऐसे ही फंस जाते हैं। एक दूसरे को नमस्कार किया तो फंसा। तुम खुद की कहते हैं **I fall in love** और परमात्मा के प्यार में तुम चढ़ते हैं। **we rise in love** दुनिया में वासनिक प्यार है। अंदर से इच्छा पूरी नहीं होती तो तलाक देने को तैयार हो जाते हैं। इध र तो तुम एक कदम बढ़ाते हैं तो गुरू दस कदम आगे बढ़ाता है। आया था किस काम लो। कितने जन्म इस मन ने धक्का खिलाया है। आशा तृष्णा न मरी मर-मर गए शरीर। आज तृष्णा न छोड़ी तो चौरासी लाख जूणी में धक्का खायेगा। वायदा गर्भ में था किया। तुमको गर्भ में चौरासी लाख जूणी की याद थी और वायदा किया पर आज क्या किया। आज लाख की लाटरी मिलेगी तो खुश होगा या दुखी। यहाँ ना साहूकार ना गरीब आता है पर लगन वाला ही आता है। एक है शेर की एक है बकरी की बोली। आत्माकार माना मौन, शान्त। पर तुम ज्ञान की बक-बक करता है। मौन नहीं रह सकता तो बकता है। करतूत पशु के मानुष जात लोक पचारा करे दिन रात। अपने उद्धार की बात करो। सत्संग में आते हैं तो कहते हैं मेरी डोरी तेरे हाथ फिर घर में कहेगा तेरी डोरी मेरे हाथ। मिथ्या की बात सुनता क्यों है? आत्मा कहने से आत्मा नहीं हुआ। मिले मिलिया न मिले मिलिया होय, अन्तर आत्म जे मिले तो मिलिय कहिये सोय। मन का मौन ही तुम्हें भगवान बनाता है। मुख का मौन देवता बनाता है। जब बाहर से चुप करेगा तो अंदर को जानेगा। ज्ञानी से कहीं से भी बोले, कैसी भी बात करेगा तो आत्मा की बात ही सुनायेगा। कृष्ण ने अर्जुन को अठारह अध्याय ज्ञान का सुनाया। तुम्हारे पास कोई कैसी भी बात लाता है तो तुम आत्मा का जवाब देगा या कोई और भी बात करता है। यहाँ किसी का किसी से भी **concern** न होवे। सचमुच आत्मा में टिकना है। तेरा आनन्द तेरी शक्ल से

प्रगट होना चाहिए। तुम कोई भी खबर सुनता है तो हाँ करता है। जैसा तेरा **heart fail** होता है। आत्माकार माया की खबर भी धीरज से सुनता है। ज्ञानी पहले ही तैयार कर लेता है हर दुख के लिए तो भगवान क्या दुख भेजेगा। तुम चिढ़ता है तो दुनिया तुमको चिढ़ाती है। जो **criticize** करता है तो तुम चिढ़ता क्यों है? सब आजमां के थक जायेंगे। दुख दारू सुख रोग भया। सोना आग में और भी चमकता है। भगवान के पास अंधेरा नहीं है। इन्साफ ही

इतना सर्वशक्तिमान, हेतु रहित, दयालु, कृपा का सागर है तो उसको भी तुम बेइन्साफ वाला कहता है। सबके लिए तुमको शिकायत है पर अपनी इच्छा व स्वार्थ निकल गया तो शिकायत

व तेरा खत्म करके आत्माकार दृष्टि रखो। द्वेत का धुंआ अपना आप देखो **self realization** तमाशा, तमाशाबीन खिलाड़ी सब मैं ही हूँ। जगत का दृष्टा बनेगा तो उसका दुख सुख लगेगा।

पत्र नम्बर 135

जो मेरे मत पर चलता है वो सदा सुखी रहता है। **Love all alike.** कायदे को जो तोड़ेगा वो दुखी होगा। मोह में प्रेम नहीं होता सब मैं ही तो हूँ तो प्रेम हो जाता है। मेरे में मोह है। ज्ञानी ने अपनी आत्मा को जाना है वो सच्चा मनुष्य है। अगर आत्म भाव में न रहा तो तुमने अपनी **aim** पूरी नहीं की। मुक्ति के लिए रोचक, भयानक वचन छोड़ के यथार्थ को जानो। गुरू के साथ रहूं ये शुभ इच्छा भी क्यों रखी। किसी शरीर से भ्री भगवान सेवा लेते। तुम ज्ञान को नहीं पकड़ता। शुभ अशुभ का त्यागी मेरे को प्यारा है। धीरज रखो। साफ होते चलो तो सत्संग से राग द्वेष, संकल्प, विकल्प रहित जाओ तो भगवान आकर तेरे पर आशिक होगा। तुम कहता है भगवान मेरे घर आयें ये इच्छा भी दुखी करेगी पर हृदय रूपी घर में भगवान को बिठाओ। तुम प्रेम क्यों नहीं रखता है। बिन बोतल मेरी व्यथा जाने। आपे ही सबकुछ गुम करता है। तुम कहीं भी बैठा है पर **link** जोड़ी है तो गुरू साथ ही है। भगवान को तुम्हारा हृदय चाहिए और कुछ नहीं। तुम सोचता है साहूकार को भगवान जल्दी मिलेगा पर विश्वास, श्रद्धा वाला भक्त जिसने **surrender** किया है वो ही भगवान को प्रिय है। जो तुध भावे साई भलीकार। ज्ञान भक्ति कर्म सब पूरा हो गया। हर हालत में तुम क्यों कहता है कि मिलाप न होगा। जो भगवान का इरादा है वो मेरा इरादा है। गुरू हमारी पूरी **rehearsal** यहाँ कराता है। इधर से उध र बैठो तो उसमें **second** भी न गंवाओ। तो तुमने मन को जीता तो फिर तो तू जितेन्द्रिय हो जायेगा। तुम मुए मन को मारता है पर जो गुरू की आज्ञा में चलता है उसके लिए मन है ही नहीं। उसे मन का मुक्का लगाना नहीं पड़ता है। **God may forgive you but your nervous system never does.** जो आज्ञा में चलता है उसे

गुरू का पूरा ज्ञान धन मिलता है। ज्ञान में कोई दिन साल व महीने नहीं चाहिए केवल मन से उल्टा चलो। मन की हार और गुरू की जीत हो जाये। **Nothing is mine everything is thine.** मैं पूरे का पूरा तेरा हो गया हूँ। मेरा कुछ भी नहीं है। गुरू ने तुम्हें आधार दे के निराधार बनाया है। ऐसे तुम सारी दुनिया को करो। तुम गुरू के वचनों पर चलो तो प्यार हो जाता है। मांगता फकीर किसी को पसंद नहीं है। मांग तेरे भीतर से निकलनी चाहिए। गुरू का प्यार मिलेगा बाहर से तो भी खाली रहेगा। अंदर से संतुष्टि होवे कि मेरा गुरू से प्यार सच्चा है। मेरा भी प्यार है। भिखारी नहीं बादशाह बनो पर तुम्हें दरिद्री बनना पसंद है। **I am son of God.** जब तुम अपने को ऐसा समझता है तो तुम ऐसा है **Son of God.** में कोई फर्क नहीं है। तुम निर्दोष हो जाओ। निश्चयात्मक बुद्धि रखो तो कभी दासी पुत्र न होगा। गुरू नानक ने भी बोला है तू स्वयंभव है। कोई माँ बाप ने तुम्हें पैदा नहीं किया है। **God made man into his own image own likeness and gave rooting power on creepers and ferocious animals** सर्कस में हाथी व शेर तुमको नमस्कार करता है। सारी दुनिया में ऊँचे ते ऊँचा भगत तू ही है। तुम्हारा भगवान व तुम एक सा ही है। चार भुजा के भजन में भूल पड़े बहुत संत। मेरा भगवान ऐसा है जिसकी भुजा अनंत है। तुमको माता पिता ने भुला दिया पर गुरू तुमको सच्ची बात बताता है। हम पिछाड़ी का भगवान आया है तुमको समझाने के लिए और **complete** तरह से बात नहीं करो। शरीर का बंधन आत्मज्ञान से ही मिटता है। दुनिया का आदमी द्वैत में है। भगवान को नहीं जानता। जगत का सब पदार्थ मिथ्या है तो क्या मांगेगा। आम में कीड़ा देखेगा तो फेंकेगा। आजकल मनुष्य अपने को सुधारने के बदले दूसरे को सुधारने

में लगा हुआ है पर मानसिक उन्नति के सिवाय राग द्वेष में पड़े हैं। **Thy will be done oh lord not my will.** मेरी इच्छा कभी न पूरी होवे। तुम सब इच्छा करते हैं कि मेरी इच्छा चले पर अब कहो तेरी इच्छा सो मेरी इच्छा। ब्रह्मज्ञानी अपने को छुड़ा देता है। तुम दूध में शक्कर डाल दो सबको ऐसे रखो जैसे भगवान। आज शान्ति में वकीलों को झगड़ा देखता है। अपने कायदे से ही एक हारेगा एक जीतेगा जज केवल फैसला देगा। खुद परमात्मा ने ही सबको स्वतंत्र छोड़ दिया है। कोई भी कर्म न करो तो तू मुक्त है। तुम अन्दर भगवान की आवाज सुनता नहीं है क्योंकि तेरे अंदर **will** है। जिसको इच्छा व अहंकार नहीं है तो वो कर्मातीत है। तुम कहता है मेरी मर्जी चले पर सियाणा आदमी दूसरे की मर्जी से चलता है। स्वेच्छा से नहीं परइच्छा से चलो। ज्ञानी **part** समझ के करता है और फिर **part** छोड़ भी देता है। आज कुर्सी है कल नहीं है। कोई भी काम उठाओ तो मन को मोड़ के देखो। अपनी होशियारी छोड़ो। सब कर्म धर्म छोड़ के एक मैं की शरण लो। भगवान का धर्म क्या है? वो ईश्वर इच्छा पर चलता है और फिर न करता है न करवाता। अपनी **will** से चलने में दुख है।

पत्र नम्बर 136

राजा जनक ने किसी से पूछा कि दो अक्षर में ज्ञान सुनाओ तो उन्होंने जवाब दिया नम्रता, नम्रता में ही अमरता है। नम्रता से ही श्रेष्ठता, मोह, अभिमान का त्याग होता है। अपने मन वचन और कर्म से किसी को भी न सताओ। तुम्हारे मन का एक भी संकल्प, तुम्हारे **vibration** दूसरे तक पहुंचेगे। ऐसी वाणी भी न बोलो जो दूसरे को चोट लगे। यहाँ पर गुरू मन, वाणी की तपस्या सिखाता है। जब ब्रह्म भाव पक्का होता है कि सर्वत्र है ही ब्रह्म तो मन का चलना रूक जाता है। मैं ब्रह्म निर्विकार, निराकार हूँ, सत असत से परे, सत कहने वाला भी कौन। वाणी ही नहीं है। मन बुद्धि वाणी से परे है ब्रह्म। ब्रह्म ही ब्रह्म है। केवल ब्रह्म है। ब्रह्म देखने वाला जगत देखता ही नहीं है तो असत क्या देखें। मैं मायपति हूँ, देह में रहकर भी इससे न्यारा हूँ। ब्रह्म को कोई लेप क्षेय नहीं लगता। ब्रह्म सदा न्यारा निर्लेप है। त्रिगुणी माया में आकर भी न्यारा ही है जानने वाला। ज्ञानी जगत में किसी भी सुख, भोग का गुलाम नहीं है, स्वतंत्र है। ज्ञानी कहता है मजेदार मैं खुद हूँ। कश्मीर में मजा नहीं है पर मेरी आत्मा में ही मजा है। उसका आनन्द एक सा है। सब में रहते हुए सब से न्यारा हूँ। सूक्ष्म दृष्टि से ही सूक्ष्म आत्मा को जानेगा। इस आंख से भी जो नजदीक है उसको देखने के लिए दर्पण चाहिए। मतलब सूक्ष्म आत्मा को जानने के लिए सत्गुरू रूपी दर्पण की आवश्यकता है। हरि दर्शन की आरसी सत्गुरू की देह, लखना चाहीं अलख को उस ही में लख लेह। ज्ञान नेत्रों से ही तुम आत्मा को जान सकेगा। गुरू कैसे आत्मा में है उसे जानो। जब अपने नामरूप से ऊँचा उठेगा तो दूसरे को भी नामरूप सहित देखेगा। ब्रह्म

से ब्रह्म ही देखेगा। अविज्ञ है तू जीव हो के ब्रह्म को नहीं जान सकेगा। लहर सागर का अंत नहीं पा सकती पर अपने को समा देवे तो ब्रह्म रूप ही है। तत्व ज्ञान से ही तू ब्रह्म को जान सकेगा। **Foundation** को देखो। तत्व ज्ञान **Essence** को जानो जिसने अपने को जाना वो ब्रह्म को जानेगा। जो प्रवृति में फंसा हुआ जीव है वो त्रिगुणी माया के अधीन हुआ पाप व पुण्य के कर्मों का कर्ता, शुभ अशुभ कर्मों के फल भोगता है। जीव आकर्षित होता है माया में पर आत्माकार के लिए माया है ही नहीं वो मायापति है।

पत्र नम्बर 137

तुम माया में जायेंगे सत्संग छोड़कर तो राक्षस रास्ते में बैठा है जो तुमको कढ़ाई में तलेगा पर जब अंदर अज्ञान खत्म हो जायेगा तो सत्संग जैसा मजा कहीं भी नहीं आयेगा। गुरू ज्ञान देता है फिर वो अपने आप असर करता है जैसे **capsule** मुंह में डालता है तो काम अपने आप करता है तुमको कौन सा यत्न करना पड़ेगा? तुमसे भी छिपाकर तुमको गुरू ज्ञान देता है। अंदर ही अंदर नम्रता, प्रेम, बेहिसाब श्रद्धा दे देता है। जो बीस आना गुरू की मानता है विश्वास रखता है वो ही गुरू की मत लेता है। **I know the unknowable** जिसको जाना नहीं जा सकता उसका अंत मैंने पाया है। बेअंत का अंत गुरू के मुख से मिलता है। तुम्हारा काम है सिर्फ आकर ज्ञान सुनना और कुछ नहीं करना है। यह ज्ञान आ जाता है बाजीगर ही है जो सभी पुतलियों को नचा रहा है। वो अपना खेल करे पर हम अपना नकाब उठा कर देखे ते वासना, क्रोध, अपना पराया, भलाई बुराई सब खत्म हो जायेंगे। तुम कितना भी यत्न करो पर देहभाव है तो ज्ञान प्राप्त नहीं होगा पर आत्मा को जान लिया तो सहज ही मुक्ति को प्राप्त होता है। आत्मा में न द्वेत है क्योंकि दूसरे से कर्म होगा नहीं जब ब्रह्म ही ब्रह्म दिखाई देगा। यह कारज रास तब होता है जब गुरू में विश्वास रखोगे। साधन भी गुरू है और सिद्धि भी गुरू है। यहां गुरू ही मेहनत करता है। हमारा चिन्तन करता है कि वह माया में न गिरे। वह संकल्प से, दृष्टि से, स्पर्श से तार देता है। भक्त का भी भगवान को चिन्तन होगा उसका सफल क्यों न जीवन होगा। तुम अगर खुद अपनी चिन्ता न करेगा तो भगवान सोचना बंद कर देगा पर **surrender** कर दो कि जैसे चलाए। अंधे की लकड़ी तू ही तू ही जीवन उजियारा। भक्त का काम है भगवान से, गुरू से सलाह लेकर दवाई लेता है तो अपनी कैसे चलाता है।

Buy death form your guru. Buy poverty form your guru तुम साहूकारी से गुरू को खरीद सकता है। बेवकूफी का खर्च भी नहीं करना है जो सलाह गुरू से लेना है क्योंकि पर्स भी उसकी है। शरीर भी उसका है तो सारे दिन में इस शरीर से क्या करते हैं? तो तुम साधन से छूट जाते हैं क्योंकि गुरू तुम्हारे लिए सोचता है और तुम भगवान के लिए सोचो और एक-एक मिनट में शुकराने मानो। ज्ञान में तत्पर रहो। सोचो नहीं कि कैसे क्या होगा। **capsule** ले के तुम सोचता है कि अभी खून बढ़ेगा कि नहीं तो बेवकूफी का ख्याल करता है। मन को छोड़ दो कहाँ जायेगा? क्योंकि अपना आप दर्शन किया जहां तहां तो मन भारी हो जाता है औश्र सहज समाधि लग जाती है। सभ्झी को शिकायत है कि घर मे ज्ञान भूल जाता है। गुरू ज्ञान का दीपक मन मन्दिर में हर वक्त जलाना पड़ता है। तुम अपने घर में नहीं जाओ गुरू के घर में जाना। राजा जनक ने तन, मन ध नि गुरू को भेंट किया तो सब अमानत समझा। तुम मेरा समझते हैं तब दुखी होते हैं। पर सावधानी चौबीस घंटे अंदर में होनी चाहिए।

पत्र नम्बर 138

सब दुखों का कारण ये है कि तू अज्ञानी है। यहाँ तुम ज्ञान लेने आओ। एक बार गुरूमुख से नाम **catch** करो। मेरी **mystery catch** करो। घड़ी एक विसरूं राम को तो ब्रह्म हत्या मोहे होय। फिर तो हमने भगवान को मार डाला। भगवान के बदले दुनिया देखते हैं तो भगवान को गंवा दिया। **To see God is to be God.** भगवान देखने से ही तू पहचान लेगा कि तू भी भगवान है। पानी के मटके में अपना प्रतिबिंब दिखता है ऐसे ही साफ दिल वाले के अंदर में मैं दिखाता हूँ। **I am within each and everything.** पर पापी मेरे को नहीं देख सकता है इसलिए **You be as pure as, as your father is in heavens. Christ** ने कहा है **I am son of God** और तू कहता है मेरे माता-पिता ने पैदा किया है। **Christ** ने जैसे अपने को समझा **Son of God** ऐसे ही तुम भी समझता है या नहीं। तुम आत्मा है तो न तुमको किसी ने पैदा किया और न पैदा हुआ है। हरेक स्वयं निराकार से साकार हो के आया है। बाकी मम्मी डैडी कोई नहीं है। तुमको अपना बेटा नहीं होगा तो दूसरे के बेटे को अपना बना के उस पर राज्य करते हैं। एक राजा का बेटा नहीं था तो संत ने उसे जंगल में बंदरी दिखायी जो अपने बच्चे पर चढ़कर बैठी थी। अपने सुख के लिए, राज्य करने के लिए बेटा चाहिए। न किसी ने पैदा किया है न हुआ है। आत्मा **deathless, birthless** है। तू अजन्मा है मरेगा भी नहीं। जो **sex** से पैदा हुआ है वो **sex** में ही रहता है। एक **God** से आया है तो उसी में मिला पड़ा है, उसी में लीन होता है। लहर सागर में अन्तर नहीं। तुम भी अपने को बुदबुदा समझ के दुखी सुखी होता है। बुदबुदा सागर में सागर का रूप हो गया फिर तो जुदाई नाम मात्र की भी नहीं है। ऐसा तब समझेगा जब अपनी

खुदी छोड़ेगा। मैं निरंजन सर्वव्यापी, जहाँ तहाँ हूँ फिर भी कहेगा नहीं कि मेरा फर्ज धर्म ये है और तुम इतना फंसा है फर्ज धर्म में तो भी कोई नाम न निकालेगा न कोई खुश होगा। फर्ज धर्म ड्यूटी कौन सी है। **Salvation** मुक्ति पाने आया था तो वो फर्ज निभाओ। भगवान से निभाओ तो तेरा लोक परलोक दोनों सुखी हैं। परलोक माना परलोक में जायेगा नहीं प्रारब्ध उसके साथ है। तुम एक ज्ञानी बनेगा तो बाकी सब आपे ही चलेगा। अपने को बंधनों से छुड़ाओ। नींद से उठ के कहते हो ये करना है वो करना है पर ज्ञानी में करने का भाव ही नहीं है। राग-द्वेष, इच्छा, अहंकार, हसद-साड़, वैर खार से जो रहित है वो ही निष्कामी हो सकता है फिर उससे भगवान आपे ही कार्य लेगा। दृष्टांत (रामकृष्ण के पास चार आदमी आये कि हम सुधार करें) दया धर्म का मूल है नर्क मूल अभिमान। राजा भरत ने हिरणी पर दया किया तो मर गया। पालने वाला भगवान या तू है। बेइन्साफी देखी। मोह, अहंकार सब दया से आयेगा। द्वेत में दया आती है। दया करके अहंकार आता है फिर उसके मोह में अटक जाता है। तुम अज्ञान में दया करके गिरता है। ज्ञानी ऐसी अंधी दया नहीं करता पर एक-एक को अपने पांव पे खड़ा करता है कि **You are that** हमने तुम्हें कुछ दिया नहीं है। न लेना न देना मगन रहना पर तुम खुद भगवान है तो तेरे ऊपर दया क्या करूं। तुम्हें अनाथ नहीं देखता। जन्म मरण से छूटो करूणा करता है। तुम जो अपने को दीन, हीन, दरिद्री अबला समझता था तो उससे सुजाण करके तृप्त बनाता है। **Happiest man is without a shirt.** राजा भी दुखिया प्रजा भी दुखिया हरि का नाम जपत होवे सुखिया। हरि ओउम्, शिवोहम्, अहम ब्रह्मस्मि ये सब वेदों के महावाक्य सुनेगा तो शक्ति आ जायेगी। बकरी की गर्जन नहीं करेगा। इच्छा अहंकार वाला **weak** रहेगा। ज्ञानी किसी के आगे नहीं झुकेगा कि मेरे को प्यार

चाहिए। हरेक प्यार का सागर है तो भीख क्यों मांगते हो? चाहना भी दूर हो गयी तो गुलामी भी दूर हो गयी और तू खुद खुदा हो गया। प्रकृति का राज्य इन्साफ पर चलता है। किसी से जुल्म नहीं होता है जिसे मैं मदद करूं। **God is just** इसलिए ज्ञानी बीच में टांग नहीं अड़ाता कि मैं भलाई करूंगा। तुम केवल अपने को बंधन से छुड़ाओ, मुक्त करो। हरेक अपनी प्रारब्ध अनुसार कुछ न कुछ बनेगा। अपना सुधार करो। तुम रोज फेल होता रहता है। मोह के फर्ज का नाम दिया है कितना सरल काम है। हर कर्म से पहले ज्ञान ज्योति चाहिए। अंधेरे में, अज्ञान में जो कर्म करेगा वो गलत होगा। **If a wrong man uses the right means, right means work in the wrong way.** तू अहंकारी जीव तेरे से जो कर्म होंगे वो गलत होंगे। पहले अपने को जानो मैं कौन हूँ। ब्रह्म सत्य अनुभव करो। तू शरीर नहीं तू करने वाला नहीं है। तू नहीं तेरा कहाँ से आया। पहले गीता में भी ज्ञान योग बताया फिर निष्काम कर्म योग बताया। जहाँ तुम्हें याद भी न रहे कि मैंने कुछ किया। फल की इच्छा भी नहीं। सत बद से रहित निष्कामी से निष्काम हो जायेगा तो उसे पता भी नहीं है। फल की इच्छा कभी नहीं। इन्द्रियाँ अपने विषय में वरत रही हैं। मैं कर्ता भी नहीं हूँ। दूसरा है ही नहीं तो कर्म किससे हुआ। गीता में कई प्रकार के यज्ञ भी बताए पर ज्ञान यज्ञ श्रेष्ठ बताया। वैसे अज्ञान में सच समझ के किया तो दुखी सुखी हुआ। ज्ञानी झूठी ताश का खेल समझ के खेलता है। हार जीत नहीं, नफा नुकसान नहीं, डर नहीं। तुमको सोच भी नहीं चलेगा कि मैंने ऐसा किया। ज्ञानी को फल की इच्छा भी नहीं है। ज्ञान देने की चीज भी नहीं है जो मैं दियूं। तेरी श्रद्धा, विश्वास ज्ञान सुनता है। गाय से बछड़ा दूध ले जाता है। श्रद्धावान लभते ज्ञानम्। ज्ञान यज्ञ में इच्छा व अहंकार भी नहीं है। तू पहले से ही ज्ञान स्वरूप है। कर्म भी नहीं बना ज्ञाता,

ज्ञेय, ज्ञान त्रिपुटी भी नहीं है। बैठ एकान्त गुरू तीर जो मारा शिवोहम् देश पढ़ाया। गुरू का काम है जगाना कि तू पहले से ही भगवान है। केवल भूल निकालो फिर जो तू है सो मैं हूँ।

.... तुम पैगम्बर पहले अपने को नहीं जानेगा तो अद्वैत सिद्ध न होगा। **One in all and all in one. self sear** हो जाओ। मैं एक ही निराकार भगवान हूँ मेरे सिवाए कुछ था ही नहीं तो क्या देखूं। उस वक्त संकल्प किया तो एक से अनेक हो गया। अब भी जैसा तेरा संकल्प है वैसी ही दुनिया है। ब्रह्म ही ब्रह्म देखो तो ब्रह्म ही है। एक ब्रह्म के सिवाय कुछ भी है नहीं। शरीर सब जाने वाले हैं। तुम अपने को निराकार जानो। ब्रह्म विद्या के सिवाय सब विद्या अविद्या है। ज्ञानी बिना पाई पैसे के खुश है। जड़ चेतन सब भगवान है। मुझे सारी दुनिया का राज्य भी नहीं चाहिए क्योंकि सारी दुनिया दुखी है। राजा भी दुखिया प्रजा भी दुखिया। **Happiest Man is without a shirt** महात्मा गांध ी एक धोती में भी गया **England** के राजा के पास। भगवान के सिवाय कोई भी चीज नहीं है अब तू त्याग भी क्या करेगा? दृश्य कैसा भी तेरे सामने आता है तो तुम उसमें भूलता है या नहीं? तुम दृश्य का सुधारक बनता है। संसार है बाहर तुम साफ सफेद पर्दा है। तुम कठपुतलियों का नाच देखो। हर जगह भगवान की मूड़ है कहीं कैसे करता है कहीं कैसे। नाटक को नाटक देखो, खेल को खेल देखो। भगवान ने ये नाटक तेरी परीक्षा के लिए रचा है। तुमने जगत तो सत करके जाना है तो तुम्हारी बेड़ी डूबी है। **unconcern** हो के रहो। शरीर से भी अलविदा ले लो। कोई **concern** मेरा नहीं है। **part** करके फिर भूल जाओ। सारा **time** तुम सोच विचार में है। **office** की बात घर में घर की बात **office** में सोचते हैं। सकामी फल की इच्छा से अहंकार से कर्म करता है। निष्कामी के अन्दर भगवान की प्रेरणा आती

है। सकामी के अन्दर मन भी है तो वो कर्ता है तो भोगता भी है। तुम्हें कुछ नहीं चाहिए। दूसरा है ही नहीं। मेरा कोई नहीं है। मैं ही तो हूँ तो किससे कर्म करेगा फिर पछतायेगा। निष्कामी किसी का गला भी काट दे तो उसे कोई पश्चाताप नहीं। ज्ञानी विकारों के अधीन नहीं है। तुम विकारों के अधीन है। ज्ञानी का क्रोध भी शोभायमान है। जानबूझ के तेरे लिए क्रोध भी करेगा, इच्छा भी करेगा। अपने लिए उसको कुछ भी नहीं चाहिए। निष्कामी से क्या भूल हो सकती है। ज्ञानी के अन्दर दूसरा है नहीं तो न राग, न द्वेष, न इच्छा, न अहंकार है। तुम्हारी रहणी से ही सब पता लग जायेगा। मन वचन कर्म से तू कर्म बनाता रहता है पर आत्मा देखने से कर्म नहीं बनेगा। प्यार ही निकलेगा तो उस प्यार में नहला दोगे। अपनी **will** व स्वार्थ उसको है ही नहीं। ब्रह्मज्ञानी की **presence** ही हजारों कोसों तक शान्ति पहुंचाने वाली है। उसका बोलना, संकल्प भी दूसरों को तार देता है। निष्कामी के पास सारी दुनिया अपना दुख दूर करने में आती है। मैं मेरे की दुनिया को खत्म करेंगे तो सारी **family** भगवान की तेरी हो जायेगी। दृष्टा है या कर्ता अपने से जरूर पूछना। मैं कर्ता नहीं हूँ तो मेरे लिए सारी दुनिया ही **strike** पर है। सब भगवान ही है तो कोई मेरे से क्या बुराई करेगा। कोई बुरा नहीं है भले मन के वास्ते। कोई **right** नहीं है कोई **wrong** नहीं है सब तेर ही स्वरूप है। सबको माफी दे दो। ज्ञानी किसी के कर्म ध र्म में नहीं जाता। दूसरे का स्वभाव दूसरा जाने। तुम कभी भी दुखी है तो अपने स्वभाव के कारण। वैसे भी कोई भी तुम्हें दुखी करने वाला नहीं है। अपनी दृष्टि को साफ करो। दिल में भी भगवान को बसा लियो तो कभी भी एक कर्म नहीं बनेगा। बुरा कोई करेगा तो उसको सजा मिलेगी तुमको नहीं। बुद्ध भगवान को एक आदमी ने थूक मारी पर बुद्ध ने कहा मैं क्यों सजा दूं उसे तो आपे ही सजा मिल गयी। उसने पन्द्रह दिन

तैयारी की होगी, अंदर जला होगा। जिसके अंदर एक भी खराबी है तो वो दुखी होगा। तेरे से कोई भी कुछ करता है तो वो परीक्षा है। तुम उसे एक **second** के बाद भी प्यार कर सको क्योंकि हरेक मन के व अज्ञान के अधीन है। उनका कसूर नहीं है। ज्ञानी अपने को **crucify** करने वाले को माफ कर सकता है। पर तुम मरने तक भी किसी का शब्द नहीं भूला सकता है। हर बात में बीच में भगवान है। मरना होगा तो तू बच नहीं सकेगा। शरीर तो एक दिन जाना ही है। मारने वाले से बचाने वाला नजदीक है। हुक्मे अन्दर हरको। प्रकृति, निराकार, साकार सब इन्साफ पर चलते हैं। जो करेगा सो भरेगा इसलिए ज्ञानी निर्भय हो के चलता है। कोई ठंडा भी लगाए तो इंसाफ। किसी भी शरीर से होता है तो वो भगवान ही है। मीरा ने सांप में भगवान देखा क्योंकि उसके रोम-रोम भगवान समाया था सभी मनुष्य भी जानवर का स्वभाव ले के आते हैं। कुछ भी **wrong** नहीं है। हमारी नजर ही खराब है। शुकराने नहीं मानते हैं कि सब रूप में अच्छा ही होता है। क्या भी आवे तो अच्छा ही होगा। हार जीत में समान। जिताने वाला भी मैं ही तो हूँ। पहले से ही **Plan** बना पड़ा है। जो बन आये सो सहते हैं। हमारी उसमें भलाई होगी। सबकुछ भी चला जाये कुर्सी भी, संबंधी भी, धन भी तो इन्साफ देखा। अपने को सबसे छुड़ाते चलो किसी के बीच में भी न पड़ो। एक ही निष्काम जीवन बनाओ। ज्ञानी व्यवहार को **Zero** कर देता है। तजी खिजमत वजीरी की, तो पाई लजतत फकीरी दी। (बलिराम वजीर ने नौकरी छोड़ी तो राजा सलाम करके खड़ा हुआ।) तुम्हें चाहिए क्या जो फर्ज ड्यूटी में फंसते हो। अकेले में जा के सत्संग करो। शान्ति में बैठ के अपने को भगवान जानो। द्वैत, द्वेष की दुनिया से परे सब कर्मों से फारिग। धिक्कार है उस कर्म जो जिससे न होवे शान्त मन। ज्ञानी सब कर्मों से छूटा हुआ परमात्मा की खोज में ही रहता

है। सब कर्म द्वैत में हैं – दया दान हवन यज्ञ। पहला धर्म है कि अपने को पहचानो। यही सबको बांटो यही तेरा स्वधर्म है। भगवान ने गीता में बोला है कि जो मेरा यह ज्ञान मेरे भक्त में बांटता है वो मेरा परम प्रिय है। जितना है वही बहुत है बाकी जीवन में माया में देने से भगवान को दे डालो। अपने को फंसाओ नहीं। हाथ जोड़ के, पांव पड़ के भी उनसे ये रास्ता लो। जगत जीता भला हरिजन हारिया भला। जीतने से भी क्या मिलेगा?

सब मैं ही तो हूँ पर मेरा कुछ नहीं है। **sexless** केवल स्त्री पुरूष नहीं पर सब मैं हूँ। सारी सृष्टि का राज्य मिले तो भी मैं स्वीकार नहीं करूंगा क्योंकि सगल दृष्टि का राजा भी दुखिया पर **happiest man is without a shirt.** अहमता ममता, कर्ता समता योग से चला जाता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार भी चला गया है। अपने को किसी से बड़ा या छोटा समझेगा क्या? **Without him there was nothing that was ever made. Body consciouness must go.** सब तुम पर ही है। तेरे सिवाए कोई दूसरी चीज नहीं है पर तू ही तू है। अल्लाह आदम बन के आया। ब्रह्म ज्ञान से जानेगा कि तू ब्रह्म है। कर्मयोग से तू निष्काम सीखेगा। निष्काम :- इच्छा व अहंकार रहित। प्रश्न :- ज्ञान जरूरी क्यों है? हरेक मनुष्य का मकसद है मन की शान्ति। इसके लिए हरेक माया में भटकता है। **The goal of life is peace of mind not money as fish its life in water not in honey.** मन की शान्ति ज्ञान से आती है। बच्चा भी अशान्त, बड़ा भी, बूढ़ा भी अशान्त हैं। इच्छाओं वासनाओं में जलता रहता है। मन की शान्ति ज्ञान से आती है। जानो अपने को तो तुम कौन है तो शान्त हो जायेगा। तुम खोटा ख्याल करके अशान्त हुआ है। तुम मुक्त स्वरूप है। शान्ति क्यों गई

है उसको जानो। क्यों क्रोध आया क्यों **mood off** हुई। अभी शान्त बैठा था अभी विकारों के अधीन हो के **Out** हो जाता है माना **fail** हो जाता है जिसका विकार बाहर नहीं निकलता तो वो शान्त है। तुम दूसरे को अपनी मर्जी से चलाना चाहता है। फिर मोह फिर लोभ सबके साथ है जो **control** में है जो समता में है। **Controlling mind.** तुम्हारा मन भी **control** में होगा तो तू **balance** में रहेगा। समता में **balance** आता है। हर रूप में भगवान है तो मैं कम ज्यादा प्यार क्यों करता हूँ। **Out of control** न हो जाओ। हर बात भगवान इच्छा से होती है। **Nonthing is new under the sun** पहले भी ऐसा होता था अब भी ऐसा होता है। **History repeats itself** थोड़ी-थोड़ी बात में तेरी **mood** खराब होती है। अभी कौन सी हालत आयेगी जो तू अशान्त होगा। क्या होयेगा जो तेरी शान्ति जायेगी? खेल देख के ज्ञानी हंसता है। अज्ञानी एक एक भूल से दुखी होता है। दूसरे की त्रुटियां देखते हैं, अपना खून जलाते हैं। किसका बेटा क्रोध से सीखता है। उसको लेके आओ। अपने शान्त स्वरूप में रहो। सब जगह में मैं ही तो हूँ। तो किसकी शिकायत करूं। कौन सी इच्छा करूँ। **See God every where.** जहाँ तू बैठता है जिसके साथ बैठता है सब भगवान ही भगवान है। सबके दुख में भाईवर बन के उनका दुख हरण करो। यह ज्ञान सब को सुखी करेगा। सो सुखिया जिसका नाम अधार जो जैसा ले के आता है उसे आत्मा याद कराओ तू शान्ति स्वरूप पहले से ही है आत्मा का जवाब देगा तो तुझको कोई गिरा नहीं सकेगा। तू अपने को शरीर मानते हैं तो ज्ञान से गिर जाते हैं। यह अविद्या का भूत बार बार आ के तुम्हें गिराता है। करतार ही अविद्या का भूत भेज के तेरी परीक्षा लेता है फिर गुरू सुजाग करता है। हर समय देह की बदबू तेरे बात करने से आती है। तुमने कभी

आत्मा की बात सुनाई है किसी को? सब शब्द आसमान में उड़ गया मैं आशब्दी ब्रह्मपद में लीन हूँ। मैं भी आत्मा तू भी आत्मा तुम भगवान भगवान करेगा तो सब चला जायेगा। दो चूड़ी भी आवाज करती है समता भाव में नहीं आता। समता भाव में कोई शिकवा न शिकायत न लाभ न हानि न सुख न दुख हर हालत हमें ऊपर चढ़ाने के लिए आती है। समझदार पत्थर से सीढ़ी का काम लेता है मूर्ख ठोकर खाकर गिरता है। हरएक में तुम्हें तीखा किया **opposition** जरूरी है देखे कि चिता की तरह तू जलता है कि नहीं तू देह होगा तो जलता सड़ता रहेगा आत्माकार को आग लगेगी नहीं। काम क्रोध की अग्नि जिसे जला नहीं सकती उसका दर्शन महा पवित्र है। रजोगुण से भी काम व क्रोध की उत्पत्ति होती है। कामना की पूर्ति न होने से दुख सुख लगता है। ज्ञानी कुछ सोचता नहीं क्योंकि निरिच्छा है। जिसमें चाह नहीं तो सोच भी नहीं। ग्रहण, त्याग नहीं है दुख नहीं। तुम बुद्धि से सोचता है कि गुरू **wrong** है **right** तो मन तुम्हें कभी **right** नहीं बतायेगा। मन कहेगा संसार सत्य है। मन को मनाओ गुरू वाक्य सत्यम करो। संसार की हालतें सुख दुख की मिथ्या कूढ़ राजा कूढ़। सारा दिन तू मिथ्या में पड़ा है। सच को तू जानता भी नहीं है। सबके लिए अच्छा ही अच्छा सोचो। किसी के लिए भी जैसा तू संकल्प करेगा वैसा ही उधर पहुंचेगा। ये संकल्प ही बीज स्वरूप है। खोटे संकल्प से सभी को नुकसान है। एक कहता है मैं बीमार पडूं तो अच्छा है पर उससे तू हजारों की सेवा लेगा उनको भी तो तू बीमार करेगा। एक विकल्प ने जितना काम किया। एक अच्छा संकल्प करो तो हजारों को सुखी करेगा। सबको भगवान मिल जायेगा तो तेरी सृष्टि स्वर्ग बन जायेगी। तेरे अन्दर विकल्प तुम्हें नर्क में डालते हैं। जिसके अंदर में कोई राग द्वेष नहीं है वो प्रेम नगर में रहते हैं। जहाँ बैठा है सब अच्छा ही अच्छा है। गुण उठाने के कंजूस नहीं

बनो। सब में भगवान देखो तो सब इच्छाएं वासनाएं खत्म हो जायेंगी। जब तक अपने को नहीं जाना तब तक सर्व से प्यार भी नहीं होगा। और तेरा काम अधूरा रहेगा। रजोगुणी ज्ञान, तमोगुणी ज्ञान, सतोगुणी ज्ञान से ही शान्ति आयेगी। क्योंकि वो ही समान योग है तो प्यार हो जायेगा। सत्संग में आने से ही परमशान्ति, आनन्द आता है। उत्तर प्रश्न करके अपनी सब उलझनें शान्त कर लो तो अंदर की शान्ति आयेगी। वचन साथ के धो-धो पी अर्प साथ को अपना जी। जीवभाव निवृत करो तो समाधि माना समाधान हो जाता है। गुरू क्या छुड़ाता है केवल तेरे विकार छुड़ाता है। मन को **no** गुरू को **yes** करते चलो। सब शंकाएं निवृत होगी जब गुरू वाक्य सत्यम् करके उठाया जीवभाव दे के आत्म भाव ले के जाओ। आंज ही अपनी भूल निकालो। कौरव बुद्धि को निकालो। गुरू की बात मानो। गुरू का साथ दियो तो मन का नहीं तो मन मर जायेगा जीवभाव देना पड़ता है। गुरू के पास बात लेकर आते हो तो गुरू तुम्हें आत्मा ही बताता है। हीरों की दुकान पर हीरा ही मिलता है। अर्जुन ने प्रश्न उत्तर करते करते आत्म नेष्ठा किया, गुरू को **catch** किया। आत्मा माना अद्वैत निष्काम। **birthless, deathless** अपने को पहचानने के सिवाए मन नहीं मरेगा। मन मेरे से पैदा हुआ है और मैं मन से डर जाऊँ। तेरा काम है जीवभाव देना और आत्मभाव लेना। उसका इशारा है ऊपर देखना। जीवभाव गटर छोड़ो। गंगा में डुबकी लगाओ। माया को अन्दर से खलास करो। साफ दिल हो जाओ। एक भी ख्याल छुपायेगा तो भगवान व तेरे में जुदाई है। जिस दिन दिल खाली किया उसी दिन भगवान आसन लगायेगा। ख्याल निकालो तो हल्का होगा। ख्यालों की बीमारी की दवा केवल गुरू के पास ही है। एक-एक बात गुरू कहां से बोलता है तो उसकी समझ से चलो। केवल गुरू की आज्ञा में चलने से ही मन मरेगा। आत्मा में रहने से ही तू प्रसन्नचित्त

रहेगा। कृष्ण फिर-फिर के एक ही बात कहता है मन इन्द्रियों पर कन्ट्रोल और जितेन्द्रिय। जहाँ जहाँ मन जाये मोड़ के आत्मा में ही टिकाओ। संशय भ्रम नष्ट हो गया है तुम ऐसा अर्जुन की तरह बोलो। पापी दुराचारी को ज्ञान लग सकता है तो शुद्ध बुद्धि वाले को ज्ञान न लगे ऐसा नहीं होगा। चौरासी लाख जूणि भोगने के लिए है पर एक ही मनुष्य की जूणि में तू मुक्त हो सकता है। सत्कर्मी भी अहंकारी है उसको मैं निकालनी पड़ेगी। **You are already God. Man is a man when he is free.** कर्म करने को स्वतंत्र है और फल भोगने को परतंत्र है। जीवन मुक्त है तू ख्यालों से खाली है। **birthless** है **deathless** है पर जीवभाव में अपने को भूला के दुखी सुखी होकर बैठा है। गुरू तेरे विवेक की चाबी खोलता है कि जानो सत क्या है, असत क्या है। मनुष का जन्म ही छूटने के लिए है। ज्ञानी शरीर में रहते हुए भी अशरीर है। हे अर्जुन तू असंसारी हो जा। बाहर ज्ञान ध्यान। मेंढक पानी में पढ़ा था पर अपने को **adjust** करता रहा तो आखिर में सिझ के मर गया। तुम भी लोकारीत में सिझता है। सब बातें धरती पर होती है आकाश में नहीं। ऐसे ही गुरू तुम्हें बेहद में ले चलता है। कहाँ है वो तलवार जो काट सके मुझको। कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो तुम्हें मार सके। ब्रह्मकार वृति एक भी कर्म तेरे खाते में नहीं आता है। कोई भी कर्म करने के सिवाए नहीं रहते चाहे बाहर से सन्यासी अग्नि भी नहीं जलाते पर तो भी कर्म होता है। ज्ञानी निष्कामी है तो वो सुख दुख मान अपमान लाभ हानि में सम है। जिसको समय का कद्र नहीं है वो ब्रह्म को नहीं जानेगा। भक्त अपना रंग दूसरे पर चढ़ाता है पर अपने ऊपर रंग चढ़ने नहीं देता है। कितना समय माया में बेकार गया। चोरी करना पाप है। एक शब्द अन्दर पीये पानी से नशा चढ़ेगा। जीवन प्रेम विसर गयी काया। निष्काम में ही ये काया भूलती है। दुख सुख मान

अपमान में सम हो के रहो। सत्गुरू सहज समाधि सिखाया कोहम पूछता है तो बोलता है ओउम्। प्रकृति, प्रकृति के धर्म वरत रही है पर तू मैं-मैं करता है तो 84 लाख जूणि में जायेगा। मनुष्य देह में छूटने का **chance** है। गुरू कृपा तो है ही। किसी से राग या द्वेष तो नहीं है। तू खुद खुदा है तेरे को किसी **company** की जरूरत नहीं है। सबसे सुंदर है तेरे दिल की किताब पढ़ो। अशांति का कारण ढूंढो तो अशांत नहीं होयेगा। एक एक वचन पिया। भजन गाना, सुनना और सुनाना सरल है पर उस पर स्थिति होवे। **much wants more.** इच्छा व लोभ अंदर छिपा हुआ है। भरतरी ने पान की थूक में हाथ डाला। सारी सृष्टि का राजा भी दुखी है। भगवान ने माया में एक दोष रखा है कि कुछ न कुछ अपूर्णता है। अंतकरण में इच्छा रूपी छेद है तो राम नाम की हवा भरती ही नहीं है। जिसके अंदर अंतकरण नहीं है तो निरिच्छा **unattached** है तो आनन्द में है। सब ठगी बाजी है। मन गद्दी छोड़ के जायेगा जब गुरू को गद्दी दो। मैंने निज स्वरूप को जाना है माया का पता क्या पाना है। वासुदेव सर्व है तेरे वचनों में ही सदा मन में रहे। ब्रह्मज्ञानी का भोजन ज्ञान। दीदार करे तो आत्मा का कर्म करत होय निहकर्मी। सबके हित के लिए जो कर्म करता है। वो खाते में नहीं जायेगा। कबीरा मन तो एक है चाहे जिधर लगाय। जगत दूषण नहीं है भूषण मेरा। कोई वैरी नहीं है सब सज्जन ही सज्जन है। न किसी से डरा न डराओ। जीने वाले मरेंगे पर मरे हुए को कौन मारेगा। न किसी से दोस्ती न किसी से बैर। वैरी तेरे सामने आकर खड़ा होगा तो चौरासी लाख जूणी में मरेगा। राग भी तलवार व द्वेष भी तलवार। **He is a brave man who can say no.** एक शब्द पर झगड़े **murder** दुश्मनी हो जाता है इसलिए मौन है सोन। तुम बोलो तो ऐसा जो टूटी दिल को जोड़ो। **Be you as pure as holy as**

humble as your father is in heavens. भगवान किसी से दुश्मनी नहीं करता पर करूणा का स्वभाव है। बिच्छू संत को डंक लगा रहा था पर तो भी संत उसे बचा रहा था। दोनों ही अपने स्वभाव में पूरे थे। गुरू से ज्ञान लेकर फिर उस पर ध्यान रखो तो गुरू क्या बोलता है जो साहब चिंता करे। तुम भी कुत्ते व पक्षी को जा कर खिलाता है। **Oh fool knowest not. Thou God feeds the world. God has plan for you all.** तुम्हारा **chart** बना पड़ा है। ये दुनिया ऐसा है जो फिरता रहता है। **ever changing** तुम जो दुनिया में बह जाते हैं **preoccupations** इतना है कि तुमको करने की भी फुरसत नहीं है। मरना व जीना शरीर का धर्म है तेरे ख्याल में है कि तेरे को माँ बाप ने पैदा किया है पर **You are son of God.**

पत्र नम्बर 139

जिसका साथी हो भगवान, उसका क्या करेगा आँधी और तूफान। ऐसा भी होता है का सबक पक्का हुआ होगा। खैर हर अनुभव कुछ न कुछ सिखा के आता है। जो तेरी इच्छा वो मेरे लिए अच्छा। वहाँ भी तुम सब बाँटने में लग गए होंगे। बांटन वाले को लगे ज्यों मेहन्दी का रंग। आज भी यह बात चली कि जो जीते जी सब तरफ से अपनी वृत्तियाँ समेट कर बैठा है उसी की वासना अन्त वेले में कहीं नहीं जायेगी। जीते जी **unconcerned, unattached, disinterested, non-possession** हो जायें। माया के गुलाम नहीं पर तुम माया के मालिक हो, मायापति हो। तुम्हें माया असर नहीं कर सकेगी। तेलधारा सदृश अपना मन परमात्मा में लगा दें। संकल्प विकल्प से खाली हो जायें। बीते हुए समय को याद ना करें। जिसे प्रकृति ही पीछे ढकेलती है उसे फिर तुम वर्तमान में क्यों लाना चाहते हो। योग क्षेम का भार परमात्मा पर रखकर तुम निश्चिन्त हो जाओ। ख्यालों से खाली तो कैसे करूँ समाधि। हर हालत में खुश रहकर वक्त का आनन्द लें। नहीं तो वक्त तो पंख लगाकर उड़ ही रहा है। पीछे से भी उसे पकड़ नहीं सकते क्योंकि पीछे से वो गंजा है। आज ही समय की कदर करो। सत्संग में जोश, उमंग बढ़ाओ। हर समय इसी कार्य में तत्पर रहो। मैं मेरे में समय को मत बर्बाद करो।

पत्र नम्बर 140

सदा हँसते मुस्कुराते रहो। जीवन जीने के लिए है। जो अच्छी तरह से जी नहीं सकता उसकी तो जैसे जीते जी की मौत है। और जो जीवन को प्यार से जीता है हरेक में भगवान देखकर वो ही अमर हो जाता है। सारी दुनिया के लिए अपने जीवन का आदर्श छोड़ जाता है। अन्दर से राग-द्वेष, ईर्ष्या स्पर्धा, क्रोध को हटा कर प्रेम, नम्रता, धीरज, निरिच्छापने का जीवन बितायें। सभी को खुशियाँ बाँटते चलो। जो कुछ भी तुम्हारे पास है वो सभी के सहयोग से मिला है, इसलिए इसको सभी को देते चलो। तन, मन, धन सर्व के हित के लिए खर्च हो जाये। बाकी तो हर चीज यहीं छूट जायेगी। केवल परमात्मा का नाम ही रह जायेगा। सही सच्चा धन है। यही इकट्ठा करें, बाँटते चलें। बाँटने से और भी ज्यादा बढ़ता जायेगा। मीरा, कबीर, गुरू नानक के पास यही धन था। इस धन ते औरों को बरसावे। निष्कामता, निर्भयता वाला जीवन जीयें। हमारा है ही क्या जो कोई ले जायेगा। सबकुछ ईश्वर का दिया है। इसलिए हर चीज को, व्यक्ति को अमानत समझ कर रहें। सबसे प्यार भी हो पर निरासक्त भाव से। सगल के मध्य सगल ते उदास नानक हम तांका दास। बच्चे भी ईश्वर का स्वरूप हैं। उनको भी यही संस्कार डालें। माता मदालसा, रानी चुड़ाला की तरह बनें। हरेक को ज्ञान की राह पर आगे बढ़ायें। कामना रहित जीवन शुद्ध पवित्र हो जाये।

पत्र नम्बर 141

इश्क बिना कोई भी प्रभु से नहीं मिल सकता। गोपियों जैसी तड़प होगी तभी मोहन से मिल पायेंगे और मदन मोहन का अर्थ है मद+न, जहाँ मोह न हो। वहीं है मदन मोहन और जीवन का अर्थ है जीव+न, जहाँ जीव न रहे तभी सच्चा जीवन शुरू होता है। मेरे तन, मन, धन का मालिक मेरा सत्गुरू ही है तभी सच्चा आनंद है। अकेले न खाओ न पीयो। प्रेमियों के संग में रहो। जगत परिवर्तनशील है। उससे दिल लगाना मूर्खता है। मनुष्य जीवभाव में अपनी ही लाश अपने कन्धों पर उठा के चल रहा है। वैसे तो एक लाश उठाना भी कितना भारी है पर जीवभाव में मैं व मेरे की कई लाशों का भार एक साथ उठा के चल रहे हैं तो शान्ति कैसे आयेगी। गुरू में आसक्त रहने वाला कभी भी कहीं दूसरी जगह आसक्त नहीं होगा। राजा रूठे प्रजा ठौर है, ऑफिसर रूठे सम्बन्धी ठौर है पर गुरू रूठे नहीं ठौर। प्रेम है परमात्मा। गुरू ईश्वर गुरू गोरख ब्रह्मा! प्रेम से दुन्यवी मोह निकल जाता है। वैराग्य आ जाता है। सबसे खटाई आ जाती है। सहज त्याग हो जाता है। सब पदार्थ मिथ्या हैं - **changeable** हैं। इतनी बातें सुनकर भी आज निश्चय नहीं किया तो कभी भी सीख नहीं पायेंगे। उत्तर प्रश्न करके आज ही नेष्ठा करो। आखिर भी अपनी कृपा चाहिए। कृपा किरू त पाई। सो आज भी गुरू चरणों में झुकना है या आखिर कभी भी तो झुकना पड़ेगा। अहंकार, इच्छा जरूर छोड़नी है। नहीं तो निष्काम नहीं होगा। तुम आलस्य छोड़कर अर्जुन की तरह गुडाकेश हो जाओ। आज करना सो अब करो। घट-घट वासी अपने को जानो। अभी भी अज्ञान दूर करो। सकाम और स्वार्थ छोड़ो। माया को निकम्मा समझो। ज्ञान से अज्ञान जायेगा, रोशनी से अन्धेरा। ज्ञान अंजन गुरू दिया अज्ञान अन्धेर विनाश। तुम साक्षी दृष्टा

हो जाओ। कर्त्तापन छोड़ो। समता से अहंता, ममता, कर्त्ता नाश हो जायेंगे। केवल अज्ञान को जानो तो अज्ञान में रह नहीं पाओगे। दुश्मन को पहचान लेंगे तो उसके बनकर नहीं बैठेंगे। मन है जिन्न, दुश्मन। तुम इसको पहचान लो तो तेरे सामने नहीं आयेगा। पुरूषार्थ तेरा दैव है। उसी से **Self realization** करना है। प्रारब्ध तुम्हारे पिछले कर्मों का फल तुम्हें अपने आप देगी। करन करावन आप। वैराग्य का ये फल है कि तुम अपने अन्दर से सब त्याग देते हो। फिर अगर कुछ मिलता भी है तो तुम डिने दुखोया। आठ ही पहर समाधि यानि मन अमन हो जाये। करना कुछ भी नहीं है। केवल दृष्टा साक्षी। संकल्प विकल्प से शून्य हो जाओ। **Do nothing. Be still and know thyself.** समता भाव में आनेसे कोई विक्षेप नहीं आता है। ये अद्वेत मत है जिसमें द्वेत की जगह ही नहीं है। दूसरा देखे का बेटा बाकी ना दो है, ना कोई दूसरा है। है ही अल्लाह सो मैं हूँ।

पत्र नम्बर 142

गुरू सदैव हरेक को इस देह से ऊँचा ही उठाता है। जड़ चेतन की गाँठ खोल देता है और अन्दर अपने स्वरूप में स्थित करा देता है। आत्माकार ही सुख दुख, मान अपमान में सम रह सकता है। आज हर जगह से अनुभव मिल रहा है कि सगल सृष्टि का राजा दुखिया पर सो सुखिया जो नाम आधार। फिर तो चाहे सभी ओर से दुख इस देह को भी घेरे हुए हों तो भी इसे असर नहीं होता। गुरू हम सब का बोझ उठा के बैठा है। सोना सुनार को दे दिया। उसके बाद वह जरूर ही उसे गहना बना देता है। गुरू का प्यार ही अन्दर ही अन्दर शक्ति देकर हर ख्याल से खाली कर देता है। **Egoless, Thoughtless** गुरू बना देता है। अपनी ना चलाओ, ना सोचो। नज़र गुरू की जिस पर हो जाये बन्दे से वो तो खुदा हो जाये। हर हालत गुजर ही जायेगी। सदैव मुस्कुराते रहने से कोई भी दुख दर्द वापिस चला जाता है। तू घोड़ा नहीं पर घोड़े पर सवार है। पहले से ही सारे विकारों से गुरू ने दूर कर दिया है। जीवन मुक्त ही विदेह मुक्त है। मर के जीयो जगत में। **Die before you die.** गुरू से जिसने जीते जी की मौत खरीद की उसे कोई मौत मार नहीं सकती। क्या मारेगी मौत उसे जिसने खुद मौत को मारा है। शरीर लीला खेल रहा है। तू तो उसे भी जानने वाला है।

पत्र नम्बर 143

सत्संग से ही पूरी-पूरी उन्नति होती है। सर्व से प्रेम बढ़ता है। ज्ञान तुमने मन मनाभव होकर सुना है। अब जीवन के हर मोड़ पर यह सच ही तुम्हारे काम में आयेगा। प्यार प्रेम से ही सदैव उन्नति होती है। सब काम आसान होते हैं। यह ज्ञान हर हाल में प्रसन्न रहने का **art** नहीं सिखाता है। दुख में, सुख में, गुरू का प्यार याद रखना, कभी शिकवा नहीं करना। हर हाल में प्रसन्नचित्त रहना ही ज्ञान है। सहज स्वभाव ज्ञानी का है। गुरू हमें रहने की, जीने की कला सिखाता है। साथ जिसके सत्गुरू हैं वो कभी नहीं गिरते हैं, जिन्दगी में वो हमेशा आगे बढ़ते हैं। दुख सुख जय पराजय, मान अपमान में एकरस होकर रहो कीचड़ में कमल की तरह। जीवन का सुन्दर पुष्प केवल प्रभु के चरणों में ही चढ़ा दो। जीवन तो सभी का जायेगा पर कुछ ऐसी छाप छोड़ जाओ जो दुनिया तुम्हें याद करती रहे। जीवन का अर्थ है जीव+न, जहाँ जीवभाव न रहे और जीव+वन यानि जीवन एक सुन्दर उपवन बन जाये जिसमें से हरेक को पूर्ण सुख मिले।

पत्र नम्बर 144

परमात्मा के प्रेम में जो पागल है वही भाग्यशाली है। इसी प्रेम में सारी माया भूलती है। वैराग्य के सिवाय ज्ञान नहीं है और ज्ञान बिना मुक्ति नहीं। यह जन्म मुक्ति पाने के लिए ही मिलता है। दादा भगवान ने सहज मुक्ति का मार्ग दर्शाया है। हंसदियां खेलंदियां खावंदियां विचां होवे मुक्त। परन्तु पहले तो पूरा सत्गुरू भेंटिया। उसकी और अपनी तुलना करो कि सारे दिन उससे क्या कार्य होते हैं, वो कैसे निष्कामी है, हम भी ऐसे ही हो जायें। भीतर बाहर की शुद्धि, अहंकार रहित। अहं जो इस आकार यानि देह का है वही अहंकार है जो रावण की तरह जला दिया जाता है। ज्ञानी हंस हंस कर इसे फांसी पर चढ़ा देता है। उसके त्याग वैराग्य में सहजता है। जोरी जबरदस्ती त्याग करने वालों के चेहरे लटके रहते हैं पर ज्ञानी की सहज, निर्दोष मुस्कुराहट है क्योंकि यहाँ वैराग्य से त्याग है। उसमें भी कुछ करना नहीं पड़ता परन्तु गुरू के प्रेम में सहज ही सब हो जाता है। सत्संग का नियम हमें माया की हर मुसीबत से बचाता है। आप सभी भाग्यशाली हैं जो सत्संग का साथ मिला है। बस यह प्रेम रोज व रोज बढ़ाते चलो। गुरू की दृष्टि भी हो गई है फिर बाकी क्या चाहिए।

पत्र नम्बर 145

जहाँ जहाँ निराकार ले जाता है वहीं की सैर हो जाती है। तुम सब भी यह आत्म धन लुटाने में मस्त होंगे। यहाँ तो हर शहर में जाओ तो ज्ञान की सभी को जरूरत है। हर जगह भीड़ उमड़ पड़ती है इस सच को जानने के लिए। सचमुच यह ज्ञान कैसे रामबाण का काम करता है। सोये हुयों का जगा देता है। फिर हरेक का जीवन आनन्दमय, प्रेममय, निष्काम हो जाता है। सत्संग भी आप सभी का जोर शोर से चल रहा होगा। यही धन बांटने में खुशी है।

पत्र नम्बर 146

आप सभी का प्यार है जो सदैव ठीक ठाक देखना चाहते हैं। पर सच पूछो तो यहाँ हम सब स्वस्थ हैं क्योंकि स्व में स्थित है। बीमारी और मौत, दुख तो यहाँ आ भी नहीं सकते हैं। **No Sin, No Sickness, No Death** ये ही पाठ गुरू ने ऐसा पक्का करा दिया है कि कभी भी भूल नहीं सकते है। हमें तो लगता है कि बल्कि सारी दुनिया बीमार है जो हो मै। दीर्घ रोग में फंसी हुई है। गुरू ही इस महान बीमारी से छुड़ाता है। देहअध्यासी चमारों के बड़े भाई हैं जो हर समय चमड़ा ही देखते हैं। गुरू हमारी चमदृष्टि हटा के दमदृष्टि आत्मिक नजर देता है कि अपने को व सबको ब्रह्म करके देखो। ब्रह्मज्ञान पाना एक बात है और ब्रह्मदृष्टि हो जाना दूसरी बात है। ब्रह्मदृष्टि वाला न अपने को देह मानता है और न ही किसी और को देह करके देखता है। रंका और बंका ने कहा तुमने मिट्टी व सोने को भी अलग अलग क्यों देखा? ब्रह्माकार वृत्ति क्यों नहीं रखी। हम लाये हैं ब्रह्माकार वृत्ति गुरू द्वार से, इस वृत्ति को रखना मेरे मनुआ संभाल के। गुरू ही हमारी बार बार ब्रह्माकार वृत्ति बनाता है कि यह वृत्ति फिर कभी खण्डित न होने पाये। हर समय आत्म जागृति में ही रहें। क्राइस्ट ने कहा है कि **I am son of God not son of Man.** एक बार उसकी माँ सत्संग में आ रही थी। लोगों ने कहा क्राइस्ट की माँ आ रही है उसे रास्ता दो। क्राइस्ट ने कहा मेरी कोई माँ नहीं है। अगर उसे मेरी माँ समझते हो तो रास्ता मत देना क्योंकि मै और मेरा पिता सदा से एक ही हैं। तुम भी अपने से पूछना कि क्या तुम अपने को जन्मा मानते हो या किसी को भी अपना बेटा बेटी कुछ भी समझते हो या कि अपने को स्वयंभव समझते हो। कारण शरीर में भी किसी से रिश्ता जुड़ा है। अपने सम्बन्ध पक्के हैं तो फिर वही कारण बन जायेगा जन्म मरण के चक्कर का भी इसलिए हर समय सावधान रहो। न देह की बात करो न सुनो न मन से ख्याल करो।

पत्र नम्बर 147

यहाँ गुरू की इतनी मेहनत है कि यह जीवन स्वतः ही उस जैसा बन जाता है। गुरू हमें आप समान बनाता है। गुरू पूरण है तो हमें भी पूरण बनाता है। यही गुरू पूर्णिमा का भी अर्थ है। गुरू की पूर्णिमा से इसलिए तुलना करते हैं कि वह कई काली स्याह रातों से भी गुजरा है। घटने बढ़ने का यानि अपमान मान हर चीज का अनुभव ले चुका है इसलिए वह में भी हर अनुभव से पार कराता जाता है। उसकी करूणा से हम प्रेरित होकर इस जीवन में बढ़ते रहते हैं। मैत्री, करूणा, मुदिता का स्वभाव बन जाये। आपस में मित्रता का भाव रहे। किसी का दुख भी अपना दुख लगे। करूणा का अर्थ है अपना आप जान कर ऐसे सूअर को कीचड़ से निकाला तो अपने को ही खुश किया। ऐसे ही ज्ञानी दूसरे को नहीं वरन अपने को ही तो हर हाल में आनन्दित **Feel** करता है। मुदिता यानि प्रसन्नता। कोई भी इस राह पर बढ़ रहा है तो हमें प्रसन्नता हो। जैसे धरती पर खिले फूल एक दूसरे को देखकर ईर्ष्या नहीं करते। हर फूल खूबसूरत व खूबियों से भरा होता है। वे सब एक दूसरे के साथ, प्रेम से एक दूसरे के पड़ोस में रहते हैं और एक दूसरे की खूबियों का आनन्द उठाते हैं। हम भी यही आदत बना लें। सभी की प्रसन्नता में ही हमारी प्रसन्नता है। जिस परिश्रम को करने से हमें प्रसन्नता मिले वही हमारे लिए अमृत है। जब कोई तुम्हें ये कहे कि तुम ये काम नहीं कर सकते तो करके दिखाना ही तुम्हारी जीत है। संसार वालों के आगे हार जाना हमारा लक्ष्य नहीं है। कुसंग से हमेशा दूर रहें क्योंकि वो हमारे मन को भी खराब करने की कोशिश में रहते हैं। जहां इस ज्ञान का आदर न हो वहां चुप रहना ही अच्छा

है। यह मनुष्य जन्म केवल व्यतीत करने के लिए नहीं मिला है परन्तु कुछ करने के लिए है। अपना लक्ष्य पूरा करने के सिवाय चैन से नहीं बैठो। आगे बढ़ा कदम। चाहे कितनी मुसीबतें भी क्यों न आयें हर मुसीबत तुम्हें दृढ़ता सौंपती है। कभी घबराना नहीं है। इस राह पर चलते चलते यदि थोड़ा भी मन में अहंकार आया तो उसका पतन अवश्य होगा। **Pride comes before fall.**

पत्र नम्बर 148

आपका पुरूषार्थ है तो अब भला मुक्ति में क्या देर हो सकती है। वैसे तो मुक्त स्वरूप तू पहले से है। धोबी कपड़े से मैल निकालता है न कि उसमें सफेदी डालता है। हमारे ऊपर भी जो पाँच विकारों की मैल है, ईर्ष्या द्वेष की मैल है उसे हटाना है। प्रेम ही है परमात्मा। सभी से प्यार करते चलो। आत्मिक प्रेम ही सच्चा प्रेम है। बाकी शरीर तो सब विनाशी है।

पत्र नम्बर 149

सभी ने अपना जीवन ज्ञान यज्ञ में स्वाहा कर दिया। सचमुच अपने तन का, मन का, धन का दूजों को दे जो दान रे उसी को दुनिया अपना भगवान कहती है। सचमुच कुछ उन्नति गुरू मिलने से और कुछ ये निष्कामी भक्त करते हैं। सभी के **Thanks** हैं इस राह पर जो प्रेम से गुरू की वाणी ग्रहण करते हैं। हकीकत में तो जिन्दगी में तो बहुत कुछ है पर सही परख गुरू ही देता है। कहते हैं जैसी परख होगी वैसे ही रत्न हम चुनेंगे। यहाँ हम कांच भी इकट्ठा कर सकते हैं और हीरा भी। यहां केवल पत्तों के ढेर नहीं फूलों के गुलजार भी हैं। जो चाहो सो ले लो। पर जीवन को यदि सफल बनाना है तो प्रेम व ज्ञान रूपी फूलों को चुनो। यह ज्ञान गुरू से प्रसाद मिलता है। तुम्हीं ने मुझको प्रेम सिखाया, सोये हुए हृदय को जगाया। एक नई दुनिया में बसाया है जहाँ मेरा तेरा, राग द्वेष, हद बेहद कुछ भी नहीं है। सर्वत्र मैं ही हूँ। अपना आप देखने से कोई भी विकार नहीं आते। जीवन में दृढ़ संकल्प लो कि हे प्रभु ये देह तुम्हारी देह है क्योंकि इसके अंग अंग पर तेरा ही स्पर्श है। इसलिए सदैव इसे ही विकारों से रहित रखूंगा। अपने विचारों तक को मलिन न होने दूंगा। असत्य की धूल भी नहीं लगने दूंगा क्योंकि हे सतगुरू तुम्हीं ने मेरे हृदय में यह ज्ञान का दीपक जलाया है। मेरे विवेक को जगाया है। मैं अपने मन में किसी भी पाप को, द्वेत को प्रवेश न होने दूंगा क्योंकि वहाँ तेरी ही मूर्ति स्थापित है। मेरे सभी कार्यों में तेरी ही झलक है, तेरी ही प्रेरणा है। तू ही मेरे हृदय सिंहासन पर बैठ कर कार्य कर रहा है। सचमुच ऐसी भावना रखने पर कभी मन में अहंकार नहीं आयेगा। जीवन ही निष्काम हो जायेगा। गुरू के द्वारे तेरा आना ही बहुत है। भावना वाला भाव से सब कुछ ले जाता है बाकी तो कोई भी कुछ देने वाला नहीं है।

पत्र नम्बर 150

यह जीवने है ही देने के लिए। जो कुछ तुम्हारे पास है दियो। कंजूस नहीं बनो। नौ प्रकार के कंजूस गुरू ने बताये हैं। तुम सभी कंजूसी छोड़ कर उदारचित बनो। धन व माया भी पास रखकर कोई सुखी नहीं हो सकता वरन खर्च करने में ही शान्ति है। एक करोड़ तकिये के नीचे रखकर सुख से सो नहीं सकते पर खर्च करके सुखी हो सकते हैं। सभी को मौज दिल सकते हैं। **Money can't buy bliss. Money at the most can spoil a man. Goal of life is peace of mind not money, as fish finds its life in water not in honey.** सन्तोषी ही सदा सुखी रह सकता है। उदारचित वाले को दुखी नहीं रहना पड़ेगा। मुस्कुराने के, हंसने के भी कंजूस न बनो। यदि तुम्हारा किसी से भी द्वेष नहीं है तो याद रखना कोई भी तेरा भी प्रतिद्वंदी नहीं हो सकता। जगत को खुश करने की इच्छा बेवकूफी है। कोई भी किसी से खुश नहीं हो सकता। इसलिए अपने को केवल ज्ञान द्वारा ही हम खुश रख सकते हैं। खुशी अपने में है बाहर नहीं है। गुरू इस जलती आग से हमें बचा लेता है ऐसा निष्काम प्रेम दे कर। सारी दुनिया स्वार्थ से भरी हुई है। गुरू ही निःस्वार्थ प्रेम देना सिखाता है। प्रेम करने में कभी थको नहीं। **Love wins love.** हमारी सच्चाई व सरलता हमें सुख देगी।

पत्र नम्बर 151

आप इसी प्रयास में लगे हुए हैं पढ़कर बेहद खुशी होती है। सर्व में आत्म भाव रखने से ही सर्व से प्रेम हो जाता है। और जहां प्रेम है वहां कोई विकार ठहर ही नहीं सकते। गुरू ही हमें अपने स्वरूप का पता देता है। कोई कर सके न गुरू ने ऐसा काम किया है, जिन्दगी भर का अहसान किया है। प्रेम ही है परमात्मा। घट-घट में अपना आप देखो तो कोई भी मेरा नहीं। मेरे व तेरे में ही पूरा संसार है। ना हम ना तुम तो दफ्तर ही गुम। आप सभी ने अपना अहंकार गंवाया है तभी गुरू के प्रेम पात्र बने हैं। अपनी कृपा करने वाले के ऊपर ही गुरू कृपा भी हो जाती है। यह ज्ञान गहराई से समझने का है। गुरू की सच्ची सेवा है उसके वचनों का प्रसाद सभी में बांटना। यह धन बांटने से ही बढ़ता रहता है। जो मन के अधीन है वो सदैव दुखी है। मन ने सभी को धोखा दिया है। तुमसे कर्म करायेगा फिर भोगायेगा। **wrong** कर्म करता ही क्यों है? सर्व में आत्मा जानोगे तो इस मन से मुक्ति हो जायेगी। कितना भी कठिन काम है पर गुरू की मदद से छूट जायेगा। भवसागर सब सूख गयो है फिक्र नहीं मोहे तरनन की। मन ही नहीं है तो भगवान ही रह गया। या भगवान देखो या संसार देखो। या तू रहेगा या भगवान रहेगा। सूर्य पुत्र कहने से ही शक्ति आयेगी। दासी पुत्र कहने से कमजोर हो जायेगा। जीवभाव ही कमजोर करने वाला है। तुमको सभी ने जीव कहके कमजोर बना दिया है। तुम लड़की है, औरत है, विधवा है, ये तुम दासी पुत्र बना। गुरू ने कहा **You are son of God.** तुम सर्व शक्तिमान है, निरंजन है। सत्संग में तुम शक्तिशाली बनते हैं। गुरू तुम्हें कहता है **Be you as pure, as holy, as perfect, as your father is in heavens.** एक भी भूल होगी तो सारी दुनिया पूछेगी कि तुम्हें किसी चीज का **effect** न होगा। जैसे अच्छे बच्चे को बाप पूरी मिल्कियत दे देता है, खराब को अपनी जायदाद से अलग कर देता है। तुम भी गुरू वाक्य सत्यम करेगा तो ये खजाना तेरा होगा।

पत्र नम्बर 152

परीक्षायें तो हमें ऊँचा उठाने के लिए ही आती हैं। हिम्मत व हौसला रखकर आगे ही बढ़ना है। कमजोरी मौत है। डरना तो किसी हालत से नहीं है। आज नहीं तो कल बिखरेंगे ये बादल। आज की शाम, कल की सुबह होगी यह सन्देश भी तो लाती है। अन्धेरे के बाद उजाला तो होता ही है। मीरा, ध्रुव, प्रहलाद भी इसी अग्नि से निकले और कुन्दन बने। उल्टी हवा जब चलती है तो पतंग को और भी ऊँचा उठाती है। बांधा आता है पानी और **force** से बहता है। सच्चा प्यार प्रभु से करने वाले अंजाम से नहीं डरते। अंजाम पे डाले कौन नजर, पी ली है जो तौबा कौन करे। बस प्रेम जो किया है उसे अन्त तक निभाना, मन्जिल को पाओगे, तुम मन को रखो मसल के। मन की एक भी नहीं चले। यह बीच वाला हमें सत्य से दूर करने के लिए आता है। इस राह पर तीन प्रकार के तप हो जाते हैं। शारीरिक, मानसिक और वाचक तप। शारीरिक तप में तो शरीर की सहनशक्ति का विकास, सत्गुरू की सेवा, दूसरों के लिए अपने शरीर का उपयोग, गर्मी, सर्दी, बारिश में भी सहन करके अपनी जान न्यौछावर कर दें। जीना उसका जीना है जो औरों को जीवन देता है। वाचक तप- अपनी वाणी पर **control** होवे। इसका दुरूपयोग न करें। ऐसा शब्द मुख से न निकले जो किसी को उद्वेग पैदा हो या वो क्रोधित हो जाये। जिन शब्दों से दूसरों में शक्ति आये, प्रिय व मधुर शब्द ही बोलें। सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयात न ब्रूयात सत्यं अप्रियम्। सदैव नम्र विनयशील रहें। कठोर शब्द कहने हो वो भी प्रिय करके कहें जैसे अगले को ठेस न पहुँचे। मानसिक तप - मानसिक सहनशील होवे। सुख दुख मान अपमान कष्ट खुशी अनुकूल परिस्थिति में खुशी पर नियन्त्रण और उदासी में भी मुस्कुराते रहें। प्रतिकूलता का असर ना होवे। द्वन्दी जोड़ों से परे रहें।

पत्र नम्बर 153

ये उमंग व उत्साह के रंग बिरंगे दीये सदैव जलते रहते हैं। दीपावली सिखाती है एक दीये से हजार दीये जलते जायें। हरेक के हृदय में यह प्यार का दीपक जल जाये। फिर दीपक जला कर ऐसे स्थान पर रखते हैं जहाँ से हर तरफ प्रकाश फैले न कि किसी कोने में रखते हैं। हमारा जीवन भी सर्व के लिए हो जाये। गुरू से हमारी डोर बंधी रहे। पतंग की डोर कट गई तो फिर वह बच्चों के हाथों लूट ली जाती है। बस यही ख्याल हमेशा रहे कि जब तक सत्संग उड़ाये तब उड़े जब समेट ले तो उसकी सेवा में, उसके हाथों में पहुंच जायें। दीवाली में सभी के भीतर की राग द्वेष की दीवारें टूट जायें। सच्ची दीवाली हो न कि दीवारी हो जाये। सबके हृदय में यह प्रेम का सन्देश पहुंचे। गुरू से भी दिल मिल के एक हो जाये। सर्व दुखों की निवृति परम आनन्द की प्राप्ति हो जाये। दूसरा है ही नहीं तो मन शान्त रहेगा। ना मैं किसी का, ना कोई मेरा। सभी अपनी उन्नति में लगे हैं। सभी को हमारा प्यार देना। सभी को प्यारी याद हमेशा आती है। अलग अलग पत्र लिखना संभव नहीं हो पाता। बाकी याद सभी की आती है। देखो मिलन कब हो पाता है। निराकार का हुक्म कह होता है। कभी कुछ तो कभी कुछ रूकावटें बाहर से रोकती है पर हृदय तो सदैव मिला हुआ ही है।

पत्र नम्बर 154

सत्संग के सिवाय तो कभी भी किसी की जीवन नहीं बनती। पहले तो हरेक फायदों के लिए ही सत्संग में आता है परन्तु आते आते गुरू से प्रीति बढ़ जाती है और उसी प्रीत से प्रतीति भी हो जाती है। गुरू ही हमारा जीवन संवारने की सोचता है बाकी सभी ने तो इस जीवन को बिगाड़ा ही था। मोह ने, काम ने, इच्छाओं ने बर्हिमुख कर दिया परन्तु गुरू ने सच्चा सुख बताया कि अपने स्वरूप में ही वो सुख समाया पड़ा है। विष निकाले या अमृत निकाले, डूब कर थाह अपनी लगा ले। तू ही शिव, तू ही शिव का दुलारा, ढूंढता है तू किसका सहारा। दादा भगवान ने कहा कि सच्चा आनन्द तुम्हारे इसी देह में छिपा हुआ है पर है ब्रह्मचर्य के **box** में बन्द। ज्ञानी इस आनन्द को ढूंढ लेता है और जीवन मुक्त हो जाता है। संयम में ही सुख है। वृति जहाँ जहाँ आती है वहाँ से मोड़ कर अपने स्वरूप में लगा लें। और कोई साधन नहीं है। सर्व में आत्मभाव हो जाये। कृष्ण ने, क्राइस्ट ने या राम ने जो कहा उसे तो कोई नहीं जानता। केवल धर्म के नाम से लड़ाई झगड़े करते रहते हैं। अपने स्वरूप में आ जायें तो हर झगड़े से उठ जायेगा। स्वधर्म अपना जानो कि तू कौन है। बाकी परधर्म में नहीं जाओ। शरीर का मिलन भी जब लिखा है तभी होगा। हुक्मे अन्दर हर को बाहर हुक्म न कोय।

पत्र नम्बर 155

जो पहले से ही अपने निश्चय में आ जाता है उसके लिए तो परीक्षा, परीक्षा नहीं लगती। यहाँ गुरू हमारे लिए पहले ही पेपर **Out** कर देता है कि ये-ये दुख रूपी प्रश्न जीवन में आ सकते हैं तो बस उनको हल करने में क्या दिक्कत है ज्ञानी अपनी देह से जब उपराम्ह हो जाता है तो सभी की देह से दृष्टि उठ जाती है। पता नहीं देह का उनको तो फिर क्या औरों से मतलब और वैसे भी यह जीवात्मा पुद्रानी देह छोड़कर नई देह धारण करता है ऐस की मौत रूपी नौकर भी यही काम करता है। **No sin, No sickness, No Death.** यह शरीर पांच तत्वों का पांच तत्व में मिलता है बाकी तो आत्मा अविनाशी है। न मरता है, न मारता है। सत्संग तो आप सभी का फिर से **as usual** चल रहा होगा। सत्संग का नियम हर दुख से आजाद करता है। हजार काम छोड़कर पहले सत्संग करना चाहिए। यही गुरू का आदेश है। हमारा यह ज्ञान एक से एक का है। भीड़ का सत्संग नहीं है। भीड़ को ज्ञान देना ऐसे ही है जैसे पत्तों को पानी देना और एक से एक की मेहनत ऐसे ही है जैसे जड़ को पानी देना। बस अपना यह जीवन यज्ञ बना दें। देने के लिए ही यह जीवन है। अपने तन का, मन का, धन का, दूजों को दे जो दान वो सच्चा इन्सान अरे इस धरती का भगवान। प्यार दो प्यार लो। ज्ञानमय जीवन बनाओ। योगी होकर जीओ। योग परमात्मा से लगाओ। सच की राह पर बढ़ते रहो अथक होकर। विकारों के वश नहीं हो जाओ। विकारों को अपने वश में करो। अन्दर से ही **Unconcerned, unattached, disinterested** हो कर रहें। ज्ञानी का आदर्श ही सभी को प्रेरणा देता है। सभी आपस में मिलते रहो। प्रेम व एकता में बहुत शक्ति है। एक ईंट जब अपने को दूसरी से जोड़ती है तो एक सुन्दर इमारत बन जाती है। हम भी एक दूसरे से प्यार की सीमेन्ट से जुड़े रहें। सभी को मिलाते रहें उसी प्रभु प्यारे से।

पत्र नम्बर 156

आपके पत्रों से ही आपके भीतर छिपी हुई ज्ञान की जिज्ञासा प्रकट होती है। कोई भाग्यशाली है जिसे इस सच को जानने की जिज्ञासा होती है। मैं कौन हूँ क्या हूँ? हकीकत में तो अपने को देह मानने में ही पूरा दुख है। मैं देह हूँ तो सामने वाला भी देह ही है और किसी को भी देह देखने से राग द्वेष तो जरूर पैदा होगा। पर जब हमारी नजर तत्व पर जाती है और अपने को भी जानते हैं कि मैं वो सच हूँ तो किसी के भी अवगुण नज़र नहीं आते। ना ही कोई शब्द भी असर करते हैं। हकीकत में तो भगवान ने कोई दुख बनाया ही नहीं है। मनुष्य स्वयं को देह मानकर खुद ही दुखी सुखी होता है। **Troubles won't come if you invite them not.** अपने को देह मानना सबसे बड़ा ये पाप है। सब पाप इसके पुत्र हैं। सब पापों का ये बाप है। मैं ब्रह्मा हूँ, मैं ब्रह्म हूँ सबसे बड़ा ये जाप है। सब जाप इसके पुत्र हैं। सब जापों का ये बाप है। अपने को जानो तो परमात्मा को जान लिया। **Know thyself and you know God. God is within you. Everywhere is God. Everything is God.** बाकी जो दीसे जो चलणहार। जब लग देखी तब लग माया। ब्रह्म का अनुभव होगा दर्शन नहीं। निराकार का अर्थ है जिसका कोई आकार नहीं। रूप ना रेख ना रंग कुछ, त्रैगुण ते प्रभु भिन्न पर तिसहिं बुझाई नानका जिस होवे सुप्रसन्न। यानि स्वयं पर जो प्रसन्न है। अपनी कृपा जिस आप करे सो सेवक गुरू की मत ले। गुरू नानक देव, कृष्ण, राम, वगैरह को तो सभी मानते है। पर उन्होंने क्या कहा उस पर कोई अपना जीवन नहीं बनाता। नानक का अर्थ

है ना ना एक यानि सबमें एक ही तत्व है ना अनेक। अनेकता में एक देखो। ज्यों माला में सूत, कोई कोई जाने रे। जैसे बर्फ मे जल समाया हुआ है ऐसे ही निराकार सर्वत्र समाया है। कोई जगह ना तुमसे खाली है, तू व्यापक डाली डाली है। जैसे कंगन में सोना समाया हुआ है ऐसे ही निराकार सर्वत्र समाया है। यही अनुभव करना है। देह पानी है, मिथ्या है। पंच तत्व को तन रचयो जानहु चतुर सुजान, जहिं ते उपजे नानका लीन ताहि में मान। सच्चा सुमिरन करो तो दुख नहीं लगेगा। सुमिरन याने सुमरन। खुदी को मिटाओ तो कोई दुख नहीं। ज्ञान से ही सभी अवतारों को अच्छी तरह से समझ पाते हैं।

पत्र नम्बर 157

आप सभी के संग कैसे इतना वक्त प्रेम से गुजरा कह नहीं सकते। ना मालूम किस किस की अमानत थी जो सभी ने प्रेमपूर्वक ग्रहण की। इसलिए आप सभी के शुकराने हैं जो निश्छल प्यार आप सभी ने दिया। और शुकराने हैं प्यारे सत्गुरू के जिन्होंने आप सभी के प्यार के काबिल बनाया वरना तो कौन पूछता था तेरे मिलन से पहले। मेरी बढ़ गई है कीमत तूने भर दिये हैं मोती। उन्हीं की मेहर नजर से ही सभी कार्य सुखपूर्वक सम्पन्न हुए। विशालता की सृष्टि का आनन्द लिया। हर पल हर घड़ी यह दिल उन्हीं के शुकरानों के गीत गाता है। आप सभी की याद तो दिल दिमाग पर छा गई है। प्रेम से सभी ने इस हृदय को जीत लिया। सभी की सेवा, निष्कामता, निस्वार्थता तो बेमिसाल है। सभी से बहुत कुछ सीखने को मिलता रहता है। हरेक का प्यार एक अनोखी तरह का ही है। हर तरह के रत्न हमारे दादा भगवान की सभा में हैं देखकर खुशी होती है। सच सारी बढ़ाई प्यारे सतगुरू की ही है जो अनुमंता बन सभी को उचित सलाह देता है।

पत्र नम्बर 158

यही सत्संग का दायरा ही माया के हर बन्धन से छुड़ाता है। नहीं तो यह मन बार बार अपनी गुलामी में बांधना शुरू कर देता है। अब हर एक पल खुद को सावधान रहना है। पूर्ण मुक्त होकर बैठें। अपने ही पंखों का आधार। बाकी तो पराधीन सुख सपनेहु नाहीं। मन से भी संकल्प विकल्प का त्याग। ना मैं हूँ ना मेरा बस इसी निश्चय में रहो। दूसरा देखना बन्द करके सर्व में आत्म भाव रखें। इसी से सच्चा आनन्द है।

पत्र नम्बर 159

बस जिसने भी श्रद्धा से गुरू को सुना तो वो उसी का रूप बन जाता है। उसी को इस अलख का पता मिल जाता है। प्रेम दो दिलों को मिलाकर एक कर देता है। सजण मिले ना बिछड़े जे अनदिन मिले रहन। ऐसा प्रियतम से मेलाप हो जाये जो कीीी विछोड़ा न हो। सदा बसत गुरू को अर्पण करके मैं और मेरे से खाली हो जाता है। तो फिर तो साहब भी उस पर दयाल होकर उसे अपना बनाकर भगत के वश में हो जाता है और भगत कहता है तू मेरा। ये **II Stage** है। और तीसरी **Stage** में तो भगत और भगवान मिलकर एक हो जाते हैं। बल्कि यूं कहें कि भगत भगवान का रूप हो जाता है यानि उसका अपना अस्तित्व गुम हो जाता है और केवल भगवान ही रह जाता है। श्याम श्याम रटते राधा श्याम हो गई। फिर पूछने लगी सखियों से मेरी राधे कहाँ खो गई। ये है भक्ति की पराकाष्ठा, अभेद भक्ति, अव्यभिचारिणी भक्ति योग जिसमें दूसरा रह ना जाये। दूजा भाव न होय। जब दूसरा नहीं है तो विकार भी नहीं रहते हैं। निर्विकारी शुद्ध पवित्र जीवन बन जाती है। है प्रेम जगत में सार, और सार नहीं। कर ले प्रभु से प्यार और कोई प्यार नहीं। दुनिया के प्यार में तो केवल ध ोखा ही धोखा पर यह सच्चा प्यार है जिसमें गुरू केवल देता रहता है। केवल हमारा जीवन बनाता है। वापसी उसे नहीं चाहिए। **One way traffic.** हर समय प्रफुल्लित मौज आनन्द में जीवन बिताओ। प्यार बांटते चलो। प्रेम की महिमा मुख कही ना जाये। जिसने अपने को मिटाया उसने खुदा को प्रगट कर दिया। इस राह पर चुस्ती रखनी जरूरी है।

पत्र नम्बर 160

कोई विरला ही होता है जो हृदय के इतने सच्चे भाव प्रकट करता है। सचमुच एक बार हकीकत को जान लेने से फिर कहीं भी मन टिकता नहीं है। जिस मिलिये मन होय आनंद सोई सतगुरू कहिये। जिसके मिलने से हमारे हृदय में आनन्द आ जाये वही हमारा सत्गुरू है। खुदा जो खुद आकर हृदय में समा जाये। केवल हमारे उद्धार की जिसे चिंता है और हमारे स्वरूप में ही टिकाता है। जहाँ माया का व्यवहार का नहीं है। बाकी तो पाठ पूजा भी कि द्वारे मन्दिर गए, योग अभ्यास से मुझे मिल न सका। बाहार का माथा तो हर जगह टेका परन्तु मुरझाया मन कहाँ खिला? अन्दर के संशय भ्रम कहाँ दूर हुए? दिल से कहाँ झुके? यहाँ तो गुरू हमें बाहर से भी नहीं झुकाता। केवल अपना अहंकार गुम करने को ही कहता है। मैं मुआ तो खुद खुदा हुआ। कबीर ने भी कहा साध ाे सो सत्गुरू मोहे भावे, सत्य नाम का भर भर प्याला, आप पीवें और मोहे पिलावे। मेले जाये ना महन्त कहावे, पूजा भेंट ना लेवे। माया का सुख दुख कर जाने, संग न सुपन चलावे। उसे माया से कोई प्रयोजन नहीं रहता। गुरू हमें सच और झूठ की परख देता है। फिर जिसे सच समझें उसे ग्रहण करें। बाकी मन को दुविधा में न रखें। एक स्कूल में एक class में ही पढ़ते हैं। दस जगह कुंआ खोदने से कहीं भी पानी नहीं निकलेगा। बाकी माथा टेकने की बात है तो यह सर तो वैसे भी गुरू ने सत्य के आगे झुका दिया है और गुरू तो है ही सत्य स्वरूप। वो तो जहाँ तहाँ विराजमान है। गुरू नानक साहब ने कहा मेरे पांव उस ओर कर दो जहाँ मक्का मदीना न हो। गुरू तो हमें एक एक के आगे नम्रता करना सिखाता है पर दबना नहीं सिखाता। जो झुक जाये फल वाली डाली। बस गुरू वचनों पर चलकर यह जीवन सफल बनायें। जब समझ गए फिर उलझे क्यों, जो खोया था सो पा ही लिया। जब दिल की गली में रौनक है तो बाजार में जाकर क्या देखें।

पत्र नम्बर 161

आप सबका अनन्य प्रेम शुरू हो गया है। यही निष्काम ज्ञान दान देने से अपना जीवन भी बनता जाता है। तुम्हें आत्म निश्चय हुआ है तो औरों को भी यही निश्चय कराते चलो। हरेक स्वयं को बनाता रहे। अपना ही उद्धार सदैव नजर में हो तो जीवन आनन्दमय बन जाता है। पत्र में एक प्रश्न था कि आप गुरू के नाम के आगे भगवान लगाते हैं बाकी राम या कृष्ण को केवल राम कृष्ण कहते हैं। सोई प्रिय हकीकत तो ये है कि राम अक्षर बोलने से ही लगता है भगवान का नाम लिया। सारी दुनिया में तो **Declared God** है तो सभी उन्हें केवल राम ही कहते हैं। आपस में मिलते हैं तो राम राम जी कहते हैं। राम भगवान जी नहीं कहते। राम का मन्दिर, कृष्ण का मन्दिर यानि भगवान का मन्दिर। वाल्मीकि ने भी केवल राम नाम का ही जाप किया। इसका ये अर्थ नहीं कि यहाँ पर किसी का उनके प्रति आदर कम है। आदर तो हृदय में है। और एक उन्हें ही क्यों हम तो सारी सृष्टि को ही भगवान करके देखते हैं। समझते हैं। दुनिया के लोग उन्हें भगवान भी कहते हैं परन्तु उनकी एक बात पर भी चलते नहीं। जो कृष्ण ने गीता में कहा उसे कोई नहीं समझता, ना ही उस पर कोई आचरण करते हैं पर यहाँ तो उनकी बातों पर पूर्ण निश्चय कराया जाता है। गुरू पूरा चलना सिखाता है। हमें तो उन्हें भी भगवान कहने में कोई हिचक नहीं पर वो तो सर्वविदित भगवान हैं। कई भजनों में आता है राम तजूं गुरू को न विसारूं या एक राम दशरथ का बेटा या राम राम सब को कहे, मुझे अपनी शरण में ले लो राम तो राम का अर्थ ही है भगवान। बाकी गुरू के नाम के आगे भगवान इसलिए भी लग जाता है क्योंकि आप सब उन्हें भगवान नहीं जानते थे। **Living God** में कोई भी ईश्वर का भाव आसानी से नहीं रखता। उसके भक्त ही उसे प्रकट करते हैं। कृष्ण व राम के समय भी किन्हीं विरलों ने उन्हें पहचाना था। खैर कबीर ने तो गुरू को भगवान से भी ऊँचा दर्जा दिया है कि गुरू गोविन्द दोउ खड़े काके लागूं पाय, बलिहारी गुरू आपने जिन गोविन्द दियो मिलाय।

शल यही लगन हमेशा कायम रहे। अपने सत स्वरूप में टिकने का अभ्यास करें। अपने को छोटा, अभागा, कमजोर नहीं समझें। जिसका धणी साईं भगवान है उसे किस बात की कमी है। मिलने बिछड़ने का रोना भी कब तक रोते रहोगे। क्यों नहीं जल्द ही अपनी आत्म स्थिति में आते हैं कि हँम जहाँ भी हैं सत्गुरू के साथ ही हैं। सदा बसत हम साथ। अलग जानने से कमजोरी व हीन भावना रहती है। पर जब यह निश्चय होता है कि **I and my father are ever one.** तुझमें और मुझमें कोई दूसरा तत्व तो है ही नहीं फिर आशिक होकर और पर तकलीफ उठायें क्या जरूर। दिल में दिलबर मिल गया, काबे में जायें क्या जरूर। दुई से हम पाक हुआ गंगा नहाये क्या जरूर। स्थिर होकर बैठो। बहिर्मुखी सदा दुखी, अर्न्तमुखी सदा सुखी। बहिर्मुखता का अर्थ है जैसे सब इन्द्रियों की शक्तियाँ बाहर ही देखती हैं, कार्य करतीं हैं यानि जैसे शरीर के अंग बाहर की ओर गिर रहे हैं पर अन्तर्मुखी का अर्थ है अन्द से **Strong** बन जायें कि मैं ही वो हूँ। **I am that.** शेर उसी को सब कहते हैं जो अपने पैरों पर खड़े हैं, तूफानों से वो नहीं डरते जो दीवाने हैं। आत्म निश्चय से ही तुम हर बन्धन से मुक्त हो सकते हो क्योंकि तभी सौ सूर्यों की रोशनी देखोगे। सौ सिंहों की शक्ति तेरे अन्दर आयेगी। अपने भीतर की बत्ती बुझाक्रर क्यों दूसरों की बत्ती पर आशिक होते हो। शेर निर्भय अकेला जंगल में विचरता है और हाथी झुण्ड में क्योंकि उसकी आँखें हैं। वह अपने को शुद्र समझता है। तुम भी अपने को परिछिन्न जीव समझोगे तो कभी मोक्ष नहीं मिलेगा। आज ही अपने से पूछो तू कौन। बेखुदी में आओ तो खुदी में आने की दिल नहीं करेगी। तिल से तेल बन गया तो वापिस तिल न होंगे। जो एक बार ब्रह्मनेष्ठी हुआ वह फिर कभी देहअध्यास में नहीं आयेगा।

पत्र नम्बर 163

तुम सभी का प्यार, सेवा, कुर्बानी हमेशा याद है। निष्काम जीवन से ही अनेकों लाभ हैं। गुरू हमें ज्ञान देकर सभी आसक्तियों से छुड़ाता है। मोह का बन्धन तोड़ दिया। कहीं भी अटकने नहीं देता। इच्छा व मोह ये T.B. व कैंसर से भी भयानक रोग हैं जो जन्म मरण के चक्कर में रूलाते हैं। गुरू हमें हर बात से छुड़ाने आता है तभी हमारे दुखों का अन्त होता है। हरेक का जीवन स्वर्ग हो जाता है। सभी दुख दूर हुए जब तेरा नाम लिया। एक बूंद ब्रह्मज्ञान की मस्त करे दिन रैन, लाख प्याला भर पीयो चढ़े न मस्ती नैन। अब बस इसी मस्ती में डूबे रहो। बाकी सब फिक्र तो वो सभी के उठा के बैठा है। तू क्यों सोचता है। तेरा तो कुछ भी नहीं है। आया अकेला जायेगा भी अकेला।

पत्र नम्बर 164

आप सभी की प्यारी याद सदैव हमारे हृदय पटल पर है। जो निष्काम सेवा व प्यार आप सभी ने किया उन सबके **Thanks** हैं। सचमुच गुरू की महानता है जो ऐसा निष्काम बगीचा तैयार किया है जिसके मीठे फल हम सभी खा रहे हैं। आज सत्संग में वाणी मन के ऊपर चली। प्रश्न पूछा गया कि अभी भी मन किसी के पास है या खत्म हो गया। किसी ने कुछ, किसी ने कुछ उत्तर दिया। आप सब क्या समझते हैं? मन अभी तक जीवित है या ज्योति स्वरूप हो गया है। कोई भी ख्याल अभी तक दुखी सुखी करते हैं या कभी ख्यालों का बहाव बहा ले जाता है या दृष्टा साक्षी हो गए हैं? ब्रह्मविचार करो तो जगत है ही नहीं। तीनों कालों में जगत नहीं बना है। यह रैन का सपना जैसे जागने पर झूठा लगता है ऐसे ही आत्म जागृति के समय ही यह जगत स्वप्नवत भासता है। फिर इस सपने के पदार्थ की इच्छा भी कैसी करनी है। इच्छा मात्रम् अविद्या। गुरू तो देह से ही असंगी कर देता है। ना मैं किसी का ना कोई मेरा। परमात्मा पढ़ाई पहले करवाता है, परीक्षा बाद में लेता है। इधर हाल ही में एक सत्संगी जो खुद सत्संग करती है उसके बेटे का ट्रेन **Accident** हुआ जिसमें उसका दाहिना हाथ कट गया है व दोनों पांव की हड्डियां टूटी हैं। तो भी घर में सभी इस ज्ञान की शक्ति के कारण शान्त हैं और तेरा भाणा मीठा लागे करके बैठे हैं। सचमुच प्रभु के सुमिरन दुख न संतापै, काल परहरे, दुश्मन टरे यही सत्य है।

पत्र नम्बर 165

एक धड़ी आधी धड़ी, आधी ते पुनि आध रे, संतन गोष्ठी जो कीन्हो सो लाभ। एक क्षण का भी गुरू का मिलन तन मन को शीतल कर देता है। सच्चे सुख से भर देता है। आज गुरू पूर्णिमा है। सारी दुनिया जा कर गुरूओं की पूजा करती है, चढ़ावा चढ़ाती है पर इसका सही अर्थ क्या है कोई भी नहीं जानता कि जब गुरू स्वयं पूर्ण है वही पूर्णता में टिका सकता है। बाकी तो खुद भटक रहे हैं मार्ग दिखाने वाले। पर सच्चा गुरू हमेशा दातार हो कर सभी को प्रेम व ज्ञान तथा आनन्द से भरपूर कर देता है। जिस आनन्द का केवल अनुभव किया जाता है पर बताया नहीं जा सकता। आनन्द आनन्द भया मेरी माई सत्गुरू मैं पाया। सत्गुरू पासा सहज सेती मन वजी बधाई। सच्चे गुरू की तलाश नहीं करनी पड़ती पर वो खुद खुदा खुद ही आकर हमारे हृदय में, रोम रोम में समा जाता है। बाहर से उसका सिमरन करना नहीं पड़ता क्योंकि वो एक पल के लिए भी भूलता नहीं है। सो क्यों विसरे जो विख ते काढे, जन्म जन्म का टूटा गांढे। यही पूरे सत्गुरू की करामात है कि अनबोलत मेरी वृथा जानी, अपना नाम जपाया ठाकुर तुम शरणाई आया। बस जो शरण आवे तिस कण्ठ लावे। गुरू तन मन धन लेकर आसक्ति निकालता है। फिर उसी घर में मैनेजर की तरह रखता है कि अपना नहीं मानो। ना मैं हूँ ना मेरा। बस अभिमान यानि खुदी गई तो गुरू के प्रेम में खुद खुदा हुआ। नजर गुरू की जिस पे हो जाये। सन्त करे आप समान। बिना प्रेम के तो कोई भी ये सच, आत्मा की राह नहीं जान सकता। दिन दूना हो विरह वेदना पल भर चैन न आये रे, कोई ऐसी आग लगा दे।

पत्र नम्बर 166

तू जी ए दिल जमाने के लिए। देखो हुक्म रूपी हवा कहाँ कैसे पहुँचा देती है जिसके लिए न हम सोचते हैं और न तुम। ये सारी व्यवस्था तो निराकार ही करता है। जहाँ जिसकी आवश्यकता है वहीं प्रभु पहुँचा देता है। केवल उसका **Handle** बन जाने की जरूरत है जो सत्गुरू का बन जाता है वो जीवन भर सुख पाता है। सचमुच जितना आनन्द ज्ञानी के पास है संसार वालों के पास तो उसकी बूंद भी नहीं है। ब्रह्मानंद सागर के समान और विषयानंद बूंद के समान है। ज्ञानी अन्तर्मुख होकर अपने भीतर के आनन्द को पा लेता है तो सदा के लिए सुखी हो जाता है। बहिर्मुखी सदा सुखी। बन बन के सहारे टूटते हैं ये रस्म पुरानी है जग की, जो टूटे कभी और छूटे ना वो तेरा सहारा काफी है, मुझे गर्ज न और सहारों की। ये रब का सहारा भले पतली डोर की तरह दिखाई न दे लेकिन फिर भी मजबूत है। दुनिया के आधार सब झूठे हैं। इसलिए ज्ञानी को उसी का आधार है। बाकी सारी दुनिया हिलते हुए तख्त पर खड़ी है। माया के, बेटे, बेटी, पति, धन आदि के आधार ही हैं और सारी दुनिया उन्हीं को आधार मान कर बैठी है। परन्तु ये खिलौने तो टूटने फूटने वाले ही हैं। गुरू हमारे साथ है तो डर किस बात का। चिन्ता व फिक्र में तो वह रहें जिसका हो गया उसे चिन्ता कैसी? तूफान के बाद आती है गहरी शान्ति। रात जितनी भी संगीन होगी सुबह उतनी ही रंगीन होगी। गम न कर अगर है बादल घनेरा किसके रोके रूका है सवेरा। रात के बाद दिन अवश्य होता है। हर रात के बाद होता है सवेरा, मिट जायेगा एक दिन गम का अन्धेरा। बस हिम्मतें मर्दा मददे खुदा। समाज, लोकारीत, दुनिया सभी तो

माया में फिर फिर फंसाते हैं। एक गुरू ही हाथ पकड़कर छुड़ाता है। मेरे सत्गुरू ने पकड़ी बांह नहीं तो मैं बह जाती। बस ये प्यार की डोर गुरू से सदा बंधी रहे। लक्ष्मण रेखा के अन्दर रहें। राम को सदा मन में बसा के रखें तो माया हमें कुछ न कर पायेगी। वरना एक भी इच्छा फिर से भवसागर में ले जायेगीं। यह सावधानी की सीढ़ी है। धीरे धीरे समझ कर सम्भल कर आगे बढ़ो। ना अपने आप को, ना गुरू को, ना सत्संग को लजाना। बस अपने दृढ़ इरादे वाले की जीत है - सत्यमेव जयते

पत्र नम्बर 167

अति श्रद्धा से भरा हुआ पत्र आपका मिला। हम लोगों ने पढ़ कर फिर अन्दर ही अन्दर से प्रशंसा भी की कि आपने बड़ी निर्भीकता से अपने अन्दर के प्रश्न हमारे सामने रखे हैं और फिर साथ-साथ आपके अंदर विश्वास की ज्योति भी जल रही है। पहले तो हम आपको इतना **clear** कर दें कि हम भगवान बोलते हैं अन्दर की शक्ति को जिसके द्वारा ये शरीर भी तथा सारी प्रकृति का भी संचालन होता है। शरीर तो है ही **Perishable** क्षण भंगुर, नाशवान और फिर देह सहित अपने को भगवान कहने वाला तो राक्षस है। जो ब्रह्माण्ड सो पिण्डे। जो शक्ति ब्रह्माण्ड में हो वो ही हमारे देह रूपी पिण्ड में है। वो शक्ति, वो तत्व है भगवान। गुरू को भगवान हम कहते हैं क्योंकि उन्होंने अपना देहभाव गुम करके अपने अन्दर के भगवान को प्रगट किया है। अपने तन का, मन का, धन का दूजों को दे जो दान रे, वो सच्चा इन्सान रे इस धरती का भगवान। आदम को खुदा मत कहो पर फिर साथ-साथ खुदा को भी तो आदम नहीं कह सकते हैं। क्राइस्ट को अपने **followers** ने **lord christ** कहा और उन्होंने खुद भी कहा **I am son of God.** हमारे अन्दर अगर जरा सी देहभाव है तो **son of man** हैं। अब एक बीज को लेते हैं। उस बीज में पेड़ के सारे गुण समाये रहते हैं भले पेड़ दिखता नहीं है। ऐसे ही हमारे अन्दर शक्ति है अपने **Godhood** को प्रगट करने की पर उसके लिए देहभाव को गर्क करने का पुरूषार्थ है। **Bread** का एक **slice** भी **bread** ही तो कहलाता है ऐस ही अंश भी अंशी से भिन्न तो नहीं है। अपने को एक कतरा नहीं पर सागर समझने में ही

सच्चा आनंद है। मुहम्मद साहब से भी किसी ने पूछा कि आप कौन हैं? तो उन्होंने कहा आना अरब बिला ऐन यानि हूँ अरब पर अ के बिना यानि रब। रामतीर्थ ने कहा **I am before the God was.** विवेकानन्द ने कहा **It is sin not to stay that I am God.** यानि अपने को भगवान न मानना ये पाप है। आप भी आगे चलकर जितना-जितना अपने स्वरूप को जानेंगे तो आपके अन्दर से ये विश्वास पक्का होगा कि गुरू मेरा भगवान है पर शब्दों के बीच में हम क्या आंके। जो आपको पसन्द आये वो करें पर ज्ञान सकी प्राप्ति तो कर लें।

पत्र नम्बर 168

सत्संग ही साधन है इस ब्रह्मज्ञान का। प्रेम व लगन वाले को रास्ता स्वतः ही मिल जाता है। हर रोज यह लगन बढ़ती रहे। सारी दुनिया के गुरूओं ने सभी को भटका दिया है। यह शुक्र है कि सच्चा गुरू मिला है जो सत्य की राह दिखा देता है। यह जीवन सार्थक हो जाता है। बहुत जन्म बिछुड़े थे माध व यह जन्म तेरे लेखे। जिसको भरोसा हो गया, बेड़ा पार हो गया, अलमस्त फिर वो हो गया। फिर उसे दुनिया के मान अपमान की क्या परवाह हो सकती है? हर हालत ऊपर चढ़ाने के लिए ही आती है घबराना कैसा। जिसे यह खुमारी एक बार चढ़ जाये तो फिर वो कभी नहीं उतरती।

पत्र नम्बर 169

एक दूसरे के लिए हरेक कुर्बानी का पुल बनता है तो सभी को रास्ता मिल जाता है। सर्व में अपना आप जान के जो कर्म होता है वो निष्काम है, जैसे अपने से किया। वह कर्म खाते में नहीं आते। प्रेम व करूणा का स्वभाव ही बन जाता है। आज भी बात चली कि ज्ञानी की कोई निन्दा भी करता है तो वो उसमें प्रशंसा के शब्द ढूंढ लेता है। फिर भौंरा भी तो सुन्दर फूल पर ही बैठता है। बुराई भी तो किसी अच्छे व्यक्ति की होती है। ज्ञानी निन्दा स्तुति में सम रह कर केवल सभी से प्यार करता चलता है। सत व बद कर्म का त्यागी मेरे को प्यारा है। सभी भावों से ऊपर उठते जायें। सब कुछ दे दें। अपना कुछ भी न रहे। प्यार भी, इज्जत भी, मान भी देने से ही बढ़ता है। सभी में गुरू का रूप देखते चलें। गुरू के साथ रहने पर तो मन को मिटना पड़ता है। पीछे चलने वालों को राज्य मिलता है यानि सभी अपनी मर्जी से चलते हैं। अवतार के जाने के बाद उसे याद करते हैं।

पत्र नम्बर 170

सत्संग की बहारों में आप बैठे हैं। गुरू कृपा से परिवार आपका बढ़ता ही जा रहा है। सभी कुछ अपनी लगन व पुरूषार्थ का फल है। दादा की बगिया बढ़ती ही जाये। प्यार कभी कम न हो। दूज के चन्द्रमा की तरह बढ़ता रहे। अन्दर से इस पांचवे नम्बर के मेहमान से बचते रहें। नम्रता व प्यार से हरेक के हृदय में स्थान बनता है। राजा की इज्जत तो केवल उसके देश में है परन्तु ज्ञानी की तो सारी सृष्टि में है। वो प्रभु का इकलौता बालक है। उसे सभी सुख प्रकृति भी देती रहती है। जो अपने को गंवा देता है उसी के भीतर से प्रभु ही आ के बोलते हैं या वो जो बोलता है वही हरि कथा हो जाती है। अन्दर से ख्यालों से खाली है तो कोई दुख भी संताप नहीं करता। सचमुच जग में आये गुरू हैं हमारे लिए, प्रेम वर्षा हुई है हमारे लिए। जहाँ सारी दुनिया बिना आग के जल रही है वहाँ सत्गुरू रूपी कील संग जो लग गया उसे काल भी न खायेगा। बन्दगी कर ले प्रभु की वरना तू पछतायेगा। केवल इसी कार्य के लिए ही आया है। यही प्रेम सभी में बांटते चलो यही गुरू दक्षिणा है। कहीं भी कुछ बनना नहीं है। बनना ही है अज्ञान बड़ा। ज्ञानी हर समय अपनी आत्म में ही संतुष्ट है। जैसे आकाश निराधार है उसे भी किसी का आधार नहीं, ध रती की तरह सहिष्णु है, सूर्य की तरह सभी को प्रकाश देने वाला तथा सर्प की तरह अपना कोई घर नहीं बनाता। आप गंवाइये तां शहु पाइये और कैसी चतुराई। सब गुरू का ही कार्य है। अपना तो कुछ भी नहीं है। अन्तिम भेंट गुरू को यही देनी है। कहीं भी अहंकार न कर बैठें नहीं तो फिर कृतघ्नता रूपी दोष लगता है। मेलाप में ही शक्ति है।

पत्र नम्बर 171

भाग्यशाली हैं हम सब जो ऐसा पूरा सत्गुरू मिला है जिसने ऐसा सच में टिकाया है। इसलिए अब जीवन ही सफल है। बाकी तो बिना आग जले संसार। आज गुरू ने ही ऐसा सच्चा ज्ञान देकर मुक्त किया है, अहंकार ही बन्धन रूप है। मैं बन्धन में हूँ, मुझे छुट्टी नहीं मिलती है, मैं शरीर हूँ, यही अहंकार है। अर्जुन भी अहंकारी था जो कह रहा था मै। लड़ाई नहीं करूंगा। तुम कुछ नहीं है। हो मैं दीर्ध रोग है, दारूं भी उस मांहि। तुम्हें बड़प्पन का अहंकार है। सुन्दरता, जवानी, पद का अहंकार है फिर जो हजारों पाप तुमसे होंगे। तुम कहते हैं मेरे पास कुछ नहीं है मैं किस बात का अहंकार करूंगा। **Body consciousness must go.** गुरू तुम्हें अहंकार से ऊँचा उठाता है। अहंकार वाले को ही सब इच्छायें हैं। देह तो इच्छाओं से भरी हुई है। परिछिन्नता में इच्छा जरूर होगी। सब मैं ही तो हूँ तो अहंकार किससे करें। द्वेत में ही सब रोला है। जो दुखों का कारण है वो अहंकार ही है। **I am not.** जो करता है जीव उसका अभिमान करता है। तुम्हारा हर स्वांस तो ईश्वर की सत्ता से है तो भी तुम मैं करता है। यही तुम्हारी गलती है। मैं से ही सब आवश्यकताएं हैं। पैसा, खाना, मकान चाहिए। आत्माकार ही निरिच्छा हो जाता है। आत्मा सभी को परमात्मा का रूप देखेगा। हर जगह मैं ही तो हूँ। अपने को आत्मा समझो। **Know thyself and you know God.** है ही भगवान तो तुम आया कहाँ से। अल्लाह आदम बन के आया। अब तुम है या भगवान। भगवान को प्रगट करो अपने को गंवाओ। काम, क्रोध, अहंकार, लोभ, हठ, मोह ना मन से लावो, तब ही आत्म तत्व को वरसे परम पुरख तहि पायो। तुम सब इस कार्य में लगे हुए हो। बस अपने को इसी सेवा में ही **busy** रखो।

पत्र नम्बर 172

तुम्हारी श्रद्धा व प्रेम, अडिग विश्वास पत्रों द्वारा जाहिर होता रहता है। तुमने अपने को ईश्वर के कार्य में ही विलीन कर दिया है यही तो सच्ची भक्ति है कि अपना आप विसर्जन हो जाये। सुमर ही सुमिरण है। वही अमर है, अजर है जिसकी प्रीत अन्त तक गुरू से जुड़ी है। अन्दर की भावना को कौन जान सकता है। बाकी तो जीवन मुक्त ही विदेह मुक्त है जिसकी इच्छा वासना जीते जी कहीं नहीं जाती। अन्दर से **Unconcerned, unattached, disinterested** है। साफ दिल, किसी से भी वैर भाव नहीं, श्रेष्ठता के अभिमान से रहित, किसी की भी निन्दा न करने वाला, सब में समभाव रखने वाला, हरेक में ईश्वर भाव रखकर आदर देने वाला है। ईश्वर का प्यारा है। जीवन मुक्त केवल ज्ञानी नहीं पर ज्ञानी भक्त होना जरूरी है। जो अपने को आत्मा जानता है वो दूसरे को अनात्मा नहीं जानता। औरों की श्रद्धा को नहीं तोड़ता केवल अपने लक्ष्य की ओर ही बढ़ता जाता है। निन्दा स्तुति में सम, सर्व कामनाओं का त्यागी, हर लोकारीत व कर्मों से छूटा हुआ। पूरा समय निष्काम जीवन जीने वाला, विकार रहित शुद्ध पवित्र योगी जिसका योग प्रभु से ही जुड़ा है न कि संसार से। वही धीर पुरूष मुक्त है। सभी इसी सेवा में लगे हुए हैं। इसी में ही सारा जगत व माया भूलती है। हरेक को इस रास्ते पर अपना ही उद्धार ध्यान में रखना है। एक शब्द भी कोई इस ब्रह्मज्ञान का उठा ले तो वो मालामाल हो जायेगा। भूल जाये वो सारे जग को सुख सांचा वो पाये। ये जगत की रीत ऐसी है। हर रोज सुबह की शाम हुई। पर ज्ञानी सूर्यवत सूर्यास्त में या सूर्योदय के समय एकरस रहता है।

पत्र नम्बर 173

तुम सब ज्ञान की ज्योति जलाकर बैठे हैं तो पतंगे तो आप ही दौड़े आयेंगे। जितनी ऊँची स्थिति हम बनाना चाहते हैं उतनी ही ज्ञान की फीस भी है। कोई फीस न देना चाहे और ऐसे ही ज्ञान लेना चाहे तो उसे ज्ञान का असर नहीं होगा। हर वक्त अपने से पूंछे कि हमें क्या चाहिए संसार का सुख या ब्रह्मानंद। ऐसा न हो कि दुविधा में दोनो गए ना माया मिली न राम। सत स्वरूप होकर सत को ढूंढते हो। केवल माया का पर्दा हटाओ तो तू ही वो सतस्वरूप है। माया के कामों के लिए हर व्यक्ति कितना तत्पर है परन्तु परमात्मा के लिए उसे फुरसत नहीं है। जिस हरि ने तुम्हें जन्म दिया, उसका कभी न नाम लिया फंस के मोह के जाल में भूला तू अपना करार है। अभी भी अपनों से पूछों कि कितना समय माया को और कितना भगवान को देते हो। अपनों से अधिक प्यार औरों से करो तो अपनों की ममता निकल जायेगी। शरीर सब विनाशी हैं उनका आधार नहीं वरन सच का आधार लेकर चलो जो टूटे कभी और छूटे ना। बस जगत के विषय सुख क्षणिक और छूटने वाले हैं। इसलिए हर समय परमात्मा का आधार समझो। जीवन अपना आनन्मदय बनाओ। हर हालत में वाह-वाह करते चलो।

पत्र नम्बर 174

गुरू के पास से ही सभी आनन्द रस से डूबते हैं। सत्संग की मौज तो आप सब लगा के ही बैठे हैं। इसी से ही हरेक की उन्नति है। तुम सभी के लिए कुर्बानी का पुल बन जाओ। **I may die that you may live.** लोकारीत में नहीं पर लोकसंग्रह के लिए जिओ। सोना मिट्टी ज्ञानी के लिए समान है। ज्ञानी करे ना करे है स्वार्थ बिना। कोई त्याग करके पछताता है, कोई अहंकार करता है मैनें छोड़ा तो दोनों ही गलत हैं। तुम्हारी मैं तो नहीं मिटी। ज्ञानी अनिच्छा व इच्छा से ऊपर है। हर्ष शोक से न्यारा होकर रहता है। हरेक अपने को अच्छी तरह से जानता है कि मैनें यह कर्म कैसे किया। चार व्यक्तियों के आगे मिठाई रखी गई। चारों ने नहीं खाई। चारों के न खाने का कारण अलग-अलग था। किस ख्याल से तुम कर्म त्याग करते हो ये तुम जानो। ज्ञानी-अज्ञानी को बाहर के कर्म से कोई नहीं जान सकता है। एक सन्त ने जंगल में चिड़िया को जलाया। फिर एक गृहस्थी से भिक्षा लेने नगर में गया। थोड़ी देर भिक्षा न मिलने पर क्रोधित हो रहा था तो उस औरत ने कहा मैं जंगल की चिड़िया नहीं हूँ जो जला दोगे। सन्त हैरान हो गया बोला तुम्हें कैसे पता चला। बोला हम गृहस्थ में भी तपस्वी की तरह रहते हैं। ये भोग भी एक तपस्या है तुम त्याग के मारे क्या जानो। ज्ञानी गृहस्थ में उदास रहकर तपस्वी की तरह रहता है। उस स्त्री ने फिर उसे सधने कसाई के पास भेजा। उसे हैरानी हुई यह कैसे ज्ञानी हो सकता है। सधने ने समझाया हमारा कर्म आसक्तिरहित है। वर्ण आश्रम में रहते हुए सब भगवद् अर्थ कर्म होता है वो ज्ञानी है।

पत्र नम्बर 175

दर्शन साधु का तो साहिब आवे याद। बस अब तो नित्य ही ये प्रेमियों के मेले लगते रहेंगे। या तुम यहाँ या हम वहाँ। बस मतलब तो मिलने से है। चाहे किसी रूप में भी मिलें। ये जीवन तो ऐसे ही मेलों में गुज़र जायेगी। बस सभी को खुशियां व आनन्द मिले, यह जीवन औरों के हित के लिए गुजरे यही जीवन की सच्ची खुशी है। माया तो मनुष्य के पास कितनी भी है तो भी उसमें तृप्ति तो है नहीं। तृप्ति तो है इस सच्चे ज्ञान से। हर समय अपनी आत्म जागृति में मन रहे। बाहर तो कोई मजा है भी नहीं। सब कुछ घर में बाहर नाहिं, बाहर टोले सो भ्रम भुलाहीं। गुरू प्रसाद जिन्हीं अन्तर पाया सो अन्तर बाहर सुहेला। रिमझिम बरसे अमृत धारा, मन पीवे सुन शब्द विचारा। अन्दर ही सारा आनन्द है। केवल कोई एकाग्रचित होकर इस आनन्द को लूटे। गुरू हमें रोज यह आत्मधन देकर तृप्त करता है। और तो सब धन खुट जायेंगे पर यह नहीं खुटेगा। तो भी यह ज्ञान देश, काल, पात्र देखकर ही देना चाहिए। जैसे एक गुरू ने शिष्य को यह ज्ञान देकर कहा मैंने तुझे वो अनमोल खजाना दिया है जिसकी तुलना में संसार का धन कुछ भी नहीं है। शिष्य ने रास्ते में सब्जी खरीदी और जब वह पैसे मांगने लगा तो यह ज्ञान सुनाने लगा। सब्जी वाले ने कहा मुझे यह ज्ञान नहीं पैसे चाहिए तो वह बड़ा दुखी हुआ। सोचने लगा गुरू ने तो इसे ही बड़ा धन समझाया था। रोता-रोता गुरू के पास आया। गुरू ने कहा तू मूर्ख है, तू गलत जगह पहुँचा। हीरे की परख तो किसी जौहरी के पास ही होती है। सांसारिक धन मनुष्य के क्लेशों को नहीं हर सकता। परन्तु आत्मिक धन मिलने से ही दुखों से छूट सकते हैं। यह आनन्द माया के सब सुखों से ऊँचा है।

पत्र नम्बर 176

सदैव अपने सच्चे आत्मिक रूप में वास करो। बड़ा ही अच्छा लगता है जब हरेक इस प्रेम की राह में आगे बढ़ता है। रूकना तेरा काम नहीं चलना तेरी शान, चल-चल रे नौजवान। इस नये साल की आप सभी को हमारी ओर से भी शुभकामनाएं हैं। यह साल सभी के लिए उन्नति का साल हो। पिछले साल जो भूलें हुई वह अब न हो इसलिए अपना पुराना हिसाब किताब जांचना भी जरूरी है। देखो कि कितनी उन्नति हुई। कितने लोगों को तुमसे आत्म जागृति मिली, कितने दुखी दिलों पर मरहम लगा। सुस्त होकर नहीं जीना है। हर दिन, हर कदम, हर मिनट **useful** होना चाहिए। सभी को जन्मों से इसी सत्य और आनन्द की प्यास है और हर एक यही चाहता है कि यह सच हासिल करें पर उन्हें सही मार्ग दर्शन नहीं मिल रहा है। तेरे जैसे नौजवानों में ही हम लोगों की ये उम्मीदें हैं। व्यवहार को भी परमार्थ का रंग लगाओ। अपने अन्दर से डर व हिचक निकाल फेंको। इस नये साल में नये इरादे व नये उमंग रखकर बढ़ो। सभी की आशाओं के दीयों को तुम्हें जलाना है। फूल मिले या अंगारे सच की राह पर चलता चल। प्यार दिलों को देते चलो। गुरू की तरह जीवन बनाओ, सत्संग को बढ़ाओ। यह जीवन ही देने के लिए है। **To live is to give** एक दादा की कुर्बानी से आज यह सुन्दर बगीचा आप सभी को दिखाई दे रहा है। ऐसे ही हरेक के जीवन की तपस्या व त्याग ही सभी को आनन्द देने में समर्थ होगी। मन एक रावण है उसको केवल एक तपस्वी राम ही मार सका था। राम ने जवानी में वानप्रस्थ लिया था। सीता की आयु भी केवल 17 वर्ष की ही थी। त्याग व तपस्या से ही उनके जीवन चमके।

आज किसी मनुष्य के पास कुछ है ही नहीं और वो कहे कि मैनें माया का त्याग किया है। तो उसकी क्या बढ़ाई है पर जिसके पास सब सुख ऐश्वर्य हो तभी त्याग की कीमत है। ऐसे ही जवानी में जो विषय भोगों का, इन्द्रियों के रसों. का त्याग करता है वही महान है। सब कुछ खुशी से ख्वाब करो। मन को भी उसकी सजातीय वस्तु मिलती है तो खुश होता है। जैसे दूध में पत्थर डाल के उबालेंगे तो कभी घुलेगा नहीं पर मिश्री का ढेल घुल मिल कर एक हो जायेगा। इसी प्रकार परमात्मा मिलने पर ही मन एकाकार होता है। जड़ माया तो पत्थर के समान है वह कैसे अन्दर समायेगी वरन मनुष्य को भारी कर देती है। विष तो पीने पर ही असर करता है पर विषय का तो चिन्तन ही मार डालता है। ताला खोलने की बन्द करने की चाबी तो एक ही है इसी प्रकार से मन ही है बन्धन का भी व मुक्ति का भी कारण। वही मन माया में लगाओगे तो बन्धन का हेतु और परमात्मा में लगाया तो मुक्ति का हेतु है। गुरू हमारे मन को मोड़ के आत्मा की राह दिखाता है तो जीवन आनन्दमय बन जाता है।

पत्र नम्बर 177

जो परमात्मा के ही परायण हो कर जीता है उसी के ख्यालों में रहता है उसके पास आकर भी दुख तकलीफ मौत वापिस चले जाते हैं। **Strong will** वाले की ही जीत है। ख्यालों से खाली तो गुरू ही करता है। **Thinking is not your real nature** क्या सोचना है। नाम का सुन्दर अर्थ चला कि ना मैं यानि मैं हूँ ही नहीं। शादियों में बाहर बोर्ड **Welcome** का लगा रहता है जिसका अर्थ है **wel** यानि कुंआ, कुंए में आओ। इच्छाओं के अधीन होकर हरेक कुंए में गिरता है। आत्मा में रहने में ही सच्चा सुख है।

पत्र नम्बर 178

बिना प्रेम के ज्ञान अधूरा है और बिना ज्ञान के सच्चा प्रेम भी नहीं है। सत्संग में हर रोज आते रहने से अन्दर का ज्ञान और पक्का होता है। माया से नाते टूटते हैं। कई लोग सकाम में रहते हुए भी यह नहीं समझ पाते हैं कि वो मोह में फंस रहे हैं उन्हें यह लगता है कि हम यहाँ भी निष्काम होकर ही रह रहे हैं। जबकि गुरू ने कहा है कि जीना उनका भला जो जीते हैं औरों के लिए और मरना उनका भला जो जीते हैं मैं व मेरे के लिए। हर क्षण हर पल इसी में ही जाये। दादा भगवान ने कहा कि करोड़ रूपये कमा लेने में भी वो खुशी नहीं मिलेगी जो एक दुखी दिल को ताकत देने में है। **Best prayer is healing of a broken heart.** टूटे हुए दिलों पर मरहम लगाना है। निष्कामी के सामने ही निष्काम कर्म आता है सकामी के सामने सकाम कर्म ही आयेगा जैसी जिसकी भावना होगी। यह ईश्वर का कार्य कोई पैसे से नहीं होता वरन लगन से होता है। हमारे रामतीर्थ विवेकानन्द रामकृष्ण आदि पैसे से तो निर्धन थे पर भीतर के बहुत धनी थे। और अपने इस ज्ञान के कारण ही आत्मबल द्वारा इतना कार्य कर सके। हमेशा **positive thinking** रखनी चाहिए। **negative** नहीं रखनी चाहिए। **I can do** करूँगा या मरूँगा। तो करेंगे अवश्य पर मरेंगे नहीं। निराशा मौत से भी बुरी है। आशावादी जीवन बनाना है। **Live in the world but not of the world.** हर समय यही याद रहे कि मेरा सच्चा स्वरूप क्या है। केवल थोड़े ज्ञान से संतुष्टि नहीं होनी चाहिए। जब तक की पूरा जीवन ही परमात्मा जैसा न बन जाये तब तक चैन से जीना नहीं है। रोज ब रोज आगे बढ़ो। नये प्रेमी बनाओ। एक एक से मेहनत करो। यही जीवन का लक्ष्य हो जाये कि ये जन्म तुम्हारे लेखे।

पत्र नम्बर 179

विरले ही हैं जो अपना यह अमृत वेला प्रभु के अर्पित करते हैं वरना इसी समय में ही माया का वेग इतना प्रबल होता है कि अच्छे अच्छों को भी बहा कर ले जाता है। आज शाम को सत्संग में भगवान की टेप से सत्संग चला कि हे अर्जुन यह मेरी माया बड़ी प्रबल है पर साथ ही साथ कहा कि जो मेरी शरण आता है उसके लिए माया तरना दुस्तर नहीं है। कठिनाई केवल उन्हीं के लिए है जिन्हें साकार रूप में सत्गुरू नहीं मिले हैं पर जिसे गुरू मिल गया उसे क्या मुश्किल है। हर मुश्किल गुरू के प्रेम में ही आसान हो जाती है। इसलिए ही कहा है कि भगवान का पाना तो आसान है पर सत्गुरू का मिलना मुश्किल है। सत्गुरू की कृपा के लिए सर भेंट चढ़ाना पड़ता है और फिर गुरू हमें हर ख्यालों से, चिन्ताओं से मुक्त कर देता है हमारा मन खरीद के। मब बेचे सत्गुरू के पास तिस शेवक के कारज रास। गुरू मिला माना नाव मिल गयी मल्लाह समेत जल के अन्दर फिर तो काहे कोई बांहो से नीर तरे ना तरे। मीरा ने कहा मोहे लागी लटक गुरू चरनन की तो फिर तो भवसागर सब सूख गयो है फिकर नहीं मोहे तरनन की। जगत ही मिथ्या करके गुरू दिखलाता है तो फिर परेशानी किस बात की है। मिथ्या का मिथ्या जानने में तो आसक्ति अपने आप ही हट जाती है। केवल प्रभु जिसको चाहिए उसे तो मिल ही जाता है अवश्य बाकी यदि कोई उसके साथ माया एवं पदार्थ भी चाहेगा तो वे नहीं मिलेंगे। दुविधा में दोनो गये ना माया मिली ना राम। यहाँ तो गुरू कहता है सच को जानो तो झूठ सब अपने आप छूट जायेगा। अधिक कीमती चीज मिलने पर घटिया माया खुद छूट जायेगी। हमें दिनों दिन अपना आत्म निश्चय बढ़ाना है। ऐसी आत्मा पक्की हो जाये तो सपने में भी न भूले जिसको तेरा ख्याल। फिर तो बस बेड़ापार ही है। सब चिन्तायें काफूर हो जाती हैं। श्याम तुम होंगे शमा काफूर हो जाऊँगा मैं। काफूर होने के बाद क्या इच्छा रहेगी। न हम न तुम तो दफ्तर ही गुम। अपना **aim** हमेशा नजर में रखो। **aimless life** नहीं जीनी है।

पत्र नम्बर 180

इस राह पर आलस्य रूपी तमोगुण खूब रूकावट डालता है। योगी जब योग की मुद्रा में बैठते हैं तो अंगूठा व पहली उंगली को मोड़ के बाकी तीन उंगलियों से अपने को जुदा कर लेते हैं। इसका अर्थ बड़ा ही रहस्यमय है कि अंगूठा तो है ब्रह्म का प्रतीक। यह सदैव सभी उंगलियों से अलग ही रहता है। ऐसे ही ब्रह्म भी सभी से निर्लेप न्यारा है। फिर पहली उंगली है जीव का प्रतीक और इस जीव का संग बाकी के तीन गुणों से है। सतो, रजो व तमो। इसमें सबसे छोटी उंगली सतोगुण का प्रतीक है। सारे दिन में बहुत थोड़े समय के लिए ही यह मनुष्य सतोगुण में रह पाता है। सुबह उठकर थोड़ी बहुत पूजा करेंगे या सुबह-सुबह क्रोध करना सभी को अच्छा नहीं लगता। उसके बाद की उंगली है रजोगुण का प्रतीक यानी फिर दिन पर मनुष्य रजोगुण में जाता है। आना जाना, पैसा कमाना, खाना वगैरह बनाना। इस बीच वो परमात्मा को भूला ही रहता है। काम, क्रोध व लोभ ये मनुष्य को सताते ही रहते हैं। पर इन तीनों गुणों से ही जीव को अलग होना है। जो उंगली जीव का प्रतीक है उसमें अहंकार खूब भरा हुआ है। जब भी कोई किसी पर क्रोध करता है या बदले की भावना रखकर बोलता है तो उसी उंगली को हिला के दिखाता है। कहता है मैं तुम्हें अच्छी तरह से देख लूंगा। टीचर्स भी बच्चे को डांटते वक्त उसी उंगली को हिलाते हैं। गुरू अन्दर से ही सभी को इसी अहंकार से बचाता है और उसे नम्रता से झुका के ब्रह्म जीव की एकता कराता है। इसलिए ही गुरू का दर्जा भगवान से भी ऊँचा है क्योंकि भगवान ने जान बूझ खाडे में गेरे, गुरू ने काटी ममता मेरे। भगवान ने पाँच चोर दिया साथी गुरू ने छुड़ा दिया

उनांथी। भगवान ने आवागमन में भ्रमाया, गुरू ने सभी से छुड़ा दिया है। जीवन मुक्ति देने वाला तो सच्चा सतगुरू ही है पर गुरू से हमें सौदा करना होता है कि मेरा सो तेरा और तेरा सो मेरा। मैं तू के अन्तर को कोई विरला गुरू ही निकालता है। कुछ ऐसे सतगुरू होते हैं जो मन्जिल तक पहुंचाते हैं और सिखाते हैं कि ठहर रस्ते ना मन्जिल को खोना। आगे बढ़ा कदम। हिम्मत कभी न हारो। चलते चलो। परमात्मा की मदद तो मिलती ही रहेगी।

पत्र नम्बर 181

सदैव अपने प्रिय आनन्द की मौज लो क्योंकि उसके सिवाय आनन्द और कहीं पर है भी नहीं। गुरू ने ही यह आनन्द लेना सिखाया है। वरना तो सभी जगत के **temporery** सुखों में फंसे हुए थे। उन्हीं को सच्चा सुख समझते थे। आज तीन प्रकार के सुखों का वर्णन चला गीता भगवान की टेप में। सात्विक, राजस व तामसिक। सात्विक सुख तो यही है जो प्रभु के भजन, कीर्तन से प्राप्त होता है। अपने स्वरूप की स्थिति का आनन्द सच्चा है जो एक बार किसी को मिल जाये तो जाता नहीं है। जो सुख आये फिर नहीं जाये उसका करो विचार बाकी तो देखा पागल सब संसार। दूसरा रजोगुणी सुख वो है जो विषयों के व इन्द्रियों के संयोग से प्राप्त होता है। यह भोग काल में तो बड़ा ही मीठा लगता है पर इसका **result** है दुख। आज धन है, पदार्थ है, इन्द्रियाँ सालिम हैं, सम्बन्धी जिन्दा हैं तो ये सुख ले सकते हैं पर इन्हीं सब के वियोग में महादुख छिंपा हुआ है पर सात्विक सुख जबकि पहले विष के तुल्य लगता है पर बाद में वही अमृत के समान है। ज्ञानी यही अमृत हासिल करके अजर अमर हो जाता है। तीसरा तामसिक सुख है जो नींद से व प्रमाद से प्राप्त होता है। एक है विभिषण, दूसरा रावण, तीसरा कुंभकर्ण

पत्र नम्बर 182

तुम्हारी सच्चाई व श्रद्धा ही तुम्हें आगे बढ़ा रही है। निश्चय वाले को कोई हिला नहीं सकता। गुरू ने उदारचित होकर एक एक को आप समान बनाया है। ऐसा गुरू कोई नहीं है दुनिया में जो जी जान लगाकर अपने भक्त को ऐसी शक्ति दे दे। हम सभी भाग्यशाली हैं जो हमें ऐसा महान सत्गुरू मिला है। गुरू हमें कहीं नहीं छोड़ेगा। सात समुन्द्र पार भी वो हमारी देखभाल करता है। गुरू सच झूठ की परख देकर अव्यभिचारी भक्ति सिखाता है। आँखों को परमात्मा का दीदार कराओ। द्वेत की बिल्ली अन्दर से निकालो। आनन्द तेरे पास ही है। प्रेम की तलवार दो दिलों के एक करती है जबकि लोहे की तलवार एक को दो कर देती है। प्रेम का अंजाम है दो दिल मिलकर एक हो जाते हैं। है प्रेम जगत में सार। सब पुस्तकें बन्द करके केवल प्रेम का पुस्तक पढ़ा है उसी ने अपने तन के अन्दर ही त्रिलोकी के नाथ को पाया है। प्रेम जैसी वस्तु कोई नहीं है। प्रेम सभी दुखों पर जीत पाता है। तलवारों से भी प्रेम डरता नहीं है। सच्चे प्रेम में कष्ट भी बहुत आते हैं तो भी प्रेमी परमात्मा को पुकारना नहीं छोड़ता है। ऐसा प्रेम का सागर गुरू ने सबको बना दिया है। प्रेम में रूकावट पड़ती है तो ये भी तपस्या है। सन्त अपनी गोदड़ी में बिच्छू रखता है कि अपनी क्षमा का गुण नहीं भुलाना है। ब्रह्मज्ञान सम दान नहीं, तप न क्षमा समान। राग द्वेष दोनों से ऊपर होना है। एक भी दुश्मन न होवे। गुरू का संग जल्द जल्द करने से उन्नति होती है।

पत्र नम्बर 183

फिर फिर यह कौन सी माया को घेर लेती है जो गुरू से कनेक्शन में ढील हो जाती है। यह तो ऐसी बात है कि अभी तो जगाया अभी फिर से सो गया जाग रे मुसाफिर तेरा वक्त हो गया। समय मिला है अनमोल प्यारे, प्रभु की ले पहचान प्यारे। ऐसा वक्त व मौका बारम्बार नहीं आता है। जीवन की घड़ियाँ वृथा न खो। यह मनुष्य देही हाथों से निकल गई तो फिर पश्चाताप व रोना ही हाथों में आयेगा। मन मारण की औषद्य सत्गुरू देत बताये। परन्तु हम लोग यदि मन ही गुरू को नहीं देंगे तो औषधि कहाँ से मिलेगी। तुम कहोगे मन नहीं है पर यह आलस्य भी इस राह पर विघ्नकारी है। इतनी संसार को आवश्यकता है इस ज्ञान की लेकिन यदि तुझ जैसे जवान तैयार हो जायें देने के लिए। सत्संग के सिवाय यह माया का घेरा नहीं कटेगा। सत्संग ही साधन भी है सिद्धि भी है। **Goal of life is peace of mind not money.** माया तो बहुत मिल जायेगी गुरू ऐसा कहाँ हर बार मिले। ऐसा गुरू मिले और कोई अपनी स्थिति पूर्ण न बनाये तो अफसोस की बात है। सारी सृष्टि से प्रेम बढ़ाओ तो हद का मोह कट जायेगा।

पत्र नम्बर 184

पूरा पूरा कनेक्शन जोड़ने से ही पूरी शक्ति आती है। गुरू के करोड़ों शुकराने हैं जिन्होंने ऐसा सुन्दर जीवन बना दिया है। राम तजूं गुरू को न विसारूं गुरू के सम हरि को न निहारूं। हरि ने अपना आप छिपाया और गुरां ने प्रगट कर दिखलाया। गुरू की महिमा हरि से भी अधिक है। जैसे वर्षा एक बार पृथ्वी पर आती है तो फिर वापिस नहीं जाती इसी प्रकार से अवतार भी जब इस पृथ्वी पर अवतरित होते हैं तो फिर वापिस नहीं जाते वरन वर्षा की तरह हरेक का जीवन हरा भरा करके उसी में समा जाते हैं। कई लोगों का कहना है कि हम बार बार पृथ्वी पर जन्म लें और भारत की सेवा करें। हमारे लिए मुक्ति तुच्छ है। पर हमारे दादा ने कहा है कि मैं तो जाता ही नहीं हूँ तो बार-बार आने का प्रश्न ही कहाँ है। हजारों के हृदय की धड़कन बन कर धड़कता रहता हूँ और हजारों रूपों में मैं ही सब कार्य सम्पन्न करता हूँ। हैरानी की बात यह है कि कई ऐसे व्यक्ति जो कहते हैं बार-बार जन्म लेकर सबकी सेवा करें तो उनका यह **present** का जीवन यूं ही माया में व्यर्थ जा रहा है। सकामी बन्धनों में बन्धे हुए और हकीकत में वो मुक्ति के लिए निर्बन्धन भी होना नहीं चाहते तो कहते हैं कि मुक्ति की क्या आवश्यकता है। पर गीता में ही भगवान ने कहा है कि जरा व्याधि जन्म मरण के दुखों से छूटने के लिए यह ब्रह्मज्ञान ही जरूरी है।

पत्र नम्बर 185

हर दिन आगे उन्नति ही करनी है न कि पीछे हटना है। कनेक्शन गुरू से और अधिक दृढ़ होना चाहिए क्योंकि उसी से ही सच्ची शक्ति प्राप्त होती है। बीच बीच में बैटरी **recharge** करने के लिए मुलाकात भी होनी चाहिए। यही जीवन मिला ही है कुछ करने के लिए। खाली ऐसे ही जीवन जीने से क्या लाभ? इसमें जो कुछ मिला है देने के लिए। मरने के बाद तो यह शरीर सभी का खत्म है ही। किसी काम का नहीं है। और पदार्थ भी सभी लोग ले जायेंगे पर ज्ञानी अपने तन, मन, धन का जीते जी दान करता है कि मेरा सब सर्व के लिए है। किसी के काम जो आये उसे इन्सान कहते हैं, उसे भगवान कहते हैं। गुरू का कार्य करते हुए ही यह जीवन व्यतीत हो जाये। गाय की पूजा देखकर सूअर को ईर्ष्या हुई। सोचने लगा। मेरी क्यों न ऐसी पूजा हो। मैं भी तो सब कुछ देता हूँ। यदि गाय देती है तो मेरा मास, बाल वगैरह भी काम में आते हैं। सोचा इसका राज गाय से ही क्यों न पूछूं। गाय ने कहा मैं अपना दूध वगैरह सब जीते जी देती हूँ जबकि तुम्हारा सब मरने के बाद काम आता है। ज्ञानी की यही महानता है। गुरू ने हम सबको एक ही परिवार का बनाया है। जात हमारी आत्मा परमेश्वर परिवार है, बेगमपुर के रहने वाले करते हम सब प्यार हैं। दादा भगवान ने गीता भगवान ने यह ज्ञान, कुर्बान कर के प्रगट किया है। इसे हरेक तक पहुँचाना हम सब का कर्तव्य है गुरू की सब उम्मीदें हैं तुम्हारे में। अपने किये इकरार सभी को पूरे करने हैं। अधूरा काम न छूटे। इस ज्ञान की सुगन्ध दुनिया के कोने कोने तक पहुँचे।

पत्र नम्बर 186

तुम्हारा अटूट विश्वास, अडिग निश्चय एवं बीस आना श्रद्धा देखकर बेहद खुशी होती है कि कैसे तुम्हारे अन्दर ये जंगी जोश पैदा हुआ है कि करेंगे या मरेंगे। परन्तु तेरे जैसे कई नौजवान तो आधे रास्ते पर ही हार का वापिस चले गये हैं। बस आगे बढ़ा कदम, रूकना तेरा काम नहीं चलना तेरी शान चल चल रे नौजवान। अभी तो काम अधूरा है क्योंकि अभी घर-घर में उजियाला नहीं हुआ है इसलिए सूरज को तो जलते ही रहना है। आजकल नवरात्रे चल रहे हैं उसी पर आज एक **point** चली कि नारी शक्ति का प्रतीक है और सदैव पूजनीय ही रही है। यत्र नारयास्तु पूज्यते रमंते तत्र देवता। और हमारे दादा भगवान ने भी स्त्रियों को बहुत आगे बढ़ाया जो पीड़ित थी, दुखी थीं, दबी हुई थीं, उन्हें उनकी सोयी हुई शक्तियों को जगाने का आवाह्न किया और आज दादा भगवान द्वारा कई स्त्रियों का उत्थान हुआ। उन्होंने कहा मेरा खास अवतार इन्हीं के लिए हुआ है। इन्हीं को हंसाना है पर इन्हें हंसा भी वही सकता है जो स्वयं हंसता होगा। एक बच्चे को हंसाने के लिए पहले खुद हंसना होगा। गुरू कहता है पहले अपने उमंग को पैदा करो तभी सभी में यह जोश पैदा होगा। जो होगा जोश वालों से वो न होगा होश वालों से। नवरात्रे में देवी की पूजा होती है। इसका अर्थ है हर प्राणी के अन्दर दैवी शक्तियाँ हैं उन नौ शक्तियों को जागृत करने के पश्चात दशमी रावण की मृत्यु होती है यानि इन दैवी शक्तियों को जगाने पर ही यह मन रावण मरता है। और फिर हमारे अन्तःकरण में सत्य का दीया जलता है और दिवाली की जगमगाहट होती है। दीये का अर्थ है कि दिये जा। जो कुछ तेरे पास है वो सभी को दिये जाओ। जितना प्रकाश दीये के पास है वो सभी को देता है और अमर ज्योत की स्थापना होती है। देवता का अर्थ भी था कि दैव अर्थात् प्रारब्ध। जो कुछ प्रारब्ध में है उससे अधिक तो देवता भी नहीं दे सकते हैं।

पत्र नम्बर 187

अन्दर की तार पूरी जुड़ी हुई है तो तुम्हें पूरी शक्ति मिलती रहेगी। आज सुबह भी 7 अध्याय में पढ़ा कि अनन्य शरण से ही फायदा है। यह ब्रह्मविद्या उत्तम से उत्तम विद्या है। योग भ्रष्ट ही यहाँ योग मुक्त होता है गुरूमुख से महावाक्य सुनकर। आसक्त गुरू में होना ही परमसिद्धि है। गुरू हमारे लिए ही निराकार से साकार होकर प्रकट होता है। बीज केवल ऐसे ही पड़ा है तो उसकी कोई सार्थकता नहीं है पर यदि वह अपने को गंवाता है तो वृक्ष से फिर अनेकों बीज, फल, **oxygen,** छाया, लकड़ी, ईंधन वगैरह सभी कुछ मिलता है। ऐसे ही हमारा साकार सत्गुरू है। फिर वहीं हमें मिटना भी सिखाता है कि तुम भी वही बीज हो। तुम्हारे अन्दर भी कई सम्भावनायें हैं, शक्तियाँ छिपी हुई हैं। उनको प्रकट करना है। बीज फलता है सदा मिट्टी में मिल जाने के बाद। जब उसे सब **favourable conditions** माली का संरक्षण, बारिश, धूप, उपजाऊ भूमि सब का संयोग मिलता है तो बीज बढ़ जाता है। फिर छोटे पौधे को भी सम्भालना पड़ता है। कहीं बकरी वगैरह न खायें पर जब वही बड़ा हो जाता है तो बकरी उसी से ही बंध जाती है। कुछ समय परहेज व सावधानी जरूर चाहिए। आप सब को होली मुबारक। होली सो हो ली। गुजर गई अब आगे की सुध ले।

पत्र नम्बर 188

कितने भी माया में **busy** रहो मगर तेलधारा वत अन्दर का कनेक्शन गुरू से पूरा जुड़ा रहना चाहिए। गुरू से प्रीत कम होने से माया को खींचने का **chance** मिल जाता है। नेवले को बार-बार शक्ति लेने के लिए चन्दन के पेड़ के पास जाना जरूरी होता है। जितना जो बड़ा होता है, ऊँचा उठता है उतना ही ज्यादा झुकना होता है। नम्रता, प्यार गुरू से कभी भी कम नहीं होना चाहिए। पेड़ जितना ऊँचा उठता है उतनी ही गहराई में बढ़ता है, उसे उतना ही गहरा अन्दर जाना होता है। आज यहां सत्संग चला जीवन मुक्ति व विदेह मुक्ति पर कि जो जीवन मुक्त है यानि जीते जी निर्वासन है उसकी मरते वक्त भी कहीं वासना नहीं जाती है। गुरू आदर्श से हमें आगे बढ़ाता है। खुद खुदा पृथ्वी पर हमारे लिए अवतरित होवे और हम उससे पूरा पूरा लाभ न ले यह कहाँ तक ठीक है। दादा की एक **point** चली कि **My past is worshipped and present is ignored.** और **future** में सब प्रार्थनायें करते हैं कि अब फिर कब आओगे? तेरे लिए भी भगवान अभी अवतरित हुआ है। आप झपै औरां नाम झपावै सुनत कहत रहत गति पावे। सुनें और सुनायें एक यही काम रह जाये, दूसरा काम सब संग में (धाते में) होता रहता है। **Main business** यही है। जो मिल जाये वो तेरा हक जो चला जाये वो कर्जा उतरा। बेखटके और बेफुरने होकर रहो। गुरू मानियौ ग्रन्थ। तुम्हारा सच्चा पति है परमात्मा। जैसे कुत्ते बिल्ली में आत्मा है वैसे सर्व में आत्मा है। दान करने से जन्म मरण का चक्कर है। दान नहीं करेंगे तो कोई नुकसान नहीं है। तुम अपना हठ छोड़ के सर्वशक्तिमान हो जाओ।

कर्ताभाव मिटाओ। परमात्मा निकट से निकट है मुँह की तरह तो देखने में कैसे आयेगा। मनसुख जड़ को चेतन, देह को आत्मा, अमृत को विष, आत्मा को देह अज्ञान दृष्टि से एक का दूसरा समंझता है ये मन। तेरा जीना मरने के समान है और मरना तेरा जीने के समान। तेरा मरना माना अविनाशी होना। प्राण प्राणपति को दियो नहीं तो काल देह ले जायेगा। हवा आने से मच्छर गया। अद्वेती विभाग रहित अपने को देखता है। अन्धों ने हाथी को छुआ तो समझ से हाथी को समझा। **where is not God?** पूरे घड़े में आकाश है। आत्मा देह को आने जाने से नहीं आता जाता है। मन जीवात्मा के साथ आता जाता है। पक्षी पेड़ पर है पाँव धरती पर है मैंने हिन्दुस्तान देखा है। भले बड़ी **hospital** होवे, दवाईयाँ भी हों पर डाक्टर न होगा तो **hospital** बेकार है। एक शूद्र उन्नति कर सकता है पर भिखारी नहीं। दोष दृष्टि से अज्ञानी को भी वैराग्य आता है। बिन कोड़ी बादशाह है ज्ञानी जो भोग के भी प्रसन्न होता है बाकी तो राजा भी राज्य में रोता है। कृष्ण ने स्त्री का मुख नहीं देखा, दुर्वासा निरआहारी। ब्रह्मज्ञान लेने के लिए ब्रह्मचर्य में रहना जरूरी है। उसी से ही परमशान्ति आयेगी। जो शेवा नहीं करता है वो शेवक कैसे होगा। शेवक पर गुरू प्रसन्न होता है। दुनिया के दीवाने दुखी हैं क्योंकि न बीमारी का न दवा का पता है अर्थात् न हो मैं का न परमात्मा का पता है। मैं - कृष्ण ने अपने को परमात्मा कहा है। ज्ञानी अशरीरी है। मैं की शरण लो, मैं को भजो उसमें स्थित हो जाओ।

खुद को जो मिटाया तूने

खुद को जो मिटाया तूने
फिर हमें बनाया है
आज हम सबके दिल में
तू ही तू समाया है

मंजिलों को पाया हमने तेरे इक इशारे से
डूबते हुओं को तुमने, लगाया किनारे से
भुला ना सकेंगे हरगिज तुमको, प्यार तेरा पाया है
आज हम सबके दिल में...

मिथ्या जग से मन को मोड़ा नूरानी नजारे हैं
जुड़ गए जो सच से अब हम सत्य के सहारे हैं
दीप जो जलाया तुमने अंधेरा मिटाया है
आज हम सबके दिल में...

प्रेम का ये रंग सच्चा फिर इस जहां में यूं फैले
साफ हो जाएं दिल सारे जो थे जन्मों से मैले
आज अपने दिल में कोई शिकवा ना शिकायत है
आज हम सबके दिल में...

गा रहा हूं इस महफिल में आपकी मोहब्बत है
आज मैं जो कुछ भी हूं आपकी इनायत है
आज हम सबके दिल में...

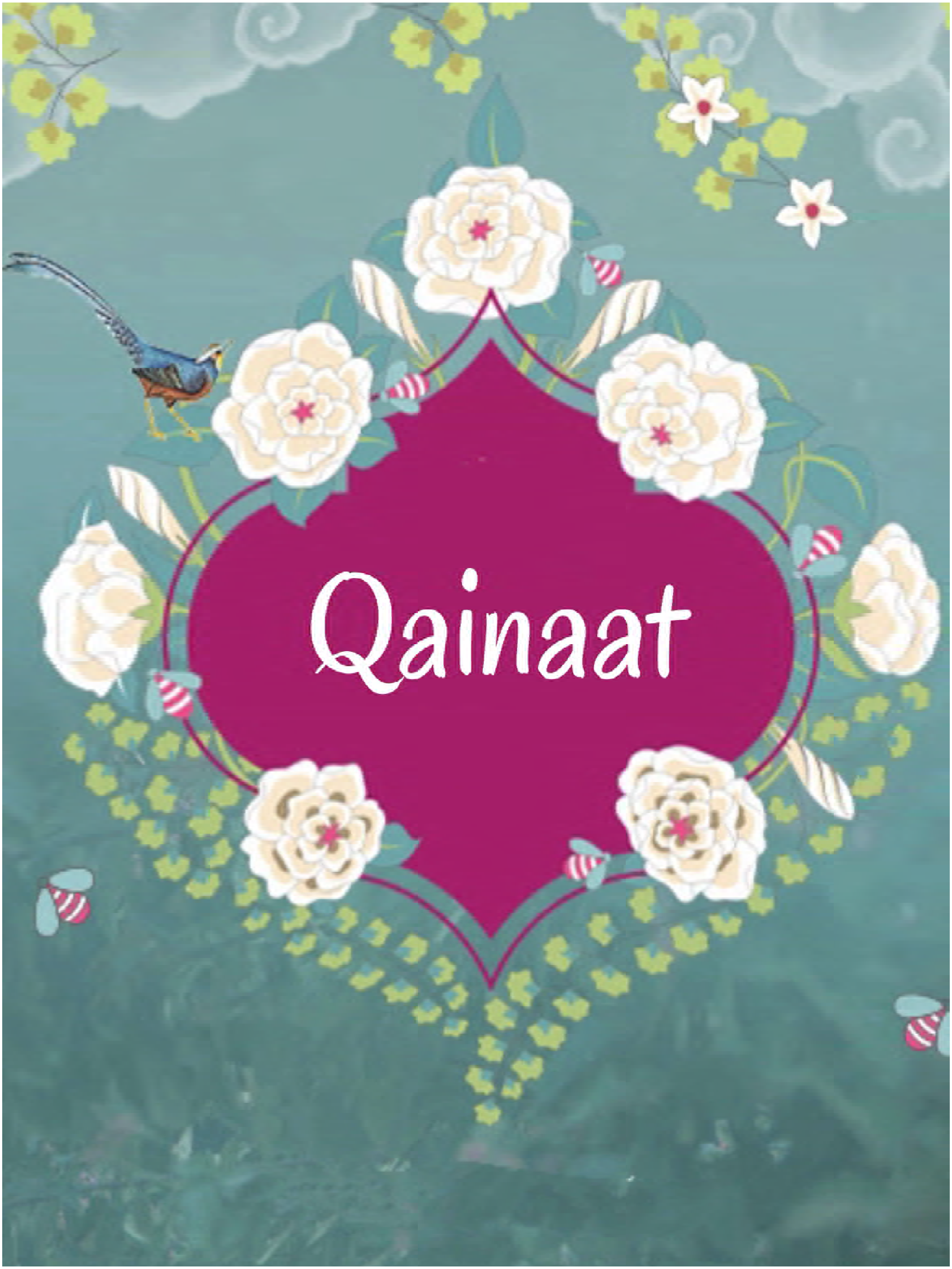
Qainaat